दिव्य गुणों की माला

Learn and imbibe the divine qualities of life with help of this book created from *Avyakt Murlis.*

Learn about Satyug⇗

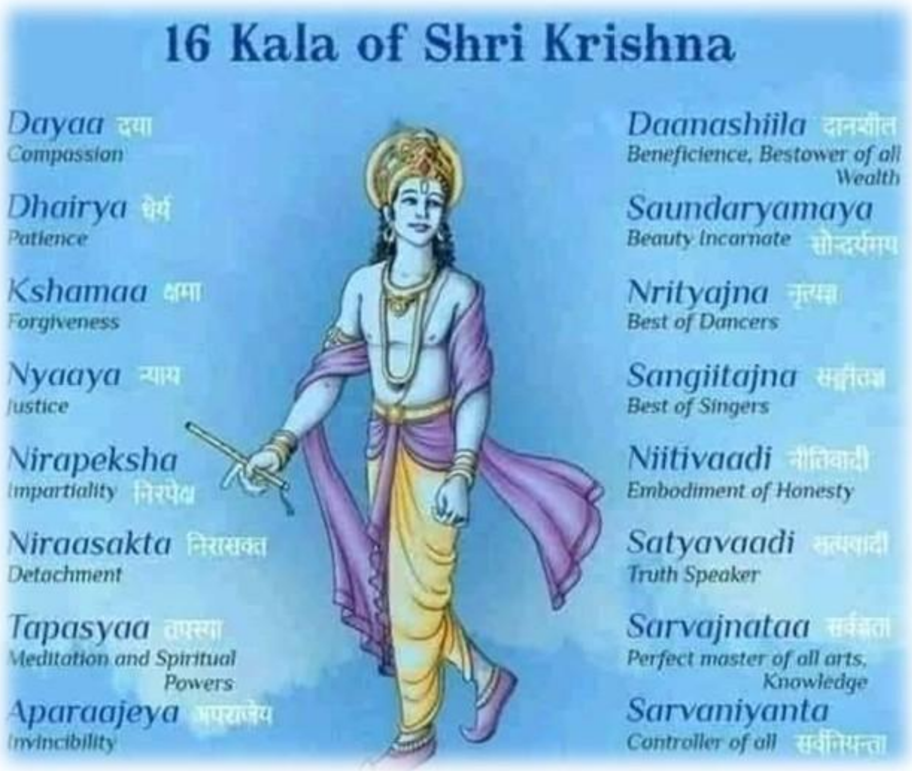

Author: Brahma Kumaris, Mt Abu

Published by: Shiv Baba Services Initiative

Main Website: www.shivbabas.org | **BK Google**: www.bkgoogle.org

Get free PDF books: shivbabas.org/books

भाग - 6

दिव्य वाणी माला

(1969 से 2015)

सर्वस्वत्यागी

सर्व स्नेही

सर्वोपकारी

सर्वगुण दाता

अव्यक्त वाणी संकलन

शुभकामनाएँ एवं आशीर्वचन

भाग : 6

इस भाग में जिन 17 गुणों का वर्णन हैं, वह हमें ब्राह्मण जीवन में उमंग-उल्लास में रहकर सेवा करने की विधि बताते है। साथ ही वैराग्य के फाउण्डेशन द्वारा कैसे सर्वस्व त्यागी और उपराम बन सकते है, यह बताते है। ट्रस्टी बन बाबा के साथ के अनुभव से वफादार और फरमानबरदार बनने से कैसे संतुष्टता सो सम्पूर्णता को प्राप्त कर सकते है, यह भी बताया है।

जो बच्चे बेहद के वैराग्य को धारण करते है, वह सदैव उपराम रहते है। साक्षीपन का अभ्यास उन्हे परमात्मा के साथीपन का सदैव अनुभव कराता है। वह सर्वस्व त्यागी बनते है और अपना हर कार्य ट्रस्टी बन करते है। परमात्मा के साथीपन के अभ्यास से वह सदैव उमंग उल्लास में रहते है। परमात्मा से स्पष्ट होने के कारण वह उदारचित्त बन सिम्पथी को धारण करते है। सिम्पलीसिटिका गुण उनमें स्वतः आ जाता है और वह सदैव संतुष्ट रहते हैं।

इन सभी 17 गुणों की धारणा से हम सहज ही संतुष्टता सो सम्पूर्णता का अनुभव करने लगते हैं। स्वयं से संतुष्ट बन औरों से संतुष्टता का सर्टिफिकेट प्राप्त करते है। इन आत्माओं से परमात्मा आपेही संतुष्ट बन जाते है।

धन्यवाद।

परम आदरणीय नलिनी दीदी जी,
संचालिका, घाटकोपर सबझोन

दिव्य गुण माला -6

सूची

क्र.	गुण	पृष्ठ क्र.
1	स्नेह, सहयोग	1
2	स्वतंत्रता	2
3	समीपता	3
4	साक्षीपन / साथीपन / ट्रस्टी / उपराम	13-56
5	सर्वस्व त्यागी	57-75
6	सिम्पलिसिटी	76-78
7	सत्यता, सच्चाई, निर्भयता	79-134
8	उमंग उत्साह	135-156
9	वफादार / फरमानबरदार	157-160
10	वैराग्य	161-187

1. स्नेह, सहयोग

28.11.69.. .. .. बापदादा तो किस न किस रुप से साथ निभाने अर्थात् अंगुली पकड़ने की कोशिश करते रहते हैं। इतने तक जो बिल्कुल साँस निकलने तक, साँस निकलने वाला भी होता है तो भी जान भरते हैं। लेकिन कोई आक्सीजन लगाने ही न दे, नली को ही निकाल दे तो क्या करेंगे? अगर बापदादा का सहयोग चाहिए तो वास्तव में सहयोग कोई माँगने की चीज नहीं है। सहयोग, स्नेही को स्वत: ही प्राप्त होता है। आप बापदादा का स्नेही बनो तो सहयोग स्वत: ही प्राप्त होगा। माँगने की आवश्यकता नहीं।

जो बीत चुका उसका चिन्तन न करके, बीती हुई बातों से शिक्षा लेकर आगे के लिए सावधान। अगर बीती हुई बातों को सोचते र जो सहयोगी होंगे उनकी परख क्या होगी? वह परिवार और बापदादा के विचारों और जो कर्म होते हैं उनमें एक दो के समीप होंगे। एक दो के मत के समीप आते जायेंगे तो फिर मतभेद खत्म हो जायेगा।

13.3.71.. ... जितना योगी उतना सर्व का सहयोगी और सर्व के सहयोग का अधिकारी स्वत: ही बन जाता है। योगी अर्थात् सहयोगी। योगी को सहयोग क्यों प्राप्त होता है? क्योंकि बीज से योग लगाते हो। बीज से कनेक्शन अथवा स्नेह होने के कारण स्नेह का रिटर्न सहयोग प्राप्त हो जाता है। एक बीज से योग अर्थात् कनेक्शन होने के कारण सर्व आत्मायें अर्थात् पूरे वृक्ष के साथ कनेक्शन हो ही जाता है।

2. स्वतंत्रता

26-4-77 ....जो हर बात में स्वतंत्र होगा – किसी भी प्रकार की परतंत्रता न हो। बाप-दादा भी स्वतंत्र बनने की ही शिक्षा देते रहते हैं। आजकल के वातावरण प्रमाण स्वतंत्रता चाहते हैं। सबसे पहली स्वतंत्रता पुरानी देह के अन्दर के सम्बन्ध से है। इस एक स्वतंत्रता से और सब स्वतंत्रता सहज आ जाती हैं। देह की परतंत्रता अनेक परतंत्रता में, न चाहते हुए भी ऐसे बांध लेती है जो उड़ते पक्षी आत्मा को पिंजरे का पक्षी बना देती है। तो अपने आपको देखो स्वतंत्र पक्षी हैं वा पिंजरे के पक्षी हैं? पुरानी देह वा पुराने स्वभाव संस्कार व प्रकृति के अनेक प्रकार के आकर्षण वश वा विकारों के वशीभूत होने वाली परतंत्र आत्मा तो नहीं हो? परतंत्रता सदैव नीचे की ओर ले जाएगी अर्थात् उतरती कला की तरफ ले जायेगी। कभी भी अतीइन्द्रिय सुख के झूले में झूलने का अनुभव नहीं करने देगी। किसी न किसी प्रकार के बन्धनों में बंधी हुई परेशान आत्मा अनुभव करेंगे, बिना लक्ष्य, बिना कोई रस, नीरस स्थिति का अनुभव करेंगे। सदा स्वयं को अनुभव करेंगे – न किनारा, न कोई सहारा स्पष्ट दिखाई देगा; न गर्मी का अनुभव, न खुशी का अनुभव – बीच में भंवर में होंगे। कुछ पाना है, अनुभव करना है, चाहिए-चाहिए में मंजिल से अपने को सदा दूर अनुभव करेंगे। यह है पिंजरे के पक्षी की स्थिति। (बिजली घड़ी-घड़ी बन्द हो जाती थी) अभी भी देखो प्रकृति के बन्धनों से मुक्त आत्मा खुश रहती है। अब अपना स्वतंत्र-दिवस मनाओ। जैसे बाप सदा स्वतंत्र है – ऐसे बाप समान बनो। जो अपने आपको स्वतंत्र नहीं कर सकते, स्वयं ही अपनी कमजोरियों में गिरते रहते वे विश्व परिवर्तक कैसे बनेंगे। तो अपने बन्धनों की सूची (List) सामने रखो। सूक्ष्म-स्थूल सबको अच्छी रीति चैक करो। अब तक भी अगर कोई बन्धन रहा है तो बन्धनमुक्त कभी भी नहीं बन सकेंगे। 'अब नहीं तो कब नहीं!' सदा यही पाठ पक्का करो। समझा? स्वतंत्रता ब्राह्मण जन्म का अधिकार है। अपना जन्म सिद्ध अधिकार प्राप्त करो। 5-5-77 ....कमज़ोरियों को दूर करने का सहज साधन कौन सा है? जो कुछ संकल्प में आता है, वह बाप को अर्पण कर दो। जो भी आवे वह बाप को सामने रखते हुए ज़िम्मेवारी बाप को दो, तो स्वयं स्वतंत्र हो जाएंगे। सिर्फ एक दृढ़ संकल्प रखो कि 'मैं बाप का और बाप मेरा।'

5-6-77.......'ट्रस्टी अर्थात् मेरापन नहीं।' जब मेरापन समाप्त हो जाता, तो लगाव भी समाप्त हो गया। ट्रस्टी बन्धन वाला नहीं होता, स्वतंत्र आत्मा होता, किसी भी आकर्षण में परतंत्र होना भी ट्रस्टीपन नहीं। 'ट्रस्टी माना ही स्वतंत्र।'

3. समीपता

18.1.70 .... जितना-जितना ब्राह्मण कुल से स्नेह और समीपता होगी उतना ही दैवी राज में समीपता होगी।

23.3.70......... स्पष्टता श्रेष्ठता के नज़दिक है और जितनी स्पष्टता होती है उतनी सफ़लता भी होती है। सफ़लता फिर इतनी समीपता में लाती है। समीप रत्नों की निशानी किससे मालूम पड़ेंगी? समानता से। बापदादा के संस्कारों की समानता से समीपता का मालूम पड़ता है। तो समानता समीपता की निशानी है।

7.6.70......जितना-जितना एक दो के समीप आयेंगे उतना सफ़लता समीप आयेगी। एक दो के समीप अर्थात् संस्कारों के समीप। तब कोई भी सम्मेलन की सफ़लता होगी। जैसे समय समीप आ रहा है वैसे सभी समीप आ रहे हैं। लेकिन अब ऐसी समीपता में क्या भरना है? जितनी समीपता उतना एक दो को सम्मान देना।जितना एक दो को सम्मान देंगे उतना ही सारी विश्व आप अभी का सम्मान करेंगी सम्मान देने से सम्मान मिलेगा।

27.7.70 ......समीप सितारों के लक्षण क्या होते हैं? जिसके समीप हैं उन समान बनना है। समीप सितारों में बापदादा के गुण और कर्त्तव्य प्रत्यक्ष दिखाई पड़ेंगे। जितनी समीपता उतनी समानता देखेंगे। उनका मुखड़ा बापदादा के साक्षात्कार कराने का दर्पण होता है।

6.8.70 ......जितनी-जितनी समीपता उतनी समानता। अन्त में अब बच्चे भी अपनी रचना के रचयिता बनकर प्रैक्टिकल में अनुभव करेंगे।

9.10.71 .....जहाँ सच्चाई-सफाई है वहाँ समीपता होती है। जैसे बापदादा के समीप हैं। राज्य सिर्फ एक से तो नहीं चलता है ना, आपस में भी सम्बन्ध में आना है। वहाँ भी आपस में समीप सम्बन्ध में कैसे आोंगे? जब यहाँ दिल समीप होगी। यहाँ के दिल की समीपता वहाँ समीपता लायेगी। एक-दो के स्वभाव, मन के भाव – दोनों में समीपता होनी चाहिए। स्वभाव की भिन्नता के कारण ही समीपता नहीं होती है। कोई रमणीक होगा तो समीपता होगी, कोई आफीशल होगा तो समीपता नहीं। लेकिन यहाँ तो सर्व गुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण बनना है ना। यह कला भी कम क्यों?

9.10.71 ....स्नेह के धागे से मोती अति समीप होते हैं, तब ही माला बनती है। समीपता ही माला बनाती है। तो स्नेह का धागा तैयार हुआ लेकिन अभी मणकों को एक-दो के समीप मन की भावना और स्वभाव मिलाना है, तब माला प्रत्यक्ष दिखाई देगी। यह ज़रूर करना है। ऐसी कमाल कर दिखाना।

18.10.71 ......स्नेही तो हो और इसी स्नेह की निशानी, एक-दो के समीपता की निशानी दीपमाला कहा जाता है।

4.3.72 ......आलस्य धीरे-धीरे पहले साधारण पुरुषार्थी बनाेगा वा समीपता से दूर करेगा; फिर दूर करते-करते धोखा भी दे देगा, कमजोर बना देगा, निर्बल बना देगा। निर्बल वा कमजोर बनने से कमियों की प्रवेशता शुरु हो जाती है। इसलिए सदैव यह चेक करना – मेरी बुद्धि की लगन बाप वा बाप के कर्त्तव्य से थोड़ी भी दूर तो नहीं है, बिल्कुल समीप वा साथ-साथ है?

8.6.72 ......निन्दा सुनते हुए भी ऐसे ही अनुभव हो कि यह निन्दा नहीं, सम्पूर्ण स्थिति को परिपक्व करने के लिये यह महिमा योग शब्द हैं, ऐसी समानता रहे। इसको ही बापदादा के समीपता की स्थिति कह सकते हैं। .

20.11.72 ....जो कुछ चल रहा है, जो कर रहे हो वह ड्रामा प्रमाण बहुत अच्छा है लेकिन अभी समय प्रमाण, समीपता के प्रमाण शक्ति रूप का प्रभाव स्वयं शक्ति रूप हो दूसरों के ऊपर डालेंगे तब ही अंतिम प्रतक्षता समीप ला सकेंगी।

24.12.72 ......अब समय समीपता की घंटियां बजा रहा है। आप लोग भी जोर-शोर से बाप के परिचय का प्रत्यक्ष सबूत दिखाने का पुरुषार्थ करो। जो पालना ली है उस पालना का फल दिखाओ।

13.4.73 ......अब समय की समीपता के साथ सम्पन्न स्टेज भी चाहिए। आप आत्माओं की सम्पन्न स्टेज ही सम्पूर्णता को समीप लायेगी।

6.6.73 ....मस्तक मणि की दो विशेषतायें ये हैं – एक समानता और दूसरी समीपता।बापदादा के भी समीप, लेकिन बापदादा के साथ ही सर्व विश्व की आत्माओं के संस्कार व स्वभाव के भी समीप हो। किसी भी प्रकार के संस्कार वाला हो लेकिन बापदादा

के समीप होने के कारण, परखने की पॉवर (Power) होने के कारण, चुम्बक के समान कितनी भी दूर वाली आत्मा को बापदादा के समीप लाने वाले हैं। बाप के गुणों, बाप के कर्त्तव्यों के समीप लाने वाले हैं। समीप अर्थात् चुम्बक स्वरूप होगा। चुम्बक समान और चुम्बक के समीप होने के कारण सर्व-शक्तियों के आधार से विश्व के उद्धार करने के निमित्त बनते हैं। तो समीप आत्मायें विश्व का आधार और विश्व का उद्धार करने वाली हैं – वह मस्तकमणि हैं।

8.6.73 ......यहाँ भी खेल-खेल में आत्माओं की समीपता का मेल होता है। आत्माओं के संस्कार स्वभाव का मेल होता है। खेल के साथी बहुत पक्के होते हैं, जीवन के अन्त तक अपना साथ निभाते हैं। रूहानी खेल के साथ अन्त तक आपस में मेल निभाते हो, तब तो इस मेल की निशानी 'माला' बनी हुई है। सभी बातों में जब अन्त में एक दूसरे के समीप हो जाते, मेल हो जाता तब दाना दाने से मिल माला बनती है। यह मेल की निशानी (माला) है।

1.4.78 ......अभी प्राप्त होता है। हर महारथी को स्वयं को चेक करना है कि वर्तमान समय बाप-दादा के गुणों, नालेज और सेवा में समानता और साथीपन कहाँ तक है, समानता ही समीपता को लायेगी। अभी की स्टेज (अवस्था) और भविष्य स्टेज में और हर सेकेण्ड साथीपन का अनुभव जन्म-जन्मान्तर भी नाम रूप सम्बन्ध से साथ के अनुभव के निमित्त बनेंगे।

7.12.78 ....अब के सम्पूर्ण स्थिति के नज़दीक से अर्थात् बाप-दादा की समीपता के आधार से सारे कल्प की समीपता का आधार है इसलिए जितना चाहो उतना अपनी कल्प की प्रालब्ध बनाओ। समीपता का आधार श्रेष्ठता है। श्रेष्ठता का आधार अपने मरजीवा जीवन में विशेष दो बातों की चैकिंग करो- एक सदा पर उपकारी रहे हैं। दूसरा आदि से अब तक सदा बाल ब्रह्मचारी रहे हैं।

श्रेष्ठता का आधार, समीपता का आधार बाल ब्रह्मचारी अर्थात् सदा ब्रह्माचारी, जिसको ही फालो फादर भी कहते हैं।

2.1.79 ......सम्पूर्णता की समीपता ही विश्व परिवर्तन के घड़ी की समीपता है – इसलिए अब बीती सो बीती कर व्यर्थ का खाता समाप्त करो-सदा समर्थ का खाता हर संकल्प में जमा करो

8.1.79 ......जितना यहाँ समीपता द्वारा सदा साथ है उतना ही मूलवतन में भी ऐसी आत्माएं साथ-साथ हैं। और स्वर्ग में भी हर दिनचर्या में सम्बन्ध का साथ है – जैसे यहाँ तुम्ही से बोलूँ तुम्ही से खेलूँ, तुम्हीं से साथ निभाऊंगा वैसे भविष्य में भी सवेरे से साथ बगीचे में खेलेंगे, रास करेंगे, पाठशाला मे पढ़ेंगे, सदा मिलते रहेंगे और फिर साथ-साथ राज्य करेंगे।

16-1-79 ......जितना जिस वस्तु के नजदीक जाते हैं उतना ही वह वस्तु स्पष्ट दिखाई देती है, स्पष्टता ही समीपता की निशानी है।

24-10-81 ......सच्चे आशिक की निशानी है – ''माशूक के समान'' अर्थात् माशूक जो है, जैसा है वैसे समान बनना। तो सभी कौन हो? आशिक तो हो ही लेकिन माशूक समान आशिक हो? समानता ही समीपता लाती है! समानता नही तो समीप भी नहीं हो सकते।

अब तो समय की समीपता कारण स्वयं को बाप के समान अर्थात् समानता द्वारा समीपता में लाओ। संकल्प, बोल, कर्म, संस्कार और सेवा सब में बाप जैसे समान बनना अर्थात् समीप आना।

18-11-81 ......व्यक्त में होते अव्यक्त रूप की अनुभूति करेंगे। जिससे सामने आने वाली आत्मायें व्यक्त भाव को भूल अव्यक्त स्थिति का अनुभव करेंगी। यह है समीपता की निशानी।

22.1.84........ जैसे हद की लड़ाई करने वाले योद्धे बाहुबल, साइन्स बल वाले योद्धे सर्व शस्त्रों से सजकर युद्ध के मैदान पर जाते हैं विजय का मैडल लेने के लिए, ऐसे आप सभी रूहानी योद्धे सेवा के मैदान पर जा रहे हो विजय का झण्डा लहराने के लिए। जितना-जितना विजयी बनते हो उतना बाप द्वारा स्नेह, सहयोग, समीपता, सम्पूर्णता के विजयी मैडल्स प्राप्त करते हो।

26-2-84 'बापदादा आज अपनी चित्रशाला को देख रहे हैं। बापदादा की चित्रशाला है यह जानते हो? आज वतन में हर बच्चे के चरित्र का चित्र देख रहे थे। हर एक का आदि से अब तक का चरित्र का चित्र कैसा रहा! तो सोचो चित्रशाला कितनी बड़ी होगी! उस चित्र में रहेक बच्चे की विशेष तीन बातें देखीं! एक– पवित्रता की पर्सनैलिटी। दूसरा – रीयल्टी की रायल्टी। तीसरा – सम्बन्धों की समीपता। यह तीन बातें हरेक चित्र में देखीं। प्युरिटी की

पर्सनैलिटी आकार रूप में चित्र के चारों ओर चमकती हुई लाइट दिखाई दे रही थी। रीयल्टी की रायल्टी चेहरे पर हर्षितमुखता और स्वच्छता चमक रही थी और सम्बन्धों की समीपता मस्तक बीच चमकता हुआ सितारा कोई ज्यादा चारों ओर फैली हुई किरणों से चमक रहा था, कोई थोड़ी-सी किरणों से चमक रहा था। समीपता वाली आत्मायें बाप समान बेहद की अर्थात् चारों ओर फैलती हुई किरणों वाली थीं। लाइट और माइट दोनों में बाप समान दिखाई दे रही थीं। ऐसे तीनों विशेषताओं से हरेक चरित्र का चित्र देखा।

पर्सनैलिटी, रायल्टी और समीपता इन तीन विशेषताओं से चेक करो कि मेरा चित्र कैसा होगा? मेरे लाइट की गति कैसी होगी? नम्बरवार तो हैं ही।

7.1.85 .....अब समय प्रमाण मास्टर विधाता का पार्ट बजाना है। क्योंकि समय की समीपता है अर्थात् बाप समान बनना है।

11-11-85..... दीपमाला आप सबकी तीन विशेषताओं का यादगार है— एक है समीपता– समीपता में स्नेह समाया हुआ है। अगर माला में स्नेह का, समीपता का आधार न हो तो माला नहीं बन सकती। मणका मणके से वा दीपक-दीपक से जब स्नेह से समीप आता है तब ही माला कहलाई जाती है। स्नेह अर्थात् 'समीपता'। स्नेह की निशानी समीपता ही होती है। एक समीपता। दूसरी – सम्पन्नता। दीपमाला सम्पन्नता की निशानी है। सिर्फ़ एक लक्ष्मी धन की देवी नहीं है लेकिन आप सभी धन से सम्पन्न देवियाँ हो। धन देवी होने के कारण धन्य देवी भी गाये जाते हैं। तो धन देवी-धन्य देवी यह सम्पन्ता की निशानी है। तीसरी बात सम्पूर्णता। सम्पूर्णता अर्थात् सदा जगे हुए दीपक। बुझे हुए दीपकों की दीपमाला नहीं कही जाती। जगे हुए दीपक की दीपमाला कही जाती। तो सदा एक रस जगे हुए दीपकों की निशानी – सम्पूर्णता है। तो दीपमाला समीपता, सम्पन्ता और सम्पूर्णता की विशेषताओं का यादगार है। इसलिए दीपमाला को बड़ा दिन कहा जाता है।

30-12-85........ जैसे समय समीप आ रहा है – वैसे हर आत्मा को बाप की, परिवार की समीपता का विशेष अनुभव कराओ। मनन करो कि क्या नवीनता लानी है। हर सेकण्ड वा हर कदम में समीपता और सम्पूर्णता के समीप आने के लक्षण स्वयं को भी अनुभव हों और दूसरों को भी अनुभव हों। इसको कहा जाता है परसेन्टेज को आगे बढ़ाना। अर्थात् कदम

आगे बढ़ाना। परसेन्टेज की नवीनता, स्पीड की नवीनता इसको कहा जाता है। तो हर समय नवीनता को लाते रहो।

15.1.86...... जो समीप सितारे हैं उनके लक्षण क्या होंगे? उत्तर – उनमें समानता दिखाई देगी। समीप सितारों में बापदादा के गुण और कर्तव्य प्रत्यक्ष दिखाई देंगे। जितनी समीपता उतनी समानता होगी। उनका मुखड़ा बापदादा का साक्षात्कार कराने वाला दर्पण होगा। उनको देखते ही बापदादा का परिचय प्राप्त होगा। भले देखेंगे आपको लेकिन आकर्षण बापदादा की तरफ होगी। इसको कहा जाता है – 'सन शोज फ़ादर'।

22.1.86 .....मुरलियाँ तो बहुत सुनी – अब तो बापदादा को यह वर्ष विशेष प्रत्यक्ष स्वरूप, बापदादा के स्नेह का प्रमाण स्वरूप, सम्पूर्ण और सम्पन्न बनने के समीपता का स्वरूप, श्रेष्ठ संकल्प, श्रेष्ठ बोल, श्रेष्ठ कर्म, श्रेष्ठ सम्बन्ध और सम्पर्क ऐसा श्रेष्ठ स्वरूप देखना चाहते हैं। जो सुना, सुनना और स्वरूप बनना यह समानता देखना चाहते हैं।

18.1.87..... मधुबन निवासी अर्थात् सदा मधुरता द्वारा बाप के समीपता का साक्षात्कार कराने वाले। संकल्प में भी मधुरता, बोल में भी मधुरता, कर्म में भी मधुरता – यही बाप की समीपता है।

15-3-88........यहाँ के स्नेह-भरे परिवार का सम्बन्ध, वहाँ भी चाहे राजा और प्रजा बनते लेकिन प्रजा भी अपने को परिवार समझती है, स्नेह की समीपता परिवार की रहती है। चाहे मर्तबे रहते हैं लेकिन स्नेह के मर्तबे हैं, संकोच और भय के नहीं। तो भविष्य की तस्वीर आप हो ना। यह सब बातें अपनी तस्वीर में चेक करो - कहाँ तक श्रेष्ठ तस्वीर बन करके तैयार हुई है कि अभी तक रेखायें खींच रहे हो? होशियार आर्टिस्ट हो ना! बापदादा यही देखते रहते हैं कि हर एक ने कहाँ तक तस्वीर तैयार की है?

11-8-88 .....सबकी बुद्धि बहुत अच्छी चल रही है और एक दो के समीप आ रहे हो ना! इसलिए सफ़लता अति समीप है। समीपता सफ़लता को समीप लायेगी। थक तो नहीं गये हो? बहुत काम मिल गया है? लेकिन आधा काम तो बाप करता है। सबका उमंग अच्छा है। दृढ़ता भी है ना! समीपता कितनी समीप है? चुम्बक रख दो तो समीपता सबके गले में माला डाल देगी, ऐसे अनुभव होता है?

27.11.89 .....सच्चे दिल से अपना पोतामेल देना और स्नेह की रूह-रूहान के पत्र लिखना अर्थात् पिछला समाप्त करना और स्नेह की रूह-रूहान सदा समीपता का अनुभव कराती रहेगी।

18-1-91 .....धागा भी है, दाने भी है लेकिन दाना दाने के समीप नहीं है इसलिए माला तैयार नहीं है। अपनी रीति से दाना तैयार है लेकिन संगठन में, समीपता में तैयार नहीं है। तो तपस्या वर्ष में बाप समान तो बनना ही है लेकिन दाना दाने के समीप भी आना है।

18.1.92.....सभी समीप के साथी है ना! साथ रहें और साथ चलेंगे और साथ ही राज्य करेंगे। संगम पर भी समीप, निराकारी दुनियामें भी समीप और राजधानी में भी समीप। जन्मते ही समीपता का वरदान मिला। सभी समीपता के वरदानी हैं - ऐसे अनुभव होता है ना? साथ का अनुभव होना यही समीपता की निशानी है।

20.12.92.....जो समान स्थिति वाले हैं वे सदा बाप के साथ रहते हैं। शरीर से चाहे किसी कोने में बैठे हों, किनारे बैठे हों, पीछे बैठे हों लेकिन मन की स्थिति में साथ रहते हो ना। साथ वही रहेंगे जो समान होंगे। स्थूल में चाहे सामने भी बैठे हों लेकिन समान नहीं तो सदा साथ नहीं रहते, किनारे में रहते हैं। तो समीप रहना अर्थात् समान स्थिति बनाना। इसलिए सदा ब्रह्मा बाप समान पुरुषोत्तम स्थिति में स्थित रहो। कई बच्चों की चलन और चेहरा लौकिक रीति में भी बाप समान होता है तो कहते हैं–यह तो जैसे बाप जैसा है। तो यहाँ चेहरे की बात तो नहीं लेकिन चलन ही चित्र है। तो हर चलन से बाप का अनुभव हो–इसको कहते हैं बाप समान। तो समीप रहना चाहते हो या दूर? इस एक जन्म में संगम पर स्थिति में जो समीप रहता है, वह परमधाम में भी समीप है और राजधानी में भी समीप है। एक जन्म की समीपता अनेक जन्म समीप बना देगी।

31-12-93 .....सबसे श्रेष्ठ प्रतक्ष फल है–समीपता का अनुभव होना और समीपता की निशानी है–समान बनना। प्रत्यक्ष फल खाने वाले हो इसीलिये सदा हेल्दी, वेल्दी और हैप्पी हो।

5.12.94 ....समय की समीपता का फाउण्डेशन है – बेहद की वैराग वृत्ति। बापदादा ने चेक किया बेहद की वैराग वृत्ति के बजाय नोनो प्रकार के छोटेछोटे लगाव का विस्तार बहुत बड़ा है। इस विस्तार ने सार को छिपा लिया है। समझा? अब क्या करना है?

19.1.95 .....दिल की समीपता साकार में भी समीपता अनुभव कराती है। चाहे किसी भी देश में हैं लेकिन दिल की समीपता साथ का अनुभव कराती है। अलग हो नहीं सकते, असम्भव है। परमात्म वायदा कभी टल नहीं सकता। परमात्म वायदा भावी बन जाता है तो भावी टाली नहीं टले। इसलिो सदा समीप हैं, सदा साथी हैं और साथी बन हाथ में हाथ, साथ लेते हुए कितने मौज से चल रहे हैं।

22-10-94(अव्यक्त सन्देश) स्व और सेवा का बैलेन्स रखते, संगठन को शक्तिशाली बनाए एक दो को हिम्मत देते एक दो के बिचारों के समीप आना है क्योंकि ब्राह्मणों के संगठन की समीपता ही सफ़लता का साधन है।

15-11.99....बापदादा सदा कहते हैं कि किसी भी रूप में अगर एक बाबा का सम्बन्ध ही याद रहे, दिल से निकले – 'बाबा', तो समीपता का अनुभव करेंगे।

11-11-2000 ....अभी समय को समीप लाओ। आपके सम्पूर्णता की समीपता, श्रेष्ठ समय को समीप लायेगी।

9-10-2000(अव्यक्त सन्देश) ....बाबा बोले - एक दो के अनुभव से औरों का भी उमंग-उत्साह बढ़ता है और जहाँ जाते आपसी समीपता भी बढ़ती है,

11-10-2001(अव्यक्त सन्देश)...... अब समय प्रमाण सदा शान्ति देवा, शक्ति और सुख देवा बनने का समय है। जब निरन्तर ऐसी स्थिति में रहेंगे तब आप बच्चों द्वारा बाप की प्रत्यक्षता होगी और अनेक आत्मायें बाप के समीपता का अनुभव करेंगी।

30-11-2003 .....अभी समय की समीपता, बाप समान बनने की समीपता समाधान स्वरूप का अनुभव कराये। बहुत समय समस्या का आना, समाधान करना यह मेहनत की, अब बापदादा हर एक बच्चे को स्वमानधारी, स्वराज्य अधिकारी, समाधान स्वरूप में देखने चाहते हैं। अनुभवी मूर्त सेकण्ड में परिवर्तन कर सकता है।

30-11-05 ......समय की समीपता को देखते अपने को देखो - सेकण्ड में सर्व बन्धनों से मुक्त हो सकते हो? कोई भी ऐसा बन्धन रहा हुआ तो नहीं है? क्योंकि लास्ट पेपर में नम्बरवन होने का प्रत्यक्ष प्रमाण है, सेकण्ड में जहाँ, जैसे मन-बुद्धि को लगाने चाहो वहाँ सेकण्ड में लग जाये। हलचल में नहीं आये। जैसे स्थूल शरीर द्वारा जहाँ जाने चाहते हो, जा

सकते हो ना! ऐसे बुद्धि द्वारा जिस स्थिति में स्थित होने चाहो उसमें स्थित हो सकते हो? जैसे साइंस द्वारा लाइट हाउस, माइट हाउस होता है, तो सेकण्ड में स्विच आन करने से लाइट हाउस चारों ओर लाइट देने लगता है, माइट देने लगते हैं। ऐसे आप स्मृति के संकल्प का स्विच आन करने से लाइट हाउस, माइट हाउस होके आत्माओं को लाइट, माइट दे सकते हो? एक सेकण्ड का आर्डर हो अशरीरी बन जाओ, बन जायेंगे ना! कि युद्ध करनी पड़ेगी? यह अभ्यास बहुतकाल का ही अन्त में सहयोगी बनेगा। अगर बहुतकाल का अभ्यास नहीं होगा तो उस समय अशरीरी बनना, मेहनत करनी पड़ेगी। इसलिए बापदादा यही इशारा देते हैं - कि इस अभ्यास को सारे दिन में कर्म करते हुए भी अभ्यास करो। इसके लिए मन के कन्ट्रोलिंग पावर की आवश्यकता है। अगर मन कन्ट्रोल में आ गया तो कोई भी कर्मेन्द्रिय वशीभूत नहीं कर सकती। अभी सर्व आत्माओं को आपके द्वारा शक्ति का वरदान चाहिए।

14-03-06 ....समय की समीपता को सामने देखते हुए सेवा और स्व-उन्नति को कम्बाइन्ड रखो। सिर्फ स्व-उन्नति भी नहीं चाहिए, सेवा भी चाहिए लेकिन स्व-उन्नति की स्थिति से सेवा में सफलता अधिक होगी।

सन्तुष्टता बाप के समीपता का अनुभव कराती है। तो चारों ओर सन्तुष्टता की लहर अच्छी तरह से फैलाओ।

15-12-07 .....बापदादा समय की समीपता का बार-बार इशारा दे रहा है। स्व-पुरुषार्थ का समय बहुत थोड़ा है, इसलिए अपने जमा के खाते को चेक करो। तीन विधियां खजानों को जमा करने की पहले भी बताई हैं, फिर से सुना रहे हैं। उन तीनों विधियों को स्वयं चेक करो। एक है - स्वयं के पुरुषार्थ से प्रालब्ध का खजाना जमा करना। प्राप्तियों का खजाना जमा करना। दूसरा है - सन्तुष्ट रहना, इसमें भी सदा शब्द एड करो और सर्व को सन्तुष्ट करना, इससे पुण्य का खाता जमा होता है। और यह पुण्य का खाता अनेक जन्मों के प्रालब्ध का आधार रहता है। तीसरा है - सदा सेवा में अथक, नि:स्वार्थ और बड़ी दिल से सेवा करना, इससे जिसकी सेवा करते हैं उनसे स्वत: ही दुआयें मिलती हैं। यह तीन विधियां हैं, स्वयं का पुरुषार्थ, पुण्य और दुआ। यह तीनों खाते जमा हैं?

02-02-08 ......समय की समीपता को कामन बात नहीं समझो। अचानक और एवररेडी शब्द को अपने कर्मयोगी जीवन में हर समय स्मृति में रखो। अपने शान्ति की शक्ति का स्वयं

प्रति भी भिन्न-भिन्न रूप से प्रयोग करो। जैसे साइन्स अपना नया-नया प्रयोग करती रहती है। जितना स्व के प्रति प्रयोग करने की प्रैक्टिस करते रहेंगे उतना ही औरों प्रति भी शान्ति की शक्ति का प्रयोग होता रहेगा।

24-10-10 ....बापदादा इशारा दे रहा है समय तीव्रगति से समीपता के नजदीक आ रहा है। उस हिसाब से अभी विशेष स्वभाव और संस्कार के परिवर्तन में तीव्रगति चाहिए।

4. साक्षीपन / साथीपन / ट्रस्टी / उपराम

9.11.69... साक्षी- कुमारियां कमाल करेंगी तो साथी साथ भी देगा। नहीं तो साथी साक्षी हो जायेगा। इसलिए साथी को साथ रखना है। नहीं तो साक्षी बन जायेंगे। साक्षी अच्छा लगता है या साथी?.

23.3.70.. .. ..अनेक जन्मों का हिसाब-किताब एक जन्म में खत्म करने के कारण कभी-कभी वह फोर्स से रूप ले आता है। बापदादा यह युद्ध देखते रहते हैं आप भी देखती हो अपनी वा दूसरों की? जब साक्षी हो देखने लग पड़ते तो यह व्याधि बदलकर खेल रूप में हो जाती है। बापदादा साक्षी हो देखते भी हैं और उनका साहस देखकर हर्षित भी होते हैं। और साथ-साथ सहयोगी भी बनते हैं। थकती तो नहीं हो ना। (नहीं) अथक बाप के बच्चे अथक और अविनाशी हो। मालूम है अब क्या करना है? अब अन्त में साक्षात्कार मूर्त्त बनना है। जितना साक्षी अवस्था ज्यादा रहेगी उतना समझो कि साक्षात्कार मूर्त्त बनने वाले हैं। अब अन्तिम पुरुषार्थ यह रह गया है। साक्षात्कार मूर्त्त बन बापदादा का साक्षात्कार और अपना साक्षात्कार कराना है।.

02.02.70... कोई भी सामने आयेंगे वह चित्र आपके नयनों में देखेंगे, नयन को देखते ही बुद्धियोग द्वारा अनेक साक्षात्कार होंगे। ऐसे साक्षात्कार मूर्त अपने को बनाना है। लेकिन साक्षात्कार मूर्त वह बन सकेंगे जो सदैव साक्षी स्थिति में स्थित होंगे। उनके नयन प्रोजेक्टर का काम करेंगे। उनका मस्तक सदैव चमकता हुआ दिखाई पड़ेगा।.

06.08.70... जितना साक्षी रहेंगे उतना साक्षात्कारमूर्त्त और साक्षात् मूर्त्त बनेंगे। साक्षीपन कम होने के कारण साक्षात् और साक्षात्कारमूर्त्त भी कम बने हैं। इसलिए यह अभ्यास करो । कौन सा अभ्यास? अभी-अभी आधार लिया, अभी-अभी न्यारे हो गये। यह अभ्यास बढ़ाना अर्थात् सम्पूर्णता और समय को समीप लाना है।.

निर्माण बनने से प्रतक्ष प्रमाण बन सकेंगे। निर्माण बनने से विश्व का निर्माण कर सकेंगे। समझा। ऐसी स्थिति को धारण करने के लिए साक्षीपन की राखी बांधनी है। जब पहले से ही साक्षीपन की राखी बांध के जायेंगे तो राखी की सर्विस सफलतापूर्वक होगी।.

26.03.70.. .. ..जो साक्षी बनते हैं उनका ही दृष्टान्त देने में आता है। तो साक्षी द्रष्टा का सबूत और दृष्टान्त के रूप में सामने रखना है।.

02.04.70.. .. जितना संस्कारों को समानता में लावेंगे उतना ही समीप आयेंगे। कौनसे संस्कार? साकार रूप के संस्कार उपराम और साक्षी दृष्टा यह साकार के सम्पूर्ण स्थिति के श्रेष्ठ लक्षण थे। इन संस्कारों में समानता लानी है। इन गुणों से सर्व के दिलों पर विजयी होंगे।

जो संगम पर सर्व के दिलों पर विजयी बनता है वही भविष्य में विश्व महाराजन् बनते हैं। विश्व में सर्व आ जाते हैं। तो बीज यहां डालना है फल वहां लेना है।.

29.06.70... विनाशी सम्पत्ति तो कोई बड़ी बात नहीं है। लेकिन जो अविनाशी सम्पत्ति सुख, शान्ति, पवित्रता, प्रेम, आनन्द की प्राप्ति होती है जन्मसिद्ध अधिकार के नाते, उसको भी और आत्माओं की सेवा में समर्पण कर दिया। बच्चों की शान्ति में स्वयं की शान्ति समझी। तो आत्माओं को शान्ति देने में ही अपनी शान्ति समझें। यह है लौकिक सम्पत्ति और साथ-साथ ईश्वरीय सम्पत्ति को भी समर्पण करके अपनी साक्षी स्थिति में रहना। तो समर्पण शब्द का इतना बड़ा विशाल रहस है।.

13.03.71... जैसे टेलीफोन में एक-दो का आवाज़ कैच कर सकते हैं, वैसे कोई के संकल्प में क्या है, वह भी कैच करेंगे। अभी अजुन बन रहे हो, इसलिए सोचना पड़ता है। दो शब्द हैं – (1) साक्षी और (2) साथी। एक तो साथी को सदैव साथ रखो। दूसरा – साक्षी बनकर हर कर्म करो। तो साथी और साक्षी – ये दो शब्द प्रैक्टिस में लाओ तो यह बन्धनमुक्त की अवस्था बहुत जल्दी बन सकती है। सर्वशक्तिमान का साथ होने से शक्तियाँ भी सर्व प्राप्त हो जाती हैं। और साथ-साथ साक्षी बनकर चलने से कोई भी बन्धन में फंसेंगे नहीं। तो बन्धनमुक्त हुए हो ना। इसके लिए ये दो शब्द सदैव याद रखना। वह योग, वह सहयोग। दोनों बातें आ गईं। अब ऐसा पुरुषार्थ कितने समय में करेंगे? बिल्कुल बन्धनमुक्त होकर के साक्षीपन में निमित्तमात्र इस शरीर में रहकर कर्त्तव करना है।.

03.06.71 ... साक्षी अवस्था की स्थिति में स्थित होने से शक्ति मिलती है। जैसे कोई कमजोर होता है तो उनको शक्ति भरने के लिए ग्लूकोज़ चढ़ाते हैं। तो जब अपने को शरीर से परे अशरीरी आत्मा समझते हैं तो यह साक्षीपन की अवस्था शक्ति भरने का काम करती है। और जितना समय साक्षी अवस्था की स्थिति रहती है उतना ही बाप साथी भी याद रहता है अर्थात् साथ रहता है। तो साथ भी है और साक्षी भी है। एक साक्षीपन की शक्ति, दूसरा बाप के साथी बनने की खुशी की खुराक। तो बताओ फिर व भले शरीर का रोग होता है, उसकी नालेज रहती है कि यह फलाना दर्द है, इसका यह निवारण है। क्योंकि यह लक्ष है – जितना शरीर ठीक रखेंगे उतना सर्विस करेंगे। बाकी अपनेपन का कोई स्वार्थ नहीं है। सर्विस के निमित्त करते हो, यह साक्षीपन हुआ ना।.

04.07.71... कोई भी कार्य करते सिर्फ यह सोचो - मैं निमित्त हूँ, कराने वाला कौन है। जैसे भक्ति-मार्ग में शब्द उच्चारण करते थे 'करन-करावनहार।' लेकिन वह दूसरे अर्थ से कहते थे। लेकिन इस समय जो भी कर्म करते हो उसमें करन-करावनहार तो है ना। कराने वाला बाप है, करने वाला निमित्त है। अगर यह स्मृति में रख कर्म करते हैं तो सहज स्मृति नहीं हुई? निरन्तर योगी नहीं हुए? फिर कभी हंसी में नीचे आोंगे भी तो ऐसे अनुभव करेंगे जैसे हू-ब-हू स्टेज पर कोई ऐक्टर होते हैं तो समझते हैं कि लोक-कल्याण अर्थ हंसी का पार्ट

बजाया। फिर अपनी स्टेज पर तो बिल्कुल ऐसे अनुभव होगा जैसे अभी-अभी यह पार्ट बजाया, अब दूसरा पार्ट बजाता हूँ। खेल महसूस होगा। साक्षी हो जैसे पार्ट बजा रहे हैं।.

31.11.71... जैसे दूसरे के संस्कारों को साक्षी होकर देखते हो, वैसे अपने तमोप्रधान स्टेज के संस्कारों को भी ऐसे साक्षी हो देखना। ऐसे समाप्त कर देना। स्वाहा हो गया -- ऐसे समझने से ही सदा सफलता को पाते रहेंगे।

04.02.72... उपराम अवस्था वा साक्षीपन की अवस्था बात तो एक ही है। उसके लिए दो बातें यही धान में रहें–एक तो मैं आत्मा महान् आत्मा हूँ, दूसरा मैं आत्मा अब इस पुरानी सृष्टि में वा इस पुराने शरीर में मेहमान हूँ।.

27.02.72.. .. रोज अमृतवेले साक्षी बन आत्मा का श्रृंगार करो। करने वाले भी आप हो, करना भी अपने आप को ही है। फिर कोई भी प्रकार की परिस्थितियों में डगमग नहीं होंगे, अडोल रहेंगे। ऐसे को होली हंस कहा जाता है।.

31.05.72... सदा अपने को शिव-शक्ति वा अष्ट भुजाधारी अथवा अष्ट शक्तिधारी समझने से एक तो सदा साथीपन का अनुभव करेंगे और दूसरा सदा अपनी स्टेज साक्षीपन की अनुभव करेंगे। एक साथी और दूसरा साक्षी, यह दोनों अनुभव होंगे, जिसको दूसरे शब्दों में साक्षी अवस्था अर्थात् बिन्दु रूप की स्टेज कहा जाता है और साथीपन का अनुभव अर्थात् अव्यक्त स्थिति का अनुभव कहा जाता है। अष्ट शक्ति की धारणा होने से इन दोनों स्थिति का अनुभव सदा सहज और स्वत: करेंगे।.

08.6.72... वास्तव में ना महिमा का नशा, ना ग्लानि से घृणा आनी चाहिए। दोनों में बैलेन्स ठीक रहे; तो फिर स्वयं ही साक्षी हो अपने आपको देखो तो कमाल अनुभव होगी। अपने आपसे सन्तुष्टता का अनुभव होगा, और भी आपके इस कर्म से सन्तुष्ट होंगे।

04.08.72... साकार बाप साक्षी हो अपनी स्थिति का वर्णन नहीं करते थे? साक्षी हो अपनी स्थिति को चेक करना है। जो जैसे हैं वह वर्णन करने में ख्याल क्यों आना चाहिए? बाहर से अपनी महिमा करना दूसरी बात है, लेकिन अपने आपकी चेकिंग में बुद्धि की जजमेंट देना है।

19.9.72 ... जैसे हद का ड्रामा साक्षी हो देखा जाता है। फिर चाहे दर्दनाक हो वा हंसी का हो, दोनों पार्ट को साक्षी हो देखते हैं, अन्तर नहीं होता है क्योंकि ड्रामा समझते हैं। तो ऐसी एकरस अवस्था होनी चाहिए। चाहे रमणीक पार्ट हो, चाहे कोई स्नेही आत्मा का गम्भीर पार्ट भी हो तो भी साक्षी होकर देखो। साक्षी दृष्टा की अवस्था होनी चाहिए।

वह तब होगी जब एक ही बाप की याद में सदा मग्न होंगे। बाप और वर्सा, बस, तीसरा ना कोई। और, कोई बात देखते-सुनते वा कोई संबंध-सम्पर्क में आते हुए ऐसे समझेंगे जैसे साक्षी हो पार्ट बजा रहे हैं। बुद्धि उस लग्न में मग्न। बाप और वर्से की मस्ती रहे। इसलिए अब ऐसी स्टेज बनाओ, इसके लिए अपनी परख करने के लिए यह पेपर आते हैं। नहीं तो मालूम कैसे पड़े? हरेक की अपनी स्थिति को परखने के लिये थर्मामीटर मिलते हैं, जिससे अपनी

स्थिति को स्वयं परख सको। कोई को कहने की दरकार नहीं, घबराना नहीं, गहराई में जाओ तो घबराहट बंद हो जावेगी।

4.12.72 ... जब कर्मभोग का जोर होता है। कर्मेन्द्रियां बिल्कुल कर्मभोग के वश अपने तरफ आकर्षण करें, जिसको कहा जाता है बहुत दर्द है। कहते हैं ना-बहुत दर्द है, इसलिये थोड़ा भूल गई। लेकिन यह तो टग ऑफ वार (Tug of war;रस्सा-कशी) का समय है, ऐसे समय कर्मभोग को कर्मयोग मे परिवर्तन करने वाले, साक्षी हो कर्मेन्द्रियों को भोगनेवाने वाले जो होते हैं, उनको ही अष्ट रत्न कहा जाता है, जो ऐसे समय विजयी बन दिखाते हैं।

24.12.72.. .. जैसे सतयुग में मां-बाप पालना कर राज्यभाग के अधिकारी बनाकर, तख्तनशीन बनाकर राजतिलक दे अर्थात् ज़िम्मेवारी का तिलक दे स्वयं साक्षी हो देखते हैं। साथ होते भी साक्षी हो देखते हैं। तो यह विधान भी कहां से शुरु होगा? अब भी बापदादा इस विश्व सेवा के ज़िम्मेवारी का तिलक दे स्वयं साक्षी हो देखते हैं। साक्षी हैं ना। साथ होते भी साक्षी हैं। अभी का वर्ष और भी साक्षी बनने का है।

ईश्वरीय पढ़ाई का अब काफी समय बीत चुका है। इसलिए याद की यात्रा में रह अपनी चैकिंग करने के लिए अर्थात् स्वयं अपना ही शिक्षक बन, साक्षी बन अपना पेपर लेना है।

25.5.73.. .. जब समय भी शॉर्ट (Short) है तो प्लान भी शार्ट चाहिए। शार्ट हो लेकिन पॉवरफुल (Powerful) हो। वह दो शब्द कौन-से हैं? भविष्य प्लान प्रैक्टिकल रूप में दो शब्दों के आधार पर ही होना है। वह दो शब्द पहले भी सुनाये थे। एक तो 'साक्षात् बाप-मूर्त्त' और दूसरा 'साक्षी और साक्षात्कार-मूर्त्त'। जब तक यह दोनों मूर्त्त न बनी हैं, तब तक सारे विश्व का परिवर्तन थोड़े समय में कर नहीं पायेंगे। इस प्लान को प्रैक्टिकल में लाने के लिये जैसे अब भी स्टेज और स्पीच तैयार करते हो, वैसे ही आप को अपनी स्थिति की स्टेज तैयार करनी पड़े।

30.5.73.. .. जो समझते हैं कि सदैव अपने आप को साक्षी होकर रोज चेक (Check) करते हैं कि कभी भी चेक करना मिस (Miss) नहीं होता है– वह हाथ उठाओ? (थोड़ों ने हाथ उठाया)। अभी चेकर (Checker) ही नहीं बने हो? जो चेकर (Checker) न बना है वह मैकर (Maker) क्या बनेंगे?

8.7.73.. .. इस बेहद के खेल का नाम ही है- वैरायटी ड्रामा अर्थात् खेल। तो उसमें वैरायटी संस्कार व वैरायटी स्वभाव व वैरायटी परिस्थितियाँ देखकर कभी विचलित होंगे क्या? या उसे भी साक्षी हो एक-रस स्थिति में स्थित हो देखेंगे? तो अगर यह समझो व याद रखो कि यह एक वैरायटी खेल है तो जो पुरुषार्थ करने में मुश्किल समझते हो, क्या वह सहज नहीं हो जायेगा?

सदा बाप के साथ रहने वाले व सदा हर संकल्प, हर संकल्प में मिलन मनाने वाले, एक संकल्प व एक सेकेण्ड भी मेले से अलग नहीं होने वाले, सदैव साक्षी और स्मृति की सीट पर

सैट हो हर सीन देखने वाले खिलाड़ी व देखने वाले तीव्र पुरुषार्थी, एक सेकेण्ड में संकल्प और स्वरूप बनने वाले अर्थात् जो संकल्प किया और वह स्वरूप बने।

3.2.74.. .. जैसे बाप-दादा को साकार, आकार और निराकार अनुभव करते हो, क्या वैसे ही अपने को भी बाप-समान साकार होते हुए आकारी और निराकारी सदा अनुभव करते हो? यह अनुभव निरन्तर होने से इस साकारी तन और इस पुरानी दुनिया से स्वत: ही उपराम हो जावेंगे। ऐसे अनुभव करेंगे जैसे कि ऊपर-ऊपर से साक्षी हो इस पुरानी दुनिया को खेल सदृश्य देख रहे हैं। ऐसी पॉवरफुल (Powerful; शक्तिशाली) स्टेज अभी सदाकाल की होनी चाहिए।

26.06.74... यदि साक्षीपन नहीं, तो फिर सजा है।.

11.07.74... साक्षीपन के तख्त की मुख्य निशानी कौन-सी होगी? वह सदैव हर कदम, हर संकल्प में बापदादा को सदा साथी अनुभव करेंगे; जितना साथीपन का अनुभव होगा, उतना ही अचल, अडोल और अतीन्द्रिय सुख में रहेंगे। उनका हर बोल बाप के साथ दिखाई देगा।.

जब फॉलो-फादर है तो साक्षीपन और साथीपन का अनुभव, हर सेकेण्ड व हर कदम में होना चाहिए। ऐसे साक्षीपन के अनुभवी ही तख्तनशीन होते हैं।.

02.02.74... ऐसा न समझे कि मैं सर्विस नहीं करती हूँ - जैसे वाणी द्वारा सर्विस करते हैं, जितना एक भाषण का रिजल्ट होता है, उससे हजार गुणा ज्यादा इस प्रैक्टिकल अनुभव की सर्विस का रिजल्ट निकलता है - ऐसे समझ कर साक्षीपन से हिसाब-किताब चुक्तू करे तो सर्विस बहुत है।.

13.09.75... ऐसे समय पर एक तरफ नथिंग न्यू का पाठ भी याद रहना चाहिए- जिससे मिरुआं मौत मलूकाँ शिकार की स्थिति होगी तो साक्षीपन की स्थिति अर्थात् देखने में मजा भी आयेगा और साथ-साथ विश्व-कल्याणकारी की स्थिति जिसमें तरस भी होगा। दोनों का बैलेन्स (सन्तुलन) चाहिए। साक्षीपन की स्टेज भी और विश्व-कल्याणकारी स्टेज भी।.

01.10.75... सदा साक्षीपन की स्टेज स्मृति में रहती है? जब तक साक्षी स्वरूप की स्मृति सदा नहीं रहती तो बाप-दादा को अपना साथी भी नहीं बना सकते। साक्षी अवस्था का अनुभव, बाप के साथीपन का अनुभव कराता है।.

07.10.75... सदा त्रिमूर्ति तख्त-नशीन अनुभव करेंगे। त्रिकालदर्शीपन के स्मृति स्वरूप होने के कारण हर कर्म के तीनों कालों को जानने वाले हर कर्म को श्रेष्ठ कर्म वा सुकर्मी बनायेंगे। विकर्म का खाता समाप्त हुआ अनुभव होगा। हर कार्य, हर संकल्प सिद्ध हुआ ही पड़ा है ऐसा सदा अनुभव करेंगे, पुराने संस्कार और स्वभाव से उपराम अनुभव करेंगे, सदा साक्षीपन की सीट (Seat) पर स्वयं को सैट (Set) हुआ अनुभव करेंगे।.

12.10.75... सदा साक्षीपन की स्टेज स्मृति में रहती है? जब तक साक्षी स्वरूप की स्मृति सदा नहीं रहती तो बाप-दादा को अपना साथी भी नहीं बना सकते। साक्षी अवस्था का अनुभव, बाप के साथीपन का अनुभव कराता है।.

18.01.76... पार्ट भी बजा रहे हैं, लेकिन साथ-साथ साक्षीपन की स्टेज भी हो। 'साक्षीपन' की स्टेज होने से पार्ट भी एक्यूरेट (Accurate) बजायेंगे। लेकिन पार्ट का स्वरूप नहीं बन जायेंगे अर्थात् पार्ट के वश नहीं होंगे।.

07.02.76... ऐसे अनुभव होगा जैसे प्रैक्टिकल में, स्मृति-स्वरूप में अनेक बार देखी हुई सीन अब सिर्फ निमित्त मात्र रिपीट कर रहे हैं। कोई नई बात नहीं कर रहे हैं, लेकिन रिपीट कर रहे हैं। स्मृति लानी नहीं पड़ेगी। कल्प पहले जो हुआ था वही अब हो रहा है। लेकिन जैसे एक सेकेण्ड की बीती हुई बात बहुत स्पष्ट रूप से स्मृति में रहती है वैसे वह कल्प पहले की बीती हुई सीन ऐसे ही स्मृति में होगी जैसे कि एक सेकेण्ड पहले बीती हुई सीन स्मृति में रहती है। क्योंकि एक साक्षीपन, दूसरा त्रिकालदर्शी - यह दोनों स्टेज महारथियों की होने के कारण कल्प पहले की स्मृति बिल्कुल फ्रेश व ताज़ी रहेगी।.

08.02.76... करेक्शन करने के लिये सदैव साक्षीपन की स्टेज चाहिये। अगर साक्षी हो करेक्शन नहीं करेंगे तो यथार्थ कनेक्शन (Connection) रख न सकेंगे।.

09.02.76... बीती सो बीती को सोच-समझ कर करना है। व्यर्थ देखना, सुनना व बोलना सब बन्द। समर्थ आंखें खुली हों अर्थात् साक्षीपन की स्टेज पर रहो।.

09.05.77... बाप के साथ साथी बन पार्ट बजाते हो, और साथ-साथ हर पार्ट अपने साक्षीपन की स्थिति में स्थित हो बजाते हो। तो विशेषता हुई-'बाप के साथ साथी की और साक्षीपन की।' उस विशेषता के कारण ही विशेष पार्टधारी गाए जाते हैं।.

14.06.77... साक्षीपन की सीट पर स्थित होकर रहते हुए हर एक्ट अपनी और दूसरों की देखते हो? कोई ड्रामा की सीन सीट पर स्थित ही देखने में मजा आता है। कोई भी सीन सीट के बिना नहीं देखा जाता। तो साक्षीपन की सीट पर सदा स्थित रहते हो? यह बेहद का ड्रामा सदा चलता रहता है। यह दो-तीन घंटे का नहीं, अविनाशी है तो सदा देखने के लिए सीट भी सदा चाहिए। ऐसे नहीं दो घंटे सीट पर बैठा फिर उतर जाओ। तो सदा साक्षी हो देखेंगे वह 'कभी हार और जीत' के दृश्य को देखकर डगमग नहीं होंगे। सदा एक रस रहेंगे। ड्रामा याद रहे तो सदा एकरस रहेंगे। ड्रामा को भूले तो डगमग रहेंगे। अगर ड्रामा कभी-कभी याद रहता तो राज्य भी कभी-कभी करेंगे? अगर साक्षी कभी-कभी रहते तो स्वर्ग में साथी भी कभी-कभी होंगे। नॉलेजफुल तो हो ना? सब जानते हो लेकिन जानते हुए भी 'साक्षीपन' की स्टेज पर न रहने का कारण अटेंशन में अलबेलापन, स्वचिंतन की बजाए अपना व्यर्थ बातों में स्वचिन्तन को गंवा देते। स्वचिन्तन में न रहने वाला साक्षी नहीं रह सकता। परचिन्तन को समाप्त करने का आधार क्या है? अगर हर आत्मा के प्रति शुभ चिन्तक होंगे तो परचिन्तन

कभी नहीं करेंगे। तो सदा शुभचिन्तन और शुभचिन्तक रहने से सदा साक्षी रहेंगे। साक्षी अर्थात् अभी भी साथी और भविष्य में भी साथी।.

सब जानते हो लेकिन जानते हुए भी 'साक्षीपन' की स्टेज पर न रहने का कारण अटेंशन में अलबेलापन, स्वचिंतन की बजाए अपना व्यर्थ बातों में स्वचिन्तन को गंवा देते। स्वचिन्तन में न रहने वाला साक्षी नहीं रह सकता।.

25.07.77... निभाना अर्थात् मिक्स नहीं हो जाना, लेकिन निभाना अर्थात् वृत्ति-दृष्टि से सहयोग की सकाश देना। फिर सदा किसी भी प्रकार के वातावरण के सेक में नहीं आएगा। अगर सेक आता तो समझना चाहिए साक्षीपन की स्टेज पर नहीं हैं। कार्य के साथी नहीं बनना है, बाप के साथी बनना है। जहाँ साक्षी बनना चाहिए वहाँ साथी बन जाते तो सेक लगता। ऐसे निभाना सीखेंगे तो दुनिया के आगे लाईट हाउस बन करके प्रख्यात होंगे।.

07.12.78... सफ़लता का आधार साक्षी और साथीपन का अनुभव- सदा अपने को बाप के साथी समझकर चलते हो। अगर साथीपन का अनुभव होगा तो साक्षीपन का अनुभव होगा। क्योंकि बाप का साथ होने के कारण जैसे बाप साक्षी हो पार्ट बजाते हैं वैसे आप भी साथी होने के कारण साक्षी हो पार्ट बजायेंगे।.

हर सेकेण्ड का साथ है, हर सेकेण्ड में सम्बन्ध के कारण समीप हैं। जीवन में साथी की तलाश करते हैं और साथी के आधार पर ही अपना जीवन बिताते हैं, अब कौन सा साथी बनाया है? अविनाशी साथी। और कोई भी साथी समय पर वा सदा नहीं पहुँच सकता लेकिन बाप-दादा सदा और सेकेण्ड में पहुँच सकते। यह जन्म-जन्म का साथ है, भविष्य में भी बाप का तो साथ रहेगा ना। शिव बाप साक्षी हो जायेंगे और ब्रह्मा बाप साथी हो जायेंगे। अभी दोनों साथी हैं। ऐसे अनुभव करने वाले सदा खुश रहते हैं, जो पाना था वह पा लिया।.

31.01.79... हरेक ब्राह्मण बच्चा कर्म करने के पहले त्रिकालदर्शी स्टेज पर स्थित हो तीनों कालों को जानने वाले बन कर्म के आदि, मध्य, अन्त को जान कर्म करते हैं! और फिर कर्म करते समय साक्षी दृष्टा हो पार्ट बजाते हैं। ऐसे पार्ट बजाने वाले वर्तमान समय और भविष्य में भी पूज्य स्वरूप बन अनेक आत्माओं के आगे दृष्टान्त रूप बनते हैं। ऐसे ही साक्षी दृष्टा बन कर्म करने से कोई भी कर्म के बन्धन में कर्म बन्धनी आत्मा नहीं बनेंगे। कर्म का फल श्रेष्ठ होने के कारण कर्म सम्बन्ध में आवेंगे, बन्धन में नहीं।.

जो सदा बाप को अपना साथी बनाते और साक्षी हो पार्ट बजाते वह सदा न्यारे होंगे। जैसे वाटरप्रुफ़ होता है ना तो कितना भी पानी पड़े लेकिन एक बूँद भी असर नहीं करेंगी। सदा यह याद रखो कि हम सर्वशक्तिवान के साथ हैं। अगर कोई बहादुर का साथ होता है तो कितना निर्भय रहते हैं, यह तो सर्वशक्तिवान का साथ है तो कितना निर्भय रहना चाहिए।.

12.11.73... समय प्रति समय जैसे स्टेज आगे बढ़ती जा रही है, अब माया का वार नहीं होना चाहिए। अगर माया आये भी, तो उसे खेल समझकर देखो। ऐसे अनुभव हो जैसे साक्षी

होकर हद का ड्रामा देखते हैं। ऐसे इस माया के खेल का ड्रामा देखो तो बहुत मज़ा आयेगा, फिर घबरायेंगे नहीं।.

13.11.79... हरेक के संस्कार भिन्न-भिन्न हैं, दूसरा कोई-न-कोई माया का रूप बनकर भी आते हैं। यह तो खत्म होगा ही नहीं लेकिन उसमें स्वयं साक्षी और कमल पुष्प के समान सेफ रहें, यह तो कर सकते हो? बोलने वाला बोले लेकिन सुनने वाल न सुने, यह तो हो सकता है ना! मर्यादा की लकीर के अन्दर रहकर कोई भी बात का फैसला करो। संस्कार भिन्नभिन्न होते हुए भी टक्कर न हो, इसके लिए नालेज़फुल हो जाओ।.

28.11.79... कई बच्चों की कमाल भी देखी कि कैसे प्रवृत्ति में रहते हुए भी निवृत्त रहते हैं। प्रवृत्ति और निवृत्ति दोनों का बैलेन्स रखने वाले बहुत अच्छा श्रेष्ठ पार्ट बजा रहे हैं। सदा बाप के साथी और साक्षी हो बहुत अच्छा पार्ट बजाते, विश्व के आगे प्रत्यक्ष प्रमाण बने हुए हैं। सदा बाप की याद की छत्रछाया के अन्दर किसी भी प्रकार की माया के वार से व माया के अनेक आकर्षण से सदा सेफ़ रहने वाले हैं।.

03.12.79... बस बाप और बच्चा, बाप और मैं, इसी नशे में रहो। शक्ति सेना नष्टोमोहा हो या हद के घर में, बच्चों में मोह है। कुछ भी हो जाए लेकिन निर्मोही, साक्षी होकर ड्रामा की सीन देखते रहो।.

07.12.79... ड्रामानुसार कलियुगी दुनिया का दुःख और अशान्ति का नज़ारा देख बेहद के वैरागी बनते जायेंगे। कुछ भी होता है, अपनी सदा चढ़ती कला हो। दुनिया के लिए हाहाकार है और आपके लिए जय-जयकार है। आप जानते हो यह दुनिया हा-हाकार होने वाली है। हाहाकार होना अर्थात् जाना। किसी भी परिस्थिति में घबराना नहीं। हमारे लिए तैयारी हो रही है। साक्षी होकर सब प्रकार का खेल देखो। कोई रोता है, चिल्लाता है, साक्षी होकर देखने से मज़ा आता है। 'क्या होगा?' यह क्वेश्चन भी नहीं उठता। यह होना ही है। ऐसे अटल हो ना? 'क्या होगा?' यह क्वेश्चन तो नहीं उठता। अनेक बार यह सब हलचल देखी है और अब भी देख रहे हो। क्या भी हो दुनिया में, लेकिन याद की भट्टी में रहने वाले सदा सेफ रहते हैं।

14.01.80... संकल्प किया और सर्व के विश्व-कल्याणकारी ऊँची स्टेज पर स्थित हो गए और उसी स्टेज पर स्थित हो साक्षी दृष्टा हो विनाश लीला देख सकें। देह के सर्व आकर्षण अर्थात् सम्बन्ध, पदार्थ, संस्कार इन सबकी आकर्षण से परे, प्रकृति की हलचल की आकर्षण से परे, फ़रिश्ता बन ऊपर की स्टेज पर स्थित हो शान्ति और शक्ति की किरणें सर्व आत्माओं के प्रति दे सकें- ऐसे स्मृति का समर्थ बटन तैयार है? जब दोनों बटन तैयार हों तब तो समाप्ति हो।.

07.03.81... साक्षीपन की सीट शान की सीट है, इस सीट पर बैठने वाले परेशानी से छूट जाते हैं– जो कुछ भी ड्रामा में होता है उसमें कल्याण ही भरा हुआ है, अगर यह स्मृति में सदा रहे तो कमाई जमा होती रहेगी। समझदार बच्चे यही सोचेंगे कि जो कुछ होता है वह

कल्याणकारी है। क्यों क्या का क्वेशचन समझदार के अन्दर उठ नहीं सकता। अगर स्मृति रहे कि यह संगमयुग कल्याणकारी युग है, बाप भी कल्याणकारी है तो श्रेष्ठ स्टेज बनती जायेगी। चाहे बाहर की रीति से नुकसान भी दिखाई दे लेकिन उस नुकसान में भी कल्याण समाया हुआ है, ऐसा निश्चय हो। जब बाप का साथ और हाथ है तो अकल्याण हो नहीं सकता। अभी पेपर बहुत आयेंगे, उसमें क्या क्यों का क्वेशचन न उठे। कुछ भी होता है होने दो।। बाप हमारा हम बाप के तो कोई कुछ नहीं सकता, इसको कहा जाता है निश्चय बुद्धि। बात बदल जाए लेकिन आप न बदलो- यह है निश्चय। कभी भी माया से परे- शान तो नहीं होते हो? कभी वातावरण से कभी घर वालों से, कभी ब्राह्मणों से परेशान होते हो। शान की सीट पर रहो। साक्षीपन की सीट शान की सीट है इससे परे न हो तो परेशानी खत्म हो जायेगी। प्रतिज्ञा करो कि कभी भी कोई बात में न परेशान होंगे न करेंगे। जब नालेजफुल बाप के बच्चे बन गये, त्रिकालदर्शी बन गये तो परेशान कैसे हो सकते। संकल्प में भी परेशानी न हो। क्यों शब्द को समाप्त करो। क्यों शब्द के पीछे बड़ी क्यू है।.

11.03.81... अनुभवी मूर्त्त होकर पाइंट देना ड्रामा की पाइंट के जो अनुभवी होंगे वह सदा साक्षीपन की स्टेज पर स्थिति होंगे। एक रस, अचल और अडोल होंगे। ऐसी स्थिति में स्थित रहने वाले को अनुभवी मूर्त्त कहा जाता है। रिजल्ट में बाहर के रूप से भले अच्छा हो वा बुरा हो। लेकिन ड्रामा के पाइंट की अनुभवी आत्म कभी भी बुरे में भी बुराई को न देख अच्छाई ही देखेगी अर्थात् स्व के कल्याण का रास्ता दिखाई देगा।

15.04.81... सभी सदा साक्षी स्थिति में स्थित हो हर पार्ट बजाते हो? साक्षीपन की स्टेज कायम रहती है? कभी साक्षी के बजाए पार्ट बजातेबजाते पार्ट में साक्षीपन की स्टेज को भूल तो नहीं जाते? जो साक्षी होगा वह कभी भी किसी पार्ट में चलायमान नहीं होगा। न्यारा होगा, प्यारा भी होगा। अच्छे में अच्छा, बुरे में बुरा ऐसे नहीं होगा। साक्षी अर्थात् सदा हर कार्य करते हुए कल्याण की वृत्ति में रहने वाले। जो कुछ हो रहा है उसमें कल्याण भरा हुआ है। अगर कोई माया का विघ्न भी आता तो उससे भी लाभ उठाकर, शिक्षा लेकर आगे बढ़ेगें, रुकेंगे नहीं। ऐसे हो? सीट पर बैठकर खेल देखते हो। साक्षीपन है सीट। इस सीट पर बैठकर ड्रामा देखो तो बहुत मजा आयेगा। सदा अपने को साक्षी की सीट पर सेट रखो, फिर वाह ड्रामा वाह! यही गीत गाते रहेंगे।

02.10.81... सभी सदा साक्षी स्थिति में स्थित हो, हर कर्म करते हो? जो साक्षी हो कर्म करते हैं उन्हें स्वत: ही बाप के साथीपन का अनुभव भी होता है। साक्षी नहीं तो बाप भी साथी नहीं इसलिए सदा साक्षी अवस्था में स्थित रहो। देह से भी साक्षी। जब देह के सम्बन्ध और देह के साक्षी बन जाते हो तो स्वतः ही इस पुरानी दुनिया से साक्षी हो जाते हो। देखते हुए, सम्पर्क में आते हुए सदा न्यारे और प्यारे। यही स्टेज सहज योगी का अनुभव कराती है। तो सदा साक्षी इसको कहते हैं – साथ में रहते हुए भी निर्लेप। आत्मा निर्लेप नही है लेकिन

आत्मअभिमानी स्टेज निर्लेप है अर्थात माया के लेप व आकर्षण से परे है। न्यारा अर्थात निर्लेप। तो सदा ऐसी अवस्था में स्थित रहते हो? किसी भी प्रकार की माया का वार न हो। बाप पर बलिहार जाने वाले माया के वार से सदा बचे रहेंगे। बलिहार वालों पर वार नहीं हो सकता। तो ऐसे हो ना? जैसे फर्स्ट चांस मिला है वैसे ही बलिहार और माया के बार से परे रहने में भी फर्स्ट। फर्स्ट का अर्थ ही है फास्ट जाना। तो इस स्थिति में सदा फर्स्ट। सदा खुश रहो, सदा खुश नशीब रहो।

04.10.81... जिस स्थिति में सदा मास्टर सर्वशक्तिवान, मास्टर ज्ञानसागर, सर्व गुणों में सम्पन्न, हर संकल्प में, हर श्वास में हर सेकेण्ड सदा साक्षी-द्रष्टा और सदा बाप के साथीपन का, सर्व ब्राह्मण परिवार की श्रेष्ठ आत्माओं के स्नेह, सहयोग के साथीपन का सदा अनुभव होगा। ऐसे अनुभूति होगी जैसे साइंस के साधनों द्वारा दूर की वस्तु समीप अनुभव करते हैं। ऐसे दिव्य बुद्धि द्वारा कितनी ही दूर रहने वाली आत्माओं को समीप अनुभव करेंगे। जैसे स्थूल में साथ रहने वाली आत्माओं को समीप अनुभव करेंगे।

18.11.81... अगर प्रकृतिजीत होंगे तो प्रकृति की कोई भी हलचल अपने को हिला नहीं सकेगी। सदा साक्षी होकर सब खेल देखते रहेंगे।

26.11.81... साक्षी बन स्व के प्रति भी सदा शुभचिन्तन की वृत्ति और रूहानी वायु-मण्डल बनाने के लिए स्व प्रति भी सहयोगी बनो। जब प्रकृति अपने वायुमण्डल के प्रभाव में सभी को अनुभव करा सकती है- जैसे सर्दी, गर्मी प्रकृति अपना वायुमण्डल पर प्रभाव डाल देती है, ऐसे प्रकृतिजीत, सदा सहयोगी, सहज योगी आत्मायें अपने रूहानी वायुमण्डल का प्रभाव अनुभव नहीं करा सकती? सदा स्व प्रति और सर्व के प्रति सहयोग की शुभ भावना रखते हुए सहयोगी आत्मा बनो। वह ऐसा है, वा ऐसा कोई करता है, यह नहीं सोचो। कैसा भी वायुमण्डल है, व्यक्ति है- ''मुझे सहयोग देना है''।

16.04.82... जो भी व्यर्थ बात, व्यर्थ दृश्य... यह सब कंकड़ हो गये। हंस कभी कंकड़ नहीं लेते- सदा रत्नों को धारण करते। तो कभी भी किसी भी व्यर्थ बात का प्रभाव न हो। अगर प्रभाव में भी आ गये तो वही मनन और वही वर्णन होगा। वर्णन, मनन से वायुमण्डल भी ऐसा बन जाता है। बात कुछ नहीं होती लेकिन वायुमण्डल ऐसा बन जाता है जैसे बड़े से बड़ा पहाड़ गिर गया हो। अगर अपने मन में मनन चलता या मुख से वर्णन होता तो छोटी सी बात भी पहाड़ बन जाती, क्योंकि वायुमण्डल में फैल जाती है। और अगर उस बात को समा दो, साक्षी होकर पार कर लो तो वह बात राई हो जायेगी।

18.04.82... घृणा वाले से स्वयं भी घृणा कर ले यह हुआ कर्म का बन्धन। ऐसा कर्म के बन्धन में आने वाला एकरस नहीं रह सकता। कभी किसी रस में होगा कभी किसी रस में। इसलिए अच्छे को अच्छा समझकर साक्षी होकर देखो और बुरे को रहमदिल बन रहम की निगाह से परिवर्तन करने की शुभ भावना से साक्षी हो देखो।

30.04.82... बापदादा साक्षी होकर के बच्चों का खेल देखते हैं। रस्सियों के बंधने की रेस में एक दो से बहुत आगे जा रहे हैं। इसलिए सदा विस्तार में जाते सार रूप में रहो।

02.05.82... परीक्षा में साक्षी और साथीपन की स्मृति स्वरूप द्वारा फुल पास होना वा पास होना वा मजबूरी से पास होना इसमें अन्तर हो जाता है।

21.02.83... यह कर्मभोग- कर्म का कड़ा बन्धन साइलेन्स की शक्ति से पानी की लकीर मिसल अनुभव होगा। भोगने वाला नहीं, भोगना भोग रही हूँ- यह नहीं लेकिन साक्षी दृष्टा हो इस हिसाब किताब का दृश्य भी देखते रहेंगे।

07.04.83... सदा बेहद की आत्मिक दृष्टि, भाई भाई के सम्बन्ध की वृत्ति से किसी भी आत्मा के प्रति शुभ भावना रखने का फल जरूर प्राप्त होता है। इसलिए पुरूषार्थ से थको नहीं। बहुत मेहनत की है वा यह तो कभी बदलना ही नहीं है- ऐसे दिलशिकस्त भी नहीं बनो। निश्चयबुद्धि हो, मेरेपन के सम्बन्ध से न्यारे हो चलते चलो। कोई-कोई आत्माओं का ईश्वरीय वर्सा लेने के लिए भक्ति का हिसाब चुक्तु होने में थोड़ा समय लगता है। इसलिए धीरज धर, साक्षीपन की स्थिति में स्थित हो, निराश न हो। शान्ति और शक्ति का सहयोग आत्माओं को देते रहो। ऐसी स्थिति में स्थित रहकर लौकिक में अलौकिक भावना रखने वाले, डबल सेवाधारी, ट्रस्टी बच्चों का महत्व बहुत बड़ा है।

14.04.83... सदा साक्षीपन की स्थिति में स्थित रहते हुए ड्रामा के हर दृश्य को देखते हो? साक्षीपन की स्थिति सदा ड्रामा के अन्दर हीरो पार्ट बजाने में सहयोगी होती है। अगर साक्षीपन नहीं तो हीरो पार्ट बजा नहीं सकते। हीरो पार्टधारी से साधारण पार्टधारी बन जाते हैं। साक्षीपन की स्टेज सदा ही डबल हीरो बनाती है। एक हीरे समान बनाती है और दूसरा हीरो पार्टधारी बनाती है। साक्षीपन अर्थात् देह से न्यारे, आत्मा मालिकपन की स्टेज पर स्थित रहे। देह से भी साक्षी। मालिक। इस देह से कर्म कराने वाली, करने वाली नहीं। ऐसी साक्षी स्थिति सदा रहती है? साक्षी स्थिति सहज पुरुषार्थ का अनुभव कराती है क्योंकि साक्षी स्थिति में किसी भी प्रकार का विघ्न या मुश्किलात आ नहीं सकती। यह है मूल अभ्यास। यही साक्षी स्थिति का पहला और लास्ट पाठ है। क्योंकि लास्ट में जब चारों ओर की हलचल होगी, तो उस समय साक्षी स्थिति से ही विजयी बनेंगे। तो यही पाठ पक्का करो।

09.05.83... सदा अपने को हर कदम में साक्षी और सदा बाप के साथी - ऐसे अनुभव करते हो? जो सदा साक्षी होगा वह सदा ही हर कर्म करते हर कदम उठाते कर्म के बन्धन से न्यारे और बाप के प्यारे, तो ऐसे साक्षीपन अनुभव करते हो? कोई भी कर्मन्द्रियाँ अपने बन्धन में नहीं बाँधे इसको कहा जाता है – 'साक्षी'। ऐसे साक्षी हो? कोई भी कर्म अपने बन्धन में बाँधता है तो उसको साक्षी नहीं कहेंगे। फँसने वाला कहेंगे। न्यारा नहीं कहेंगे। कभी आँख भी धोखा न दे। शारीरिक सम्बन्ध में आना अर्थात् आँख का धोखा खाना। तो कोई भी कर्मेन्द्रिय धोखा न दे। साक्षी रहें और सदा बाप के साथी रहें। हर बात में बाप याद आवे। महान

आत्मायें भी नहीं, निमित्त आत्मायें भी नहीं लेकिन बाबा ही याद आये। कोई भी बात आती है तो पहले बाप याद आता या निमित्त आत्मायें याद आती? सदा एक बाप दूसरा न कोई, आत्मायें सहयोगी हैं लेकिन साथी नहीं है, साथी तो बाप है। सहयोगी को अपना साथी समझना यह रांग है। तो सदा सेवा के साथी लेकिन सेवा में साथी बाप है। निमित्त सहयोग देते हैं, ऐसा सदा स्मृति स्वरूप हो! किसी देहधारी को साथी बनाया तो उड़ती कला का अनुभव नहीं हो सकता। इसलिए हर बात में 'बाबा-बाबा' याद रहे।

19.05.83... तन भी तेरा, मन भी तेरा। तो जिसको तेरा कहा वह जाने। आप तो न्यारे और प्यारे रहो। सिर्फ जिस समय तन का हिसाब किताब चुक्तू करने का पार्ट बजाते हो उस समय यह निरन्तर स्मृति रहे कि बाबा आप जानो आपका काम जाने। मैं बीमार हूँ, नहीं मेरा शरीर बीमार है, नहीं, तेरी अमानत है तुम जानो। मैं साक्षीदृष्टा बन आपके अमानत की सेवा कर रही हूँ। इसको कहा जाता है – 'साक्षीदृष्टा'। ट्रस्टी बनना। ऐसे ही मन भी तेरा। मेरा है ही नहीं। मेरा मन नहीं लगता, मेरा योग नहीं लगता, मेरी बुद्धि एकाग्र नहीं होती। यह 'मेरा' शब्द हलचल पैदा करता है। मेरा है कहाँ। मेरापन मिटाना ही सर्व बन्धन मुक्त बनना है। मेरा धन, मेरी पत्नी, मेरा पति, मेरा बच्चा ज्ञान में नहीं चलता, उसकी बुद्धि का ताला खोल दो।

24.02.84... प्रश्न:- आजकल किसी-किसी स्थान पर चोरी और भय का वातावरण बहुत हैं – उनसे कैसे बचे? उत्तर:- इसमें योग की शक्ति बहुत चाहिए। मान लो कोई आपको डराने के ख्याल से आता है तो उस समय योग की शक्ति दो। अगर थोड़ा कुछ बोलेंगे तो नुकसान हो जायेगा। इसलिए ऐसे समय पर शान्ति की शक्ति दो। उस समय पर अगर थोड़े भी कुछ कहा तो उन्हों में जैसे अग्नि में तेल डाला। आप ऐसे रीति से रहो जैसे बेपरवाह हैं, हमको कोई परवाह नहीं है। जो करता है उसको साक्षी होकर अन्दर शान्ति की शक्ति दो तो फिर उसके हाथ नहीं चलेंगे। वह समझेंगे इनको तो कोई परवाह नहीं है। नहीं तो डराते हैं, डर गये या हलचल में आये तो वह और ही हलचल में लाते हैं। भय भी उन्हों को हिम्मत दिलाता है इसलिए भय में नहीं आना चाहिए। ऐसे टाइम पर साक्षीदृष्टा की स्थिति यूज करनी है। अभ्यास चाहिए ऐसे टाइम।

02.04.84... इसी विधि द्वारा सदा कर्म करते हुए कर्मों के बन्धन से मुक्त कर्मातीत स्थिति का अनुभव करते हो। कर्म के बन्धन में नहीं आते लेकिन सदा बाप के सर्व सम्बन्ध में रहते हो। करावनहार बाप निमित्त बनाए करा रहे हैं। तो स्वयं साक्षी बन गये।

10.04.84... जब स्वयं हल्के बन जाते तो सब बातें भी हल्की हो जाती हैं। जरा भी सोच चलता तो भारी हो जाते और बातें भी भारी हो जातीं। इसलिए मैं हल्का हूँ, न्यारा हूँ तो सब बातें भी हल्की हैं। यही विधि हैं, इसी विधि से सिद्धि प्राप्त होगी। पिछला हिसाब-किताब चुक्तू होते हुए भी बोझ अनुभव नहीं होगा। ऐसे साक्षी होकर देखेंगे तो जैसे पिछला खत्म हो

रहा है और वर्तमान की शक्ति से साक्षी हो देख रहे हैं। जमा भी हो रहा है और चुक्तू भी हो रहा है। जमा की शक्ति से चुक्तू का बोझ नहीं। तो सदा वर्तमान को याद रखो।

17.04.84... सभी ड्रामा की हर सीन को साक्षी हो देखने वाली श्रेष्ठ आत्मायें हो ना! कोई भी सीन जो भी ड्रामा में होती है उसको कहेंगे कल्याणकारी। नथिंग न्यू। (उनकी लौकिक भाभी से) क्या सोच रही हो? साक्षीपन की सीट पर बैठ सब दृश्य देखने से अपना भी कल्याण है और उस आत्मा का भी कल्याण है।

26.04.84... संगमयुग भी सुखधाम है। कितने दु:खो से बच गये हो! अभी साक्षी होकर देखते हो कि दुनिया कितनी दु:खी है और उनकी भेंट में आप कितने सुखी हो! फ़र्क मालूम होता है ना! तो सदा हम पुरुषोत्तम युग की पुरुषोत्तम आत्मायें, सुख स्वरूप श्रेष्ठ आत्मायें हैं, इसी स्मृति में रहो। अगर सुख नहीं, श्रेष्ठता नहीं तो जीवन नहीं।

19.11.84... बापदादा करावनहार भी हैं और साक्षी हो देखने वाले भी हैं। कराया भी और देखा भी।

12.12.84... सदा अपने को साक्षीपन की सीट पर स्थित आत्मायें अनुभव करते हो? यह साक्षीपन की स्थिति सबसे बढ़िया श्रेष्ठ सीट है। इस सीट पर बैठ कर्म करने या देखने में बहुत मज़ा आता है। जैसे सीट अच्छी होती है तो बैठने में मज़ा आता है ना। सीट अच्छी नहीं तो बैठने में मज़ा नहीं। यह 'साक्षीपन की सीट' सबसे श्रेष्ठ सीट है। इसी सीट पर सदा रहते हो? दुनिया में भी आजकल सीट के पीछे भाग-दौड़ कर रहे हैं। आपको कितनी बढ़िया सीट मिली हुई है। जिस सीट से कोई उतार नहीं सकता। उन्हों को कितना डर रहता है, आज सीट है कल नहीं। आपको अविनाशी है, निर्भय होकर बैठ सकते हो। तो साक्षी-पन की सीट पर सदा रहते हो? अपसेट वाला सेट नहीं हो सकता। सदा इस सीट पर सेट रहो। यह ऐसी आराम की सीट है जिस पर बैठकर जो देखने चाहो जो अनुभव करने चाहो वह कर सकते हो।

16.01.85... बापदादा सभी बच्चों को रोज़ यही स्मृति दिलाते रहते हैं कि जितना लेने चाहो उतना ले लो। यथाशक्ति नहीं, लो बड़ी दिल से लो। लेकिन खुले भण्डार से, भरपूर भण्डार से लो। अगर कोई यथाशक्ति लेते हैं तो बाप क्या कहेंगे? बाप भी साक्षी हो देख-देख हर्षाते रहते कि कैसे भोले-भाले बच्चे थोड़े में ही खुश हो जाते हैं। क्यों? 63 जन्म भक्तपन के संस्कार होने के कारण अभी भी सम्पन्न प्राप्ति के बजाए थोड़े को ही बहुत समझ उसी में राज़ी हो जाते हैं।

16.01.85... थोड़ा समय है – बाप के सहयोग और बाप के भाग्य के खुले भण्डार मिलने का। अभी स्नेह के कारण बाप के रूप में हर समय हर परिस्थिति में साथी है लेकिन इस थोड़े समय के बाद साथी के बजाए साक्षी हो देखने का पार्ट चलेगा। चाहे सर्वशक्ति सम्पन्न बनो, चाहे यथाशक्ति बनो – दोनों को साक्षी हो देखेंगे।

15.03.85... बाप सेवा का तख्त वा सेवा की सीट देकर आगे बढ़े, अभी साक्षी होकर देख रहे हैं, कैसे बच्चे आगे से आगे बढ़ रहे हैं। साथ का साथ भी है, साक्षी का साक्षी भी। दोनों ही पार्ट बजा रहे हैं। साकार रूप में साक्षी कहेंगे, अव्यक्त रूप में साथी कहेंगे। दोनों ही पार्ट बजा रहे हैं।

24.03.85... चाहे कर्म का हिसाब चुक्तू भी कर रहे हैं लेकिन कर्म के हिसाब को भी साक्षी हो देखते हुए, साथी के साथ मौज में रहते हैं। ऐसे है ना! आप तो साथी के साथ मौज में हैं बाकी यह हिसाब किताब साक्षी हो चुक्तू कैसे हो रहा है वह देखते हुए भी मौज में रहने कारण लगता कुछ नहीं है। अपने हिसाब को भी आप साक्षी होकर देखो। इस शरीर से जो भी पिछला किया हुआ है वह चुक्तू कैसे कर रहा है, वह साक्षी होकर देखते। इसे कर्मभोग नहीं कहेंगे।

07.03.86... साक्षी होकर देखो तो बहुत मजा आयेगा। हम क्या कर रहे हैं और हमारे भक्त क्या कर रहे हैं! प्रैक्टिकल क्या है और यादगार क्या है!

22.01.88... कर्म में बच्चों के साथ हर कर्म में साथी बन कर्मयोगी बनाया। सिर्फ साक्षी होकर देखने वाले नहीं लेकिन स्थूल कर्म के महत्त्व को अनुभव कराने के लिए कर्म में भी साथी बने। जो कर्म मैं करूँगा, मुझे देख बच्चे स्वतः ही करेंगे – इस पाठ को सदा कर्म करके पढ़ाया।

03.02.88... बाप प्रति शुभ आशा है कि – जैसे बापदादा साक्षी भी है और साथी भी हैं, ऐसे बापदादा समान साक्षी और साथी, समय प्रमाण दोनों ही पार्ट सदा बजाने वाले महान आत्मा बनें। तो बाप प्रति शुभ आशा हुई - बापदादा के समान साक्षी, साथी बनना।

बापदादा इसमें बाप समान सदा शक्तिशाली बनने की सब बच्चों में शुभ आशा रखते हैं। जहाँ साक्षी बनना है, वहाँ कभी साथी बन जाते हैं और जहाँ साथी बनना है, वहाँ साक्षी बन जाते हैं। समय प्रमाण दोनों रीति निभाना – इसको कहते हैं बाप समान बनना।

16.02.88... माया किस भी रूप में आये। अच्छा! मोह के रूप में आती है तो समझो बन्दर का खेल दिखाने के लिए आई है। खेल को साक्षी होकर देखो, स्वयं माया के चक्र में न आ जाओ।

माया नीचे गिराने के लिए आये या कोई भी स्वरूप में आये लेकिन आप उसका खेल देखो। कैसे नीचे गिराने के लिए आई, उसके रूप को कैच करो और खेल समझ उस दृश्य को साक्षी हो करके देखो। आगे के लिए और स्व की स्थिति को मज़बूत बनाने की शिक्षा ले आगे बढ़ो।

शिवरात्रि का उत्सव अर्थात् उत्साह दिलाने वाला उत्सव सिर्फ आज का दिन नहीं है लेकिन सदा ही आपके लिए उत्सव है और उत्साह साथ है। इस स्लोगन को सदा याद रखना और अनुभव करते रहना। उसकी विधि सिर्फ दो शब्दों की है। ‘सदा साक्षी हो करके देखना

और बाप के साथी बन करके रहना।' बाप के साथी सदा रहेंगे तो जहाँ बाप है तो साक्षी होकर देखने से सहज ही मायाजीत बन अनेक जन्मों के लिए जगतीत बन जायेंगे।

19.03.88... सदा हर कार्य करते स्वयं को साक्षी स्थिति में स्थित रख कार्य कराने वाली न्यारी आत्मा हूँ – ऐसा अनुभव करते हो? साक्षीपन की स्थिति सदा हर कार्य सहज सफ़ल करती है। साक्षीपन की स्थिति कितनी प्यारी लगती है! साक्षी बन कार्य करने वाली आत्मा सदा न्यारी और बाप की प्यारी है। तो इसी अभ्यास से कर्म करने वाली अलौकिक आत्मा हूँ, अलौकिक अनुभूति करने वाली, अलौकिक जीवन, श्रेष्ठ जीवन वाली आत्मा हूँ - यह नशा रहता है ना? कर्म करते यही अभ्यास बढ़ाते रहो। यही अभ्यास कर्मातीत स्थिति को प्राप्त करा देगा। इसी अभ्यास को सदा आगे बढ़ाते, कर्म करते न्यारे और बाप के प्यारे रहना। इसको कहते हैं – 'श्रेष्ठ आत्मा'।

09.12.89... सदा योगयुक्त रहने की सरल विधि है - सदा अपने को ''सारथी'' और ''साक्षी'' समझ चलना।

योगयुक्त-युक्तियुक्त रहने की विधि क्या हुई? 'सारथी बन चलना'। सारथी स्वतः ही साक्षी हो कुछ भी करेंगे, देखेंगे, सुनेंगे। साक्षी बन देखने, सोचने, करने सब में सब-कुछ करते भी निर्लेप रहेंगे अर्थात् माया के लेप से न्यारे रहेंगे। तो पाठ पक्का किया ना। ब्रह्मा बाप को फ़ालो करने वाले हो ना। ब्रह्मा बाप से बहुत प्यार है ना। प्यार की निशानी है ''समान बनना'' अर्थात् फ़ालो करना।

13.12.89... चाहे भाई हो वा बहन हो, जो विशेष सेवा करता वह विशेष अधिकार भी रखेगा! तो सेवा के साक्षी बनो लेकिन साक्षी हो के साथी बनो। साक्षीपन भूल जाता है तो सिर्फ साथी बनने में बाप भूल जाता है। साक्षी बन पार्ट बजाने की प्रैक्टिस करो।

17.12.89...सदा ही किसी भी परिस्थिति में मुस्कराते रहेंगे। हर्षित होंगे, परिस्थिति से आकर्षित नहीं होंगे। अगर कोई भी परिस्थिति में फेल होते हैं तो परिस्थिति की तरफ़ आकर्षित हो गये ना! जो हर्षित होगा वह साक्षी होकर खेल देखेगा, आकर्षित नहीं होगा।

18.01.91... बापदादा सभी बच्चों को यही स्मृति दिला रहे हैं कि सदा दिल के साथ हो, सेवा में साथ हो और स्थिति में सदा साक्षी हो। तो सदा ही मायाजीत का झण्डा लहराता रहेगा।

04.12.91... सदा सभी खुश हैं या कभीकभी कुछ बातें होती तो नाखुश भी होते हो? खुशी बढ़ती जाती है, कम तो नहीं होती है? मायाजीत हो या माया रंग दिखा देती है? वह कितना भी रंग दिखाये, मैं मायापति हूँ। माया रचना है, मैं मास्टर रचयिता हूँ। तो खेल देखो लेकिन खेल में हार नहीं खाओ। कितना भी माया अनेक प्रकार का खेल दिखाये, आप देखने वाले मनोरंजन समझकर देखो। देखते-देखते हार नहीं जाओ। साक्षी होकर के, न्यारे होकर के देखते चलो। सभी तपस्या में आगे बढ़ने वाले, गिफ्ट लेने वाले हो? सेवा अच्छी हो रही है?

स्वयं के पुरुषार्थ में उड़ रहे हैं और सेवा में भी उड़ रहे हैं। सभी फर्स्ट हैं। सदा फर्स्ट रहना, सेकेण्ड में नहीं आना। फर्स्ट रहेंगे तो सूर्यवंशी बनेंगे, सेकेण्ड बनें तो चन्द्रवंशी। फर्स्ट नम्बर मायाजीत होंगे। कोई समस्या नहीं, कोई प्रॉब्लम नहीं, कोई क्वेश्चन नहीं, कोई कमजोरी नहीं। फर्स्ट नम्बर अर्थात् फास्ट पुरुषार्थ। जिसका फास्ट पुरुषार्थ है वो पीछे नहीं हो सकता। सदा साक्षी और सदा बाप के साथी – यही याद रखना।

16.03.92…प्रकृति-पति हो, इस प्रकृति के खेल को देख हर्षित होते हो। चाहे प्रकृति हलचल करे, चाहे प्रकृति सुन्दर खेल दिखाए - दोनों में प्रकृति-पति आत्माएं साक्षी हो खेल देखती हो। खेल में मज़ा लेते हैं, घबराते नहीं है। इसलिए बापदादा तपस्या क्षरा साक्षीपन की स्थिति के आसन पर अचल अडोल स्थित रहने का विशेष अभ्यास करा रहे हैं।

अन्त में अशरीरीपन का अभ्यास ही काम में आयेगा। सेकेण्ड में अशरीरी हो जायें। चाहे अपना पार्ट भी कोई चल रहा हो लेकिन अशरीरी बन आत्मा साक्षी हो अपने शरीर का भी पार्ट देखे। मैं आत्मा न्यारी हूँ, शरीर से यह पार्ट करा रही हूँ।

09.01.93… उनकी दृष्टि से, वृत्ति से, वायब्रेशन्स से, मुख से, सम्पर्क से सदा भरपूर आत्माओं का अनुभव होता है। ऐसे बच्चे सदा बाप के साथ भी हैं और साथी भी हैं। यह डबल अनुभव हो। स्व की लगन में सदा साथ का अनुभव करते और सेवा में सदा साथी स्थिति का अनुभव करते। यह दोनों अनुभव 'साथी' और 'साथ' का स्वत: ही बाप समान साक्षी अर्थात् न्यारा और प्यारा बना देता है। जैसे ब्रह्मा बाप को देखा कि बाप और आप कम्बाइन्ड-रूप में सदा अनुभव किया और कराया। कम्बाइन्ड स्वरूप को कोई अलग कर नहीं सकता। ऐसे सपूत बच्चे सदा अपने को कम्बाइन्ड-रूप अनुभव करते हैं। कोई ताकत नहीं जो अलग कर सके।

25.11.93… खेल में भिन्न-भिन्न खेल देखते रहते हो। साक्षी हो खेल देखने में मज़ा आता है ना। चाहे कोई उत्सव हो, चाहे कोई शरीर छोड़े–दोनों ही क्या लगता है? खेल में खेल लगता है। और लगता भी ऐसे ही है ना जैसे खेल होता है और समय प्रमाण समाप्त हो जाता है। ऐसे ही जो हुआ सहज समाप्त हुआ तो खेल सर्व शक्तियों की लाइट साथ हो तो माया दूर से भाग जायेगी। ही लगता है। हर आत्मा का अपना-अपना पार्ट है। सर्व आत्माओं की शुभ भावना, अनेक आत्माओं की शुभ भावना प्राप्त होना–यह भी हर आत्मा के भाग की सिद्धि है।

16.12.93… तो व्यक्ति, वैभव व साधन अपने तरफ़ आकर्षित नहीं करेंगे। साधनों को निमित्त मात्र कार्य में लाना वा साक्षी हो सेवा प्रति कार्य में लगाना–ऐसी अनुभूति को बढ़ाओ। सहारा नहीं बनाओ, निमित्त मात्र हो। इसको कहा जाता है स्नेह में समाई हुई समान आत्मा।

03.04.94… यह माया का वा प्रकृति का यह भी एक शो है। जिसको साक्षी स्थिति में सदा सन्तुष्टता के स्वरूप में देखते रहो। कोई भी परिस्थिति आए तो यही समझो एक बेहद के स्क्रीन पर कार्टून शो चल रहा है वा पपेट शो चल रहा है। तो वह देखकर के परेशान नहीं

होंगे। माया का वा प्रकृति का यह भी एक शो है। जिसको साक्षी स्थिति में सदा सन्तुष्टता के स्वरूप में देखते रहो। अपनी शान में रहते हुए देखो–सन्तुष्ट मणि हूँ, सन्तोषी आत्मा हूँ।

19.01.95... सोचो साक्षी स्थिति के सिंहासन पर बैठ जाओ और अपने आपको ही जज करो। अपना जज बनना, दूसरे का जज नहीं बनना। दूसरे का जज बनना सभी को आता है, दूसरे का जज बहुत जल्दी बन जाते हैं और अपना वकील बन जाते हैं। तो साक्षीपन के सिंहासन पर अपने आपका निर्णय बहुत अच्छा होगा। सिंहासन के नीचे रहकर जज करते हो तो निर्णय अच्छा नहीं होता। सेकण्ड में तख्तनशीन बन जाओ। ये स्थिति आपका तख्त है। यथार्थ सहज निर्णय का तख्त ये साक्षीपन की स्थिति है। साक्षी नहीं होते हैं तो दूसरे की बात, दूसरे की चलन वो जादा सामने आती है, अपनी नहीं आती। अगर साक्षी होकर देखेंगे तो अपनी भी नज़र आयेगी, दूसरे की भी नज़र आयेगी। फिर जजमेन्ट जो होगी वो यथार्थ होगी, नहीं तो यथार्थ नहीं होती।

06.04.95... परिस्थिति की क्या शक्ति है जो आपकी सन्तुष्टता को ले जाये। तो परिस्थिति का खेल भले देखो लेकिन साक्षीपन, सन्तुष्टता की सीट पर बैठकर देखो। तो टीचर्स अर्थात् सदा सम्पन्न और सन्तुष्ट। टीचर्स का टाइटल है सन्तुष्टमणियाँ। ऐसे हैं ना? सदा सन्तुष्टमणि।

18.01.96... आप सब साथी हो कि साक्षी हो? सेवा में साथी और माया के परिस्थितियों से साक्षी। माया को तो वेलकम किया है ना कि घबराते हो–हाय, क्या हो गया! थोड़ा-थोड़ा घबराते हो? माया के हल्के-हल्के रूपों को तो आप भी जान गये हो और माया भी सोचती है कि ये जान गये हैं लेकिन जब कोई भी विकराल रूप की माया आवे तो सदा साक्षी होकर खेल करो। जैसे वो कुश्ती का खेल होता है ना, देखा है कि दिखायें? यहाँ बच्चे करके दिखाते हैं ना! तो समझो कि ये कुश्ती का खेल, खेल रहे हैं, अच्छी तरह से मारो। घबराओ नहीं, खेल है। तो साक्षी होकर खेल करने में मज़ा आता है और माया आ गई, माया आ गई तो घबरा जाते हैं। कुछ भी ताकत अभी माया में नहीं है। सिर्फ बाहर का शेर का रूप है लेकिन बिल्ली भी नहीं है।

परिवार में खिटखिट न हो, ये नहीं होना है, होना है! लेकिन आप ट्रस्टी बन, साक्षी बन परिस्थिति को बाप से शक्ति ले हल करो। गृहस्थी बनकर सोचेंगे तो और गड़बड़ होगी। पहले बिल्कुल न्यारे ट्रस्टी बन जाओ। मेरा नहीं।

● साक्षी होकर हर खेल देखो तो सेफ भी रहेंगे और मज़ा भी आयेगा।

31.12.96... कई बच्चे आज बहुत फास्ट चलते हैं और कल थोड़ा सा चेहरा बदला हुआ होता है, कारण? अनुभव का फाउण्डेशन पक्का नहीं है। अनुभव वाली आत्मायें कितनी भी बड़ी समस्या को ऐसे हल करेंगी जैसे कुछ हुआ ही नहीं। आया और अपना पार्ट बजाया लेकिन साक्षी होकर, न्यारे और प्यारे होकर खेल समान देखेंगे। बात नहीं खेल, मनोरंजन।

मनोरंजन अच्छा लगता है ना? तो कोई भी बात हो, आप के लिए बड़ी बात तब लगती है जब फाउण्डेशन जरा भी कच्चा है।

23.02.97... दृढ़ संकल्प रखो और बातों को भूल जाओ। एक ही बात पक्की रखो - मुझे खुश रहना है। तो बातें क्या लगेंगी? खेल। और अपनी खेल देखने की साक्षीपन की सीट पर सदा स्थित रहो। चाहे कोई अपमान करने वाला हो, आपको परेशान कर अपने साक्षीपन की शान से देह-भान से मुक्त बनो तो दूसरे सब बन्धन स्वत: खत्म हो जायेंगे। नीचे उतारने वाले हों, लेकिन आप साक्षीपन की सीट से नीचे नहीं आओ। नीचे आ जाते हो तभी खुशी कम हो जाती है।

बापदादा ने पहले भी दो शब्द सुनाये हैं - साथी और साक्षी। जब बापदादा साथ है तो साक्षीपन की सीट सदा मजबूत रहती है। कहते सभी हो बापदादा साथ है, बापदादा साथ है लेकिन माया का प्रभाव भी पड़ता रहता और कहते भी रहते हो बापदादा साथ है, बापदादा साथ है। साथ है, लेकिन साथ को ऐसे समय पर यूज़ नहीं करते हो, किनारे कर देते हो। जैसे कोई साथ में होता है ना, कोई बहुत ऐसा काम पड़ जाता है या कोई ऐसी बात होती है तो साथ कभी ख्याल नहीं होता, बातों में पड़ जाते हैं। ऐसे साथ है यह मानते भी हो, अनुभव भी करते हो। कोई है जो कहेगा साथ नहीं है? कोई नहीं कहता। सब कहते हैं मेरे साथ है, यह भी नहीं कहते कि तेरे साथ है। हर एक कहता है मेरे साथ है। मेरा साथी है। मन से कहते हो या मुख से? मन से कहते हो? बापदादा तो खेल देखते हैं, बाप साथ बैठे हैं और अपनी परिस्थिति में, उसको सामना करने में इतना मस्त हो जाते हैं जो देखते नहीं हैं कि साथ में कौन हैं। तो बाप भी क्या करते? बाप भी साथी से साक्षी बनकर खेल देखते हैं। ऐसे तो नहीं करो ना। जब साथी कहते हो तो साथ तो निभाओ, किनारा क्यों करते हो? बाप को अच्छा नहीं लगता। बाप यही शुभ आशा रखते हैं और है भी कि एक-एक बच्चा स्वराज्य अधिकारी सो विश्व अधिकारी है। आप लोग प्रजा हैं क्या! प्रजा तो नहीं बनना है ना? राज़े, महाराजे, विश्व राजे हो ना! प्रजा बनाने वाले हो, प्रजा बनने वाले नहीं हो। राजा बनने वाले, प्रजा बनाने वाले हो। तो राजा कहाँ बैठता है? तख्त पर बैठता है ना! जब प्रैक्टिकल में राजा के नशे में होता है तो तख्त पर बैठता है ना! तो साक्षीपन का तख्त छोड़ो नहीं। जो अलग- अलग पुरूषार्थ करते हो उसमें थक जाते हो। आज मन्सा का किया, कल वाचा का किया, सम्बन्ध-सम्पर्क का किया तो थक जाते हो। एक ही पुरुषार्थ करो कि साक्षी और खुशनुम: तख्तनशीन रहना है। यह तख्त कभी नहीं छोड़ना है। कोई राजा ऐसे सीरियस होकर तख्त पर बैठे, बैठा तख्त पर हो लेकिन बहुत क्रोधी हो, आफीशियल हो तो अच्छा लगेगा? कहेंगे यह तो राजा नहीं है। तो आप सदा तख्तनशीन है ना! वह राज़े तो कभी तख्त पर बैठते, कभी नहीं बैठते लेकिन साक्षीपन का तख्त ऐसा है जिसमें हर कार्य करते भी तख्तनशीन, उतरना नहीं पड़ता है। सोते भी तख्तनशीन, उठते-चलते, सम्बन्ध-सम्पर्क में आते तख्तनशीन। तख्त पर

बैठना आता है कि बैठना नहीं आता है, खिसक जाते हो? साक्षीपन के तख्तनशीन आत्मा कभी भी कोई समस्या में परेशान नहीं हो सकती।

बाप साथ बैठे हैं और अपनी परिस्थिति में, उसको सामना करने में इतना मस्त हो जाते हैं जो देखते नहीं हैं कि साथ में कौन हैं। तो बाप भी क्या करते? बाप भी साथी से साक्षी बनकर खेल देखते हैं। ऐसे तो नहीं करो ना। जब साथी कहते हो तो साथ तो निभाओ, किनारा क्यों करते हो? बाप को अच्छा नहीं लगता।

एक ही पुरुषार्थ करो कि साक्षी और खुशनुमः तख्तनशीन रहना है।

- सदा खुशी में रहने के लिए साक्षीपन की सीट पर स्थित रहो
- बापदादा साथ हो तो माया का प्रभाव पड़ नहीं सकता। साक्षीपन के तख्त नशीन रहो तो समस्या तख्त के नीचे रह जायेगी।

21.11.98... विदेही, साक्षी बन सोचो लेकिन सोचा, प्लैन बनाया और सेकण्ड में प्लेन स्थिति बनाते चलो। अभी आवश्यकता स्थिति की है। यह विदेही स्थिति परिस्थिति को बहुत सहज पार कर लेगी। जैसे बादल आये, चले गये। और विदेही, अचल-अडोल हो खेल देख रहे हैं। अभी लास्ट समय को सोचते हो लेकिन लास्ट स्थिति को सोचो।

13.02.99... मन और बुद्धि से लाइट हाउस हो, लाइट फैलायेंगे, इस कार्य में बिज़ी रहेंगे तो बिज़ी आत्मा को भय नहीं होगा, साक्षीपन होगा; और कोई भी हलचल हो अपने बुद्धि को सदा ही क्लीयर रखना, क्यों-क्या में बुद्धि को बिज़ी वा भरा हुआ नहीं रखना, खाली रखना।

01.03.99... अगर सेवा, सेवा, सेवा सिर्फ वही याद है, बाप को किनारे बैठ देखने के लिए अलग कर देते हो, तो बाप भी साक्षी होकर देखते हैं, देखें कहाँ तक अकेले करते हैं। फ़िर भी आने तो यहाँ ही हैं। तो साथ नहीं छोड़ो। अपने अधिकार और प्रेम की सूक्ष्म रस्सी से बाँधकर रखो। ढीला छोड़ देते हो। स्नेह को ढीला कर देते हो, अधिकार को थोड़ा सा स्मृति से किनारा कर देते हो। तो ऐसे नहीं करना। जब सर्वशक्तिवान साथ का आफ़र कर रहा है तो ऐसी आफ़र सारे कल्प में मिलेगी? नहीं मिलेगी ना? तो बापदादा भी साक्षी होकर देखते हैं, अच्छा देखें कहाँ तक अकेले करते हैं!

10.05.99... बाप कहते हैं कि अब तो चाहे प्रकृति की हलचल हो, चाहे माया भिन्न-भिन्न रॉयल रूप से हिलाने वाली हो लेकिन बच्चे सदा साक्षी दृष्टा की, आराम की सीट पर सेट रहो। कभी सेट, कभी अपसेट यह खेल बहुत खेला, अब तो समय इंतज़ार कर रहा है बाप की प्रत्यक्षता का पर्दा खोलने का।

15.11.99... कई बच्चे गुप्त योगी भी हैं, ऐसे गुप्त योगी बच्चों को बापदादा की मदद भी बहुत मिली है और ऐसे बच्चे स्वयं भी अचल, साक्षी रहे और वायुमण्डल में भी समय पर सहयोग दिया।

साक्षी होकर देखना भी है, सुनना भी है और सहयोग देना भी है। आखरिन रीयल जब पार्ट बजेगा, उसमें साक्षी और निर्भय होकर देखें भी और पार्ट भी बजावें। कौन-सा पार्ट? दाता के बच्चे, दाता बन जो आत्माओं को चाहिए वह देते रहें। तो मास्टर दाता हैं ना? स्टॉक जमा करो, जितना स्टॉक अपने पास होगा उतना ही दाता बन सकेंगे। अन्त तक अपने लिए ही जमा करते रहेंगे तो दाता नहीं बन सकेंगे। अनेक जन्म जो श्रेष्ठ पद पाना है, वह प्राप्त नहीं कर सकते हैं, इसीलिए एक तो अपने पास स्टॉक जमा करो।

10.05.97... बापदादा कहते हैं ड्रामा की हर सीन को साक्षी हो कल्याण की भावना से देखो। देश में क्या भी हो हमारे लिए बेहद के वैराग्य की सूचना है।

28.01.01... बापदादा बार-बार बच्चों को कहते हैं कि सदा अंगद मिसल अचल, अडोल, एकरस स्थिति में स्थित रहो। यह सब साइड सीन्स हैं उसको साक्षी होकर देखते चलो। अशरीरी होकर उड़ते चलो। समय अनुसार अभी तो बच्चों को स्व-चिन्तन, स्व-मान, स्व-स्वरूप में ही रहना है। स्व को डबल लाईट बनाए उड़ते रहो। विशेष अब अशरीरी स्टेज में रहने का अभ्यास अति आवश्यक है।

15-12-2001.. .. हर एक अपनी जिम्मेवारी ले। दूसरे को नहीं देखें, यह करती है, यह करता है, हम साक्षी होके खेल देखने वाले हैं, सिर्फ राज़ी का खेल देखेंगे क्या, नाराजगी का भी तो बीच-बीच में देखना चाहिए ना। लेकिन हर एक अपने आपको राज़ी रखे।

03.2.2002.. .. अभी बापदादा कहते हैं साक्षी होकर खेल देखा, इन्जाय किया, अभी एक सेकण्ड में एकदम देह से न्यारे पावरफुल आत्मिक रूप में स्थित हो सकते हो? फुलस्टाप। (बापदादा ने बहुत पावरफुल ड्रिल कराई) अच्छा - यही अभ्यास हर समय बीच-बीच में करना चाहिए। अभी- अभी कार्य में आये, अभी-अभी कार्य से न्यारे, साकारी सो निराकारी स्थिति में स्थित हो जाएं। ऐसे ही यह भी एक अनुभव देखा, कोई समस्या भी आती है तो ऐसे ही एक सेकण्ड में साक्षी दृष्टा बन, समस्या को एक साइडसीन समझ, तूफान को एक तोहफा समझ उसको पार करो। अभ्यास है ना? आगे चलकर तो ऐसे अभ्यास की बहुत आवश्यकता पड़ेगी। फुलस्टाप। क्वेश्चन मार्क नहीं, यह क्यों हुआ, यह कैसे हुआ? हो गया। फुलस्टाप और अपने फुल शक्तिशाली स्टेज पर स्थित हो जाओ। समस्या नीचे रह जायेगी, आप ऊंची स्टेज से समस्या को साइडसीन देखते रहेंगे।

12.5.2001... बापदादा सभी बच्चों को कहते हैं डबल नॉलेजफुल बनो - शरीर और सेवा के। लेकिन आसक्त होकर नहीं, साक्षी होकर बैलेन्स रखो। फिर भी बच्चे ने सेवा दिल से की है। सेवा के नये-नये प्लैन्स और प्रैक्टिकल करने के निमित्त बने हैं, पुण्य जमा है। इसलिए सर्व का स्नेह, दुआयें, प्यार रिटर्न में मिल रहा है।

20.9.2001... बाबा ने कहा अभी आप बच्चों को अपनी स्टेज अचल, अडोल, एकरस रखना है। समय के पहले अपने को तैयार कर लेना है। बच्चों को अपनी कमाई का, अपनी

अवस्था का पूरा-पूरा ध्यान रखकर पुरुषार्थ करना है। अभी तो बहुत विचित्र-विचित्र सीन देखते रहेंगे। इसके लिए अपनी अवस्था साक्षी बनाओ। अन्तिम सीन देखने के लिए भी साहस चाहिए। यह सवाल न उठे क्यों, कैसे! यह होना ही है, सामना करने की शक्ति धारण करो।

2.3.2002 कुछ समय के बाद बाबा बोले, बच्ची दुनिया के भिन्न-भिन्न विनाश लीला देख बच्चे आश्चर्यवत तो नहीं होते? बहादुर, निर्भय बन साक्षीपन की सीट पर सेट होकर ड्रामा देख रहे हैं ना? क्योंकि यह तो समय-प्रति-समय भिन्न-भिन्न रूप से हलचल बढ़नी ही है। नथिंग न्यू का पाठ पक्का है? जब होना ही है तो त्रिकालदर्शी स्थिति से देखते चलो, उड़ती कला से आगे बढ़ते चलो और दु:खी, अशान्त आत्माओं को रहमदिल बन सुख-शान्ति की अन्चली देते रहो। वृत्ति द्वारा वायुमण्डल शान्ति का फैलाते रहो। इस सेवा में बिजी रहो।

18.1.2003... जैसे ब्रह्मा बाप ने यह अभ्यास फाउण्डेशन बहुत पक्का किया, इसलिए जो बच्चे लास्ट में भी साथ रहे उन्होंने क्या अनुभव किया? कि बाप कार्य करते भी शरीर में होते हुए भी अशरीरी स्थिति में चलते फिरते अनुभव होता रहा। चाहे कर्म का हिसाब भी चुक्तू करना पड़ा लेकिन साक्षी हो, न स्वयं कर्म के हिसाब के वश रहे, न औरों को कर्म के हिसाब-किताब चुक्तू होने का अनुभव कराया। आपको मालूम पड़ा कि ब्रह्मा बाप अव्यक्त हो रहा है, नहीं मालूम पड़ा ना! तो इतना न्यारा, साक्षी, अशरीरी अर्थात् कर्मातीत स्टेज बहुतकाल से अभ्यास की तब अन्त में भी वही स्वरूप अनुभव हुआ। यह बहुतकाल का अभ्यास काम में आता है। ऐसे नहीं सोचो कि अन्त में देहभान छोड़ देंगे, नहीं। बहुतकाल का अशरीरीपन का, देह से न्यारा करावनहार स्थिति का अनुभव चाहिए। अन्तकाल चाहे जवान है, चाहे बूढ़ा है, चाहे तन्दरूस्त है, चाहे बीमार है, किसका भी कभी भी आ सकता है। इसलिए बहुतकाल साक्षीपन के अभ्यास पर अटेन्शन दो। चाहे कितनी भी प्राकृतिक आपदायें आयेंगी लेकिन यह अशरीरीपन की स्टेज आपको सहज न्यारा और बाप का प्यारा बना देगी। इसलिए बहुतकाल शब्द को बापदादा अण्डरलाइन करा रहे हैं। क्या भी हो, सारे दिन में साक्षीपन की स्टेज का, करावनहार की स्टेज का, अशरीरीपन की स्टेज का अनुभव बार-बार करो, तब अन्त मते फ़रिश्ता सो देवता निश्चित है।

06.03.2003... महिमा में यही पुकार कर रहे हैं – हे देव - कृपा करो, रहम करो, दया करो। यह हलचल आप बच्चों को और ही अचल बनाने के लिए हो रही है। अब दिन प्रतिदिन अचल और हलचल का खेल बढ़ना ही है। दोनों तरफ की कशमकशा का खेल ही तो परिवर्तन लायेगा। आप बच्चे भी परिवर्तन ... परिवर्तन... का गीत गाते हो ना। यह वन्डफुल खेल साक्षी और बाप के साथी बन देखते, कर्मातीत अवस्था के आगे बढ़ते चलो। बाकी सभी जो भी नजारे, समाचार हो रहा है, आपकी परिपक्वता को आगे बढ़ाने के लिए ही हो रहा है। स्वयं को, समय को देख आगे बढ़ते चलो, बढ़ाते चलो।

02.02.2007… हर एक की अपनी अपनी विशेषता है। तो अच्छा है मिलके, साथी बनके, यज्ञ का कार्य तो रुकना है ही नहीं, अमर है, चलना है और बढ़ना है। सभी साक्षी होके खेल देख रहे हो या क्वेश्चन मार्क उठता है? क्यों, क्या तो नहीं उठता ना! जो होता है, उसमें कई राज़ समाये हुए होते हैं। वह बाप जाने और ड्रामा जाने।

दादी का जो भी ड्रामा में देखते हो, देखते हए साक्षी होके, दुआओं की, दिल के स्नेह की और स्नेह की सकाश देने की सेवा करते रहते हैं, करते रहो। खेल में खेल देखते रहो। साक्षी होके देखो और उड़ते रहो। बापदादा दिल से सबको दुआयें दे रहे हैं और सब प्यार से सेवा कर रहे हैं। सेवा की भी मुबारक है। जो भी होता है उसमें सेवा और कल्याण तो भरा हुआ ही है।

31.10.2007… बच्चे साक्षी-दृष्टा के स्थिति की सीट पर सेट हो जाओ और सीट पर सेट होके खेल देखो, बहुत मजा आयेग।

15.12.2007… अभी आवश्यकता सकाश देने की ज्यादा है। इस सेवा में मन को बिजी रखो तो मायाजी त विजयी आत्मा स्वत: ही बन जायें गे । बाकी छो टी -छो टी बातें तो साइडसी न हैं , साइडसी न में कुछ अच्छा भी आता है, कुछ बुरी चीज़ें भी आती हैं। तो साइडसीन को क्रास कर मंजिल पर पहुंचना होता है। साइडसीन देखने के लिए साक्षीदृष्टा की सीट पर सेट रहो।

20.10.2008… परिस्थिति का शो मनोरंजन अनुभव होता है। यह मनोरंजन अनुभव करने के लिए, अपने स्थिति की सीट सदा साक्षीदृष्टा में स्थित रहने वाली यह मनोरंजन अनुभव करती है। दृष्य कितना भी बदलता लेकिन साक्षी दृष्टा की सीट पर स्थित रहने वाली सन्तुष्ट आत्मा साक्षी हो, हर परिस्थिति को स्व स्थिति से बदल देती है।

24.03.2009.. .. इस तीनों रूप में स्वत: ही त्रिकालदर्शी के सीट में बैठ साक्षी होके हर कार्य करते रहेंगे। तो सभी से बापदादा यही चाहते हैं कि सदा बाप के साथ रहो, अकेले नही बनो । साथ रहेंगे तब साथ चलेंगे । अगर अभी कभी-कभी रहेंगे तो साथ कैसे चलेंगे ! स्नेही , स्नेही को कभी भूल नही सकता। सारे दिन में यह अभ्यास करते रहो । अभी-अभी ब्राह्मण, अभी-अभी फरिश्ता, अभी-अभी देवता।

30.11.2009… सन्तुष्ट आत्मा सदा सर्व के, बाप के समीप और समान स्थिति में रहती है। लेकिन इस स्थिति में रहने के लिए बहुत साक्षी दृष्टा अवस्था चाहिए, त्रिकालदर्शी अवस्था चाहिए।.

15.12.2009… बापदादा यह क्यों कहते हैं क्योंकि आप लोग जो पक्के ब्राह्मण हैं उन्हों को समय पर साक्षी होके देखना पड़ेगा, मन्सा सेवा इतनी पढ़ेगी जो आप लोगों के साथी बनके वह सेवा करें। वह सेवा करें और आप साक्षी होके मन्सा सेवा करो। जैसे ब्रह्मा बाप ने सेवा लायक बनाया, स्वयं साक्षी होकर देखा ना। ऐसे जो निमित्त बड़ी आत्मायें हैं, जो सर्विस को

बढ़ाने वाली हैं, वह समय पर और सेवा में बिजी रहती हैं, लेकिन यह सेवा आपके योग्य तैयार किये हुए करें, जिसकी आवाज में अनुभव की आकर्षण हो, पोजीशन की आकर्षण नहीं लेकिन अनुभव की आकर्षण। वह प्रभाव बहुत जल्दी पड़ेगा क्योंकि बापदादा की उन्हों को, निमित्त बनने वालों को एकस्ट्रा मदद मिलती है, कोई भी हो, जिसको बापदादा का समय पर विशेष वरदान मिलता है, उसकी रिजल्ट वह खुद भी नहीं जान सकता कि क्या होती है, लेकिन यह एकस्ट्रा बापदादा की मदद है। वरदान है। वह नहीं बोलता, वरदान बोलता है इसलिए ऐसी आत्मायें तैयार करो, तो बापदादा समय प्रमाण उन्हों को भी वरदान दे आगे बढ़ाये।

05.03.2012... साक्षी होके सब यज्ञ का कार्य निमित्त बनके करते चलो। बाबा का साथ तो है ही। अकेला तो कोईकर नहीं सकता। बाप साथ है ही।.

दृढ़ संकल्प रखो और बातों को भूल जाओ। एक ही बात पक्की रखो - मुझे खुश रहना है। तो बातें क्या लगेंगी? खेल। और अपनी खेल देखने की साक्षीपन की सीट पर सदा स्थित रहो। चाहे कोई अपमान करने वाला हो, आपको परेशान कर अपने साक्षीपन की शान से नीचे उतारने वाले हों, लेकिन आप साक्षीपन की सीट से नीचे नहीं आओ। नीचे आ जाते हो तभी खुशी कम हो जाती है। बापदादा ने पहले भी दो शब्द सुनाये हैं - साथी और साक्षी। जब बापदादा साथ है तो साक्षीपन की सीट सदा मजबूत रहती है। कहते सभी हो बापदादा साथ है, बापदादा साथ है लेकिन माया का प्रभाव भी पड़ता रहता और कहते भी रहते हो बापदादा साथ है, बापदादा साथ है। साथ है, लेकिन साथ को ऐसे समय पर यूज़ नहीं करते हो, किनारे कर देते हो। जैसे कोई साथ में होता है ना, कोई बहुत ऐसा काम पड़ जाता है या कोई ऐसी बात होती है तो साथ कभी ख्याल नहीं होता, बातों में पड़ जाते हैं। ऐसे साथ है यह मानते भी हो, अनुभव भी करते हो। कोई है जो कहेगा साथ नहीं है? कोई नहीं कहता। सब कहते हैं मेरे साथ है, यह भी नहीं कहते कि तेरे साथ है। हर एक कहता है मेरे साथ है। मेरा साथी है। मन से कहते हो या मुख से? मन से कहते हो? बापदादा तो खेल देखते हैं, बाप साथ बैठे हैं और अपनी परिस्थिति में, उसको सामना करने में इतना मस्त हो जाते हैं 3 जो देखते नहीं हैं कि साथ में कौन हैं। तो बाप भी क्या करते? बाप भी साथी से साक्षी बनकर खेल देखते हैं। ऐसे तो नहीं करो ना। जब साथी कहते हो तो साथ तो निभाओ, किनारा क्यों करते हो? बाप को अच्छा नहीं लगता। बाप यही शुभ आशा रखते हैं और है भी कि एक-एक बच्चा स्वराज्य अधिकारी सो विश्व अधिकारी है। आप लोग प्रजा हैं क्या! प्रजा तो नहीं बनना है ना? राज़े, महाराजे, विश्व राजे हो ना! प्रजा बनाने वाले हो, प्रजा बनने वाले नहीं हो। राजा बनने वाले, प्रजा बनाने वाले हो। तो राजा कहाँ बैठता है? तख्त पर बैठता है ना! जब प्रैक्टिकल में राजा के नशे में होता है तो तख्त पर बैठता है ना! तो साक्षीपन का तख्त छोड़ो नहीं। जो अलग-अलग पुरूषार्थ करते हो उसमें थक जाते हो। आज मन्सा का किया, कल

वाचा का किया, सम्बन्ध-सम्पर्क का किया तो थक जाते हो। एक ही पुरुषार्थ करो कि साक्षी और खुशनुमः तख्तनशीन रहना है। यह तख्त कभी नहीं छोड़ना है। कोई राजा ऐसे सीरियस होकर तख्त पर बैठे, बैठा तख्त पर हो लेकिन बहुत क्रोधी हो, आफीशियल हो तो अच्छा लगेगा? कहेंगे यह तो राजा नहीं है। तो आप सदा तख्तनशीन है ना! वह राज़े तो कभी तख्त पर बैठते, कभी नहीं बैठते लेकिन साक्षीपन का तख्त ऐसा है जिसमें हर कार्य करते भी तख्तनशीन, उतरना नहीं पड़ता है। सोते भी तख्तनशीन, उठते- चलते, सम्बन्ध-सम्पर्क में आते तख्तनशीन। साक्षीपन के तख्तनशीन आत्मा कभी भी कोई समस्या में परेशान नहीं हो सकती। समस्या तख्त के नीचे रह जायेगी और आप ऊपर तख्तनशीन होंगे।

17.11.2013... अनुभव वाली आत्मायें कितनी भी बड़ी समस्या को ऐसे हल करेंगी जैसे कुछ हुआ ही नहीं। आया और अपना पार्ट बजाया लेकिन साक्षी होकर, न्यारे और प्यारे होकर खेल समान देखेंगे। बात नहीं खेल, मनोरंजन, मनोरंजन अच्छा लगता है ना? तो कोई भी बात हो, आप के लिए बड़ी बात तब लगती है जब फाउण्डेशन जरा भी कच्चा है। चाहे 75 परसेन्ट पक्का है, चाहे 90 परसेन्ट पक्का है तो भी हिलने का चांस सम्भव है।

ट्रस्टी

25.12.69.. .. जितना अपने को और दूसरों को अमानत समझेंगे तो रूहानियत आयेगी। अमानत न समझने से कुछ कमी पड़ जाती है। मन के संकल्प जो करते हैं वह भी ऐसे समझ करके करें कि यह मन भी एक अमानत है। इस अमानत में ख्यानत नहीं डालनी है। दूसरे शब्दों में आप औरों को ट्रस्टी कहकर समझाते हो ना। उन्हों को ट्रस्टी कहते हो लेकिन अपने मन और तन को और जो कुछ भी निमित्त रूप में मिला है, चाहे जिज्ञासु हैं, सेन्टर है, वा स्थूल कोई भी वस्तु है लेकिन अमानत मात्र है। अमानत समझने से इतना ही अनासक्त होंगे। बुद्धि नहीं जायेगी। अनासक्त होने से ही रूहानियत आवेगी। इतने तक अपने को शमा पर मिटाना है। मिटाना तो है लेकिन कहाँ तक। यह मेरे संस्कार हैं, यह मेरे संस्कार शब्द भी मिट जाये। मेरे संस्कार फिर कहाँ से आये, मेरे संस्कारों के कारण ही यह बातें होती हैं। इतने तक मिटना है जो कि नेचर भी बदल जाये।

31.12.70.. .. जितनी मूर्ति वैल्यूएबल होती है मूर्ति के आधार पर मन्दिर की भी वैल्यू होती है। तो परिवर्तन क्या करना है? मेरा शरीर नहीं लेकिन बापदादा की वैल्यूएबल मूर्ति का यह

मन्दिर है। स्वयं ही मूर्ति स्वयं ही मन्दिर का ट्रस्टी बन मन्दिर को सजाते रहो। इस परिवर्तन संकल्प के आधार पर मेरापन अर्थात् देहभान परिवर्तन हो जाोगा।

22.6.71.. .. जो श्रीमत के आधार पर डायरेक्शन प्रमाण चल रहे हैं, अपने को ट्रस्टी समझ कर चल रहे हैं, उनको तो सपूत कहेंगे ना।

19.7.71.. .. जैसे ट्रस्टी हो रहने से, अमानत समझने से ममता कम होती है ना। इस रीति यह शरीर भी सिर्फ ईश्वरीय सर्विस के लिए अमानत के रूप में मिला हुआ है। जिसकी अमानत है उनकी स्मृति, अमानत को देखकर तो आती है ना। अमानत रखी हुई चीज़ को देख, देने वाले की याद आती है ना। यह तो अमानत रूहानी बाप ने दी है, रूहानी बाप की याद रहेगी। अमानत समझने से रूहानियत रहेगी और रूहानित से सदैव बुद्धि में राहत रहेगी, थकावट नहीं होगी। अमानत में ख्यानत करने से रूहानियत के बदली उलझन आ जाती है, राहत के बजाय घबराहट आ जाती है। इसलिए यह शरीर है ही सिर्फ ईश्वरीय सर्विस के लिए। अमानत समझने से आटोमेटिकली रूहानियत की स्थिति रहेगी। यह सहज उपाय है ना। अब निरन्तर सहज योगी बन सकेंगे ना।

12.7.72.. .. जैसे देखो, हर चीज को सम्भालने के लिए ट्रस्टी मुकर्रर किये जाते हैं। यह भी ऐसे समझकर चलो -- यह जो हद की रचना बाप-दादा ने ट्रस्टी बनाकर सम्भालने के लिए दी है, वह मेरी रचना नहीं लेकिन बाप-दादा द्वारा ट्रस्टी बन इसको सम्भालने के लिए निमित्त बना हुआ हूँ। ट्रस्टीपन में मेरापन नहीं होता। ट्रस्टी निमित्त होता है। प्रवृति-मार्ग की वृति भी बिल्कुल ना हो। यह ईश्वरीय आत्मायें हैं, ना कि मेरे बच्चे हैं। भले छोटे-छोटे बच्चे हों, तो भी क्या बाप-दादा ने छोटे बच्चों की पालना नहीं की क्या? जैसे बाप-दादा ने छोटे बच्चों की पालना करते हुए ईश्वरीय कार्य के निमित्त बना दिया, वैसे ही छोटे-छोटे बच्चे वा बड़े, जिन्हों के प्रति भी बाप द्वारा निमित बने हो, उन आत्माओं प्रति भी यह वृति रहनी चाहिए कि इन आत्माओं को ईश्वरीय सेवा के योग बना कर इसमें लगा देना है। घर में रहते ऐसी स्मृति रहती है?

जैसे भट्ठी में पड़ने से हर वस्तु का रूप परिवर्तन हो जाता है, वैसे इस भट्ठी में ''मैं प्रवृति मार्ग वाला हूँ, मैं अधर कुमार हूँ'' – इस स्मृति को भी समाप्त करके यह समझना कि मैं ब्रह्माकुमार हूँ और इन निमित्त बनी हुई आत्माओं की सेवा करने के लिए ट्रस्टी हूँ। इस स्मृति

को मजबूत करके जाना। यही है भट्ठी का परिवर्तन। इतना परिवर्तन करने की शक्ति अपने में भरी है वा वहां जाकर फिर प्रवृति वाले बन जायेंगे? अभी प्रवृति नहीं समझना लेकिन इस गृहस्थीपन की वृति से पर वृति अर्थात् दूर। गृहस्थी की वृति से परे – ऐसी अवस्था बना कर जाने से ही अज्ञानी आत्मायें भी आपकी चलन से, आपके बोल से, नैनों से जो न्यारी और प्यारी स्थिति गाई जाती है, उसका अनुभव कर सकेंगे।

15.10.75.. .. ऐसे ही झूठ कैसे बोलते हो? कहते हो हम ट्रस्टी हैं – सब कुछ आपका है – तन, मन और धन सब तेरा। फिर मैं-मन में मोह वश होकर चलते हो। तो मैं-पन लाना या मेरा समझना यह भी झूठ हुआ ना? कहना तेरा और करना मेरा – झूठ हुआ ना? वायदा करते हो तुम्हीं से खांऊ, तुम्हीं से बैठूँ, तुम्हीं से बोलूँ और तुम्हीं से सर्व- सम्बन्ध निभाऊं – लेकिन प्रैक्टिकल में अन्य आत्माओं से भी सम्बन्ध व सम्पर्क रखते हो। बाप की स्मृति के बजाय अन्य स्मृति भी साथ-साथ रखते हो। तो यह भी खून हुआ ना? वायदा है कि मेरा तो एक बाप, दूसरा न कोई। अगर वह नहीं निभाते तो यह भी झूठ हुआ।

20.10.75.. .. बाप द्वारा सबके ‘ट्रस्टी’ बने हो? इस तन के भी ट्रस्टी हो, मन अर्थात् संकल्प के भी ट्रस्टी, लौकिक व अलौकिक जो प्रवृत्ति मिली है उसमें भी ट्रस्टी हो, लेकिन ट्रस्टी के बजाय गृहस्थी बन जाते हो। गृहस्थी की दुर्दशा का मॉडल आप बनाते हो। कौनसा मॉडल बनाते हो जो सभी तरफ से खिंचा रहता है, दूसरा गृहस्थी को गधे के रूप में दिखाया है। अनेक प्रकार के बोझ दिखाये गए हैं – ऐसा मॉडल बनाते हो ना? जब गृहस्थी बन जाते हो तो मेरे-पन के अनेक प्रकार के बोझ हो जाते हैं। सबसे रॉयल रूप का बोझ है – वह ‘मेरी ज़िम्मेवारी है इसको तो निभाना ही पड़ेगा’ और कोई गृहस्थी हीं तो अपनी कर्म-इन्द्रियों के वश हो अनेक रस में समय गँवाने के गृहस्थी तो बहुत हैं। आज कन-रस वश समय गँवाया, कल जीभ-रस वश समय गँवाया। ऐसे गृहस्थी में फंसने के कारण ट्रस्टीपन भूल जाते हो। यह तन भी मेरा नहीं, तन का भी ट्रस्टी हूँ। तो ट्रस्टी, मालिक के बिगर किसी भी वस्तु को अपने प्रति यूज़ नहीं कर सकते हैं। तो कर्म-इन्द्रियों के रस में मस्त हो जाना उसको भी गृहस्थी कहेगे, न कि ट्रस्टी, क्योंकि श्रेष्ठ से श्रेष्ठ मालिक जिसके आप ट्रस्टी हो उनकी श्रीमत एक के रस में सदा एक-रस स्थिति में रहने की है। इन कर्म-इन्द्रियों द्वारा एक का ही रस लेना है। तो फिर अनेक कर्म-इन्द्रियों द्वारा भिन्न-भिन्न रस क्यों लेते हो? तो लौकिक व अलौकिक प्रवृत्ति में गृहस्थी बन जाते हो। इसलिये अनेक प्रकार के बोझ-जिसके लिये बाप डायरेक्शन

देते हैं कि सब मेरे को दे दो – वह बोझ कार्य ही अपने ऊपर उठाये, बोझ धारण करते हुए उड़ना चाहते हो। लेकिन कर नहीं पाते हैं। तो इस परहेज़ की कमी के कारण युक्ति चलाते हो लेकिन मुक्ति नहीं पाते हो।

पहली परहेज़ एक बाप दूसरा न कोई को भूल दूसरा कोई व्यक्ति, वैभव, सम्बन्ध, सम्पर्क या साधन अपना लेते हैं, दूसरी परहेज़ स्वयं को रचयिता अर्थात् आत्मा समझने के बजाय रचना अर्थात् देह समझ लेते हैं, तीसरी परहेज़ ट्रस्टी के बजाय गृहस्थी बन जाते हैं। 3. तो अब परहेज़ को अपनाओ, शिकायतों को रूहानियत में बदली करो तो ही संगम युग के सुखों का अनुभव कर सकेंगे।

24.10.75….. यह बीच-बीच में मधुबन में आना; इतना मुश्किल होते हुए भी यह अनुभव करने क्यों आते हो? बार-बार यह अनुभव तो कराया जाता है। यहाँ का अनुभव वहाँ स्मृति में बल देता है। इसलिए मधुबन में आना ज़रूरी है। वहाँ प्रवृत्ति में रहते हो, वह भी सेवा-अर्थ। घर समझेंगे तो 'गृहस्थी', सेवाधारी समझेंगे तो ट्रस्टी। गृहस्थी में चारों ओर के कर्म-बन्धन खींचेंगे। सेवाधारी समझेंगे तो ट्रस्टीपन में मेरा-पन खत्म होगा।

6.2.77.. .. सर्व खज़ानों से सम्पन्न आत्मा की निशानी कौन सी होगी? जो खज़ानों से सम्पन्न होगा वा सदा अति इन्द्रिय सुख में मगन रहेगा। उसे बाप और सेवा के सिवाए कुछ भी याद नहीं रहेगा। वह हद की प्रवृत्ति को सम्भालते हुए ईश्वरीय सेवा अर्थ अपने को ट्रस्टी समझ करके प्रवृत्ति का कार्य करेगा। उसका हर कर्म श्रीमत प्रमाण होगा – उसमें जरा भी मनमत या परमत मिक्स नहीं करेगा।

29.5.77.. .. चतुराई यह करते हैं कि नए के साथ पुराना भी अपने पास रखना चाहते हैं। कहलाते हैं ट्रस्टी, लेकिन प्रेक्टीकल (Practical;व्यवहार) हैं गृहस्थी। तो व्यर्थ संकल्प मिटाने का आधार है, गृहस्थीपन छोड़ना। चाहे कुमारी है वा कुमार है लेकिन, मेरा स्वभाव, मेरा संस्कार, मेरी बुद्धि यह विस्तार गृहस्थीपन है। जो समर्पण हो गए तो जो बाप का स्वभाव, वह आपका स्वभाव। जो बाप का संस्कार, वह आपके संस्कार। जैसे बाप की दिव्य बुद्धि, वैसे आपकी।

वह लोग कहते हैं प्रवृत्ति से निवृत्ति। बाप कहते हैं 'पवित्र प्रवृत्ति से ही निवृत्ति हो।' गृहस्थी अलग है – उनको गृहस्थी नहीं कहेंगे। पवित्र प्रवृत्ति को ट्रस्टी कहेंगे न कि गृहस्थी। तो समझा निवृत्ति का आधार पवित्र प्रवृत्ति है।

गृहस्थी बनना अर्थात् जाल में फँसना। ट्रस्टी अर्थात् मुक्त। सदा यही स्मृति रखो कि हम पूज्य हैं।

5.6.77.. .. किसी भी लौकिक व्यवहार को निमित्त-मात्र करते हुए, अपने लौकिक कार्य का आकर्षण वा बोझ अपने तरफ खींचेगा नहीं। ऐसे अनुभव करेंगे जैसे लौकिक कार्य होते हुए अलौकिक कार्य के कारण डबल कमाई का अनुभव होगा। अलौकिक स्वरूप है ही ट्रस्टी, ट्रस्टी बनकर कार्य करने से, क्या होगा? कैसे होगा? यह बोझ समाप्त हो जाता है। 'अलौकिक स्वरूप अर्थात् कमल पुष्प समान।' कैसा भी तमोगुणी वातावरण होगा, वायब्रेशन्स होंगे, लेकिन सदा कमल समान। लौकिक कीचड़ में रहते भी न्यारे अर्थात् आकर्षण से परे और सदा बाप के प्यारे अनुभव करेंगे। किसी भी प्रकार के मायावी अर्थात् विकारों के वशीभूत व्यक्ति के सम्पर्क से, स्वयं वशीभूत नहीं होंगे। क्योंकि अपना अलौकिक कार्य सदा स्मृति में रहेगा कि वशीभूत आत्माओं को बन्धनयुक्त से बन्धनमुक्त बनाना, विकारी से निर्विकारी बनाना, अर्थात् लौकिक से अलौकिक बनाना यही अलौकिक जीवन का हमारा कार्य अर्थात् कर्त्तव्य है। वशीभूत आत्मा को छुड़ाने वाला स्वयं वशीभूत हो नहीं सकता।

सदैव बुद्धि में रहे, सेवा स्थान पर सेवा के निमित्त रूप आत्माएं हैं – न कि मेरा कोई लौकिक परिवार है। सब अलौकिक सेवाधारी हैं; कोई सेवा करने के निमित्त हैं, कोई की सेवा करनी है। लौकिक सम्बन्ध भी सेवा के अर्थ मिला है – 'यह मेरा लड़का या लड़की है' नहीं। सेवा के निमित्त यह सम्बन्ध मिला है। मैं पति हूँ, पिता हूँ, चाचा हूँ – यह सम्बन्ध समाप्त हो जाए, तो ट्रस्टी हो जायेंगे। स्मृति विस्मृति का रूप तब लेती जब मेरापन है। अगर मेरापन खत्म हो जाए, तो नष्टोमोहा हो जाएंगे। 'नष्टोमोहा अर्थात् स्मृति स्वरूप।'

10.6.77.. .. अमृतवेले की स्मृति का स्वरूप, गॉडली स्टडी (Godly Study;ईश्वरीय अध्ययन) करने की स्मृति का स्मृति स्वरूप, कर्म करते हुए कर्मयोगी रहने के स्मृति स्वरूप, ट्रस्टी बन अपने शरीर निर्वाह के व्यवहार के समय का स्मृति स्वरूप, अनेक विकारी

आत्माओं के सम्पर्क में आने समय का स्मृति स्वरूप, वाइब्रेशन्स वाली आत्माओं का वाइब्रेशन परिवर्तन करने के कार्य करने समय का स्मृति स्वरूप सब डायरेक्शन मिले हुए हैं। याद हैं? जैसे भविष्य में जैसा समय होगा वैसी ड्रेस चेन्ज करेंगे। हर समय के कार्य की ड्रेस और श्रृंगार अपना अपना होगा। तो यह अभ्यास यहाँ धारण करने से भविष्य में प्रालब्ध रूप में प्राप्त होंगे। वहाँ स्थूल ड्रेस चेंज करेंगे और यहाँ जैसा समय, जैसे कार्य, वैसा स्मृति स्वरूप हो। अभ्यास है वा भूल जाता है? इस समय के आपके अभ्यास का यादगार भक्तिमार्ग में भी जो विशेष नामी-ग्रामी मन्दिर हैं वहाँ भी समय प्रमाण ड्रेस बदली करते हैं। हर दर्शन की ड्रेस अपनी-अपनी बनी हुई होती है। तो यह यादगार भी किन आत्माओं का है? जो आत्माएं इस संगमयुग पर जैसा समय वैसा स्वरूप बनने के अभ्यासी हैं।

16.6.77.. .. ट्रस्टी सदा न्यारा रहता है। ट्रस्टी के लिए सिर्फ एक काम है – याद और सेवा। अगर कर्मणा भी करते तो भी सेवा के निमित्त। गृहस्थी स्वार्थ के निमित्त करता और ट्रस्टी सेवा अर्थ।

22.6.77.. .. सदा स्वयं को हर कर्म करते हुए तन के भी, धन के भी, प्रवृत्ति के भी ट्रस्टी समझ कर चलते हो? ट्रस्टी की विशेषता क्या होती है? एक शब्द में कहें – ट्रस्टी अर्थात् नष्टोमोहा। ट्रस्टी का किसी में मोह नहीं होता; क्यों? क्योंकि मेरापन नहीं है। मेरे में मोह जाता है। जो भी प्रवृत्ति के अर्थ साधन मिले हुए हैं वा सेवा के अर्थ सम्बन्ध होता है, आप चैतन्य सितारे त्रिकालदर्शी हो। उसमें मेरापन नहीं लेकिन बाप-दादा का दिया हुआ अमानत समझकर सेवा करेंगे वा साधनों को कार्य में लगाएंगे तो सहज ही ट्रस्टी बन जाएंगे। ट्रस्टी अर्थात् मैं-पन समाप्त और बाबा-बाबा ही मुख से निकले ऐसी स्थिति है? या जिन साधनों को कार्य में लगाते हो उसमें मेरापन का भान है? मेरापन है तो देहभान आता है। अगर तन के भी ट्रस्टी है तो देह का भान हो नहीं सकता। जब से जन्म हुआ तो पहला वायदा क्या किया? जो मेरा सो बाप का। मरजीवा हो गए ना? फिर मेरापन कहां से आया? दी हुई चीज़ कभी वापिस नहीं ली जाती। तो सदा देही अभिमानी बनने का अर्थात् नष्टोमोहा बनने का सहज साधन क्या हुआ? ट्रस्टी हूँ, मैं ट्रस्टी हूँ। कल्प पहले के यादगार में भी अर्जुन का जो यादगार दिखाया है – उसमें अर्जुन को मुश्किल कब लगा? जब मेरापन आया। मेरा खत्म तो नष्टोमोहा। अर्थात् स्मृति स्वरूप हो गए। मेरा पति, मेरी पत्नी, मेरा घर, मेरे बच्चे, मेरी दुकान, मेरा दफ्तर –

यह मेरा-मेरी सहज को मुश्किल कर देता है। सहज मार्ग का साधन है – 'नष्टो मोहा अर्थात् ट्रस्टी।' इस स्मृति से स्वयं और सर्व को सहज योगी बनाओ। समझा?

इस समय दो कार्य साथ-साथ हो रहे हैं। एक तरफ पिछला हिसाबकिताब चुक्तू कर रहे हो और दूसरे तरफ भविष्य और वर्तमान जमा भी कर रहे हो। एक का लाख गुणा जमा होने का समय अभी है। इसलिए सदैव इस बात पर अटेन्शन चाहिए कि हर समय जमा होता है। चुक्तू करते समय भी जमा कर सकते हो। क्योंकि चुक्तु करने का साधन है याद। याद से जमा भी होता और चुक्तु भी होता। ऐसा न हो चुक्तू करने में ही टाइम चला जाए। अगर ट्रस्टी बन चुक्तू करते हो तो भी जमा होता है। विधिपूर्वक कार्य करने से चुक्तू के साथसाथ जमा भी होगा।

5.12.78.. .. सभी ने अपना पिंजरा तोड़ दिया है, बन्धन ही पिंजरा है। तो बन्धनों का पिंजरा तोड़ दिया। फर्ज़ अदाई भी निमित्तमात्र निभानी है, लगाव से नहीं। फिर कहेंगे निर्बन्धन। ट्रस्टी बनकर चलते हो तो निर्बन्धन हो। कोई भी मेरापन है तो पिंजरे में बन्द हो। अभी पिंजरे की मैना नहीं स्वर्ग की मैना हो गई।

14.12.78.. .. जैसे तुफान कहाँ पहुँचा देता है–वैसे यह व्यर्थ संकल्पों का तूफ़ान तीव्र पुरुषार्थ से पुरुषार्थ तरफ़ ले आता है। ऐसे तूफानों में मत आओ–बाप-दादा ऐसे बच्चों से पूछते हैं कि क्या अब तक भी ट्रस्टी हो वा गृहस्थी हो? जब ट्रस्टी हो तो ज़िम्मेवार कौन, आप वा बाप? जब बाप ज़िम्मेवार है तो होगा वा नहीं होगा, क्या होगा यह बाप की ज़िम्मेवारी है वा आपकी है? निश्चयबुद्धि की पहली निशानी क्या है? निश्चयबुद्धि अर्थात् सदा निश्चिंत।

21.12.78.. .. सभी सदा अपने को ट्रस्टी समझकर चलते हो? ट्रस्टी अर्थात् सदा हल्का, गृहस्थी अर्थात् सदा बोझ वाला। गृहस्थी होंगे तो उतरती कला में जायेंगे, ट्रस्टी होंगे तो चढ़ती कला में जायेंगे। ट्रस्टी सदा बेफिकर बादशाह होते अर्थात् फिकर से फारिग होते हैं उन्हें रूहानी फ़खुर रहता है कि हम मास्टर सर्वशक्तिवान हैं। कैसे भी सरकमस्टान्सेज हो लेकिन स्वयं हल्का रहेगा, स्वयं सदा न्यारा। जरा भी वातावरण के प्रभाव में नहीं आयेंगे। गृहस्थी समझने से क्या, क्यों शुरू हो जाता, ट्रस्टी समझेंगे तो फुलस्टाप आ जाता, फुलस्टाप अर्थात् पावरफुल स्टेज का अनुभव।

30.1.79.. .. ट्रस्टी अर्थात् डबल लाइट, गृहस्थी अर्थात् बोझ वाला। ट्रस्टी होकर चलने से बोझ भी नहीं और सफलता भी ज़्यादा। गृहस्थी समझने से मेहनत भी ज़्यादा और सफलता भी कम। तो सदा डबल लाइट के स्वरूप की स्मृति की समर्थी में रहो तो कोई भी पहाड़ जैसा कार्य भी राई नहीं लेकिन रुई जैसा हो जायेगा। राई फिर भी सख्त होती है, रुई उससे भी हल्की, तो रुई के समान अर्थात् असम्भव भी सम्भव हो जायेगा।

26.11.79.. .. बाप-दादा यह क्वेश्चन पूछते हैं अब तक क्या देह सहित त्याग नहीं किया हैं? पहला-पहला वायदा है सब बच्चों का कि तन-मन-धन तेरा न कि मेरा। जब तेरा है, मेरा है ही नहीं तो फिर बन्धन काहे का? यह तो लोन पर बापदादा ने दिया है। आप ट्रस्टी हो, न कि मालिक। जब मरजीवा बन गये तो 83 जन्मों का हिसाब समाप्त हो गया। अब यह नया 84वाँ जन्म है। इस जन्म की तुलना और जन्मों से कर ही नहीं सकते हो। इस दिव्य जन्म का बन्धन नहीं, सम्बन्ध है।

यथार्थ सेवा का कभी बन्धन होता ही नही। क्योंकि योग युक्त, युक्तियुक्त सेवाधारी सदा सेवा करते भी उपराम रहते हैं। ऐसे नहीं कि सेवा ज़्यादा है इसलिए अशरीरी नहीं बन सकते। याद रखो मेरी सेवा नहीं बाप ने दी है तो निर्बन्धन रहेंगे। 'ट्रस्टी हूँ, बन्धन मुक्त हूँ' ऐसी प्रैक्टिस करो। अति के समय अन्त की स्टेज, कर्मातीत अवस्था का अभ्यास करो तब कहेंगे तेरे को मेरे में नहीं लाया है। अमानत में ख्यानात नहीं की है समझा, अभी का अभ्यास क्या करना है?

30.11.79.. .. न्यारा सदा प्रभु का प्यारा होता है। न्यारापन अर्थात् ट्रस्टीपन। ट्रस्टी की किसी में अटैचमेंट नहीं होती। क्योंकि मेरापन नहीं होता। तो सभी ट्रस्टी हो ना। गृहस्थी समझेंगे तो माया आयेगी। ट्रस्टी समझेंगे तो माया भाग जायेगी। मेरेपन से माया का जन्म होता है। जब मेरापन नहीं तो माया का जन्म ही नहीं। जैसे गन्दगी में कीड़े पैदा होते हैं वैसे ही जब मेरापन आता है तो माया का जन्म होता है। तो मायाजीत बनने का सहज तरीका – सदा ट्रस्टी समझो। इसमें तो होशियार हो ना? ब्रह्माकुमार अर्थात ट्रस्टी। चाहे प्रवृत्ति में हो लेकिन हो ब्रह्माकुमार न कि प्रवृत्ति कुमार। जब ब्रह्माकुमार की स्मृति रहती है तो प्रवृत्ति में भी न्यारे ब्रह्माकुमार के बजाए कोई और सम्बन्ध समझा तो माया आयेगी। इसलिए अपना अलौकिक सरनेम सदा याद रखो।

14.1.80.. .. वास्तव में गृहस्थ व्यवहार शब्द चेन्ज करो। गृहस्थ शब्द बोलते ही गृहस्थी बन जाते हो। इसलिए गृहस्थी नहीं हो, ट्रस्टी हो। गृहस्थ व्यवहार नहीं, ट्रस्ट व्यवहार है। गृहस्थी बनते हैं तो क्या करते हैं? गृहस्थियों का कौन-सा खेल है? गृहस्थी बनते हो तो बहाने बाज़ी बहुत करते हो। ऐसे और वैसे की भाषा बहुत बोलते हो। ऐसे हैं ना, वैसे हैं ना। बात को भी बढ़ाने लग जाते हैं। यह तो आप जानते हो करना ही पड़ेगा, यह तो ऐसे ही है, वैसे ही है – यह पाठ बाप को भी पढ़ाने लग जाते हो। ट्रस्टी बन जाओ तो बहाने बाज़ी खत्म हो चढ़ती कला की बाज़ी शुरू हो जायेगी। तो आज से अपने को गृहस्थ व्यवहार वाले नहीं समझना। ट्रस्ट व्यवहार है। जिम्मेवार और है, निमित्त आप हो। जब ऐसे संकल्प में परिवर्तन करेंगे तो बोल और कर्म में परिवर्तन हो ही जाएगा।

5.4.81.. कर्मातीत – इसके लिए तैयारी कौन-सी करनी है? डबल लाइट बनो। तो डबल लाइट बनना आता है ना। ट्रस्टी समझाना अर्थात् लाइट बनना। दूसरा – आत्मा समझना अर्थात् लाइट होना। तो यह तैयारी करने तो आती है ना। तो यह तैयारी करने तो आती है ना। यही अटेन्शन रखने से फिर सेकेण्ड में कर्मातीत, सेकेण्ड में कर्मयोगी।

13.4.81.. .. हर कर्म करते हुए अपनी स्थिति श्रेष्ठ रहे उसके लिए कौन सा एक शब्द सदा स्मृति में रखो – ट्रस्टी। अगर कर्म करते ट्रस्टीपन की स्मृति रहे तो स्थिति श्रेष्ठ बन जायेगी। क्योंकि ट्रस्टी बनकर चलने से सारा ही बोझ बाप पर पड़ जाता है, आप सदा डबल लाइट बन जाते। डबल लाइट होने के कारण हाई जम्प दे सकते हो। अगर गृहस्थी समझते तो दुम्ब लग जाता। सारा बोझ अपने पर आ जाता। बोझ वाला हाई जम्प दे नहीं सकता। और ही साँस फूलता रहेगा। ट्रस्टी समझने से स्थिति सदा ऊंची रहेगी। तो सदा ट्रस्टी होकर रहने की श्रेष्ठ मत को स्मृति में रखो।

12.10.81.. .. एकरस स्थिति में रहने का सहज साधन क्या मिला है? एक शब्द बताओ। वह एक शब्द है – ट्रस्टी। अगर ट्रस्टी बन जाते तो न्यारे और प्यारे होने से एकरस हो जाते। जब गृहस्थी है तो अनेक रस हैं, मेरा-मेरा बहुत हो जाता है। कभी मेरा घर, कभी मेरा परिवार,....गृहस्थीपन अर्थात् अनेक रसों में भटकना। ट्रस्टीपन अर्थात् एकरस। ट्रस्टी सदा हल्का और सदा चढ़ती कला में जाएगा।

17.10.81.. .. जीवन को श्रेष्ठ बनाने का सहज साधन कौन सा है? श्रेष्ठ जीवन तब बनती जब अपने को ट्रस्टी समझकर चलते। ट्रस्टी अर्थात् न्यारा और प्यारा। तो सभी को बाप ने ट्रस्टी बना दिया। ट्रस्टी हो ना? ट्रस्टी होकर रहने से गृहस्थी पन स्वतः निकल जाता है। गृह-स्थीपन ही श्रेष्ठ जीवन से नीचे ले आता। ट्रस्टी का मेरापन कुछ नहीं होता। जहाँ मेरापन नहीं वहाँ नष्टोमोहा स्वतः हो जाते। सदा निर्मोही अर्थात् सदा श्रेष्ठ सुखी। मोह में दु:ख होता है। तो नष्टोमोहा बनो।

1.11.81.. .. माताओं को :– प्रवृत्ति में रहते एक बाप दूसरा न कोई इसी स्मृति में रहती हो, यह चेकिंग करती हो? क्योंकि प्रवृत्ति के वायुमण्डल में रहते, उस वायुमण्डल का असर न हो, सदा बाप के प्यारे रहें इसके लिए इसी बात की चेकिंग चाहिए। निमित्त मात्र प्रवृत्ति है लेकिन बाप की याद में रहना। परिवार की सेवा का कितना भी पार्ट बजाना पड़े लेकिन ट्रस्टी होकर बजाना है। ट्रस्टी होंगे तो नष्टोमोहा हो जायेंगे। गृहस्थीपन होगा तो मोह आ जायेगा। बाप याद नहीं आता माना मोह है। बाप की याद से हर प्रवृत्ति का कार्य भी सहज हो जायेगा क्योंकि याद से शक्ति मिलती है। तो बाप के याद की छत्रछाया के नीचे रहती हो ना? छत्रछाया के नीचे रहने वाले हर विघ्न से न्यारे होंगे।

19.3.82.. ..ट्रस्टी अर्थात् जीवनमुक्त। तो मरजीवा बने हो या मर रहे हो? कितने साल मरेंगे? भक्ति मार्ग में भी जड़ चित्र को प्रसाद कौनसा चढ़ता हैं? जो झाटकू होता है। चिलचिलाकर मरने वाला प्रसाद नहीं होता। बाप के आगे प्रसाद वही बनेगा जो झाटकू होगा। एक धक से चढ़ने वाला। सोचा, संकल्प किया, 'मेरा बाबा, मैं बाबा का' तो झाटकू हो गया। संकल्प किया और खत्म! लग गई तलवार! अगर सोचते, बनेंगे, हो जायेंगे... तो गें...गें अर्थात् चिलचिलाना। गें गें करने वाले जीवनमुक्त नहीं। बाबा कहा – तो जैसा बाप वैसे बच्चे। बाप सागर हो और बच्चे भिखारी हों, यह हो नहीं सकता। बाप ने आफर किया – मेरे बनो तो इसमें सोचने की बात नहीं।

1.4.82.. .. चाहे प्रवृत्ति में रह ट्रस्टी बन चल रहे हो, चाहे प्रवृत्ति से निवृत्त हो सेवाधारी बन सदा सेवाकेन्द्र पर रहे हुए हो लेकिन दोनों ही प्रकार की ब्राह्मण आत्मायें चाहे ट्रस्टी, चाहे सेवाधारी, दोनों ही नाम एक ही ब्रह्माकुमारकुमारी कहलाते हो। सरनेम दोनों का एक ही है लेकिन दोनों का त्याग के आधार पर भाग्य बना हुआ है। ऐसे नहीं कह सकते कि सेवाधारी

बन सेवाकेन्द्र पर रहना यही श्रेष्ठ त्याग वा भाग्य है। ट्रस्टी आत्मायें भी त्याग वृत्ति द्वारा माला में अच्छा नम्बर ले सकती हैं। लेकिन सच्चे और साफ दिल वाला ट्रस्टी हो। भाग्य प्राप्त करने का दोनों को अधिकार है। लेकिन श्रेष्ठ भाग्य की लकीर खींचने का आधार है –''श्रेष्ठ संकल्प और श्रेष्ठ कर्म।'' चाहे ट्रस्टी आत्मा हो, चाहे सेवाधारी आत्मा हो, दोनों इसी आधार द्वारा नम्बर ले सकते हैं। दोनों को फुल अथार्टी है – भाग्य बनाने की।

26.4.82.. ..गुजरात कल्याणकारी नहीं, विश्व-कल्याणकारी बनो। सदा एवररेडी रहो। आज कोई भी डायरेक्शन मिले – बोलो, 'हाँ जी'। क्या होगा कैसे होगा – ट्रस्टी को क्या, कैसे का क्या सोचना। अपनी आफर सदा करो तो सदा उपराम रहेंगे। लगाव झुकाव से किनारा हो जायेगा। आज यहाँ हैं कल कहाँ भी चले जायें तो उपराम हो जायेंगे।

25.12.82.. .. बाप के ऊपर सारा कार्य छोड़ दिया तो बाप जाने, कार्य जाने। स्वयं सदा डबल लाइट फरिश्ता, ट्रस्टी बनकर रहो तो सदा हल्के रहेंगे। साफ़ दिल मुराद हासिल।

21.3.83.. .. डबल प्राप्ति, डबल ज़िम्मेवारी, लेकिन डबल जिम्मेवारी होते भी डबल लाइट डबल लाइट समझने से कभी लौकिक जिम्मेवारी भी थकायेगी नहीं क्योंकि ट्रस्टी हो ना। ट्रस्टी को क्या थकावट। अपनी गृहस्थी, अपनी प्रवृत्ति समझेंगे तो बोझ है। अपना है ही नहीं तो बोझ किस बात का।

27.3.83.. .. सेवाधारी आत्मायें चलते फिरते याद और सेवा की लगन में रहती हैं। सदा बाप के परिचय द्वारा सर्व आत्माओं को बाप के समीप लाने का प्लैन बनाती रहती हैं। लौकिक काम करते भी यही याद रहता है कि मैं ट्रस्टी हूँ। जिसने ट्रस्टी बनाया वह याद रहेगा ना! बाप और सेवा के सिवाए और कुछ नहीं। लौकिक कार्य निमित्त मात्र। लौकिक कार्य भी बाप की याद से सहज और सफल हो जाता है।

16.5.83.. .. जिस समय तन का हिसाब किताब चुक्तू करने का पार्ट बजाते हो उस समय यह निरन्तर स्मृति रहे कि बाबा आप जानो आपका काम जाने। मैं बीमार हूँ, नहीं मेरा शरीर बीमार है, नहीं, तेरी अमानत है तुम जानो। मैं साक्षीदृष्टा बन आपके अमानत की सेवा कर रही हूँ। इसको कहा जाता है – 'साक्षीदृष्टा'। ट्रस्टी बनना। ऐसे ही मन भी तेरा। मेरा है ही नहीं। मेरा मन नहीं लगता, मेरा योग नहीं लगता, मेरी बुद्धि एकाग्र नहीं होती। यह 'मेरा' शब्द हलचल पैदा करता है। मेरा है कहाँ। मेरापन मिटाना ही सर्व बन्धन मुक्त बनना है।

23.12.83.. .. बच्चों की मेहनत को देख बापदादा ने मेहनत से छुड़ाए सहज योगी बना दिया है। सेकण्ड में स्वराज्य-अधिकारी बनाया ना। मेहनत से छुड़ाया ना। यह सब सोचते हैं कि नौकरी से तो नहीं छुड़ाया। लेकिन अभी कुछ भी करते हो अपने लिए नहीं करते हो। ईश्वरीय सेवा के प्रति करते हो। अभी मेरा काम समझकर कर नहीं करते हो। ट्रस्टी बन करके करते हो। इसलिए मेहनत मुहब्बत में बदल गई। बाप की मुहब्बत में, सेवा की मुहब्बत में, मिलन मनाने की मुहब्बत में – मेहनत नहीं लगती।

नौकरी से नही छुड़ाया लेकिन मेहनत से छुड़ाया ना। भावना और भाव बदल गया ना। ट्रस्टीपन का भाव और ईश्वरीय सेवा की भावना, तो बदल गयी ना। अभी अपना-पन है? तीन पैर पृथ्वी तो मिली है वह भी बाबा का घर कहते हो ना। मेरे घर तो नहीं कहते हो ना। अपने घर में नहीं रहते। बाप के घर में रहते हो। बाप के डायरेक्शन से कार्य करते हो। अपनी इच्छा से, अपनी आवश्यकताओं के कारण नहीं करते। जो डायरेक्शन बाप का, उसमें निश्चिंत और न्यारे होकर करते जो मिला बाप का है वा सेवा अर्थ है। भले शरीर प्रति भी लगाते हो लेकिन शरीर भी अपना नहीं है। वह भी बाप को दे दिया ना। तन-मन-धन सब बाप को दे दिया है ना वा कुछ रखा है किनारे करके, ऐसे तो नहीं हो ना। तो बापदादा ने बच्चों की जन्म-जन्म की मेहनत देख अब से अनेक जन्मों तक मेहनत से छुड़ा दिया। यही निशानी है बाप और बच्चों के मुहब्बत की।

14.1.84.. .. जानकी दादी से:- आप सभी को नाम का दान देती हो! नाम का दान क्या है? आपका नाम क्या है! नाम का दान देना अर्थात् ट्रस्टी बनकर वरदान देना। आपका नाम लेते ही सबको क्या याद आयेगा? – सेकण्ड में जीवन मुक्ति। ट्रस्टी बनना। यह आपके नाम की विशेषता है। इसलिए नामदान भी दे दो तो किसका भी बेड़ा पार हो जायेगा। बाप ने अभी आपके ट्रस्टीपन की विशेषता का गायन किया है, वही यादगार, है। वही 'जनक' अक्षर उनको मिल गया होगा। एक ही जनक की दो कहानियाँ हैं। जनक जो सेकण्ड में विदेही बन गया। दूसरा जनक जो सेकण्ड में ट्रस्टी बन गया। मेरा नहीं – 'तेरा'। त्रेता वाला जनक भी दिखाते हैं। लेकिन आप तो बाप की जनक हो, सीता वाली नहीं। नाम दान का महत्व क्यों हैं, इस पर क्लास कराना। नाम की नईया द्वारा भी पार हो जाते हैं। और कुछ समझ में न भी आये लेकिन 'शिवबाबा शिवबाबा' भी कहा तो स्वर्ग की गेट पास तो मिल जाती है। अच्छा –

8.4.84.. ..आज शुभ-भावना, शुभ-काामना नहीं है उसका कारण निमित्त-भाव के बजाए मैं-पन आ गया है। अगर निमित्त् समझें तो करावनहार बाप को समझें। करनकरावनहार स्वामी सदा ही श्रेष्ठ करायेंगे। ट्रस्टीपन के बाजए राज्य की प्रवृत्ति के गृहस्थी बन गये हैं, गृहस्थी में बोझ होता है और ट्रस्टी पन में हल्कापन होता है। जब तक हल्के नहीं तो निर्णय शक्ति भी नहीं है। ट्रस्टी हैं, हल्के हैं तो निर्णय शक्ति श्रेष्ठ है। इसलिए सदा ट्रस्टी हैं, निमित्त हैं, यह भावना फलदायक है। भावना का फल मिलता है। तो यह निमित्त-पन की भावना सदा श्रेष्ठ फल देती रहेगी। तो सभी साथियों को यह स्मृति दिलाओं कि निमित्त-भाव, ट्रस्टी-पन का भाव रखो। तो यह राजनीति विश्व के लिए श्रेष्ठ नीति हो जायेगी। सारा विश्व इस भारत की राजनीति को कापी करेगा। लेकिन इसका आधार ट्रस्टीपन अर्थात् – निमित्त-भाव।

12.12.84.. .. सदा प्रवृति में रहते अलौकिक वृत्ति में रहते हो? गृहस्थी जीवन से परे रहने वाले। सदा ट्रस्टी रूप में रहने वाले। ऐसे अनुभव करते हो? ट्रस्टी माना सदा सुखी और गृहस्थी माना सदा दुखी, आप कौन हो? सदा सुखी। अभी दु:ख की दुनिया छोड़ दी। उससे निकल गये। अभी संगमयुगी सुखों की दुनिया में हो। अलौकिक प्रवृत्ति वाले हो, लौकिक प्रवृत्ति वाले नहीं। आपस में भी अलौकिक वृत्ति, अलौकिक दृष्टि रहे। ट्रस्टी-पन की निशानी है – सदा न्यारा और बाप का प्यारा। अगर न्याराप्यारा नहीं तो ट्रस्टी नहीं। गृहस्थी जीवन अर्थात् बन्धन वाली जीवन। ट्रस्टी जीवन निर्बन्धन है। ट्रस्टी बनने से सब बन्धन सहज ही समाप्त हो जाते हैं। बन्धनमुक्त हैं तो सदा सुखी हैं। उनके पास दुख की लहर भी नहीं आ सकती। अगर संकल्प में भी आता है – मेरा घर, मेरा परिवार, मेरा यह काम है तो यह स्मृति भी माया का आह्वान करती है। तो मेरे को 'तेरा' बना दो। जहाँ तेरा है वहाँ दु:ख खत्म। मेरा कहना और मूंझना। तेरा कहना और मौज में रहना। अभी मौज में नहीं रहेंगे तो कब रहेंगे! संगमयुग ही मौजों का युग है। इसलिए सदा मौज में रहो। स्वप्न और संकल्प में भी व्यर्थ न हो। आधा कल्प सब व्यर्थ गंवाया, अब गंवाने का समय पूरा हुआ। कमाई का समय है। जितने समर्थ होंगे उतना कमाई कर जमा कर सकेंगे।

10.11.87.. .. हिम्मते बच्चे मददे बाप। बच्चों की हिम्मत पर सदा बाप की मदद पद्मगुणा प्राप्त होती है। बोझ तो बाप के ऊपर है। लेकिन ट्रस्टी बन सदा बाप की याद से आगे बढ़ते रहो। बाप की याद ही छत्रछाया है। पिछला हिसाब सूली है लेकिन बाप की मदद से काँटा बन जाता है। परिस्थितियाँ आनी जरूर हैं क्योंकि सब कुछ यहाँ ही चुक्तु करना है। लेकिन बाप

की मदद काँटा बना देती है, बड़ी बात को छोटा बना देती है क्योंकि बड़ा बाप साथ है। सदा निश्चय से आगे बढ़ते रहो। हर कदम में ट्रस्टी। ट्रस्टी अर्थात् सब कुछ तेरा, मेरा-पन समाप्त। गृहस्थी अर्थात् मेरा। तेरा होगा तो बड़ी बात, छोटी हो जायेगी और मेरा होगा तो छोटी बात, बड़ी हो जायेगी। तेरा-पन हल्का बनाता है और मेरा-पन भारी बनाता है। तो जब भी भारी अनुभव करो तो चेक करो कि कहाँ मेरा-पन तो नहीं? मेरे को तेरे में बदली कर दो तो उसी घड़ी हल्के हो जायेंगे, सारा बोझ एक सेकण्ड में समाप्त हो जायेगा।

7.3.88.. .. ब्राह्मण बच्चों को तो बाप ही खिलाता है। चाहे लौकिक कमाई भी करके पैसे जमा करते, उसी से भोजन मंगाते भी हो लेकिन पहले अपनी कमाई भी बाप की भण्डारी में डालते हो। बाप की भण्डारी भोलानाथ का भण्डारा बन जाता है। कभी भी इस विधि को भूलना नहीं। नहीं तो, सोचेंगे - हम खुद कमाते, खुद खाते हैं। वैसे तो ट्रस्टी हो, ट्रस्टी का कुछ नहीं होता है। हम अपनी कमाई से खाते हैं - यह संकल्प भी नहीं उठ सकता। जब ट्रस्टी हैं तो सब बाप के हवाले कर दिया। तेरा हो गया, मेरा नहीं। ट्रस्टी अर्थात् तेरा और गृहस्थी अर्थात् मेरा। आप कौन हो? गृहस्थी तो नहीं हो ना? भगवान खिला रहा है, ब्रह्मा-भोजन मिल रहा है - ब्राह्मण आत्माओं को यह नशा स्वत: ही रहता है और बाप की गैरन्टी है - 21 जन्म ब्राह्मण आत्मा कभी भूखी नहीं रह सकती, बड़े प्यार से दाल-रोटी, सब्जी खिलायेंगे। यह जन्म भी दाल-रोटी प्यार की खायेंगे, मेहनत की नहीं। इसलिए सदा यह स्मृति रखो कि अमृतवेले से लेकर क्या-क्या भाग्य प्राप्त हैं! सारी दिनचर्या सोचो।

12.3.88.. .. बाप तो सागर है, उसमें फ़िकर रहेगा ही नहीं। तो बाप भी बेफ़िकर और बच्चे भी बेफ़िकर हो गये। तो जो भी कर्म करो, कर्म करने से पहले यह सोचो कि मैं ट्रस्टी हूँ! ट्रस्टी काम बहुत प्यार से करता है लेकिन बोझ नहीं होता है। ट्रस्टी का अर्थ ही है सब कुछ, बाप तेरा। तो तेरे में प्राप्ति भी.ज्यादा और हल्के भी रहेंगे, काम भी अच्छा होगा क्योंकि जैसी स्मृति होती है, वैसी स्थिति होती है।

11.11.89.. .. तन, मन और धन – तीनों के ट्रस्टी हो, इसलिए मालिक बाप की श्रीमत के बिना कार्य में नहीं लगा सकते। हर समय बाप की श्रीमत दिव्य कर्म करने की मिलती है। इसलिए चेक करो कि सारे दिन में साधारण बोल और कर्म कितना समय रहा और दिव्य अलौकिक कितना समय रहा? कई बच्चे कहाँ-कहाँ बहुत भोले बन जाते हैं। चेक करते हैं लेकिन भोलेपन में। समझते हैं – सारे दिन में कोई विशेष ग़लती तो की नहीं, बुरा सोचा नहीं,

बुरा बोला नहीं। लेकिन यह चेक किया कि दिव्य वा अलौकिक कर्म किया? क्योंकि साधारण बोल वा कर्म जमा नहीं होता, न मिटता है, न बनता है। वर्तमान का दिव्य संकल्प वा दिव्य बोल और कर्म भविष्य का जमा करता है। जमा का खाता बढ़ता नहीं है। तो जमा करने के हिसाब में भोले बन जाते हैं – खुश रहते हैं कि मैंने वेस्ट नहीं किया। लेकिन सिर्फ इसमें खुश नहीं रहना है। वेस्ट नहीं किया लेकिन बेस्ट कितना बनाया? कई बार बच्चे कहते हैं –मैंने आज किसको दु:ख नहीं दिया। लेकिन सुख भी दिया? दु:ख नहीं दिया–इससे वर्तमान अच्छा बनाया। लेकिन सुख देने से जमा होता है। वह किया वा सिर्फ वर्तमान में ही खुश हो गये? सुखदाता के बच्चे सुख का खाता जमा करते। सिर्फ यह नहीं चेक करो कि दु:ख नहीं दिया लेकिन सुख कितना दिया। जो भी सम्पर्क में आये मास्टर सुखदाता द्वारा हर कदम में सुख की अनुभूति करे। इसको कहा जाता है – 'दिव्यता वा अलौकिकता'। तो चेकिंग भी साधारण से गुह्य चेकिंग करो। हर समय यह स्मृति रखो कि एक जन्म में 21 जन्मों का खाता जमा करना है। तो सब खाते चेक करो–तन से कितना जमा किया? मन के दिव्य संकल्प से कितना जमा किया? और धन को श्रीमत प्रमाण श्रेष्ठ कार्य में लगाकर कितना जमा किया? जमा के खाते तरफ़ विशेष अटेन्शन दो। क्योंकि आप विशेष आत्माओं का जमा करने का समय इस छोटे से जन्म के सिवाए सारे कल्प में कोई समय नहीं है। और आत्माओं का हिसाब अलग है। लेकिन आप श्रेष्ठ आत्माओं के लिए –''अब नहीं तो कब नहीं''। तो समझा क्या करना है? इसमें भोले नहीं बनो। पुराने संस्कारों में भोले मत बनो। बापदादा ने रिज़ल्ट देखी। कितनी बातों की रिज़ल्ट में जमा का खाता बहुत कम है, उसका विस्तार फिर सुनायेंगे।

1.12.89.. .. हद की प्राप्ति कराने वाला भी नहीं भूलता है तो बेहद की प्राप्ति कराने वाला भूल कैसे सकता! तो सदा यही याद रखना कि ट्रस्टी हैं। कभी भी अपने ऊपर बोझ नहीं रखना। इससे सदा हँसते, गाते, उड़ते रहेंगे। जीवन में और क्या चाहिए! हँसना, गाना और उड़ना।

9.12.89.. .. ट्रस्टी बनकर, सेवाधारी बनकर सेवा करो। मेरा-पन आता है तो तंग होते हो। मेरा बच्चा और ऐसे करता है! तो जहाँ मेरा-पन होता है वहां तंग होते और जहाँ तेरा-तेरा आया तो तैरने लगते। तो तैरने वाले हो! सदा तेरा माना स्वमान में रहना। मेरा-मेरा कहना

माना अभिमान आना, तेरा-तेरा मानना माना स्वमान में रहना। तो सदा स्वमान में रहने वाले अर्थात् तेरा मानने वाले - यही याद रखना। अच्छा!

13.2.91.. .. पुरानी दुनिया से मरे हुए हो ना? नई दुनिया में जीते हो, पुरानी दुनिया से मरे हुए हो, तो मरे हुए को मरने से क्या डर लगेगा? और ट्रस्टी हो ना? अगर कोई भी मेरापन होगा तो माया बिल्ली म्याऊं म्याऊं करेगी। मैं आऊं, मैं आऊं...। आप तो हो ही ट्रस्टी। शरीर भी मेरा नहीं। लोगों को मरने का फिकर होता है या चीजों का या परिवार का फिक्र होता है। आप तो हो ही ट्रस्टी। न्यारे हो ना, कि थोड़ा-थोड़ा लगाव है? बॉडी कान्सेसनेस है तो थोड़ा-थोड़ा लगाव है। इसलिए तपस्या अर्थात् ज्वाला स्वरूप, निर्भय।

13..2.91.. .. ब्राह्मण जीवन में कभी किसका माथा भारी हो नहीं सकता। हॉस्पिटल बनाने वालों का माथा भारी हुआ ? ट्रस्टी सामने बैठे हैं ना! माथा भारी है, जब करनकरावनहार बाप
है तो आपको क्या बोझ है ? यह तो निमित्त बनाकर भाग्य बनाने का साधन बना रहे हो। आपकी जिम्मेवारी क्या है? बाप के बजाए अपनी जिम्मेवारी समझ लेते हैं तो माथा भारी होता है। बाप सर्व शक्तिवान मेरा साथी है तो क्या भारीपन होगा। छोटी सी गलती कर देते हो, मेरी जिम्मेवारी समझते हो तो माथा भारी होता है। तो ब्राह्मण जीवन ही नाचो गाओ और मौज करो। सेवा चाहे वाचा है चाहे कर्मणा। यह सेवा भी एक खेल है। सेवा कोई और चीज नहीं है। कोई दिमाग के खेल होते हैं, कोई हल्के खेल होते हैं। लेकिन हैं तो खेल ना। दिमाग के खेल में दिमाग भारी होता है क्या। तो यह सब खेल करते हो। तो चाहे कितना भी बड़ा सोचने का काम हो, अटेन्शन देने का काम हो लेकिन मास्टर सर्वशक्तिवान आत्मा के लिए सब खेल है, ऐसे है?
4.12.91. .. सिवाए बाप और सेवा के और कहाँ तो मन-बुद्धि नहीं जाती? अगर जाती है तो लगाव है। अगर व्यवहार भी करते हो, जो भी करते हो, भी ट्रस्टी बनकर। मेरा नहीं, तेरा। मेरा काम है, मुझे ही देखना पड़ता है.. मेरी जिम्मेवारी है.. ऐसे कहते हो कभी? क्या करें, मेरी जिम्मेवारी है ना, निभाना पड़ता है ना, करना पड़ता है ना, कहते हो कभी? या तेरा तेरे अर्पण, मेरा कहाँ से आया? तो यह बोल भी नहीं बोल सकते हो? मुझे ही देखना पड़ता है, मुझे ही करना पड़ता है, मेरा ही है, निभाना ही पड़ेगा...। मेरा कहा और बोझ हुआ। बाप का है, बाप करेगा, मैं निमित्त हूँ तो हल्के। बोझ उठाने की आदत तो नहीं है? 63 जन्म बोझ उठाया ना। कइयों की आदत होती है बोझ उठाने की। बोझ उठाने बिना नहीं सकते। आदत से मजबूर हो जाते हैं। मेरा मानना माना बोझ उठाना। समझा।

18.1.92.. .. न मेरी प्रवृत्ति है, न मेरा सेन्टर है। प्रवृत्ति में हो तो भी ट्रस्टी हो, बाप की श्रीमत प्रमाण निमित्त बने हुए

हो, और सेन्टर पर हो तो भी बाप के सेन्टर हैं न कि मेरे। इसलिए सदा शिव बाप की भण्ड़ारी है, ब्रह्मा बाप का भण्ड़ारा है – इस स्मृति से भण्डारी भी भरपूर रहेगी, तो भण्डारा भी भरपूर रहेगा। मेरापन लाया तो भण्डारा व भण्डारी में बरक्कत नहीं होगी। किसी भी कार्य में अगर कोई प्रकार की खोट अथवा कमी होती है तो इसका कारण बाप की बजाए मेरेपन की खोट है इसीलिए खोट होती है।

3.10.92.. .. एकरस स्थिति बनाने के लिये एक की याद में रहो, ट्रस्टी बनो

ट्रस्टी अर्थात् तेरा और गृहस्थी अर्थात् मेरा। तो आप कौन हो? मेरा-मेरा मानते क्या मिला? मेरा ये, मेरा ये.... मेरे-मेरे के विस्तार से मिला क्या? कुछ मिला या गंवाया? जितना मेरा-मेरा कहा, उतना ही मेरा कोई नहीं रहा। तो ट्रस्टी जीवन कितनी प्यारी है! सम्भालते हुए भी कोई बोझ नहीं, सदा हल्के। देखो, गृहस्थी बन चलने से बोझ उठाते-उठाते क्या हाल हुआ–तन भी गंवाया, मन भी अशान्त किया और सच्चा धन भी गंवा दिया। तन को रोगी बना दिया, मन को अशान्त बना लिया और धन में कोई शक्ति नहीं रही।

13.10.92.. .. गृहस्थी अर्थात् मेरापन और ट्रस्टी अर्थात् तेरा। सेवा-स्थान समझने से सदा सेवा याद रहेगी। प्रवृत्ति है तो प्रवृत्ति को निभाने में ही लग जायेंगे।

सेवाधारी सदा न्यारे रहेंगे। सब-कुछ बाप के हवाले कर दिया। इसलिए सब तेरा। जब संकल्प कर लिया कि मैं बाबा की और बाबा मेरा, तो जो संकल्प है वही साकार रूप में लाना है। सिर्फ संकल्प नहीं लेकिन साकार स्वरूप में, हर कर्म में ''मेरा बाबा'' मानकर के चलना। मेरा बाबा है बीज, बीज में सारा वृक्ष समाया हुआ है। अच्छा!

21.11.92.. .. देहभान में आना, बॉडी-कॉन्सेस में आना अर्थात् मेरा शरीर है।

30.12.92.. .. अभी यह देह बाप की अमानत है सेवा के लिए। तो सदा फरिश्ता बनने के लिए पहले यह प्रैक्टिकल अभ्यास करो कि सेवा अर्थ है, अमानत है, मैं ट्रस्टी हूँ। ट्रस्टी अगर ट्रस्ट की चीज में ट्रस्ट नहीं करे तो उसको क्या कहा जायेगा? इस बात को पक्का करो। फिर देखो, फरिश्ता बनना कितना सहज लगता है! 'मेरा एक बाबा'; और मेरा सब-कुछ इस 'एक मेरे' में समा गया। सभी समेटने और समाने में होशियार हो ना! वो मेरा-मेरा है फँसाने वाला और यह एक मेरा है छुड़ाने वाला। 'एक मेरा' कहा तो सब छूटा। अच्छा! यह याद रखो कि मेरा नहीं, बाप का है, सेवा अर्थ बाप ने ट्रस्टी बनाया है। नहीं तो सेवा कैसे करेंगे? शरीर तो चाहिए ना। लेकिन मेरा नहीं, ट्रस्टी हैं। मेरापन है तो गृहस्थी और तेरापन है तो ट्रस्टी। ट्रस्टी अर्थात् डबल लाइट। गृहस्थी को मेरे-मेरे का कितना बोझ होता है–मेरा घर, मेरे बच्चे, मेरे पोत्रे.....! लम्बी लिस्ट होती है। यह बोझ है। ट्रस्टी बन गये तो बोझ खत्म। ऐसे बने हो? या बदलते रहते हो? जब है ही कोई नहीं, एक बाप दूसरा न कोई–तो

क्या याद आयेगा? सहज विधि क्या हुई? ‘एक’ को याद करना, ‘एक’ में सब-कुछ अनुभव करना। इसलिए कहते हो ना कि बाप ही संसार है। संसार में सब-कुछ होता है ना। जब संसार बाप हो गया तो ‘एक’ की याद सहज हो गई ना।

9.1.93.. ..जब अपने को जिम्मेवार समझते हो तब चिंता होती है और बाप को जिम्मेवार समझते हो तो निश्चिंत हो जाते हो। कई बार कहते हैं ना–क्या करें, जिम्मेवारी है ना, निभाना पड़ता है। लेकिन ट्रस्टी बन निभाओ। गृहस्थी बनकर निभा नहीं सकेंगे। ट्रस्टी बनकर के निभाने से सहज भी होगा और सफल भी होंगे। तो सब चिंता छोड़कर जाना। जिनके पास थोड़ी-बहुत हो, तो छोड़कर जाना, साथ नहीं ले जाना। वैसे तीर्थ पर कुछ छोड़कर आते हैं ना। तो यह भी महान् तीर्थ है ना! तो सदा के लिए निश्चिंत, निश्चयबुद्धि।

18.1.93 .. .. .. गृहस्थीपन का भान है हद और ट्रस्टीपन का भान है बेहद। थोड़ा-थोड़ा गृहस्थी, थोड़ा-थोड़ा ट्रस्टी–नहीं। अगर गृहस्थी का बोझ होगा तो कभी उड़ती कला का अनुभव नहीं कर सकते। निमित्त भाव बोझ को खत्म कर देता है। मेरी जिम्मेवारी है, मेरे को ही सम्भालना है, मेरे को ही सोचना है तो बोझ होता है। जिम्मेवारी बाप की है और बाप ने ट्रस्टी अर्थात् निमित्त बनाया है! मेरा है तो बोझ आपका है, तेरा है तो बाप का है! इसमें कई चालाकी भी करते हैं–कहेंगे तेरा लेकिन बनायेंगे मेरा! कभी भी किसी भी कार्य में अगर बोझ महसूस होता है तो यह निशानी है कि तेरे के बजाए मेरा कहते हैं। तो यह गलती कभी नहीं करना।

1-2-94 ....जो मनमनाभव हो गये वह मन के बंधन से सदा के लिए छूट गये। अच्छा, प्रवृत्ति को सम्भालने का बंधन है? ट्रस्टी होकर सम्भालते हो? अगर ट्रस्टी हैं तो निर्बन्धन और गृहस्थी हैं तो बंधन है। गृहस्थी माना बोझ और बोझ वाला कभी उड़ नहीं सकता।

18-2-94......ब्राह्मणों की भाषा क्या है? मेरा या तेरा? तो क्यों सोचते हो? ये डिक्शनरी की भाषा ही नहीं है। मेरा-मेरा कहकर मैला कर देते हैं। मन दे दिया, तन दे दिया, धन दे दिया, ट्रस्टी हो, मेरा नहीं है। ट्रस्टी हो या गृहस्थी हो? गृहस्थी माना मेरा, ट्रस्टी माना तेरा। कौन हो सभी? अपने में ट्रस्ट है? बाप तो स्वयं ऑफर करता है मैं आपके साथ हूँ।

26.1.95.. .. .. अगर बापदादा फ़रमानबरदार की लिस्ट निकाले तो आप किस लिस्ट में होंगे? अपने को तो जानते हो ना? क्योंकि आप सभी सर्व खजानों के ट्रस्टी, मालिक हो। तो एक संकल्प भी बिना बाप के फ़रमान के यूज़ नहीं कर सकते हो। या सोचते हो कि हम बालक सो मालिक हैं, इसलिए व्यर्थ गंवायें या क्या भी करें, इसमें बाप का क्या जाता है! बाप ने दे दिया, अभी हिसाब क्यों लेते हैं? नहीं। आप रोज़ बाप के आगे कहते हो कि सब तेरा है, मेरा नहीं है। कहते हो ना! कि टाइम पर मेरा और टाइम पर तेरा! जब हमारा मतलब हो तो मेरा, वैसे तेरा..... ऐसी चतुराई तो नहीं करते हो? ब्रह्मा बाप को देखा–अपना आराम का

समय भी विचार सागर मंथन कर बच्चों के प्रति लगाया। रात्रि भी जागकर बच्चों को योग की शक्ति देते रहे। ये चरित्र तो सुने हैं ना? ब्रह्मा की कहानी सुनी है ना? फालो फादर किया कि सिर्फ सुन लिया? सुनना अर्थात् करना।

18.1.96.. .. न्यु इयर में बापदादा को दो-चार खिलौने दिये थे, उसमें क्या था कि एक तरफ करो तो भाई है, दूसरे तरफ करो तो फीमेल है, एक ही खिलौना बदल जाता था। एक सेकण्ड में वो हो जाता, एक सेकेण्ड में वो हो जाता। तो आप ऐसे खिलौने तो नहीं हो, अभी-अभी गृहस्थी, अभी-अभी ट्रस्टी। थोड़ा-थोड़ा, अशुद्ध और शुद्ध दोनों की युद्ध है तो ब्राह्मण के बजाए क्षत्रिय हो। कभी-कभी तो हो जाता है? घबराते हो ना तो माया समझ जाती है कि ये घबरा गया है, मारो अच्छी तरह से। इसलिए घबराओ नहीं। ट्रस्टी हैं अर्थात् पहले से ही सब कुछ छूट गया। ट्रस्टी माना सब बाप के हवाले कर दिया। मेरा क्या होगा! – बस गा गा आता है ना तो गड़बड़ होती है। सब अच्छा है और अच्छा होना ही है, निश्चिन्त है – इसको कहा जाता है समर्थ स्वरूप। तो आज का दिन कौन सा है? समर्थ बनने का, नष्टोमोहा होने का। जब आप लोग कहते हो कि अति के बाद अन्त होना है, कहते हो! अति में जा रहा है और जाना है तो परिवार में खिटखिट न हो, ये नहीं होना है, होना है! लेकिन आप ट्रस्टी बन, साक्षी बन परिस्थिति को बाप से शक्ति ले हल करो। गृहस्थी बनकर सोचेंगे तो और गड़बड़ होगी। पहले बिल्कुल न्यारे ट्रस्टी बन जाओ। मेरा नहीं। ये मेरापन–मेरा नाम खराब होगा, मेरी ग्लानि होगी, मेरा बच्चा और मुझे...., मेरी सास मेरे को ऐसे करती है.... ये मेरापन आता है ना तो सब बातें आती हैं। मेरा जहाँ भी आया वहाँ बुद्धि का फेरा हो जाता है, बदल जाते हैं। अगर बुद्धि कहाँ भी उलझन में बदलती है तो समझ लो ये मेरापन है, उसको चेक करो और जितना सुलझाने की कोशिश करेंगे उतना उलझेगा। इसलिए सभी बातों में क्या नहीं बनना है? दिलशिकस्त नहीं बनना है। क्या नहीं बनेंगे? (दिलशिकस्त) सिर्फ कहना नहीं, करना है। भगवान के बच्चे हैं ये तो पक्का वायदा है ना, इसको तो माया भी नहीं हिला सकती। जब ये पक्का वायदा है, निश्चय है तो भगवान के बच्चे भी दिलशिकस्त हो जायें, तो बड़ी दिल रखने वाले कौन होंगे? और कोई होंगे? आप ही हो ना! तो क्या करेंगे? अभी समर्थ बनो और सन शोज़ फादर का पाठ पक्का करो। कच्चा नहीं करो, पक्का करो। सभी हिम्मत वाले हो ना? हिम्मत है? अच्छा।

23.2.97.. .. कौन-कौन हैं जो लौकिक कार्य भी करते हैं और सेन्टर भी सम्भालते हैं, वह हाथ उठाओ। बहुत अच्छा। आप निश्चिंत रहो। नम्बर आप लोगों को वैसे ही मिलेंगे, जो सारा दिन करते हैं उन्हों जितना ऐसे खशनुम: बनो जो मन की खुशी सूरज से स्पष्ट दिखाई देही मिलेगा। सिर्फ ट्रस्टी होकर करना, मैं-पन में नहीं आना। मैं इतना काम करती हूँ, मैं-पन नहीं। करावनहार करा रहा है। मैं इन्स्ट्रुमेंट हूँ। पावर के आधार पर चल रही हूँ।

31-1-98 .. ..अगर दफ्तर में जाते हो, बिजनेस करते हो तो भी बिजनेस के आप ट्रस्टी हो लेकिन मालिक बाप है। दफ्तर में जाते हो तो आप जानते हो कि हमारा डायरेक्टर, बॉस बापदादा है, यह निमित्त मात्र है, उनके डायरेक्शन से काम करते हैं।

गीता पाठशाला के निमित्त आत्माओं की विशेषता है सदा अपने को हर कार्य में ट्रस्टी समझकर चलना। क्योंकि बापदादा ने देखा कि गीता पाठशाला खोलने वाले भिन्न-भिन्न संकल्प से गीता पाठशाला खोलते हैं, कोई तो सच्चे दिल से सेवा प्रति गीता पाठशाला खोलते हैं वा चलाते हैं लेकिन कोई-कोई जब वृद्धि होती है तो कहाँ-कहाँ भावनाओं में भी मिक्स हो जाता है। तो बापदादा देखते हैं कि कोई-कोई गीता पाठशाला अपने परिवार की पालना अर्थ भी खोलते हैं, परिवार की पालना भी हो और निमित्त सेवा भी हो। तो गीता पाठशाला का अर्थ है ट्रस्टी बनके सेवा करना क्योंकि जो भी आत्मायें आती हैं वह बाप के स्नेह में आती हैं, इसलिए ट्रस्टी बनकर कारोबार चलाना बहुत आवश्यक है। एकदम निःस्वार्थ सेवा की भावना वालों को कहेंगे सच्ची गीता पाठशाला।

बाकी बापदादा मैजॉरिटी शुभ भावना से सेवा निमित्त चलाने वाली आत्माओं पर बहुत खुश हैं कि अपना समय सफल कर रहे हैं। डबल कार्य उसी शुद्ध भावना से सम्भाल रहे हैं। और कोई भावना मिक्स नहीं है, न नाम की, न लौकिक परिवार के पालना की। तो ऐसी शुद्ध भावना, सेवा की भावना वाली ट्रस्टी आत्माओं को बापदादा बहुत-बहुत-बहुत मुबारक देते हैं।

उपराम

9.11.69.. .. .. रूहानी बच्चो! तुम आत्माओं को वाणी से परे अपने घर जाने के लिए पुरुषार्थ करना है। इसलिए इस पुरानी दुनिया में रहते देह और देह के सम्बन्धों से उपराम-चित होना है। पतित दुनिया में रहते हुए बाप पवित्र बनने की शक्ति देते हैं। पुरुषार्थ करके तुमको सदा पवित्र बनना है।

23.3.70.. .. .. उपराम और द्रष्टा साकार रूप ने सम्पूर्णता को साकार में लाया। सम्पूर्णता साकार रूप में सम्पन्न देखने में आती थी। सम्पूर्ण और साकार अलग देखने में आता था।

वैसे ही आपका साकार स्वरूप अलग देखने में नहीं आये। साकार रूप में मुख्य गुण क्या स्पष्ट देखने में आये? जिस गुण से सम्पूर्णता समीप देखने आती थी? वह क्या गुण था? जिस गुण को देख सभी कहते थे कि साकार होते भी अव्यक्त अनुभव होता है। वह क्या गुण था? (हरेक ने सुनाया) सभी बातों का रहस्य तो एक ही हे। लेकिन इस स्थिति को कहा जाता है- उपराम। अपने देह से भी उपराम। साकार रूप ने सम्पूर्णता को साकार में लाया। सम्पूर्णता साकार रूप में सम्पन्न देखने में आती थी। सम्पूर्ण और साकार अलग देखने में आता था। वैसे ही आपका साकार स्वरूप अलग देखने में नहीं आये। साकार रूप में मुख्य गुण क्या स्पष्ट देखने में आये? जिस गुण से सम्पूर्णता समीप देखने आती थी? वह क्या गुण था? जिस गुण को देख सभी कहते थे कि साकार होते भी अव्यक्त अनुभव होता है। वह क्या गुण था? (हरेक ने सुनाया) सभी बातों का रहस्य तो एक ही हे। लेकिन इस स्थिति को कहा जाता है- उपराम। अपने देह से भी उपराम। उपराम और द्रष्टा। जो साक्षी बनते हैं उनका ही दृष्टान्त देने में आता है। तो साक्षी द्रष्टा का सबूत और दृष्टान्त के रूप में सामने रखना है। एक तो अपनी बुद्धि से उपराम। संस्कारों से भी उपराम। मेंरे संस्कार हैं इस मेरेपन से भी उपराम। संस्कारों से भी उपराम। मेरे संस्कार हैं इस मेरेपन से भी उपराम। मैं यह समझती हूँ, इस मैं-पन से भी उपराम। जो साक्षी बनते हैं उनका ही दृष्टान्त देने में आता है। तो साक्षी द्रष्टा का सबूत और दृष्टान्त के रूप में सामने रखना है। एक तो अपनी बुद्धि से उपराम। संस्कारों से भी उपराम। मेंरे संस्कार हैं इस मेरेपन से भी उपराम। संस्कारों से भी उपराम। मेरे संस्कार हैं इस मेरेपन से भी उपराम। मैं यह समझती हूँ, इस मैं-पन से भी उपराम।

5. सर्वस्व त्यागी

25.1.69 .. .. जो सर्व त्यागी, सर्व समर्पण जीवन वाला होगा उनकी ही सम्पूर्ण अवस्था गाई जायेगी। और जब सम्पूर्ण बन जायेंगे तो साथ जायेंगे।

6.2.69.. .. जैसे त्रिमूर्ति का ज्ञान औरों को देते हो वैसे अपने पास भी तीन बातों का ज्ञान रखना है। तीन बातें छोड़ो और तीन बातें धारण करो। अब यह तीन बातें छोड़ेंगे तब ही स्वरूप में स्थित होंगे। सर्विस में सफलता भी होगी। बताओ कौन सी तीन बातें छोड़नी हैं? जो सर्विस में विघ्न डालती हैं, वह छोड़नी हैं। एक तो-कभी भी कोई बहाना नहीं देना। दूसरा कभी भी किससे सर्विस के लिए कहलाना नहीं। तीसरा – सर्विस करते कभी मुरझाना नहीं। बहाना, कहलाना और मुरझाना यह तीन बातें छोड़नी हैं। और फिर कौनसी तीन बातें धारण करनी हैं? त्याग, तपस्या और सेवा।

17.4.69.. .. साकार रूप में मुख्य संस्कार कौन-सा था? जो ब्रह्मा का संस्कार वह ब्राह्मणों का। साकार ब्रह्मा का मुख्य संस्कार कौन सा था। ब्रह्मा में तो वह संस्कार सम्पूर्ण रूप से देख लिया। लेकिन ब्राह्मणों में यथा योग, यथा शक्ति है। उनका मुख्य संस्कार था – सर्वस्व त्यागी। निरंहकारी का मतलब ही है सर्वस्व त्यागी। अपना सभी कुछ त्याग कर लेते हैं। सर्वस्व त्यागी होने से सर्वगुण आ जाते हैं। दूसरों के अवगुणों को न देखना, यह भी त्याग है। त्याग का अभ्यास होगा तो यह भी त्याग कर सकेंगे। सर्वस्व त्यागी अर्थात् देह के भान का भी त्याग। तो ब्राह्मणों का मुख्य संस्कार है – सर्वस्व त्यागी। इस त्याग से मुख्य गुण कौन से आते हैं? सरलता और सहनशी-लता। जिसमें सरलता, सहनशीलता होगी वह दूसरों को भी आकर्षण जरूर करेंगे। और एक दो के स्नेही बन सकेंगे। अगर सरलता नहीं तो स्नेह भी नहीं हो सकता। एक दो में स्नेही बनना है तो उसका तरीका यह है। एक तो सर्वस्व त्यागी देह सहित। इस सर्वस्व त्यागी से सरलता, सह-नशीलता आपे ही आयेगी। सर्वस्व त्यागी की यह निशानी होगी – सरलता और सहनशीलता। साकर रूप में भी देखा ना। जितना ही नालेजफुल उतना ही सरल स्वभाव। जिसको कहते हैं बचपन के संस्कार। बुजुर्ग का बुजुर्ग, बचपन का बचपन।

17.5.69.. .. जो अर्पणमय होगा उनके पास दर्पण रहेगा। अर्पण नहीं तो दर्पण भी अविनाशी नहीं रह सकता। दर्पण रखने लिये पहले अपने को पूरा अर्पण करना पड़ेगा। जिसको दूसरे शब्दों में सर्वस्व त्यागी कहते हैं। सर्वस्व त्यागी के पास दर्पण होता है।

23.7.69.. .. निर्माण अर्थात् अपने मान का भी त्याग। त्याग से फिर और ही ज्यादा भाग्य मिलता है। जितना आप त्याग करेंगे उतना और ही आपको स्वमान मिलेगा।

25.10.69.. .. विशेष स्नेह है तब तो ऐसे समय भी आये हैं। त्याग भी किया है ना। अपनी नींद का त्याग किया है तो यह भी स्नेह दिखाया।

24.4.73.. .. जिन्होंने जब से मन से त्याग किया अर्थात् कोई भी देह के बन्धन व देह के सम्बन्ध को एक सेकेण्ड में त्याग कर दिया उन की वह तिथि-तारीख और वेला सभी ड्रामा में व बापदादा के पास नूँधी हुई है।

8.5.73.. .. स्वयं के त्याग से औरों का भाग्य बनता है। जहाँ स्वयं का त्याग नहीं वहाँ औरों का भाग्य नहीं बनता। बाप ने स्वयं का त्याग किया, तभी तो आप अनेक आत्माओं का भाग्य बना। तो शुरू की स्थिति में स्वयं के सभी सुखों का त्याग था इससे यह भाग्य बने। अब जितना त्याग, उतना भाग्य बना रहे हो औरों का। इसलिए वारिस छिप गये हैं। तो अब फिर से वही महादानी बनने का संस्कार व सदा सर्व प्राप्ति होते हुए भी और सर्व साधन होते हुए भी साधन में न आओ, साधना में रहो। अभी साधना कम है, साधन ज्यादा हैं। पहले साधन कम थे, साधना ज्यादा थी। इसलिए अभी निरन्तर उस साधना में रहो अर्थात् साधन होते हुए भी त्याग वृत्ति में रहो।

6.2.74.. .. समर्पण और सर्वस्व त्यागी किसको कहा जाता है? जो विकारों के सर्व-वंश का भी त्याग करने वाले हैं। मोटे रूप में तो विकारों का त्याग हो जाता है, लेकिन विकारों का वंश अति सूक्ष्म है, उसका वंश-सहित त्याग करने वाले ही महारथी अर्थात् सर्वस्व त्यागी होगा। जब यहाँ वंश-सहित सब विकारों का त्याग करते हैं तो वहाँ 21 वंश-सहित निर्विघ्न और निर्विकार पीढ़ी चलती हैं। आधा कल्प दैवी-वंश चलता है और आधा कल्प विकारों का शूद्र वंश भी बढ़ता जाता है। तो इस वंश को समाप्त करने वाले ही इक्कीस वंश-सहित अपना दैवी राज्य भाग्य प्राप्त करते हैं। अगर वंश के त्याग करते समय थोड़ी भी कमी रह जाती है तो वहाँ भी इक्कीस वंश में थोड़ी कमी रह जायेगी। महारथी की यह निशानी है कि

जब सर्वस्व-अर्पण कर दिया तो उसमें तन-मन-धन, सम्पत्ति, समय, सम्बन्ध और सम्पर्क भी सब अर्पण किया ना? अगर समय भी अपने प्रति लगाया और बाप की याद या बाप के कर्त्तव्य में नहीं लगाया, तो जितना समय अपने प्रति लगाया, तो उतना समय कट हो गया।

18.4.74. .. टीचर्स को एक 'लिफ्ट की गिफ्ट' भी है। कौन-सी? टीचर्स बनना अर्थात् पुराने सम्बन्ध से त्याग करना। इस त्याग के भाग्य के लिफ्ट की गिफ्ट टीचर को है, पहले त्याग तो कर दिया ना। पहला त्याग है सम्बन्ध का। वो तो कर लिया। आगे भी त्याग की लिफ्ट लम्बी है। लेकिन इस त्याग का, हिम्मत रखने का, सहयोगी बनने का संकल्प किया, यह 'लिफ्ट ही गिफ्ट' बन जाती है। लेकिन सम्पूर्ण त्याग कर दो तो बाप के लिए गिफ्ट, दुनिया के लिए लिफ्ट बन जाओ। ऐसी लिफ्ट बन जाओ जो बैठा और पहऊँचा। मेहनत नहीं करनी पड़े। टीचर्स को चान्स बहुत है, लेकिन लेने वाला लेवे। टीचर्स बनने के भाग्य का तो सब गायन करते हुए, इच्छा रखते हैं। इच्छा रखते हैं अर्थात् श्रेष्ठ भाग्य है ना। उसको सदा श्रेष्ठ रखना वह है हरेक का नम्बरवार। टीचर्स जितना चाहे उतना अपना भविष्य सहज उज्वल बना सकती है – लेकिन वह टीचर जो योग्य टीचर हो।

18.1.75.. .. संगमयुग के ब्राह्मण के संस्कार जो त्याग मूर्त के हैं, वह कम इमर्ज (Emerge) होते हैं। त्याग-बिना भाग्य नहीं बनता अच्छा, कर लेंगे, देखा जायेगा – यह आराम पसन्दी के संस्कार हैं। ''ज़रूर करूंगा'', ये ब्राह्मणपन के संस्कार हैं। लौकिक पढ़ाई में जिसको चिन्ता रहती है, वह पास होता है। उसकी नींद फिट जाती है। जो आराम-पसन्द हैं वे पास क्या होंगे? अभी सोचते हो कि प्रैक्टिकल करना है। चिन्ता लगनी चाहिए, शुभ चिन्तन, सम्पूर्ण बनने की चिन्ता, कमजोरी को दूर करने की चिन्ता और प्रत्यक्ष फल देने की चिन्ता। इस मुरली के विशेष ज्ञान-बिन्दु 1. मधुबन है अविनाशी रुद्र ज्ञान महायज्ञ। इस महायज्ञ में अपनी लगन को ऐसी अग्नि बनाओ जिस अग्नि में सब व्यर्थ संकल्प, सर्व कमजोरियाँ व सब रहे हुये पुराने संस्कार बिल्कुल भस्म हो जायें। 2. बुद्धि में नॉलेज तो है लेकिन नॉलेजफुल नहीं बने हो। नॉलेजफुल का अर्थ है कि हर एक कर्मइन्द्रियों में नॉलेज समा जाये। तो जैसे भोजन खाने से, साथ ही समाने अर्थात् हजम करने से शरीर में शक्ति आती है वैसे ही तुम्हारी आत्मा शक्तिशाली बनती है। 3. जितना ज्ञान धारणा में आता है वह संस्कार बन जाता है तब ही प्रैक्टिकल सफ़लता का स्वरूप दिखाई पड़ता है। छोटे-से दाग़ से भी हीरे की वैल्यु कम हो जाती है।

29.1.75.. .. जैसे मधुबन शब्द दो बातों को सिद्ध करता है – एक मधुरता को और बेहद की वैराग्य वृत्ति को, ऐसे ही राज-ऋषि शब्द है जिसका अर्थ है – राज्य करने वाले। तो राजऋषि हैं – बैगर टू प्रिन्स (Beggar to Prince)~ जितना ही अधिकार उतना ही सर्वत्याग। सर्व त्यागी, अर्थात् समय के ऊपर, संकल्प के ऊपर, स्वभाव और संस्कार के ऊपर अधिकार प्राप्त करने वाले।

10.2.75.. .. स्वयं के त्याग द्वारा अन्य को सत्कार देते हुए अपना भाग्य बनाना है। छोटा, बड़ा, महारथी व प्यादा सर्व को सत्कार की नजर से देखो। सत्कार न देने वाले को भी सत्कार देने वाला, ठुकराने वाले को भी ठिकाना देने वाला, ग्लानि करने वाले के भी गुणगान करने वाला, ऐसे को कहा जाता है सर्व-सत्कारी।

11.12.75.. .. पुरुषार्थ में भी आराम पसन्द न होना अर्थात् अलबेला न होना है। आराम के साधनों का एडवान्टेज (लाभ) सदाकाल की प्राप्ति का विघ्न रूप नहीं बनाना। यह अटेन्शन रखना है। अगर किसी भी प्रकार की सिद्धि अथवा प्राप्ति को स्वीकार किया तो वहाँ कम हो जायेगा। साधन मिलते हुए भी उसका त्याग। प्राप्ति होते हुए भी त्याग करना उसको ही त्याग कहा जाता है। जब कि है ही अप्राप्ति, उसको त्याग दो तो यह मजबूरी हुई न कि त्याग। इतना अटेन्शन, अपने ऊपर रखते हो अथवा सहजयोग का यह अर्थ समझते हो कि सहज साधनों द्वारा योगी बनना है। हर बात में अटेन्शन रहे। रिटर्न देना अर्थात् आगे के लिए कट करना। खत्म करना। माइनस हो रहा है अथवा प्लस, हो रहा है यह चेक (जाँच) करना है। अच्छा। भले कितने ही आराम के साधन हो, परन्तु आराम पसन्द नहीं बनना।

1.9.75.. .. शक्तियाँ सोचती होंगी कि हम नम्बर दो हो जायेंगी क्या? शक्तियों के बिना तो शिव बाप की भी कोई चाल नहीं चल सकती। चल सकती है? शक्तियों को इसमें भी त्याग करना चाहिए, शक्तियों का त्याग पूजा जाता है। जो त्याग करता है उसका भाग्य स्वत: बनता है। इसलिये दोनों ही भाई-भाई के रूप में तीव्र पुरुषार्थ करो। समाचार के आधार पर पुरुषार्थ नहीं करना। आपके पुरुषार्थ से ही विनाश के समाचार चारों ओर फैलेंगे। पहले पुरुषार्थ, पीछे समाचार, न कि पहले समाचार और पीछे पुरुषार्थ।

27.9.75.. .. पहली स्टेज एक सेकेण्ड में बेहद का त्यागी – सोच करते समय गंवाने वाले नहीं, लेकिन झट से और एक धक से बाप पर बलिहार जाने वाले। दूसरी बात – बेहद के

निरन्तर अथक सेवाधारी और तीसरी बात-सदैव बेहद के वैराग्यवृत्ति वाले। बेहद के त्यागी, बेहद के सेवाधारी और बेहद के वैरागी। इन तीनों स्टेजिस से पार करने वाले ही विश्व-महाराजन् बन सकते हैं। साथ ही अन्त में लाइट हाउस और माइट हाउस बन सकते हैं। अपने आपको चेक करो कि तीनों स्टेजिस में से कौन-सी स्टेज तक पहुँचे हैं? स्वयं ही स्वयं का जज बनो। धर्मराजपुरी में जाने से पहले जो स्वयं, स्वयं का जज बनता है वही धर्मराजपुरी की सजा से बच जाता है। बाप भी बच्चों को धर्मराजपुरी में नहीं देखना चाहते हैं।

4.10.75.. .. जब सर्व समर्पण किया तो सर्व अर्थात् संकल्प, श्वास, बोल, कर्म, सम्बन्ध, सर्व व्यक्ति, वैभव, संस्कार, स्वभाव, वृत्ति, दृष्टि और स्मृति – सबको अर्पण किया। इसको ही कहा जाता है समर्पण। समर्पण से भी ऊपर और पॉवरफुल शब्द, स्वयं को सर्वस्व त्यागी कहते हो। सभी सर्वस्व-त्यागी हो वा त्यागी? सर्वस्व त्यागी अर्थात् जो भी त्याग किया, सम्बन्ध, सम्पर्क, भाव, स्वभाव और संस्कार, इन सबको पिछले 63 जन्मों के रहे हुए हिसाब-किताब के अंश को भी वंश-सहित त्याग किया हुआ है, इसलिए सर्वस्व त्याग कहा जाता है। ऐसे सर्वस्व त्यागी, जिनका पिछला हिसाब वंशसहित समाप्त हो गया – ऐसा सर्वस्व त्यागी कभी संकल्प भी नहीं कर सकता कि मेरा पिछला स्वभाव और संस्कार ऐसा है। पिछला हिसाब अब तक कभीकभी खींचता है वा कर्म-बन्धन का बोझ, कर्म सम्बन्ध का बोझ, कोई व्यक्ति वा वैभव के आधार का बोझ मुझ आत्मा को अपनी तरफ आकर्षित करते हैं? यह संकल्प व बोल सर्वस्व त्यागी के नहीं हैं-सर्वस्व त्यागी, सर्व बन्धनों से मुक्त, सर्व बोझों से मुक्त, हर संकल्प में भाग्य बनाने वाला पदमा-पदम भाग्यशाली होगा। ऐसे के हर कदम में पदमों की कमाई स्वत: ही होती है। ऐसे सर्वस्व त्यागी हो ना? शब्द के अर्थ स्वरूप में स्थित हो ना? बोलने वाले नहीं लेकिन करने वाले और अनेकों को कराने वाले हो ना? मुश्किल तो नहीं लगता है?

20.10.75.. .. वह यही है कि सारे दिन में सर्व प्रकार के त्याग-मूर्त्त रहे अथवा कहीं त्याग-मूर्त्त के बजाय कोई भी साधन व कोई भी वस्तु को स्वीकार करने वाले बनें? जो त्याग-मूर्त्त होगा वह कभी भी कोई वस्तु स्वीकार नहीं करेगा। जहाँ स्वीकार करने का संकल्प आया तो वहाँ तपस्या भी समाप्त हो जायेगी। त्याग, तपस्या-मूर्त्त ज़रूर बनायेगा। जहाँ त्याग और तपस्या खत्म वहाँ सेवा भी खत्म। बाहर से कोई कितने भी रूप से सेवा करे, परन्तु त्याग और तपस्या नहीं तो सेवा की भी सफ़लता नहीं। कई टीचर्स सोचती है कि सर्विस में सफ़लता क्यों

नहीं? कई टीचर्स सोचती है कि सर्विस में सफ़लता क्यों नहीं? सर्विस में वृद्धि न होना वह तो और बात है, परन्तु विधि-पूर्वक चलना यह है सर्विस की सफ़लता। तो वह तब होगी जब त्याग और तपस्या होगी। मैं टीचर हूँ, मैं इन्चार्ज हूँ, मैं ज्ञानी हूँ या योगी हूँ यह स्वीकार करना, इसको भी त्याग नहीं कहेगे। दूसरा भले ही कहे, परन्तु स्वयं को स्वयं न कहे। अगर स्वयं को स्वयं कहते हैं तो इसको भी स्व-अभिमान ही कहेगे। तो त्याग की परिभाषा साधारण नहीं। यह मोटे रूप का त्याग तो प्रजा बनने वाली आत्मायें भी करती हैं, परन्तु जो निमित्त बनते हैं उनका त्याग महीन रूप में है। कोई भी पोज़ीशन को या कोई भी वस्तु को किसी व्यक्ति द्वारा भी स्वीकार न करना – यह है त्याग। नहीं तो कहावत है कि जो सिद्धि को स्वीकार करते तो 'वह करामत खैर खुदाई'। तो यहाँ भी कोई सिद्धि को स्वीकार किया जो ज्ञानयोग से प्राप्त हुआ मान व शान तो यह भी विधि का सिद्धि-स्वरूप प्रालब्ध ही है। तो इनमें से किसी को भी स्वीकार करना अर्थात् सिद्धि को स्वीकार करना हुआ। जो सिद्धि को स्वीकार करता है, उसकी प्रालब्ध यहाँ ही खत्म फिर उसका भविष्य नहीं बनता। तो टीचर्स की चैकिंग बड़ी महीन रूप से हो। सेवाधारी के नाते से त्याग और तपस्या निरन्तर हो। तपस्या अर्थात् एक बाप की लगन में रहना। कोई भी अल्पकाल के प्राप्त हुए भाग्य में यदि बुद्धि का झुकाव है तो वह सेवा में सफ़लतामूर्त्त नहीं बन सकता। सफ़लतामूर्त्त बनने के लिये त्याग और तपस्या चाहिए। त्याग का मतलब यह नहीं कि सम्बन्ध छोड़ यहाँ आकर बैठे। नहीं। महिमा का भी त्याग, मान का भी त्याग और प्रकृति दासी का भी त्याग – यह है त्याग। फिर देखो मेहनत कम सफ़लता ज्यादा निकलेगी। अभी मेहनत ज्यादा, सफ़लता कम क्यों? क्योंकि अभी इन दोनों बातों में अर्थात् त्याग और तपस्या की कमी है। जिसमें त्याग-तपस्या दोनों हैं वह है यथार्थ टीचर अर्थात् काम करने वाला टीचर। नहीं तो नाम-मात्र का टीचर ही कहेगे।

5.1.77.. .. जो अति प्रिय वस्तु होती है, वह समीप स्थान पर होती है। वह स्थान है – एक नैन और दूसरा दिल। तो दिल में समाने वाले श्रेष्ठ हैं या नैनों में समाने वाले श्रेष्ठ हैं? दोनों में नम्बर वन (Number दहा) कौन? दोनों का महत्व एक है या अलग- अलग? जो समझते हैं दोनों का महत्व एक है अथवा जो दिल में होते सो नैनों में होते हैं, वे हाथ उठाओ। जो समझते हैं कि दोनों का महत्व अलग-अलग है, नैनों में समाने वाले अलग, दिल में समाने वाले अलग वे हाथ उठाओ। एक होते हुए भी अलग- अलग महत्व है इसलिए दोनों ही ठीक हैं। जब इतने त्यागी और तपस्वी बच्चे अपने अनेक धर्मों और अपनी देह के धर्म के कर्म में

हरेक रस्म का त्याग कर बाप-दादा की याद की तपस्या में लगे हुए हैं, ऐसे त्यागी और तपस्वी बच्चों को फ़ेल कैसे कर सकते हैं, इसलिए सदा पास हैं। विदेशी सभी (थोड़े में) में पढ़ते हैं; क्योंकि बिज़ी रहते हैं।

12.1.77.. .. टीचर्स अर्थात् सेवाधारी। सेवा में सफ़लता का मुख्य साधन है – त्याग और तपस्या। दोनों में से अगर एक की भी कमी है तो सेवा की सफ़लता में भी इतने परसेन्ट कमी होती है। त्याग अर्थात् मन्सा संकल्प से भी त्याग, सरकमस्टेंस समर्थ-स्वरूप, स्मृति स्वरूप भव। (परिस्थिति) के कारण या मर्यादा के कारण मजबूरी से त्याग बाहर से कर भी लेंगे तो संकल्प से त्याग नहीं होगा। त्याग अर्थात् ज्ञान-स्वरूप से संकल्प से भी त्याग, मजबूरी से नहीं। ऐसे त्यागी और तपस्वी अर्थात् सदा बाप की लगन में लवलीन, प्रेम के सागर में समाए हुए, ज्ञान, आनन्द, सुख, शान्ति के सागर में समाये हुए को ही कहेंगे – 'तपस्वी'। ऐसे त्याग तपस्या वाले ही सेवाधारी कहे जाते हैं। ऐसे सेवाधारी हो ना? त्याग ही भाग्य है। बिना त्याग के भाग्य नहीं बन सकता। इसको कहा जाता है टीचर। तो नाम और काम दोनों टीचर के हैं। केवल नाम टीचर का नहीं। टीचर अर्थात् पोजीशन नहीं, लेकिन सेवाधारी। टीचर्स अर्थात् सभी को पोजिशन दिलाने वाली, न कि पोजीशन समझ उसमें अपने को नामधारी टीचर समझने वाली। जैसे कहा जाता है देना, देना नहीं लेकिन लेना है – ऐसे ही टीचर अपने पोजिशन का त्याग करती है तो यही भाग्य लेना है। अच्छा।

28.1.77.. .. किसी भी प्रकार की परिस्थिति में अपने धर्म अर्थात् धारणा के प्रति कुछ त्याग करना पड़े, सहन करना पड़े, सामना करना पड़े, साहस रखना पड़े तो खुशी-खुशी से करेंगे? पीछे हटेंगे नहीं? घबरायेंगे नहीं? त्याग को त्याग न समझ भाग्य अनुभव करना, इसको कहा जाता है – 'सच्चा त्याग'। अगर संकल्प में, वाणी में भी इस भावना का बोल निकलता है कि मैंने यह त्याग किया, तो उसका भाग्य नहीं बनता।

2.2.77.. .. टीचर का स्थान है – दिल-तख्त। स्थान छोड़ेंगे तो दूसरे ले लेंगे। टीचर का आसन बाप का दिल-तख्त है। आसन छोड़ दिया तो त्याग, तपस्या खत्म। तो यह आसन कभी नहीं छोड़ना। जगह लेने वाले बहुत हैं। सभी को यही उमंग उत्साह होता है कि हम टीचर से आगे जायें। टीचर फिर उनसे भी आगे जाए तब तो दिल तख्त नशीन होगी? टीचर का छोटा-सा संसार है ना। टीचर का संसार एक बाप ही है।

6.2.77.. .. असफ़लता में दूसरों को दोषी मत बनाओ। शान और मान का त्याग, साधनों का त्याग यही महान त्याग है। साकार बाप के समान अल्पकाल की महिमा के त्यागी बनो तब ही श्रेष्ठ भाग्यवान बन सकेंगे। शिव बाबा इन सब बातों से लिब्रेशन चाहते हैं। इस अन्तिम फोर्स के कोर्स के लिए समय मिला है।

11.5.75.. .. जो सेवा करते हैं, ऐसे सेवाधारियों के प्रति बाप का सदा विशेष स्नेह रहता है, क्योंकि त्याग मूर्त्त हैं ना। तो त्याग का भाग्य स्वत: ही मिल जाता है। क्या और कैसे मिलता है, उसको जानते हो? जैसे एक होता है मेहनत से कमाना और दूसरा होता है अचानक कोई लॉटरी मिल जाए तो अपने पुरुषार्थ की शक्तियों वा सर्वगुणों की अनुभूति करना, यह तो सभी करते हैं, लेकिन विशेष सहयोग का प्रत्यक्ष फल, ऐसी अनुभूति होगी, जैसे मेरे पुरुषार्थ की स्टेज से प्राप्ति अधिक है। जिस अनुभूतियों के पुरुषार्थ का लक्ष्य बहुत समय से रखते आए, वह अनुभूतियाँ ऐसे सहज और पॉवरफुल स्टेज की होगी, जो न चाहते हुए मन से यही निकलेगा कि – कमाल है बाबा की! मैंने जो सोचा भी नहीं कि ऐसे हो सकता है – वह साकार में अनुभव कर रहे हैं। तो ऐसे बाप के विशेष वरदान की प्राप्ति का अनुभव, सहयोगी आत्माओं को होता है। ऐसे अनुभव जीवन का एक विशेष यादगार रूप बन जाता हैं।

16.5.77.. .. प्राप्ति के आगे कुछ छोड़ रहे हैं वा त्याग कर रहे हैं, कोई सुध-बुध नहीं रहती। बाप मिला सब कुछ मिला, उस खुमारी वा नशे में त्याग भी, त्याग नहीं लगा, याद और सेवा में तन-मन-धन से लग गए। पहला नशा, पहली खुशी, पहला उमंग, उत्साह, 'न्यारा और अति प्यारा' अनुभव किया। यह त्याग और आदिकाल का नशा, त्रिकालदर्शी मास्टर ज्ञान सागर, मास्टर सर्वशक्तिवान की स्थिति का पहला जोश जिसमें कुछ होश नहीं, पुरानी दुनिया का सब कुछ तुच्छ अनुभव हुआ, असार अनुभव हुआ। ऐसी हरेक की पहली स्टेज देखते हुए अति स्नेह हुआ कि हरेक ने बाप के प्रति कितना त्याग और लगन से आगे बढ़ने का पुरुषार्थ किया है। ऐसे त्यागमूर्त्त, ज्ञान मूर्त्त, निश्चय बुद्धि बच्चों के ऊपर बाप-दादा भी अपने सर्व सम्पत्ति सहित कुर्बान हुए।

1.4.78.. .. यही सबसे बड़े से बड़ा अति सूक्ष्म त्याग है। इसी त्याग के आधार पर नम्बरवन आत्मा ने नम्बरवन भाग्य बनाया और अष्ट रत्न नम्बर का आधार भी यही त्याग है।

27.11.78.. .. नाम और मान के भिखारीपन का अंशमात्र भी त्याग करो – ऐसे त्यागी विश्व के भाग्य विधाता बन सकते। कर्म का फल खाने के अभ्यासी ज्यादा हैं - इसलिए कच्चा फल खा लेते हैं – जमा होने अर्थात् पकने नहीं देते। कच्चा फल खाने से क्या होता है ? कोई न कोई हलचल हो जायेगी। ऐसे ही स्थिति में हलचल हो जाती है। कर्म का फल तो स्वत: ही आपके सामने सम्पन्न स्वरूप में आयेगा। एक श्रेष्ठ कर्म करने का सौ गुणा सम्पन्न फल के स्वरूप में आयेगा लेकिन अल्पकाल की इच्छा मात्रम् अविद्या हो। त्याग करो तो भाग्य आपे ही आपके पीछे आयेगा।

5.12.78.. .. बाप ने कहा शूद्रपन के विकारी संस्कार छोड़ो - आत्मा के विकारी संस्कार रूपी चोला परिवर्तन किया और ईश्वरीय संस्कार का दिव्य चोला पहना – शूद्रपन की निशानियाँ अशुद्ध वृत्ति और दृष्टि परिवर्तन कर पवित्र दृष्टि और वृत्ति विशेष निशानियाँ धारण की - सर्वश्रेष्ठ ते श्रेष्ठ सम्बन्ध और सम्पत्ति के अधिकारी बने - यह भी अच्छी तरह से याद है, लेकिन फिर क्या करते – जो श्रेष्ठ आत्मायें होती हैं वह संकल्प से भी छोड़ी हुई अर्थात् त्याग की हुई बात फिर से धारण नहीं करती हैं। जैसे धरनी पर गिरी हुई वा फेंकी हुई चीज़ रायल बच्चे कभी नहीं उठावेंगे। आप सबने संकल्प धारण किया और यह विकार बुद्धि से फेंके। बेकार समझ, बिगड़ी हुई वस्तु समझ प्रतिज्ञा की और त्याग किया, वचन लिया कि फिर से यह विष सेवन नहीं करेंगे – फिर क्या करते हो। फेंकी हुई चीज़, गन्दी चीज़, बेकार चीज़, जली सड़ी हुई वस्तु फिर से उठाकर यूज़ क्यों करते हो – समझा क्या खेल करते हो – अनजाने का खेल करते हो - खेल देख तरस भी पड़ता और हँसी भी आती। जानीजाननहार तो बने हो लेकिन बनना है करनहार। अब क्या करेंगे ? करनहार बनने का विशेष कार्यक्रम करके दिखाओ। संकल्प द्वारा त्याग की हुई बेकार वस्तुओं को संकल्प में भी स्वीकार नहीं करो।

12.12.78.. .. .. अभी अभी बेगर टू प्रिन्स का पार्ट कल्याणकारी बाप और कल्याणकारी समय का हर सेकेण्ड लाभ उठाओ। प्रैक्टिकल में बजाने वाली आत्माओं को कहा जाता है सदा त्यागी और सदा श्रेष्ठ भाग्यशाली। त्याग से सदाकाल का भाग्य स्वत: ही बन जाता है। त्याग किया और तकदीर की लकीर हुई। तो ऐसा परोपकारी ग्रुप जो स्वयं के प्रति इच्छा मात्रम अविद्या हो – अखण्ड दानी हो। जैसे बाप को देखा तो स्वयं का समय भी सेवा में दिया। स्वयं निर्माण और बच्चों को मान दिया। पहले बच्चे – नाम बच्चे का काम अपना - काम के नाम की प्राप्ति का त्याग।

6.1.79.. .. जैसे ब्रह्मा बाप की विशेषता देखी – इसी महात्याग से महान भाग्य मिला नम्बरवन सम्पूर्ण फरिश्ता रूप और नम्बरवन विश्व महाराजन्। ऐसे सूर्यवंशी भी महान त्यागी वा सर्वस्व त्यागी होगी। सर्वस्व त्यागी का अर्थ ही है संस्कार रूप में भी विकारों के वंश का त्याग।

14.1.79.. .. आज बापदादा प्यूरिटी की सबजेक्ट में मार्क्स दे रहे थे – मार्क्स देने में विशेषता क्या देखी – पहली विशेषता मन्सा की पवित्रता – जब से जन्म लिया तब से अभी तक संकल्प में भी अपवित्रता के संस्कार इमर्ज न हों। अपवित्रता अर्थात् विष को छोड़ चुके। ब्राह्मण बनना अर्थात् अपवित्रता का त्याग। अपवित्रता का त्याग और पवित्रता का श्रेष्ठ भाग्य।

14.11.79.. .. वर्तमान समय में जो आपके सम्पर्क में आते हैं, वे लोग भी समय प्रति समय अब भी यह बोल बोलते हैं कि आप लोगों का त्याग बहुत बड़ा है लेकिन अब यह बोल कहें कि आप लोगों का भाग्य बहुत बड़ा है। त्याग उनको दिखाई देता है लेकिन भाग्य अभी तक दिखाई नहीं देता है। भाग्य अभी गुप्त है। त्याग की महिमा बहुत करते हैं, इतनी ही भाग्य की महिमा करें तो सेकेण्ड में स्वयं का भी भाग्य खुल जायेगा। त्याग देख करके सोच में पड़ जाते हैं। भाग्य देखकर स्वयं भी भाग्यशाली बन जावेंगे। अब समझा, क्या चेन्ज करना है? मेहनत से निकल स्नेह की, मोहब्बत की गोदी में आ जाओ।

23.11.79.. .. जैसे बाप को देखा – देखना भी बेहद की दृष्टि से, बोल भी बेहद के अनहद बोल सुनना और सुनाना। सम्बन्ध और सम्पर्क में आना तो भी बेहद का सम्बन्ध, हर संकल्प में भी कि बेहद का कल्याण कैसे हो। संस्कार में भी बेहद का त्याग और बेहद की तपस्या, दो चार घण्टे की तपस्या नहीं। बेहद की तपस्या अर्थात् हर सेकेण्ड तपस्या-स्वरूप, तपस्वी मूर्त। मूर्त और सूरत से त्याग, तपस्या और सेवा – सदा साकार रूप में प्रत्यक्ष देखा।

28.12.79.. .. कुमार कुमारियाँ अपने इस जीवन में सब-कुछ देखते हुए जानते हुए, फिर भी दृढ़ संकल्प कर दृढ़ त्यागी बनते हैं। उस त्याग का भाग्य मिलता है। प्रवृत्ति वाले अल्पकाल का सुख भोगकर फिर त्याग करते हैं और कुमार कुमारी विनाशी अल्पकाल के सुख का पहले ही दृढ़ संकल्प से त्याग कर देते हैं। इसलिए उन्हें चान्स मिलता है हाई जम्प लगाने का।

28.1.80.. .. जैसे भाग्य में अपने को आगे करते हो, वैसे त्याग में 'पहले मैं'। जब त्याग में हरेक ब्राह्मण आत्मा 'पहले मैं' कहेगा तो भाग्य की माला सबके गले में पड़ जायेगी। आपके सम्पूर्ण स्वरूप सफलता की माला लेकर आप पुरुषार्थीयों के गले में डालने के लिए नज़दीक आ रहे हैं। अन्तर को मिटा दो। हम सो फ़रिश्ता का मन्त्र पक्का कर लो तो साइन्स का यन्त्र अपना काम शुरू करे और हम सो फ़रिश्ते से, हम सो देवता बन नई दुनिया में अवतरित होंगे। ऐसे साकार बाप को फ़ालो करो। साकार को फ़ालो करना तो सहज है ना। तो सम्पूर्ण फ़रिश्ता अर्थात साकार बाप को फ़ालो करना।

9.2.80.. .. त्याग वालों को भाग्य नैचुरल खुशी के रूप में और हल्केपन की अनुभूति के रूप में उसी समय ही प्राप्त होता रहता है। इस निशानी से हरेक अपने रिज़ल्ट को चेक कर सकते हैं कि कितना समय त्याग और निष्काम भाव रहा, निमित्तपन का भाव रहा या बीच-बीच मे और भी कोई भाव मिक्स हुआ। चेक कर आगे के लिए चेन्ज कर देना, यह है चढ़ती कला का विशेष पुरुषार्थ।

19.3.81.. .. सदा सफलता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है, इतना नशा रहता है? सफलता होगी या नहीं होगी यह क्वेश्चन ही नहीं। सफलता मूर्त्त हैं – ऐसे नशा रहता है? मास्टर शिक्षक हो ना। जैसे बाप शिक्षक की क्वालीफिकेशन है वैसे मास्टर शिक्षक की भी होगी ना। बाप समान बने हो ना? (हाँ) यह हाँ-हाँ के गीत अच्छा गाती हैं। इससे सिद्ध है कि यह बाप के गुण सभी को सुनाकर डांस करती कराती हैं। कुमारियों को देख करके बापदादा बहुत खुश होते हैं। क्योंकि कुमार और कुमारियाँ त्याग कर तपस्वी आकर बने हैं। बच्चों के त्याग की हिम्मत देख, तपस्या का उमंग देख बापदादा खुश होते हैं।

3.4.81.. .. टीचर्स प्रति अव्यकत बापदादा के महावाक्य– टीचर्स का वास्तविक स्वरूप है ही निरंतर सेवाधारी। यह तो अच्छी तरह से जानते हो। और सेवाधारी की विशेषता क्या होती है? सेवाधारी सफल किस बात से बनते हैं? सेवा में सदा खोया हुआ रहे, ऐसे सेवाधारी की विशेषता यह है जो मैं सेवा कर रही हूँ, मैंने सेवा की – इस सेवा-भाव का भी त्याग हो। जिसको आप लोग कहते हो त्याग का भी त्याग। मैंने सेवा की, तो सेवा सफल नहीं होती। मैंने नहीं की लेकिन मैं करनहार हूँ, करावनहार बाप है। तो बाप की महिमा आयेगी। जहाँ मैं सेवाधारी हूँ, मैंने किया मैं करूँगी, तो यह 'मैं-पन' सेवाधारी के हिसाब से भी ''मैं पन'' जो आता है वह सेवा की सफलता नहीं होने देता। क्योंकि सेवा में मैं-पन जब मिक्स हो जाता है

तो स्वार्थ भरी सेवा हो जाती है, त्याग वाली नहीं। दुनिया में भी दो प्रकार के सेवाधारी होते हैं – एक स्वार्थ के हिसाब से सेवाधारी, दूसरे स्नेह के हिसाब से त्यागमूर्त्त सेवाधारी।

4.10.81.. .. सेकेण्ड में इस दर्पण द्वारा आत्मिक स्वरूप का अनुभव करने के कारण बाप की तरफ आकर्षित हो, अहो प्रभू के गीत गाते, देहभान से सहज अर्पण हो जायेंगे। अहो आपका भाग्य! ओहो मेरा भाग्य! इस भाग्य की अनुभूति के कारण देह और देह के सम्बन्ध की स्मृति का त्याग कर देंगे क्योंकि भाग्य के आगे त्याग करना अति सहज है।
आप सब भी इस सहज त्याग और भाग्य को लेने चाहते हो वा देने वाले बनने चाहते हो? यह तो नहीं सोचते हो कि इतने वर्षों की मेहनत से तो अन्त समय सहज त्याग और भाग्य वाले बन जाएं, क्या पसन्द है? अन्त में सहज अनुभव ज़रूर करेंगे लेकिन कितने समय का अनुभव होगा? जितने थोड़े समय की पहचान उतने ही थोड़े समय के लिए प्राप्ति। आप सब बहुकाल के साथी हो और बहुकाल के राज्य अधिकारी हो। वर्त्तमान समय उम्मीदों के तारे और सफलता के तारे दोनों दिखाई देते हैं लेकिन अन्तिम समय, अन्तिम स्थिति, बाप के अन्त में खोये हुए श्रेष्ठ स्थिति में सफलता के सितारे ही होगे। यह रूहानी नयन, यह रूहानी मूर्त्त ऐसे दिव्य दर्पण बन जायेगी- जिस दर्पण में हर आत्मा बिना मेहनत के आत्मिक स्वरूप ही देखेगी। सेकेण्ड में इस दर्पण द्वारा आत्मिक स्वरूप का अनुभव करने के कारण बाप की तरफ आकर्षित हो, अहो प्रभू के गीत गाते, देहभान से सहज अर्पण हो जायेंगे। अहो आपका भाग्य! ओहो मेरा भाग्य! इस भाग्य की अनुभूति के कारण देह और देह के सम्बन्ध की स्मृति का त्याग कर देंगे क्योंकि भाग्य के आगे त्याग करना अति सहज है।
23.11.81.. .. दूसरे नम्बर के बच्चे भी थे– जो करते भी हैं लेकिन सेकण्ड नम्बर बन जात हैं। इसी गुप्त दान-महादान, गुप्त महादानी की विशेषता है– त्याग के भी त्यागी। जो श्रेष्ठ कर्म का फल प्राप्त होता है वह प्रत्यक्षफल है– सर्व द्वारा महिमा होना। सेवाधारी को श्रेष्ठ गायन की सीट मिलती है– मान, मर्तबे की सीट मिलती है, यह सिद्धि अवश्य प्राप्त होती है। क्योंकि यह सिद्धियाँ रास्ते की चट्टियाँ हैं, यह फाइनल मंजिल नहीं है, इसलिए इसके त्यागवान, भाग्यवान बनो। इसको कहा जाता है– महात्यागी। पहला नम्बर एकनामी और एकानामी वाले, दूसरा नम्बर कमाया और खाया। और तीसरा नम्बर कमाई कम और खाना ज्यादा। औरों की भी कमाई को खाने वाले। वह हैं– लाओ और खाओ। श्रेष्ठ आत्माओं के भाग्य का हिस्सा, त्यागवान बच्चों कें प्रत्यक्ष- फल, सर्व प्राप्तियों को त्यागवान त्याग करते लेकिन तीसरे नम्बर वाले उन्हों के हिस्से का भी स्वयं स्वीकार कर लेते हैं। कमाने वाले नहीं सिर्फ़ खाने वाले। इस कारण नम्बरवन बच्चे बोझ उतारने वाले और वह बोझ चढ़ाने वाले क्योंकि अपनी मेहनत की कमाई नहीं खाते। ऐसी खाती-पीती आत्मायें भी देखीं।

1.4.82.. .. आज भाग्य विधाता बापदादा अपने सर्व बच्चों के त्याग और भाग्य दोनों को देख रहे हैं। त्याग क्या किया है और भाग्य क्या पाया है – यह तो जानते ही हो कि एक गुणा त्याग उसके रिटर्न में पदमगुणा भाग्य मिलता है। त्याग की गुह्य परिभाषा जानते हुए भी जो बच्चे थोड़ा भी त्याग करते हैं तो भाग्य की लकीर स्पष्ट और बहुत बड़ी हो जाती है। त्याग की भी भिन्न-भिन्न स्टेज हैं। वैसे तो ब्रह्माकुमार वा ब्रह्माकुमारी बने तो यह भी त्याग का भाग्य – ब्राह्मण जीवन मिली। इस हिसाब से जैसे ब्राह्मण सभी कहलाते हो वैसे त्याग करने वाली आत्मा भी सब हो गये। लेकिन त्याग में भी नम्बर हैं। इसलिए भाग्य पाने में भी नम्बर हैं। ब्रह्माकुमार वा ब्रह्माकुमारी तो सब कहलाते हो लेकिन ब्रह्माकुमार-कुमारियों में से ही कोई माला का नम्बरवन दाना बना, कोई लास्ट दाना बना – लेकिन हैं दोनों ही ब्रह्माकुमार-कुमारी। शूद्र जीवन सबने त्याग दी फिर भी नम्बरवन और लास्ट का अन्तर क्यों? चाहे प्रवृत्ति में रह ट्रस्टी बन चल रहे हो, चाहे प्रवृत्ति से निवृत्त हो सेवाधारी बन सदा सेवाकेन्द्र पर रहे हुए हो लेकिन दोनों ही प्रकार की ब्राह्मण आत्मायें चाहे ट्रस्टी, चाहे सेवाधारी, दोनों ही नाम एक ही ब्रह्माकुमारकुमारी कहलाते हो। सरनेम दोनों का एक ही है लेकिन दोनों का त्याग के आधार पर भाग्य बना हुआ है। ऐसे नहीं कह सकते कि सेवाधारी बन सेवाकेन्द्र पर रहना यही श्रेष्ठ त्याग वा भाग्य है। ट्रस्टी आत्मायें भी त्याग वृत्ति द्वारा माला में अच्छा नम्बर ले सकती हैं। लेकिन सच्चे और साफ दिल वाला ट्रस्टी हो। भाग्य प्राप्त करने का दोनों को अधिकार है। लेकिन श्रेष्ठ भाग्य की लकीर खींचने का आधार है –''श्रेष्ठ संकल्प और श्रेष्ठ कर्म।'' चाहे ट्रस्टी आत्मा हो, चाहे सेवाधारी आत्मा हो, दोनों इसी आधार द्वारा नम्बर ले सकते हैं। दोनों को फुल अथार्टी है – भाग्य बनाने की।

3.4.82.. .. ''बापदादा अपने त्यागमूर्त बच्चों को देख रहे हैं। हर एक ब्राह्मण आत्मा त्याग स्वरूप है, लेकिन जैसे भाग्य का सुनाया ना कि एक बाप के बच्चे होते, एक जैसा भाग्य का वर्सा मिलते, सम्भालने और बढ़ाने के आधार पर नम्बर बन जाते हैं। ऐसे त्यागमूर्त तो सभी बने हैं इसमें भी नम्बरवार हैं। त्याग किया और ब्राह्मण बने। लेकिन त्याग की परिभाषा बड़ी गुह्य है। कहने में तो सभी एक बात कहते कि तन-मन-धन, सम्बन्ध सब का त्याग कर लिया। लेकिन तन का त्याग अर्थात् देह के भान का त्याग। तो देह के भान का त्याग हो गया है वा हो रहा है? त्याग का अर्थ है किसी भी चीज़ को वा बात को छोड़ दिया, अपनेपन से किनारा कर लिया, अपना अधिकार समाप्त हुआ। जिसके प्रति त्याग किया वह वस्तु उसकी हो गई। जिस बात का त्याग किया उसका फिर संकल्प भी नहीं कर सकते – क्योंकि त्याग की हुई बात, संकल्प द्वारा प्रतिज्ञा की हुई बात फिर से वापिस नहीं ले सकते हो। जैसे हद के संन्यासी अपने घर का, सम्बन्ध का त्याग करके जाते हैं और अगर फिर वापिस आ जाएँ तो उसको क्या कहा जायेगा! नियम प्रमाण वापिस नहीं आ सकते। ऐसे आप ब्राह्मण बेहद के संन्यासी वा त्यागी हो। आप त्याग मूर्तियों ने अपने इस पुराने घर अर्थात् पुराने शरीर, पुराने देह का भान

त्याग किया, संकल्प किया कि बुद्धि द्वारा फिर से कब इस पुराने घर में आकर्षित नहीं होंगे। संकल्प द्वारा भी फिर से वापिस नहीं आयेंगे। पहला-पहला यह त्याग किया। इसलिए तो कहते हो – देह सहित देह के सम्बन्ध का त्याग। देह के भान का त्याग। तो त्याग किए हुए पुराने घर में फिर से वापिस तो नहीं आते जाते हो! वायदा क्या किया है? तन भी तेरा कहा वा सिर्फ मन तेरा कहा? पहला शब्द ''तन'' आता है। जैसे तन-मन-धन कहते हो, देह और देह के सम्बन्ध कहते हो। तो पहला त्याग क्या हुआ? इस पुराने देह के भान से विस्मृति अर्थात् किनारा। यह पहला कदम है त्याग का। जैसे घर में घर की सामग्री (सामान) होती है, ऐसे इस देह रूपी घर में भिन्न-भिन्न कर्मेन्द्रियाँ ही सामग्री हैं। तो घर का त्याग अर्थात् सर्व का त्याग। घर को छोड़ा लेकिन कोई एक चीज़ में ममता रह गई तो उसको त्याग कहेंगे? ऐसे कोई भी कर्मेन्द्रिय अगर अपने तरफ आकर्षित करती है तो क्या उसको सम्पूर्ण त्याग कहेंगे? इसी प्रकार अपनी चेकिंग करो। ऐसे अलबेले नहीं बनना कि और तो सब छोड़ दिया बाकी कोई एक कर्मेन्द्रिय विचलित होती है वह भी समय पर ठीक हो जायेगी। लेकिन कोई एक कर्मेन्द्रिय की आकर्षण भी एक बाप का बनने नहीं देगी। एकरस स्थिति में स्थित होने नहीं देगी। नम्बरवन में जाने नहीं देगी। अगर कोई हीरे-जवाहर, महल-माड़िया छोड़ दे और सिर्फ कोई मिट्टी के फूटे हुए बर्तन में भी मोह रह जाए तो क्या होगा? जैसे हीरा अपनी तरफ आकर्षित करता वैसे हीरे से भी ज़्यादा वह फूटा हुआ बर्तन उसको अपनी तरफ बार-बार आकर्षित करेगा। न चाहते भी बुद्धि बार-बार वहाँ भटकती रहेगी। ऐसे अगर कोई भी कर्मेन्द्रिय की आकर्षण रही हुई है तो श्रेष्ठ पद पाने से बार-बार नीचे ले आयेगी। तो पुराने घर और पुरानी सामग्री सबका त्याग चाहिए। ऐसे नहीं समझो यह तो बहुत थोड़ा है, लेकिन यह थोड़ा भी बहुत कुछ गंवाने वाला है, सम्पूर्ण त्याग चाहिए। इस पुरानी देह को बापदादा द्वारा मिली हुई 'अमानत' समझो। सेवा अर्थ कार्य में लगाना है। यह मेरी देह नहीं लेकिन सेवा अर्थ अमानत है। जैसे मेहमान बन देह में रह रहे हैं। थोड़े समय के लिए बापदादा ने कार्य के लिए आपको यह तन दिया है। तो आप क्या बन गये? मेहमान! मेरे-पन का त्याग और मेहमान समझ महान कार्य में लगाओ। मेहमान को क्या याद रहता है? असली घर याद रहता है या उसी में ही फँस जाते हो! तो आप सबका यह शरीर रूपी घर भी, यह फ़रिश्ता स्वरूप है, फिर देवता स्वरूप है। उसको याद करो। इस पुराने शरीर में ऐसे ही निवास करो जैसे बापदादा पुराने शरीर का आधार लेते हैं लेकिन शरीर में फँस नहीं जाते हैं। कर्म के लिए आधार लिया और फिर अपने फ़रिश्ते स्वरूप में स्थित हो जाओ। अपने निराकारी स्वरूप में स्थित हो जाओ। न्यारेपन की ऊपर की ऊँची स्थिति से नीचे साकार कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म करने लिए आओ, इसको कहा जाता है – 'मेहमान अर्थात् महान'। ऐसे रहते हो? त्याग का पहला कदम पूरा किया है?

8.4.82.. .. तो अपने आप से पूछो – कि देह के सम्बन्ध का त्याग किया? वा लौकिक से त्याग कर अलौकिक में जोड़ लिया? कर्मातीत बनने वाली आत्मायें, इस कर्म के बन्धन का भी त्याग करो। तो ब्राह्मणों के लिए इस सम्बन्ध का त्याग ही I तो समझा त्याग की परिभाषा क्या है? अभी और आगे सुनायेंगे। यह त्याग का सप्ताह कोर्स चल रहा है। आज का पाठ पक्का हुआ? ब्राह्मणों की विशेषता है ही 'महात्यागी'। त्याग के बिना भाग्य पा नहीं सकते।

11.4.82.. .. विकर्माजीत अर्थात् विकर्म, विकल्प के त्यागी। कर्मेन्द्रियों के आधार से कर्म के बिना रह नहीं सकते। तो देह का सम्बन्ध कर्मेन्द्रियों से है और कर्मेन्द्रियों का सम्बन्ध कर्म से है। यह देह और देह के सम्बन्ध के त्याग की बात चल रही है। कर्मेन्द्रियों का जो कर्म के साथ सम्बन्ध है – उस कर्म के हिसाब से विकर्म का त्याग। विकर्म के त्याग बिना सुकर्मी वा विकर्माजीत बन नही सकते।

13.4.82.. .. त्यागी– जिन्होंने ज्ञान और योग के द्वारा अपने पुराने सम्बन्ध, पुरानी दुनिया, पुराने सम्पर्क द्वारा प्राप्त हुई अल्पकाल की प्राप्तियों को त्याग कर ब्राह्मण जीवन अर्थात् योगी जीवन संकल्प द्वारा अपनाया है अर्थात् यह सब धारणा की कि पुरानी जीवन से 'यह योगी जीवन श्रेष्ठ है'। अल्पकाल की प्राप्ति से यह सदाकाल की प्राप्ति प्राप्त करना आवश्यक है। और उसे आवश्यक समझने के आधार पर ज्ञान योग के अभ्यासी बन गये। ब्रह्माकुमार वा ब्रह्माकुमारी कहलाने के अधिकारी बन गये। लेकिन ब्रह्माकुमार-कुमारी बनने के बाद भी पुराने सम्बन्ध, संकल्प और संस्कार सम्पूर्ण परिवर्तन नहीं हुए लेकिन परिवर्तन करने के युद्ध में सदा तप्पर रहते। अभी-अभी ब्राह्मण संस्कार, अभी-अभी पुराने संस्कारों को परिवर्तन करने के युद्ध स्वरूप में। इसको कहा जाता है – त्यागी बने लेकिन सम्पूर्ण परिवर्तन नहीं किया। सिर्फ सोचने और समझने वाले हैं कि त्याग करना ही महा भाग्यवान बनना है। करने की हिम्मत कम। अलबेलेपन के संस्कार बार-बार इमर्ज होने से त्याग के साथ-साथ आराम पसन्द भी बन जाते हैं। समझ भी रहे हैं, चल भी रहे हैं, पुरुषार्थ कर भी रहे हैं, ब्राह्मण जीवन को छोड़ भी नहीं सकते, यह संकल्प भी दृढ़ है कि ब्राह्मण ही बनना है। चाहे माया वा मायावी सम्बन्धी पुरानी जीवन के लिए अपनी तरफ आकर्षित भी कर सकते हैं तो भी इस संकल्प में अटल हैं कि ब्राह्मण जीवन ही श्रेष्ठ है। इसमें निश्चय-बुद्धि पक्के हैं। लेकिन सम्पूर्ण त्यागी बनने के लिए दो प्रकार के विघ्न आगे बढ़ने नहीं देते। वह कौन से? एक – तो सदा हिम्मत नहीं रख सकते अर्थात् विघ्नों का सामना करने की शक्ति कम है। दूसरा – अलबेलेपन का स्वरूप आराम पसन्द बन चलना। पढ़ाई, याद, धारणा और सेवा सब सबजेक्ट में कर रहे हैं, चल रहे हैं, पढ़ रहे हैं लेकिन आराम से! सम्पूर्ण परिवर्तन करने के लिए शस्त्रधारी शक्ति-स्वरूप की कमी हो जाती है। स्नेही हैं लेकिन शक्ति स्वरूप नहीं। मास्टर सर्वशक्तिवान

स्वरूप में स्थित नहीं हो सकते हैं। इसलिए महात्यागी नहीं बन सकते हैं। यह है त्यागी आत्मायें।

महात्यागी– सदा सम्बन्ध, संकल्प और संस्कार सभी के परिवर्तन करने के सदा हिम्मत और उल्लास में रहते। पुरानी दुनिया, पुराने सम्बन्ध से सदा न्यारे हैं। महात्यागी आत्मायें सदा यह अनुभव करती कि यह पुरानी दुनिया वा सम्बन्धी मरे ही पड़े हैं। इसके लिए युद्ध नहीं करनी पड़ती है। सदा स्नेही, सहयोगी, सेवाधारी शक्ति स्वरूप की स्थिति में स्थित रहते हैं, बाकी क्या रह जाता है! महात्यागी के फलस्वरूप जो त्याग का भाग्य है – महाज्ञानी, महायोगी, श्रेष्ठ सेवाधारी बन जाते हैं! इस भाग्य के अधिकार को कहाँ-कहाँ उल्टे नशे के रूप में यूज़ कर लेते हैं। पास्ट जीवन का सम्पूर्ण त्याग है लेकिन 'त्याग का भी त्याग नहीं है'। लोहे की जंजीरे तो तोड़ दीं, आइरन एजड से गोल्डन एजड तो बन गये, लेकिन कहाँ-कहाँ परिवर्तन सुनहरी जीवन के सोने की जंजीर में बंध जाता है। वह सोने की जंजीरें क्या है? ''मैं'' और ''मेरा''। मैं अच्छा ज्ञानी हूँ, मैं ज्ञानी तू आत्मा, योगी तू आत्मा हूँ। यह सुनहरी जंजीर कहाँ-कहाँ सदा बन्धनमुक्त बनने नहीं देती। तीन प्रकार की प्रवृत्ति है – (1) लौकिक सम्बन्ध वा कार्य की प्रवृत्ति (2) अपने शरीर की प्रवृत्ति और (3) सेवा की प्रवृत्ति। तो त्यागी जो हैं वह लौकिक प्रवृत्ति से पार हो गये लेकिन देह की प्रवृत्ति अर्थात् अपने आपको ही चलाने और बनाने में व्यस्त रहना वा देह भान की नेचर के वशीभूत रहना और उसी नेचर के कारण ही बार-बार हिम्मतहीन बन जाते हैं। जो स्वयं भी वर्णन करते कि समझते भी हैं, चाहते भी हैं लेकिन मेरी नेचर है। यह भी देह भान की, देह की प्रवृत्ति है। जिसमें शक्ति स्वरूप हो इस प्रवृत्ति से भी निवृत्त हो जाएँ – वह नहीं कर पाते। यह त्यागी की बात सुनाई लेकिन महात्यागी लौकिक प्रवृत्ति, देह की प्रवृत्ति दोनों से निवृत्त हो जाते – लेकिन सेवा की प्रवृत्ति में कहाँ-कहाँ निवृत्त होने के बजाए फँस जाते हैं। ऐसी आत्माओं को अपनी देह का भान भी नहीं सताता क्योंकि दिन-रात सेवा में मगन हैं। देह की प्रवृत्ति से तो पार हो गये। इस दोनों ही त्याग का भाग्य – ज्ञानी और योगी बन गये, शक्तियों की प्राप्ति, गुणों की प्राप्ति हो गई। ब्राह्मण परिवार में प्रसिद्ध आत्मायें बन गये। सेवाधारियों में वी.आई.पी. बन गये। महिमा के पुष्पों की वर्षा शुरू हो गई। माननीय और गायन योग्य आत्मायें बन गये लेकिन यह जो प्रवृत्ति का विस्तार हुआ, उस विस्तार में अटक जाते हैं। यह सर्व प्राप्ति भी महादानी बन औरों को दान करने के बजाए स्वयं स्वीकार कर लेते हैं। तो 'मैं और मेरा' शुद्ध भाव की सोने की जंजीर बन जाती है। भाव और शब्द बहुत शुद्ध होते हैं कि हम अपने प्रति नहीं कहते, सेवा के प्रति कहते हैं। मैं अपने को नहीं कहती कि मैं योग्य टीचर हूँ लेकिन लोग मेरी मांगनी करते हैं। जिज्ञासु कहते हैं कि आप ही सेवा करो। मैं तो न्यारी हूँ लेकिन दूसरे मुझे प्यारा बनाते हैं। इसको क्या कहा जायेगा? बाप को देखा वा आपको देखा? आपका ज्ञान अच्छा लगता है, आपके सेवा का तरीका अच्छा लगता है, तो बाप कहाँ गया? बाप को परमधाम

निवासी बना दिया! इस भाग्य का भी त्याग। जो आप दिखाई न दें, बाप ही दिखाई दे। महान आत्मा प्रेमी नहीं बनाओ 'परमात्म प्रेमी बनाओ'। इसको कहा जाता है और प्रवृत्ति पार कर इस लास्ट प्रवृत्ति में सर्वांश त्यागी नहीं बनते। यह शुद्ध प्रवृत्ति का अंश रह गया। तो महात्यागी तो बने लेकिन सर्वस्व त्यागी नहीं बने। तो सुना दूसरे नम्बर का महात्यागी। बाकी रह गया सर्वस्व त्यागी।यह है त्याग के कोर्स का लास्ट सो सम्पन्न पाठ। लास्ट पाठ रह गया।

28.4.82.. .. सर्वंश त्यागी बच्चों की विशेषता क्या है, जिन विशेषताओं के आधार पर समीप वा समान बनते हैं? साकार तन द्वारा भी लास्ट बोल में तीन विशेषतायें सुनाई थीं: – 1. संकल्प में सदा निराकारी सो साकारी, सदा न्यारी और बाप की प्यारी आत्मायें। 2. वाणी में सदा निरअहंकारी अर्थात् सदा रूहानी मधुरता और निर्मानता। 3. कर्म में हर कर्मेन्द्रिय द्वारा निर्विकारी अर्थात् प्युरिटी की पर्सनैलिटी वाली।तो हर कर्मेन्द्रिय द्वारा महादानी वा वरदानी। मस्तक द्वारा सर्व को स्वरूप की स्मृति दिलाने के वरदानी वा महादानी। नयनों से रूहानी दृष्टि द्वारा सर्व को स्व-देश अर्थात् मुक्तिधाम और स्वराज्य अर्थात् जीवनमुक्ति – अपने राज्य का दर्शन कराना वा रास्ता दिखाने का दृष्टि द्वारा ईशारा देना। ऐसा अनुभव कराने का वरदान देना कि जो आत्मायें महसूस करें कि यही हमारा असली घर और राज्य है। घर का रास्ता, राज्य पाने का रास्ता मिल गया। ऐसे महादान वा वरदान पाकर सदा हर्षित हो जाएँ। मुख द्वारा रचयिता और रचना के विस्तार को स्पष्ट जान, स्वयं को रचयिता की पहली रचना – श्रेष्ठ ब्राह्मण सो देवता बनने का वरदान पा लें। ऐसे हस्तों द्वारा सदा सहज योगी, कर्मयोगी बनने के वरदान देने वाले श्रेष्ठ कर्मधारी, श्रेष्ठ फल प्राप्त करने के वरदानी बनाने वाले। चरण कमल द्वारा हर कदम फ़ालो फ़ादर कर, हर कदम में पदमों की कमाई जमा करने के वरदानी। ऐसे हर कर्मेन्द्रिय द्वारा विशेष अनुभूति कराने के वरदानी अर्थात् – 'निर्विकारी जीवन'। यह तीन विशेषतायें सर्वस्व त्यागी की सदा स्पष्ट दिखाई देंगी। बच्चा दाता बन सर्व को देने की भासना से भरपूर होंगे। ऐसे नहीं कि यह करे वा ऐसी परिस्थिति हो, वायुमण्डल हो तब मैं यह करूँ। दूसरे का सहयोग लेकर के अपने कल्याण के श्रेष्ठ कर्म करने वाले अर्थात् लेकर फिर देले वाले, सहयोग लिया फिर दिया, तो लेना और देना दोनों साथ-साथ हुआ। लेकिन सर्वंश त्यागी स्वयं मास्टर दाता बन परिस्थितियों को भी परिवर्तन करने का, कमज़ोर को शक्तिशाली बनाने का, वायुमण्डल वा वृत्ति को अपनी शक्तियों द्वारा परिवर्तन करने का, सदा स्वयं को कल्याण अर्थ ज़िम्मेवार आत्मा समझ हर बात में सहयोग वा शक्ति के महादान वा वरदान देने का संकल्प करेंगे। यह हो तो यह करें, नहीं। मास्टर दाता बन परिवर्तन करने की, शुभ भावना से शक्तियों को कार्य में लगाने अर्थात् देने का कार्य करता रहेगा। मुझे देना है, मुझे करना है, मुझे बदलना है, मुझे निर्मान बनना है। ऐसे ''ओटे सो अर्जुन'' अर्थात् दातापन की विशेषता होगी। सर्वंश त्यागी अर्थात् सदा गुण मूर्त। गुण मूर्त का अर्थ है गुणवान बनना और सर्व में गुण देखना। अगर स्वयं गुण मूर्त है तो उसकी दृष्टि और वृत्ति ऐसी गुण

सम्पन्न हो जायेगी जो उसकी दृष्टि वृत्ति द्वारा सर्व में जो गुण होगा वही दिखाई देगा। अवगुण देखते, समझते भी किसी का भी अवगुण बुद्धि द्वारा ग्रहण नहीं करेगा। अर्थात् बुद्धि में धारण नहीं करेगा। ऐसा 'होलीहंस' होगा। कंकड़ को जानते भी ग्रहण नहीं करेगा। और ही उस आत्मा के अवगुण को मिटाने के लिए स्वयं में प्राप्त हुए गुण की शक्ति द्वारा उस आत्मा को भी गुणगान बनाने में सहयोगी होगा। क्योंकि मास्टर दाता के संस्कार हैं। सर्वंश त्यागी सदा अपने को हर श्रेष्ठ कार्य के – सेवा की सफलता के कार्य में, ब्राह्मण आत्माओं की उन्नति के कार्य में, कमजोरी वा व्यर्थ वातावरण को बदलने के कार्य में ज़िम्मेवार आत्मा समझेंगे। सेवा में विघ्न बनने के कारण वा सम्बन्ध सम्पर्क में कोई भी नम्बरवार आत्माओं के कारण ज़रा भी हलचल होती है, तो सर्वन्श त्यागी बेहद के आधारमूर्त समझ, चारों ओर की हलचल को अचल बनाने की जिम्मेवारी समझेंगे। ऐसे बेहद की उन्नति के आधार मूर्त सदा स्वयं को अनुभव करेंगे। ऐसा नहीं कि यह तो इस स्थान की बात है या इस बहन वा भाई की बात है। नहीं। 'मेरा परिवार है'। मैं कल्याणकारी निमित्त आत्मा हूँ। टाइटल विश्व-कल्याणकारी का मिला हुआ हैं न कि सिर्फ स्व-कल्याणकारी वा अपने सेन्टर के कल्याणकारी। दूसरे की कमज़ोरी अर्थात् अपने परिवार की कमज़ोरी है, ऐसे बेहद के निमित्त आत्मा समझेंगे। मैं-पन नहीं, निमित्त मात्र हैं अर्थात् विश्व-कल्याण के आधारमूर्त बेहद के कार्य के आधारमूर्त हैं। सर्वंश त्यागी सदा एकरस, एक मत, एक ही परिवार का एक ही कार्य है – सदा ऐसे एक ही स्मृति में नम्बर एक आत्मा होंगे। सर्वंश त्यागी सदा स्वयं को प्रत्यक्षफल प्राप्त भई फलस्वरूप आत्मा अनुभव करेंगे। अर्थात् सर्वंश त्यागी आत्मा सदा सर्व प्रत्यक्ष फलों से सम्पन्न अविनाशी वृक्ष के समान होगी। सदा फलस्वरूप होंगी। इसलिए हद के कर्म का, हद के फल पाने की अल्पकाल की इच्छा से – 'इच्छा मात्रम् अविद्या' होंगे।

सर्वस्व त्यागी आत्मा के लक्षण 1. सर्वस्व त्यागी आत्मा किसी भी विकार के अंश के भी वशीभूत हो कोई कर्म नहीं करेगा। 2. सर्वस्व त्यागी आत्मा सदा दाता का बच्चा बन सर्व को देने की भावना से सम्पन्न होगा। 3. सर्वस्व त्यागी आत्मा सदा गुण-मूर्त होगा। स्वयं भी गुणवान और सर्व में गुण देखेगा। 4. सर्वस्व त्यागी आत्मा चारों ओर की हलचल समाप्त करने की ज़िम्मेदारी समझेगा। 5. सदा एक रस, एक मत, एक ही परिवार का कार्य है – ऐसा समझेगा। 6. सदा फल, स्वरूप होगा।

9.5.83.. .. बहन हो या भाई हो, लेकिन सेवाधारी आत्माओं के सेवा के मुख्य लक्षण – 'त्याग और तपस्या' हैं, इसी लक्षण के आधार पर सदा त्यागी और तपस्वी की दृष्टि से देखो, न कि दैहिक दृष्टि से। श्रेष्ठ परिवार है तो सदा श्रेष्ठ दृष्टि रखो। क्योंकि यह महापाप कभी प्राप्ति स्वरूप का अनुभव करा नहीं सकता।

8.4.84.. .. त्यागी और तपस्वी मूर्त सच्चे सेवाधारी हैं। मैंने यह किया, मैं ऐसा हूँ, यह देह का भान ज़रा भी आया तो सेवाधारी के बदले क्या बन जाते? सिर्फ़ नामधारी सेवाधारी बन

जाते। सच्चे सेवाधारी नहीं बनते। सच्ची सेवा का फाउण्डेशन है – त्याग और तपस्या। ऐसे त्यागी तपस्वी सेवाधारी सदा सफ़लता स्वरूप हैं। विजय, सफलता उनके गले की माला बन जाती है। जन्म सिद्ध अधिकारी बन जाता। बापदादा विश्व के सर्व बच्चों को यही श्रेष्ठ शिक्षा देते हैं कि – 'त्यागी बनो, तपस्वी बनो, सच्चे सेवाधारी बनो'।

18.1.86.. .. जब त्यागी तपस्वी बन गये तो यह क्या है? त्याग ही भाग्य है। तो भाग्य के आगे यह क्या त्याग है! आफर करने वालों को आफरीन मिल जाती है। तो सभी बहादुर हो! बदली माना बदली। कोई को भी कर सकते हैं। हिम्मत है तो क्या बड़ी बात है। अच्छा तो इस वर्ष यह नवीनता करेंगे। पसन्द हैं ना! जिन्होंने एवररेडी का पाठ आदि से पढ़ा हुआ है उनमें यह भी अन्दर ही अन्दर बल भरा हुआ होता है। कोई भी आज्ञा पालन करने का बल स्वत: ही मिलता है तो सदा आज्ञाकारी बनने का बल मिला हुआ है, अच्छा – सदा श्रेष्ठ भाग्य है और भाग्य के कारण सहयोग प्राप्त होता ही रहेगा।

18.2.86.. .. इसमें भी सदा त्यागी रहे और इसी त्याग के फल में सभी को आगे रखा, इसलिए आगे का फल मिला। नम्बरवन हर बात में ब्रह्मा बाप ही बना। क्यों बना? आगे रखना ही आगे होना – इस त्याग भाव से। सम्बन्ध का त्याग, वैभवों का त्याग कोई बड़ी बात नहीं। लेकिन हर कार्य में, संकल्प में भी औरों को आगे रखने की भावना। यह त्याग श्रेष्ठ त्याग रहा। इसको कहा जाता है – 'स्वयं के भान को मिटा देना'। मै पन को मिटा देना।

6.6.86.. .. एक बात – बच्चे त्यागी तो बने हैं लेकिन सर्वन्श त्यागी, यह बनना है और दूसरा – बेहद के वैरागी।

27.12.87.. .. सर्वन्श समर्पित वा सर्वन्श त्यागी एक ही बात है। समर्पित होना इसको नहीं कहा जाता कि मधुबन में बैठ गये वा सेवाकेन्द्रों पर बैठ गये। यह भी एक सीढ़ी है जो सेवा अर्थ अपने को अर्पण करते हैं लेकिन 'सर्वन्श अर्पित' - यह सीढ़ी की मंज़िल है। एक सीढ़ी चढ़ गये लेकिन मंजिल पर पहुँचने वाले निश्चय बुद्धि की निशानी है - तीनों ही वंश सहित अर्पित। तीनों ही बातें स्पष्ट जान गये ना। वंश तब समाप्त होता है जब स्वप्न वा संकल्प में भी अंश मात्र नहीं। अगर अंश है तो वंश पैदा हो ही जायेगा। इसलिए सर्वन्श त्यागी की परिभाषा अति गुह्य है।

6.6.97.. .. एक बात – बच्चे त्यागी तो बने हैं लेकिन सर्वन्श त्यागी, यह बनना है और दूसरा – बेहद के वैरागी।

17.7.2000.. .. समस्याओं का हल भी है, टेन्शन फ्री बनाने की भी है और आपकी त्यागी जीवन है। तो जैसा वायुमण्डल में लहर देखो वैसी लहर से उतनी कर सकते हो क्योंकि विशेष आत्माओं का संगठन है और बनी बनाई स्टेज है तो सबको सन्देश देने और भविष्य सम्पर्क बढ़ाने की सेवा तो है ही है, इसलिए जा सकते हैं।

6. सिम्पलिसिटी

11.3.71.....जो सिम्पल होता है वही ब्युटीफुल होता है। सिम्पलिसिटी सिर्फ ड्रेस की नहीं लेकिन सभी बातों की। निरहंकारी बनना अर्थात् सिम्पल बनना। निरक्रोधी अर्थात् सिम्पूल। निर्लोभी अर्थात् सिम्पुल। यह सिम्पलिसिटी प्योरिटी का साधन है।

19.7.71......यह ग्रुप सिम्पल और सैम्पल है। सिम्पल बनकर सैम्पल दिखाने वाले। सिम्पल कोई ड्रेस आदि में नहीं लेकिन सभी बातों में सिम्पल बन सैम्पल बनने वाले। जैसे कोई भी सिम्पल चीज़ अगर स्वच्छ होती है तो अपने तरफ आकर्षित करती है। इस रीति से मन्सा में भी जो संकल्प है, सम्बन्ध में, व्यवहार में भी और रहन-सहन में भी सभी में सिम्पल और स्वच्छ रहने वाले सैम्पल बन अपनी तरफ आकर्षित करते हैं। अगर संकल्प में वा सम्बन्ध में सिम्पल नहीं होंगे तो आल्टरनेट क्या होंगे? सिम्पल अर्थात् साधारणता। साधारणता में महानता हो। जैसे बाप साकार सृष्टि में सिम्पल रहते हुए आप सभी के आगे सैम्पल बने ना। अति साधारणता ही अति महानता को प्रसिद्ध करती है तो साधारणता अर्थात् सिम्पल नहीं तो प्राब्लम बन जाते हैं। संकल्पों के भी प्राब्लम में रहते हैं। रहन-सहन भी सिम्पल न होने के कारण औरों के लिए वा अपने लिए कोई न कोई प्राब्लम बन जाते हैं। तो प्राब्लम बनना है वा सिम्पल बनना है? प्राब्लम वाले सिम्पल नहीं बन सकते। तो मन्सा में भी सिम्पल हों। अगर कोई मन्सा में भी उलझन है अर्थात् प्राब्लम है तो उसको सिम्पल कहेंगे क्या? जैसे देखो, गाँधी को सिम्पल कहते थे, लेकिन सिम्पल बनकर के एक सैम्पल बन कर तो दिखाया ना। उसकी सिम्पल एक्टिविटी ही महानता की निशानी थी। वह हो गया हद का एक्ट। लेकिन यहाँ है बेहद के बाप के बच्चे बन बेहद की एक्ट करना। तुम तो विश्व के निमित्त हो ना। जैसे विश्व बेहद का है, बाप बेहद का है, वैसे ही जो भी यह ग्रुप सिम्पल और सैम्पल है। सिम्पल बनकर सैम्पल दिखाने वाले। सिम्पल कोई ड्रेस आदि में नहीं लेकिन सभी बातों में सिम्पल बन सैम्पल बनने वाले। जैसे कोई भी सिम्पल चीज़ अगर स्वच्छ होती है तो अपने तरफ आकर्षित करती है। इस रीति से मन्सा में भी जो संकल्प है, सम्बन्ध में, व्यवहार में भी और रहन-सहन में भी सभी में सिम्पल और स्वच्छ रहने वाले सैम्पल बन अपनी तरफ आकर्षित करते हैं। अगर संकल्प में वा सम्बन्ध में सिम्पल नहीं होंगे तो आल्टरनेट क्या होंगे? सिम्पल अर्थात् साधारणता। साधारणता में महानता हो। जैसे बाप साकार सृष्टि में सिम्पल रहते हुए आप सभी के आगे सैम्पल बने ना। अति साधारणता ही अति महानता को प्रसिद्ध करती है तो साधारणता अर्थात् सिम्पल नहीं तो प्राब्लम बन जाते हैं। संकल्पों के भी प्राब्लम में रहते हैं। रहन-सहन भी सिम्पल न होने के कारण औरों के लिए वा अपने लिए कोई न कोई प्राब्लम बन जाते हैं। तो प्राब्लम बनना है वा सिम्पल बनना है? प्राब्लम वाले सिम्पल नहीं बन सकते।

तो मन्सा में भी सिम्पल हों। अगर कोई मन्सा में भी उलझन है अर्थात् प्राब्लम है तो उसको सिम्पल कहेंगे क्या? जैसे देखो, गाँधी को सिम्पल कहते थे, लेकिन सिम्पल बनकर के एक सैम्पल बन कर तो दिखाया ना। उसकी सिम्पल एक्टिविटी ही महानता की निशानी थी। वह हो गया हद का एक्ट। लेकिन यहाँ है बेहद के बाप के बच्चे बन बेहद की एक्ट करना। तुम तो विश्व के निमित्त हो ना। जैसे विश्व बेहद का है, बाप बेहद का है, वैसे ही जो भी एक्ट करते हो वह बेहद की स्थिति में स्थित होकर एक्ट करना है। वह एक्ट ही अपने तरफ अट्रेक्ट करता है। तो आकर्षण-मूर्त बनने के लिए क्या करना पड़े? सिम्पल बनना पड़े। यहाँ दैवी सम्बन्ध में भी अगर कोई सिम्पल नहीं बनता, प्राब्लम बन जाता है तो रिजल्ट क्या होती है? स्नेह और सहयोग से वंचित रह जाते हैं। जो साधारण, सिम्पल होते हैं उसके तरफ न चाहते हुए भी सभी को स्नेह और सहयोग देने की शुभ भावना होगी। तो सर्व स्नेही वा सर्व से सहयोग प्राप्त करने के लिए वा सर्व के सहयोगी बनने के लिए सिम्पल बनना बहुत आवशक है।

21.4.73 ....बापदादा तो यही देखते हैं कि जो मधुबन निवासी हैं वह सभी के सामने सैम्पल हैं। सैम्पल (Sample) पहले तैयार किया जाता है ना? मधुबन निवासी सैम्पल हैं या फिर सैम्पल अब तैयार हुआ है? सैम्पल तैयार होता है तो उसकी तरफ इशारा कर बताया जाता है कि ऐसा माल तैयार हो रहा है। तभी फिर उसको देख दूसरे लोग सौदा करते हैं। पहले सैम्पल तैयार होने से बापदादा ऐसा इशारा दे दिखावें कि ऐसा बनना है। सैम्पल बनने के लिए कोई मुश्किल पुरुषार्थ नहीं है। बहुत सिम्पल (Simple) पुरुषार्थ है। सिम्पल पुरुषार्थ एक शब्द में यही हुआ कि साथ में बाप का सिम्बल (Symbol) सामने रखो। एक शब्द का पुरुषार्थ तो बहुत इज़ी (Easy) हुआ ना? अगर सदा सिम्बल सामने हो तो पुरुषार्थ में सिम्पल हो जाए। पुरुषार्थ सिम्पल होने से सैम्पल बन जायेंगे।

19.10.75 ....जैसे साकार बाप का सैम्पल (Sample, नमूना) पुरूषार्थियों के पुरुषार्थ को सिम्पल (Simple, आसान) कर देता है। ऐसे सैम्पल तैयार करो जिसको देखकर अन्य का पुरुषार्थ सिम्पल हो जाय – ऐसा झुण्ड तैयार है?

2-12-93 .....नम्बरवन आत्मा की निशानी है–हर श्रेष्ठ कार्य में मुझे निमित्त बन औरों को सिम्पल करने के लिये सेम्पल बनना है।

23-12- 93 .....अनेक आत्माओं के लिए सिम्पल करने वाले सैम्पल बनो।

22.12.95 ......सेन्टर कोई-कोई तो बहुत अच्छे सजे-सजाये और कोई सिम्पल तो कोई बहुत रॉयल, कोई बीच के भी थे। ज्यादा हैं जो समझते हैं कि रॉयल लगे, कोई वी.आई.पी. आवे तो उसको लगे कि सेन्टर अच्छा है, लेकिन अपना (ब्राह्मणों का) आदि से अब तक का नियम है कि न बिल्कुल सादा हो, न बहुत रॉयल हो। बीच का होना चाहिये। ब्रह्मा ने तो बहुत

साधारण देखा और रहा। लेकिन अभी साधन हैं, साधन देने वाले भी हैं फिर भी कोई भी कार्य करो तो बीच का करो।

22-8-98 **.....**अनेक आत्माओं को सहयोगी बनाने का लक्ष्य रखना है और वातावरण में स्थूल शो न हो लेकिन सिम्पल और आध्यात्मिक, अव्यक्त और ब्युटीफुल हो। यही नवीनता है। बाकी शो तो दुनिया वाले भी बहुत करते हैं। नवीनता यह हो जो आते ही हर एक की आध्यात्मिक वृत्ति बन जाये।

15-11-2003.. .... जैसे आप ब्राह्मण आत्माओं की सफेद ड्रेस सभी को कितनी न्यारी और प्यारी लगती है। स्वच्छता, सादगी और पवित्रता अनुभव होती है। दूर से ही जान जाते हैं यह ब्रह्माकुमार कुमारी है।

7. सत्यता, सच्चाई, निर्भयता

सत्यता

27.5.74.. .. 'सत्य वचन महाराज' का यह यादगार कब से आरम्भ हुआ? पहले यथार्थ प्रैक्टिकल में चलता है, फिर भक्तिमार्ग में सिर्फ यादगार रह जाता है, यथार्थ नहीं होता है, तो जब भक्तिमार्ग में भी हर बोल का महत्व इतना अभी तक भी है, जो अन्तिम घड़ी तक भी देख व सुन रहे हो तो ऐसे महत्व वाले बोल जिसमें सत्यता तथा विश्व का कल्याण हो, क्या ऐसे हर बोल निकलते हैं? दिन प्रतिदिन नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार जो महारथी व महावीर बन रहे हैं, उन्हीं के मुख से निकलने वाले, हर बोल सत्य हो जावेंगे।

27.5.74 .. .. जैसेकि कल्प पहले का गायन है रॉयल पुरुषार्थियों का–कितना भी स्वयं को बनाने का पुरुषार्थ करें, लेकिन सत्यता रूपी दर्पण के आगे रॉयल भी रीयल दिखाई देगा। तो आगे चलकर ऐसे सत्य बोल, सत्य वृत्ति, सत्य दृष्टि, सत्य वायुमण्डल, सत्य वातावरण और सत्य का संगठन प्रसिद्ध दिखाई देगा। अर्थात् ब्राह्मण परिवार एक शीश महल बन जायेगा। ऐसी फाइनल रिज़ल्ट ऑटोमेटिकली आऊट होगी। अभी तो बड़े-बड़े दाग भी छुपाने से छुप जाते हैं, क्योंकि अभी शीश-महल नहीं बना है, जो कि चारों ओर के दाग स्पष्ट दिखाई दे जावें। जब किनारा कर लेते, तो दाग छिप जाता अर्थात् पाप दर्पण के आगे स्वयं को लाने से किनारा कर छिप जाते हैं। छिपता नहीं है, लेकिन किनारा कर और छिपा हुआ समझ स्वयं को खुश कर लेते हैं। बाप भी बच्चों का कल्याणकारी बन अनजान बन जाते हैं जैसे कि जानते ही नहीं। अगर बाप कह दे कि मैं जानता हूँ कि यह दाग इतने समय से व इस रूप से है तो सुनाने वाले का क्या स्वरूप होगा? सुनाना चाहते भी मुख बन्द हो जायेगा, क्योंकि सुनाने की विधि रखी हुई है। बाप जब कि जानते भी हैं, तो भी सुनते क्यों हैं? क्योंकि स्वयं द्वारा किये गये कर्म व संकल्प स्वयं वर्णन करेंगे, तो ही महसूसता की सीढ़ी पर पाँव रख सकेंगे। महसूस करना या अफसोस करना या माफी लेना बात एक हो जाती है। इसलिए सुनाने की अर्थात् स्वयं को हल्का बनाने की या परिवर्तन करने की विधि बनाई गई है। इस विधि से पापों की वृद्धि कम हो जाती है। इसलिये अगर शीश महल बनने के बाद, स्वयं को स्पष्ट देख कर के स्पष्ट किया तो रिज़ल्ट क्या होगी, यह जानते हो? बाप-दादा भी ड्रामा प्रमाण उन आत्माओं को स्पष्ट चैलेन्ज देंगे, तो फिर क्या कर सकेंगे? इसलिए जब महसूसता के आधार

पर स्पष्ट हो अर्थात् बोझ से स्वयं को हल्का करो, तब ही डबल लाइट स्वरूप अर्थात् फरिश्ता व आत्मिक स्थिति स्वरूप बन सकेंगे।

2.9.75 .. .. तो बाप को जो सत बाप, सत टीचर, सत गुरु का प्रैक्टिकल पार्ट बजाते हैं, तो सत बाप को क्या प्रिय लगता है? – सच्चाई- जहाँ सच्चाई है अर्थात् सत्यता है, वहाँ स्वच्छता व सफाई अवश्य ही होती है। गायन भी है सच्चे दिल पर साहब राजी।

1-4-78 .. .. लण्डन में भी धर्मात्माओं का चांस है। जो भी चांस लो उसमें रूहानियत की आकर्षण का दृश्य ज़रूर हो। जैसे तीर्थस्थान पर शान्ति कुण्ड या गति-सद्गति के कुण्ड बनाते हैं ना। तो ऐसे समझें कि सर्व प्राप्ति कुण्ड यही है। न्यारापन अनुभव हो, साधारणता हो लेकिन शक्तिशाली हो और यह सत्यता महसूस हो। ऐसी स्टेज(अवस्था) लेते-लेते विश्व का राज्य भी ले लेंगे।

28.12.78.. .. **परमात्म प्रत्यक्षता का आधार सत्यता है।** सत्यता ही प्रत्यक्षता है - एक स्वयं के स्थिति की सत्यता दूसरी सेवा की सत्यता। सत्यता का आधार है स्वच्छता और निर्भयता। इन दोनों धारणाओं के आधार से सत्यता द्वारा ही प्रत्यक्षता होगी। किसी भी प्रकार की अस्वच्छता अर्थात् ज़रा भी सच्चाई सफाई की कमी है तो कर्त्तव्य की सिद्धि, प्रत्यक्षता हो नहीं सकती।

सत्यता नेचरल संस्कार रूप में हैं वा पुरुषार्थ से सत्यता की स्टेज को लाना पड़ता है! जैसे बाप को टुथ अर्थात् सत्य कहते हैं वैसे ही आत्मिक स्वरूप की वास्तविकता भी सत्य अर्थात् टुथ है। तो सत्यता सतोप्रधानता को कहा जाता है, ऐसी सच्चाई है!

1.1.79.. .. स्टेज पर आने वाले के ऊपर सभी की नज़र आटोमेटिकली जाती है – अभी पर्दे के अन्दर है, स्वयं के पुरुषार्थ का पर्दा है- अभी इसी पर्दे से निकल सेवा की स्टेज पर आओ तो विश्व की आत्माएं – ऐसे हीरो पार्टधारियों को देख नज़र से निहाल हो जावेंगे। ऐसे प्लान बनाओ ऐसे ग्रुप के मुख से सत्यता की अथार्टी स्वत: ही बापकी प्रत्यक्षता करेगी – अभी तो बेबी बाम्ब फेंक रहे हैं – अभी परमात्म बाम्ब द्वारा धरनी को परिवर्तन करो।

23.1.79.. .. .. अथार्टी से और सत्यता से बोलो, संकोच से नहीं। सत्यता प्रत्यक्षता का आधार है। प्रत्यक्षता करने के लिए पहले स्वयं को प्रत्यक्ष करो, निर्भय बनो।

23.3.81.. .. तो बाप पसन्द बनने के लिए –''सच्ची दिल पर साहेब राजी।''जो भी हो सच्चाई, सत्यता बाप को जीत लेती है। और मन पसन्द बनने के लिए क्या चाहिए? मनमत पर नहीं चलना। मनपसन्द औरचीज़ हैं। मन पसन्द बनने के लिए बहुत सहज साधन है – श्रीमत की लकीर के अन्दर .

5.4.81.. .. सत्यता की शक्ति है तो सत्य को कहा ही जाता है – '' सत्यता महानता है।'' और महान वही है जो स्वयं झुकता है। अगर मानो कल्याण के प्रति झुकना भी पड़ता है तो वह झुकना नहीं है, लेकिन महानता है।

11.4.81.. .. विधि-विधाताओं की विशेष शक्ति है जिस द्वारा सेकेण्ड में सर्व को विधि द्वारा सिद्धि स्वरूप बना सकते। उसको जानते हो? वह है ''सत्यता अर्थात् रियल्टी''। सत्यता ही महानता है। सत्यता की ही मान्यता है। वह सत्यता अर्थात् महानता स्पष्ट रूप से जानते हो? विशेष विधि ही सत्यता के आधार पर है। पहला फाउन्डे- शन अपनी नालेज अर्थात् अपने स्वरूप में स्त्यता देखो। सत्य स्वरूप क्या है और मानते क्या थे? तो पहला सत्य हुआ आत्मा स्वरूप का। जब तक यह सत्य नहीं जाना तो महानता थी? महान थे वा महान के पुजारी थे? जब अपने आपको जाना तो क्या बन गये? महान आत्मा बन गये। सत्यता की अथार्टी से औरों को भी कहते हो – हम आत्मा हैं। इसी प्रकार से सत्य बाप का सत्य परिचय मिलने से अथार्टी से कहते हो – परमात्मा हमारा बाप है। वर्से के अधिकार की शक्ति से कहते हो बाप हमारा और हम बाप के। ऐसे अपनी रचना के वा सृष्टि चक्र के सत्य परिचय को अथार्टी से सुनते हो – अब यह सृष्टि चक्र समाप्त हो फिर से रिपीट होना है। अब संगम का युग है, न कि कलियुग। चाहे सारी विश्व के विद्वान पण्डित और अनक आत्मायें शास्त्रों के प्रमाण कलियुग ही मानत लेकिन आप 5 पाण्डव अर्थात् कोटों मे कोई थोड़ी सी आत्मायें चैलेन्ज करते हो कि अभी कलियुग नहीं, संगमयुग है, यह किस अथार्टी से? सत्यता की महानता के कारण। विश्व में मैसेज देते हो कि आओ और आकर समझो। सोये हुए कुम्भकरणों को जगाकर कहते हो – समय आ गया। यही सत् बाप, सत् शिक्षक, सत् गुरु द्वारा सत्यता की शक्ति मिली है। अनुभव करते हो – यही सत्यता है।

सत् के दो अर्थ है। एक सत् अर्थात् सत्य दूसरा सत् अर्थात् अविनाशी। तो बाप सत्य भी है और अविनाशी भी है इसलिए बाप द्वारा जो परिचय मिला वह सब सत् अर्थात् सत्य और अविनाशी है। भक्त लोग भी बाप की महिमा गाते हैं – ''सत्यम् शिवम् सुन्द-रम्''। सत्यम् भी मानते और अविनाशी भी मानते। गाड इज ट्रुथ भी मानते। तो बाप द्वारा सत्यता की अथार्टी प्राप्त हो गई है। यह भी वर्सा मिला है ना! सत्यता की अथार्टी प्राप्त हो गई है। यह भी

वर्सा मिला हैना। सत्यता की अथार्टी वाले का गायन भी सुना है, उसकी निशानी क्या होगी? सिन्धी में कहावत है – ''सच ते बिठो नच''। और भी कहावत है – ''सत्य की नाव हिलेगी लेकिन डूब नहीं सकती''। आपको भी हिलाने की कोशिश तो बहुत करते हैं ना! यह झूठ है, कल्पना है। लेकिन सच तो बिठो नच। आप सत्यता की महानता के नशे में सदा खुशी के झूल में झूलते रहते। खुशी में नाचते रहते हो ना। जितना वह हिलाने की कोशिश करते उतना ही क्या होता? आपके झूले को हिलाने से और ही ज्यादा झूलते हो। आपको नहीं हिलाते लेकिन झूले को हिलाते। और ही उसको धन्यवाद दो कि हम बाप के साथ झूलें, आप झुलाओ। यह हिलाना नहीं लेकिन झुलाना है। ऐसे अनुभव करते हो। हिलते नहीं हो लेकिन झूलते हो ना! सत्यता की शक्ति सारी प्रकृति को ही सतोप्रधान बना देती है। युग को सतयुगी बना देती है। सर्व आत्माओं के सद्गति की तकदीर बना देती है। हर आत्मा आपके सत्यता की शक्ति द्वारा अपने-अपने यथा शक्ति अपने धर्म में, अपने समय पर गति के बाद सद्गति में ही अवतरित होंगे। क्योंकि विधि-विधाताओं द्वारा संगमयुग पर अन्त तक भी बाप को याद करने की विधि का सन्देश ज़रूर मिलना है। फिर किसको वाणी द्वारा, किसको चित्रों द्वारा, किसको समाचारों द्वारा, किसको आप सबके पावरफुल वायब्रेशन द्वारा, किसको अन्तिम विनाश लीला की हलचल द्वारा, वैराग वृत्ति के वायुमण्डल द्वारा। यह सब साइन्स के साधन आपके इस सन्देश देने के कार्य में सहयोगी होंगे।

संगम पर ही प्रकृति सहयोगी बनने का अपना पार्ट आरम्भ कर देगी। सब तरफ से प्रकृति-पति का और मास्टर प्रकृतिपति का आयजान करेगी। सब तरफ से आफरीन और आफर होगी। फिर क्या करेंगे? यह जो भक्ति में गायन है, हर प्रकृति के तत्व को देवता के रूप में दिखाया है। देवता अर्थात् देने वाला। तो अन्त में यह सब प्रकृति के तत्व आप सबको सहयोग देने वाले दाता बन जायेंगे। यह सागर भी आपको सहयोग देंगे। चारों ओर की सामग्री भारत की धरनी पर लाने में सहयोगी होंगे। इसलिए कहते हैं सागर ने रतनों की थालियाँ दी। ऐसे ही धरनी की हलचल सारी वैल्युबल वस्तु आप श्रेष्ठ आत्माओं के लिए एक स्थान भारत में इकट्ठी कर देने में सहयोगी होगी। इन्द्र देवता कहते हैं ना! तो बरसात भी धरनी की सफाई के सहयोग में हाजिर हो जायेगी। इतना सारा किचड़ा आप तो नहीं साफ करेंगे। यह सारा प्रकृति का सहयोग मिलेगा। कुछ वायु उड़ायेगी, कुछ बरसात साथ ले जायेगी। अग्नि को तो जानते ही हो। तो अन्त में यह सब तत्व आप श्रेष्ठ आत्माओं को सहयोग देने वाले देवता बनेंगे। और सर्व आत्मायें अनुभव करेंगी। फिर भक्ति में जो अब सहयोग देने के कर्त्तव्य के कारण देवता बने उस कर्त्तव्य का अर्थ भूल, देवताओं का मनुष्य रूप दे देते हैं। जैसे सूर्य है तत्व लेकिन मनुष्य रूप दे दिया है। तो समझा विधि-विधाता बन क्या कार्य करना है।

उन्हों की है विधान सभा और यह है विधि-विधाताओं की सभा। वहाँ सभा के मेम्बर होते हैं। यहाँ अधिकारी महान आत्मायें होती हैं। तो समझा सत्यता की महानता कितनी है! सत्यता

पारस के समान है। जैसे पारस लोहे को भी पारस बना देता है। आपके सत्यता की शक्ति आत्मा को, प्रकृति को, समय को, सर्व सामग्री को, सबको सतोप्रधान बना देती है। तमोगुण का नाम निशान समाप्त कर देती है। सत्यता की शक्ति आपके नाम को, रूप को सत् अर्थात् अविनाशी बना देती है। आधाकल्प चैतन्य रूप, आधा कल्प चित्र रूप। आधा कल्प प्रजा आपको नाम गायेगी, आधा कल्प भक्त आपका नाम गायेंगे। आपका बोल सत् वचन के रूप में गाया जाता है। आज तक भी एक-आधा वचन लेने से अपने को महान अनुभव करते। आपकी सत्यता की शक्ति से आपका देश भी अविनाशी बन जाता है। वेष भी अविनाशी बन जाता है। आधाकल्प देवताई वेष में रहेंगे, आधाकल्प देवताई वेष का यादगार चलेगा। अब अन्त तक भी भक्त लोग आपके चित्रों को भी ड्रेस से सजाते रहते हैं। कर्त्तव्य और चरित्र – यह सब सत् हो गये। कर्त्तव्य का

यादगार भागवत बना दिया है। चरित्रों की अनेक कहानियाँ बना दी हैं। यह सब सत्य हो गये। किस कारण? सत्यता की शक्ति कारण। आपकी दिनचर्या भी सत् हो गई है। भोजन खाना, अमृत पीना सब सत् हो गया है। आपके चित्रों को भी उठाते हैं, बिठाते हैं, परिक्रमा लगवाते हैं, भोग लगाते हैं, अमृत रखते और पीते हैं। हर कर्त्तव्य वा हर कर्म का यादगार बन गया है। इतनी शक्ति को जानते हो? इतनी अथार्टी से सबको चैलेन्ज करते हो वा सेवा करते हो? नये-नये आये हैं ना! ऐसे तो नहीं समझते हम थोड़े हैं, लेकिन आलमाइटी अथार्टी आपका साथी है। सत्यता की शक्ति वाले हो। पाँच नहीं हो लेकिन विश्व का रचयिता आपका साथी है। इसी फलक से बोलो। मानेंगे, नहीं मानेंगे, कहें, कैसे कहें। यह संकल्प तो नहीं आते जहाँ सत्यता है, सत् बाप है वहाँ सदा विजय है। निश्चय के आधार पर अनुभवी मूर्त्त बन बोलो तो सफलता सदा आपके साथ है।

सत्यता की महानता है, सत्यता की मान्यता है। सत् बाप, सत् शिक्षक तथा सत् गुरु आकर आत्मा का, परमात्मा का, सृष्टि चक्र का सत्य परिचय देकर सत्यता की शक्ति भरते हैं। 2. सत्यता की शक्ति प्रकृति को सतोप्रधान, युग को सतयुग बना देती है। सर्व आत्माओं के सद्गति की तकदीर बना देती है।। 3. देवता अर्थात् देने वाला। अन्त में सब प्रकृति के तत्व आप सबको सहयोग देने वाले देवता बन जायेंगे। भक्ति में सहयोग देने के कर्त्तव्य के कारण तत्वों को मनुष्य का रूप दे देते हैं।

13.4.81 .. .. अपनी नालेज अर्थात् अपने स्वरूप में स्त्यता देखो। सत्य स्वरूप क्या है और मानते क्या थे? तो पहला सत्य हुआ आत्मा स्वरूप का। जब तक यह सत्य नहीं जाना तो महानता थी? महान थे वा महान के पुजारी थे? जब अपने आपको जाना तो क्या बन गये? महान आत्मा बन गये। सत्यता की अथार्टी से औरों को भी कहते हो – हम आत्मा हैं। इसी प्रकार से सत्य बाप का सत्य परिचय मिलने से अथार्टी से कहते हो – परमात्मा हमारा बाप है। वर्से के अधिकार की शक्ति से कहते हो बाप हमारा और हम बाप के। ऐसे अपनी रचना के वा सृष्टि चक्र के सत्य परिचय को अथार्टी से सुनते हो – अब यह सृष्टि चक्र समाप्त हो फिर से रिपीट होना है। अब संगम का युग है, न कि कलियुग। चाहे सारी विश्व के विद्वान पण्डित और अनक आत्मायें शास्त्रों के प्रमाण कलियुग ही मानत लेकिन आप 5 पाण्डव अर्थात् कोटों मे कोई थोड़ी सी आत्मायें चैलेन्ज करते हो कि अभी कलियुग नहीं, संगमयुग है, यह किस अथार्टी से? सत्यता की महानता के कारण। विश्व में मैसेज देते हो कि आओ और आकर समझो। सोये हुए कुम्भकरणों को जगाकर कहते हो – समय आ गया। यही सत् बाप, सत् शिक्षक, सत् गुरु द्वारा सत्यता की शक्ति मिली है। अनुभव करते हो – यही सत्यता है।

सत् के दो अर्थ है। एक सत् अर्थात् सत्य दूसरा सत् अर्थात् अविनाशी। तो बाप सत्य भी है और अविनाशी भी है इसलिए बाप द्वारा जो परिचय मिला वह सब सत् अर्थात् सत्य और

अविनाशी है। भक्त लोग भी बाप की महिमा गाते हैं – ''सत्यम् शिवम् सुन्द-रम्''। सत्यम् भी मानते और अविनाशी भी मानते। गाड इज ट्रुथ भी मानते। तो बाप द्वारा सत्यता की अथार्टी प्राप्त हो गई है। यह भी वर्सा मिला है ना! सत्यता की अथार्टी प्राप्त हो गई है। यह भी वर्सा मिला हैना। सत्यता की अथार्टी वाले का गायन भी सुना है, उसकी निशानी क्या होगी? सिन्धी में कहावत है – ''सच ते बिठो नच''। और भी कहावत है – ''सत्य की नाव हिलेगी लेकिन डूब नहीं सकती''। आपको भी हिलाने की कोशिश तो बहुत करते हैं ना! यह झूठ है, कल्पना है। लेकिन सच तो बिठो नच। आप सत्यता की महानता के नशे में सदा खुशी के झूल में झूलते रहते। खुशी में नाचते रहते हो ना। जितना वह हिलाने की कोशिश करते उतना ही क्या होता? आपके झूले को हिलाने से और ही ज्यादा झूलते हो। आपको नहीं हिलाते लेकिन झूले को हिलाते। और ही उसको धन्यवाद दो कि हम बाप के साथ झूलें, आप झुलाओ। यह हिलाना नहीं लेकिन झुलाना है। ऐसे अनुभव करते हो। हिलते नहीं हो लेकिन झूलते हो ना! सत्यता की शक्ति सारी प्रकृति को ही सतोप्रधान बना देती है। युग को सतयुगी बना देती है। सर्व आत्माओं के सद्गति की तकदीर बना देती है। हर आत्मा आपके सत्यता की शक्ति द्वारा अपने-अपने यथा शक्ति अपने धर्म में, अपने समय पर गति के बाद सद्गति में ही अवतरित होंगे। क्योंकि विधि-विधाताओं द्वारा संगमयुग पर अन्त तक भी बाप को याद करने की विधि का सन्देश ज़रूर मिलना है। फिर किसको वाणी द्वारा, किसको चित्रों द्वारा, किसको समाचारों द्वारा, किसको आप सबके पावरफुल वायब्रेशन द्वारा, किसको अन्तिम विनाश लीला की हलचल द्वारा, वैराग वृत्ति के वायुमण्डल द्वारा। यह सब साइन्स के साधन आपके इस सन्देश देने के कार्य में सहयोगी होंगे।

सत्यता की महानता कितनी है! सत्यता पारस के समान है। जैसे पारस लोहे को भी पारस बना देता है। आपके सत्यता की शक्ति आत्मा को, प्रकृति को, समय को, सर्व सामग्री को, सबको सतोप्रधान बना देती है। तमोगुण का नाम निशान समाप्त कर देती है। सत्यता की शक्ति आपके नाम को, रूप को सत् अर्थात् अविनाशी बना देती है। आधाकल्प चैतन्य रूप, आधा कल्प चित्र रूप। आधा कल्प प्रजा आपको नाम गायेगी, आधा कल्प भक्त आपका नाम गायेंगे। आपका बोल सत् वचन के रूप में गाया जाता है। आज तक भी एक-आधा वचन लेने से अपने को महान अनुभव करते। आपकी सत्यता की शक्ति से आपका देश भी अविनाशी बन जाता है। वेष भी अविनाशी बन जाता है। आधाकल्प देवताई वेष में रहेंगे,

आधाकल्प देवताई वेष का यादगार चलेगा। अब अन्त तक भी भक्त लोग आपके चित्रों को भी ड्रेस से सजाते रहते हैं। कर्त्तव्य और चरित्र – यह सब सत् हो गये। कर्त्तव्य का यादगार भागवत बना दिया है। चरित्रों की अनेक कहानियाँ बना दी हैं। यह सब सत्य हो गये। किस कारण? सत्यता की शक्ति कारण। आपकी दिनचर्या भी सत् हो गई है। भोजन खाना, अमृत पीना सब सत् हो गया है। आपके चित्रों को भी उठाते हैं, बिठाते हैं, परिक्रमा लगवाते हैं, भोग लगाते हैं, अमृत रखते और पीते हैं। हर कर्त्तव्य वा हर कर्म का यादगार बन गया है। इतनी शक्ति को जानते हो? इतनी अथार्टी से सबको चैलेन्ज करते हो वा सेवा करते हो? नये-नये आये हैं ना! ऐसे तो नहीं समझते हम थोड़े हैं, लेकिन आलमाइटी अथार्टी आपका साथी है। सत्यता की शक्ति वाले हो। पाँच नहीं हो लेकिन विश्व का रचयिता आपका साथी है। इसी फलक से बोलो। मानेंगे, नहीं मानेंगे, कहें, कैसे कहें। यह संकल्प तो नहीं आते जहाँ सत्यता है, सत् बाप है वहाँ सदा विजय है। निश्चय के आधार पर अनुभवी मूर्त्त बन बोलो तो सफलता सदा आपके साथ है। सत्यता की महानता कितनी है! सत्यता पारस के समान है। जैसे पारस लोहे को भी पारस बना देता है। आपके सत्यता की शक्ति आत्मा को, प्रकृति को, समय को, सर्व सामग्री को, सबको सतोप्रधान बना देती है। तमोगुण का नाम निशान समाप्त कर देती है। सत्यता की शक्ति आपके नाम को, रूप को सत् अर्थात् अविनाशी बना देती है। आधाकल्प चैतन्य रूप, आधा कल्प चित्र रूप। आधा कल्प प्रजा आपको नाम गायेगी, आधा कल्प भक्त आपका नाम गायेंगे। आपका बोल सत् वचन के रूप में गाया जाता है। आज तक भी एक-आधा वचन लेने से अपने को महान अनुभव करते। आपकी सत्यता की शक्ति से आपका देश भी अविनाशी बन जाता है। वेष भी अविनाशी बन जाता है। आधाकल्प देवताई वेष में रहेंगे, आधाकल्प देवताई वेष का यादगार चलेगा। अब अन्त तक भी भक्त लोग आपके चित्रों को भी ड्रेस से सजाते रहते हैं। कर्त्तव्य और चरित्र – यह सब सत् हो गये। कर्त्तव्य का यादगार भागवत बना दिया है। चरित्रों की अनेक कहानियाँ बना दी हैं। यह सब सत्य हो गये। किस कारण? सत्यता की शक्ति कारण। आपकी दिनचर्या भी सत् हो गई है। भोजन खाना, अमृत पीना सब सत् हो गया है। आपके चित्रों को भी उठाते हैं, बिठाते हैं, परिक्रमा लगवाते हैं, भोग लगाते हैं, अमृत रखते और पीते हैं। हर कर्त्तव्य वा हर कर्म का यादगार बन गया है। इतनी शक्ति को जानते हो? इतनी अथार्टी से सबको चैलेन्ज करते हो वा सेवा करते हो? नये-नये आये हैं ना! ऐसे तो नहीं समझते हम थोड़े हैं, लेकिन आलमाइटी अथार्टी आपका साथी है। सत्यता की शक्ति वाले हो। पाँच नहीं हो लेकिन विश्व का रचयिता

आपका साथी है। इसी फलक से बोलो। मानेंगे, नहीं मानेंगे, कहें, कैसे कहें। यह संकल्प तो नहीं आते जहाँ सत्यता है, सत् बाप है वहाँ सदा विजय है। निश्चय के आधार पर अनुभवी मूर्त्त बन बोलो तो सफलता सदा आपके साथ है।

सत्यता की महानता है, सत्यता की मान्यता है। सत् बाप, सत् शिक्षक तथा सत् गुरु आकर आत्मा का, परमात्मा का, सृष्टि चक्र का सत्य परिचय देकर सत्यता की शक्ति भरते हैं। 2. सत्यता की शक्ति प्रकृति को सतोप्रधान, युग को सतयुग बना देती है। सर्व आत्माओं के सद्गति की तकदीर बना देती है। आज सत बाप, सत शिक्षक, सतगुरु अपने सत्यता के शक्ति स्वरूप बच्चों को देख रहे हैं। सत्य ज्ञान वा सत्यता की शक्ति कितनी महान है उसके अनुभवी आत्मायें हो। सब दूरदेश वासी बच्चे भिन्न धर्म, भिन्न मान्यतायें, भिन्न रीति रसम में रहते हुए भी इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय की तरफ वा राजयोग की तरफ क्यों आकर्षित हुए? सत्य बाप का सत्य परिचय मिला अर्थात् सत्य ज्ञान मिला। सच्चा परिवार मिला। सच्चा स्नेह मिला। सच्ची प्राप्ति का अनुभव हुआ। तब सत्यता की शक्ति के पीछे आकर्षित हुए। जीवन थी, प्राप्ति भी थी यथा शक्ति ज्ञान भी था लेकिन सत्य ज्ञान नहीं था। इसलिए सत्यता की शक्ति ने सत्य बाप का बना लिया। सत शब्द के दो अर्थ हैं – सत सत्यता भी है और सत अविनाशी भी है। तो सत्यता की शक्ति अविनाशी भी है। इसलिए अविनाशी प्राप्ति, अविनाशी सम्बन्ध, अविनाशी स्नेह, अविनाशी परिवार है। यही परिवार 21 जन्म भिन्नभिन्न नाम रूप से मिलते रहेंगे। जानेंगे नहीं। अभी जानते हो कि हम ही भिन्न सम्बन्ध से परिवार में आते रहेंगे। इस अविनाशी प्राप्ति ने, पहचान ने दूर देश में होते हुए भी अपने सत्य परिवार, सत्य बाप, सत्य ज्ञान की तरफ खींच लिया। जहाँ सत्यता भी हो और अविनाशी भी हो, यही परमात्म पहचान है। तो जैसे आप सभी इसी विशेषता के आधार पर आकर्षित हुए, ऐसे ही सत्यता की शक्ति को, सत्य ज्ञान को विश्व में प्रत्यक्ष करना है। 50 वर्ष धरनी बनाई, स्नेह में लाया, सम्पर्क में लाया। राजयोग की आकर्षण में लाया, शान्ति के अनुभव से आकर्षण में लाया। अब बाकी क्या रहा? जैसे परमात्मा एक है यह सभी भिन्न-भिन्न धर्म वालों की मान्यता है। ऐसे यथार्थ सत्य ज्ञान एक ही बाप का है अथवा एक ही रास्ता है, यह आवाज़ जब तक बुलन्द नहीं होगा तब तक आत्माओं का अनेक तिनकों के सहारे तरफ़ भटकना बन्द नहीं होगा। अभी यही समझते हैं कि यह भी एक रास्ता है। अच्छा रास्ता है। लेकिन आखिर भी एक बाप का एक ही परिचय, एक ही रास्ता है। अनेकता की यह भ्रान्ति समाप्त होना ही विश्व-शान्ति का आधार है। यह सत्यता के परिचय की वा सत्य ज्ञान के शक्ति की लहर जब तक चारों ओर नहीं फ़ैलेगी तब तक प्रत्यक्षता के झण्डे के नीचे सर्व आत्मायें सहारा नहीं ले सकतीं। तो गोल्डन जुबली में जबकि बाप के घर में विशेष निमन्त्रण देकर बुलाते हो, अपनी स्टेज है। श्रेष्ठ वातावरण है, स्वच्छ बुद्धि का प्रभाव है। स्नेह की धरनी है, पवित्र पालना है। ऐसे वायुमण्डल के बीच अपने सत्य ज्ञान को प्रसिद्ध करना ही प्रत्यक्षता का आरम्भ होगा। याद है, जब प्रदर्शनियों द्वारा सेवा का विहंग मार्ग का आरम्भ हुआ तो क्या करते थे? मुख्य ज्ञान के प्रश्नों का फार्म भराते थे ना। परमात्मा सर्वव्यापी है

वा नहीं है? गीता का भगवान कौन है? यह फार्म भराते थे ना। ओपीनियन लिखाते थे। पहेली पूछते थे। तो पहले यह आरम्भ किया लेकिन चलते-चलते इन बातों को गुप्त रूप में देते हुए सम्पर्क स्नेह को आगे रखते हुए समीप लाया। इस बारी जबकि इस धरनी पर आते हैं तो सत्य परिचय, स्पष्ट परिचय दो। यह भी अच्छा है, यह तो राज़ी करने की बात है। लेकिन एक ही बाप का एक यथार्थ परिचय स्पष्ट बुद्धि में आ जाए, यह भी समय अब लाना है। सिर्फ़ सीधा कहते रहते हो कि बाप यह ज्ञान दे रहा है, बाप आया है लेकिन वह मानकर जाते हैं कि यही परमात्म-ज्ञान है? परमात्मा का कर्त्तव्य चल रहा है? ज्ञान की नवीनता है यह अनुभव करते हैं? ऐसी वर्कशाप कभी रखी है? जिसमें परमात्मा सर्वव्यापी है या नहीं है, एक ही समय आता है या बार-बार आता है। ऐसे स्पष्ट परिचय उन्हें मिल जाएँ जो समझें कि दुनिया में जो नहीं सुना वह यहाँ सुना। ऐसे जो विशेष स्पीकर बन करके आते – उन्हों से यह ज्ञान के राजों की रूह-रूहान करने से उन्हों की बुद्धि में आयेगा। साथ-साथ जो भाषण भी करते हो उसमें भी अपने परिवर्तन के अनुभव सुनाते हुए एक-एक स्पीकर, एक-एक नये ज्ञान की बात को स्पष्ट कर सकते हो। ऐसे सीधा टापिक नहीं रखें कि परमात्मा सर्वव्यापी नहीं है, लेकिन एक बाप को एक रूप से जानने से क्या-क्या विशेष प्राप्तियाँ हुई, उन प्राप्तियों को सुनाते हुए सर्वव्यापी की बातों को स्पष्ट कर सकते हो। एक परमधाम निवासी समझ याद करने से बुद्धि कैसे एकाग्र हो जाती है वा बाप के सम्बन्ध से क्या प्राप्तियों की अनुभूति होती है? इस ढंग से सत्यता और निर्मानता, दोनों रूप से सिद्ध कर सकते हो। जिससे अभिमान भी न लगे कि यह लोग अपनी महिमा करते हैं। नम्रता और रहम की भावना अभिमान की महसूसता नहीं कराती। जैसे मुरलियों को सुनते हुए कोई भी अभिमान नहीं कहेगा। अथार्टी से बोलते हैं, यह कहेंगे। भल शब्द कितने ही सख्त हों लेकिन अभिमान नहीं कहेंगे! अथार्टी की अनुभूति करते हैं। ऐसे क्यों होता है? जितनी ही अथार्टी है उतनी ही नम्रता और रहम भाव है। ऐसे बाप तो बच्चों के आगे बोलते हैं लेकिन आप सभी इस विशेषता से स्टेज पर इस विधि से स्पष्ट कर सकते हो। जैसे सुनाया ना। ऐसे ही एक सर्वव्यापी की बात रखें, दूसरा नाम रूप से न्यारे की रखें, तीसरा ड्रामा की पाइंट बुद्धि में रखें। आत्मा की नई विशेषताओं को बुद्धि में रखें। जो भी विशेष टापिक्स हैं, उसको लक्ष्य में रख अनुभव और प्राप्ति के आधार से स्पष्ट करते जावें जिससे समझें कि इस सत्य ज्ञान से ही सतयुग की स्थापना हो रही है। भगवानुवाच क्या विशेष है जो सिवाए भगवान के कोई सुना नहीं सकते। विशेष स्लोगन्स जिसको आप लोग सीधे शब्द कहते हो – जैसे मनुष्य, मनुष्य का कभी सतगुरु, सत बाप नहीं बन सकता। मनुष्य परमात्मा हो नहीं सकता। ऐसी विशेष पाइंट तो समय प्रति समय सुनते आये हो, उसकी रूपरेखा बनाओ। जिससे सत्य ज्ञान की स्पष्टता हो। नई दुनिया के लिए यह नया ज्ञान है। नवीनता और सत्यता दोनों अनुभव हो।

26.12.84... ..ईश्वरीय सत्ता को सत्यता की शक्ति कहा जाता है क्योंकि देने वाला सत बाप, सत शिक्षक, सतगुरू है। इसलिए सत्यता की शक्ति सदा श्रेष्ठ है। सत्यता की शक्ति द्वारा सतयुग, सचखण्ड स्थापन कर रहे हो। सत अर्थात् अविनाशी। अविनाशी और सच को भी सत कहा जाता है। सच्चा भी है अविनाशी भी है।। तो सत्यता की शक्ति द्वारा अविनाशी वर्सा, अविनाशी पद प्राप्त करने वाली पढ़ाई, अविनाशी वरदान प्राप्त किये हैं? इस प्राप्ति से कोई भी मिटा नहीं सकता। सत्यता की शक्ति से सारी विश्व आप सत्यता की शक्ति वालों का भक्तिमार्ग के आदि से अन्त तक अविनाशी गायन और पूजन करती आती है। अर्थात् गायन पूजन भी अविनाशी सत हो जाता है। सत अर्थात् सत्य। तो सबसे पहले क्या जाना? अपने आपको 'सत आत्मा' जाना। सत बाप के सत्य परिचय को जाना। इस सत्य पहचान से सत्य ज्ञान से सत्यता की शक्ति स्वत: ही सत्य हो जाती। सत्यता की शक्ति द्वारा असत्य रूपी अंधकार, अज्ञान रूपी अंधकार स्वत: ही समाप्त हो जाता है। अज्ञान सदा असत्य होता है। ज्ञान सत है, सत्य है। इसलिए भक्तों ने बाप की महिमा में भी कहा है ''सत्यम् शिवम् सुन्दरम''। सत्यता की शक्ति सहज ही प्रकृति जीत, मायाजीत बना देती है। अभी अपने आप से पूछो – सत् बाप के बच्चे हैं तो सत्यता की शक्ति कहाँ तक धारणा की है? सत्यता के शक्ति की निशानी है – वह सदा निर्भय होगा। जैसे मुरली में सुना है – ''सच तो बिठो नच'' अर्थात् सत्यता की शक्ति वाला सदा बेफिकर निश्चिन्त होने के कारण, निर्भय होने के कारण खुशी में नाचता रहेगा। जहाँ भय है, चिंता है वहाँ खुशी में नाचना नहीं। अपनी कमजोरियों की भी चिंता होती है। अपने संस्कार वा संकल्प कमज़ोर हैं तो सत्य मार्ग होने के कारण मन में अपनी कमज़ोरी का चिंतन चलता ज़रूर है। कमज़ोरी मन की स्थिति को हलचल में ज़रूर लाती है। चाहे कितना भी अपने को छिपावे वा आर्टीफिशल अल्पकाल के समय प्रमाण, परिस्थिति प्रमाण बाहर से मुस्कराहट भी दिखावे लेकिन सत्यता की शक्ति स्वयं को महसूसता अवश्य कराती है। बाप से और अपने आप से छिप नहीं सकता। दूसरों से छिप सकता है। चाहे अलबेलेपन के कारण अपने आप को भी कभी-कभी महसूस होते हुए भी चला लेवे फिर भी सत्यता की शक्ति मन में उलझन के रूप में, उदासी के रूप में, व्यर्थ संकल्प के रूप में आती ज़रूर है। क्योंकि सत्यता के आगे असत्य टिक नहीं सकता। जैसे भक्ति मार्ग में चित्र दिखाया है – सागर के बीच साँप के ऊपर नाच रहे हैं। है साँप लेकिन सत्यता की शक्ति से साँप भी नाचने की स्टेज बन जाते हैं। कैसी भी भयानक परिस्थिति हो, माया के विकराल रूप हों, सम्बन्ध सम्पर्क वाले परेशान करने वाले हों, वायुमण्डल कितना भी जहरीला हो लेकिन सत्यता की शक्ति वाला इन सबको खुशी में नाचने की स्टेज बना देता है। तो यह चित्र किसका है? आप सभी का है ना! सभी कृष्ण बनने वाले हैं। इसी में हाथ उठाते हैं ना। राम के चरित्रों में ऐसी बातें नहीं हैं। उसका अभी-अभी वियोग अभी-अभी खुशी है। तो कृष्ण बनने वाली आत्मायें ऐसी स्थिति रूपी स्टेज पर सदा नाचती रहती हैं। कोई

प्रकृति वा माया वा व्यक्ति, वैभव उसे हिला नहीं सकता। माया को ही अपनी स्टेज वा शैया बना देगा। यह भी चित्र देखा है ना। साँप को शैया बना दिया अर्थात् विजयी बन गये। तो सत्यता की शक्ति की निशानी सच तो नच यह चित्र है। सत्यता की शक्ति वाले कभी भी डूब नहीं सकते। सत्य की नईया डगमग खेल कर सकती है लेकिन डूब नहीं सकती। डगमगाना भी खेल अनुभव करेंगे। आजकल खेल भी जान बूझ कर उफर नीचे हिलने के बनाते हैं ना। है गिरना लेकिन खेल होने के कारण विजयी अनुभव करते। कितनी भी हलचल होगी लेकिन खेल करने वाला यह समझेगा कि मैंने जीत प्राप्त कर ली। ऐसे सत्यता की शक्ति अर्थात् विजयी के वरदानी अपने को समझते हो? अपना विजयी स्वरूप सदा अनुभव करते हो? अगर अब तक भी कोई हलचल है, भय है तो सत्य के साथ असत्य अभी रहा हुआ है। इसलिए हलचल में ला रहा है। तो चेक करो – संकल्प, दृष्टि, वृत्ति बोल और सम्बन्ध सम्पर्क में सत्यता की शक्ति अचल हैं? अच्छा – आज मिलने वाले बहुत हैं इसलिए इस सत्यता की शक्ति पर, ब्राह्मण जीवन में कैसे विशेषता सम्पन्न चल सकते हैं इसका विस्तार फिर सुनायेंगे।

21.2.85.. .. तो आज तारामण्डल का सैर करते भिन्न-भिन्न सितारों को देख बापदादा हर्षित हो रहे हैं। कैसे हर एक सितारा – ज्ञान सूर्य द्वारा सत्यता की लाइट माइट ले बाप समान सत्यता की शक्ति सम्पन्न सत्य स्वरूप बने हैं। और ज्ञान चन्द्रमा द्वारा शीतलता की शक्ति धारण कर चन्द्रमा समान 'शीतला' स्वरूप बने हैं। यह दोनों शक्तियाँ – 'सत्यता और शीतलता' सदा सहज सफ़लता को प्राप्त कराती हैं। एक तरफ़ सत्यता की शक्ति का ऊँचा नशा दूसरे तरफ़ जितना ऊँचा नशा उतना ही शीतलता के आधार से कैसे भी उल्टे नशे वा क्रोधित आत्मा को भी शीतल बनाने वाले। कैसा भी अहंकार के नशे में 'मैं, मैं' करने वाला हो लेकिन शीतलता की शक्ति से मैं, मैं के बजाए 'बाबा-बाबा' कहने लग पड़े। सत्यता को भी शीतलता की शक्ति से सिद्ध करने से सिद्धि प्राप्त होती है। नहीं तो सिवाए शीतलता की शक्ति के सत्यता को सिद्ध करने के लक्ष्य से, करते सिद्ध हैं लेकिन अज्ञानी, सिद्ध को जिद्द समझ लेते हैं। इसलिए सत्यता और शीतलता दोनों शक्तियाँ समान और साथ चाहिए। क्योंकि आज के विश्व का हर एक मानव किसी न किसी अग्नि में जल रहा है। ऐसी अग्नि में जलती हुई आत्मा को पहले शीतलता की शक्ति से अग्नि को शीतल करो तब शीतलता के आधार से सत्यता को जान सकेंगे।

9.3.85.. .. जैसे अब कहते हैं शान्ति का स्थान है तो यही है। ऐसे सबके मुख से यह आवाज निकले कि सत्य ज्ञान है तो यही है। जैसे शान्ति और स्नेह की शक्ति अनुभव करते हैं वैसे सत्यता सिद्ध हो, तो और सब क्या हैं, वह सिद्ध हो ही जायेगा। कहने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। अब वह सत्यता की शक्ति कैसे प्रत्यक्ष करो, वह विधि क्या अपनाओ जो आपको कहना न पड़े। लेकिन वह स्वयं ही कहें कि इससे यह सिद्ध होता है कि सत्य ज्ञान परमात्म ज्ञान शक्तिशाली ज्ञान है तो यही है। इसके लिए विधि फ़िर सुनायेंगे। आप लोग भी इस पर सोचना। फ़िर दूसरे बारी सुनायेंगे। स्नेह और शान्ति की धरनी तो बन गई है ना। अभी ज्ञान का बीज पड़ना है तब तो ज्ञान के बीज का फल 'स्वर्ग' के वर्से के अधिकारी बनेंगे।

12.3.85.. .. ''आज सत बाप, सत शिक्षक, सतगुरु अपने सत्यता के शक्ति स्वरूप बच्चों को देख रहे हैं। सत्य ज्ञान वा सत्यता की शक्ति कितनी महान है उसके अनुभवी आत्मायें हो। सब दूरदेश वासी बच्चे भिन्न धर्म, भिन्न मान्यतायें, भिन्न रीति रसम में रहते हुए भी इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय की तरफ वा राजयोग की तरफ क्यों आकर्षित हुए? सत्य बाप का सत्य परिचय मिला अर्थात् सत्य ज्ञान मिला। सच्चा परिवार मिला। सच्चा स्नेह मिला। सच्ची प्राप्ति का अनुभव हुआ। तब सत्यता की शक्ति के पीछे आकर्षित हुए। जीवन थी, प्राप्ति भी थी यथा शक्ति ज्ञान भी था लेकिन सत्य ज्ञान नहीं था। इसलिए सत्यता की शक्ति ने सत्य बाप का बना लिया। सत शब्द के दो अर्थ हैं – सत सत्यता भी है और सत अविनाशी भी है। तो सत्यता की शक्ति अविनाशी भी है। इसलिए अविनाशी प्राप्ति, अविनाशी सम्बन्ध, अविनाशी स्नेह, अविनाशी परिवार है। यही परिवार 21 जन्म भिन्नभिन्न नाम रूप से मिलते रहेंगे। जानेंगे नहीं। अभी जानते हो कि हम ही भिन्न सम्बन्ध से परिवार में आते रहेंगे। इस अविनाशी प्राप्ति ने, पहचान ने दूर देश में होते हुए भी अपने सत्य परिवार, सत्य बाप, सत्य ज्ञान की तरफ खींच लिया। जहाँ सत्यता भी हो और अविनाशी भी हो, यही परमात्म पहचान है। तो जैसे आप सभी इसी विशेषता के आधार पर आकर्षित हुए, ऐसे ही सत्यता की शक्ति को, सत्य ज्ञान को विश्व में प्रत्यक्ष करना है।

11.2.91.. .. रॉयल आत्मा का चेहरा और चलन दोनों ही सत्यता की सभ्यता अनुभव करायेंगे। वैसे भी रॉयल आत्माओं को सभ्यता की देवी कहा जाता है। उनका बोलना, देखना, चलना, खान-पीना, उठना-बैठना, हर कर्म में सभ्यता सत्यता स्वत: ही दिखाई देगी। ऐसे नहीं कि मैं तो सत्य को सिद्ध कर रहा हूँ और सभ्यता हो ही नहीं। कई बच्चे कहते हैं वैसे क्रोध नहीं आता है, लेकिन कोई झूठ बोलता है

तो क्रोध आ जाता है। उसने झूठ बोला, आपने क्रोध से बोला तो दोनों में राइट कौन? सत्यता को सिद्ध करने वाला सदा सभ्यता वाला होगा। कई चतुराई करते हैं, कहेंगे हम क्रोध नहीं करते हैं, हमारा आवाज ही बड़ा है, आवाज ही ऐसा तेज है। साइन्स के साधनों से आवाज को कम और ज्यादा कर सकते हैं ना तो क्या साइलेन्स के पॉवर से अपने आवाज की गति को धीमी या तेज नहीं कर सकते हो? इससे तो ये टेप रिकार्ड और ये माइक अच्छा है जो आवाज कम ज्यादा तो कर सकते हो। तो ये चेक करो कि सत्यता के साथ सभ्यता भी है? अगर सभ्यता नहीं तो सत्यता नहीं। तो प्योरिटी की रॉयल्टी सदा प्रत्यक्ष रूप में दिखाई दे। ऐसे नहीं, अन्दर में तो रॉयल्टी है, बाहर देखने में नहीं आती। अगर अन्दर है तो बाहर में जरूर दिखाई देगी। सत्यता की रॉयल्टी को कोई छिपा नहीं सकता। इसमें गुप्त नहीं रहना है। कई कहते हैं गुप्त पुरुषार्थी हैं इसीलिए गुप्त रहते हैं। लेकिन जैसे सूर्य को कोई

छिपा नहीं सकता, सत्यता के सूर्य को कोई छिपा नहीं सकता। न कोई कारण छिपा सकता है, न कोई व्यक्ति। सत्य सदा ही सत्य है। सत्यता की शक्ति सबसे महान है। सत्यता सिद्ध करने से सिद्ध नहीं होती। सत्यता की शक्ति को स्वत:ही सिद्ध होने की सिद्धि प्राप्त होती है। सत्यता को अगर कोई सिद्ध करने चाहता है तो वह सिद्ध जिद्द हो जाता है। इसलिए सत्यता स्वयं ही सिद्ध होती ही है। उसको सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं है।

15-4-92 .. .. यह सदैव याद रखो कि सत्यता की निशानी क्या है! जो स्वयं सत्यता पर है और असत्य को खत्म करना चाहता है, लक्ष्य तो बहुत अच्छा है लेकिन असत्यता को खत्म करने के लिए अपने में भी सत्यता की शक्ति चाहिए। आवेशता या जोश यह सत्यता की निशानी है? सत्यता में जोश आयेगा? तो अगर झूठ को देख करके मुझे गुस्सा आता है, तो राईट है? कोई आग लगायेगा तो सेक नहीं आयेगा कि सेक प्रुफ हो सकते हैं? अगर हमें नॉलेज है कि यह असत्यता की आग है और आग का सेक होता है तो पहले अपने को सेफ करेंगे ना कि सेक में थोड़ा सा जल भी जाए तो चलेगा, हर्जा नहीं। तो सदैव यह याद रखो कि सत्यता की निशानी है सभ्यता। अगर आप सच्चे हो, सत्यता की शक्ति आपमें है तो सभ्यता को कभी नहीं छोड़ेंगे, सत्यता को सिद्ध करो लेकिन सभ्यतापूर्ण। अगर सभ्यता को छोड़-कर असभ्यता में आकरके सत्य को सिद्ध करना चाहते हो तो वह सत्य सिद्ध नहीं होगा। आप सत्य को सिद्ध करना चाहते हो लेकिन सभ्यता को छोड़ करके अगर सत्यता को सिद्ध करेंगे तो जिद्द हो जायेगा। सिद्ध नहीं। असभ्यता की निशानी है जिद और सभ्यता की निशानी है निर्माण। सत्यता को सिद्ध करने वाला सदैव स्वयं निर्माण होकर सभ्यतापूर्वक व्यवहार करेगा।

मैं राईट हूँ, यह रांग है यह निर्माणता नहीं है। दुनिया वाले भी कहते हैं कि सत्य को अगर कोई सिद्ध करता है तो कुछ न कुछ समाया हुआ है। कई बच्चों की भाषा हो गई है मैं बिल्कुल सच बोलता हूँ, 100% सत्य बोलता हूँ। लेकिन सत्य को सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं है। सत्य ऐसा सूर्य है जो छिप नहीं सकता। चाहे कितनी भी दीवारें कोई आगे लाये लेकिन सत्यता का प्रकाश कभी छिप नहीं सकता।

27. 2.96.. .. सत्यता का फाउण्डेशन पवित्रता है। और सत्यता का प्रैक्टिकल प्रमाण चेहरे पर और चलन में दिव्यता होगी। दुनिया में भी अनेक आत्मायें अपने को सत्यवादी कहते हैं वा समझते हैं लेकिन सम्पूर्ण सत्यता पवित्रता के आधार पर होती है। पवित्रता नहीं तो सदा सत्यता रह नहीं सकती है। तो आप सबका फाउण्डेशन क्या है? पवित्रता। तो पवित्रता के आधार पर सत्यता का स्वरूप स्वत: और सहज सदा होता है। सत्यता सिर्फ सच बोलना, सच करना इसको नहीं कहा जाता लेकिन सबसे पहला सत्य जिससे आपको पवित्रता की वा सत्यता की शक्ति आई, तो पहली बात है अपने सत्य स्वरूप को जाना, मैं आत्मा हूँ–ये सत्य स्वरूप पहले नहीं जानते थे। लेकिन पहला सत्य अपने स्वरूप को जाना। मैं फलानी हूँ या

फलाना हूँ, बॉडी के हिसाब से वह सत्य स्वरूप था? सत्य स्वरूप है पहले स्व स्वरूप और फिर बाप के सत्य परिचय को जाना। अच्छी तरह से अपना सत्य स्वरूप और बाप का सत्य परिचय जान लिया है? तीसरी बात–इस सृष्टि चक्र को भी सत्य स्वरूप से जाना। यह चक्र क्या है और इसमें मेरा पार्ट क्या है! तो अपना पार्ट अच्छी तरह से स्पष्ट रूप से जान लिया? आपका पार्ट अच्छा है ना? सबसे अच्छा पार्ट संगमयुग का कहेंगे। लेकिन आपका देव आत्मा का पार्ट भी विश्व में सारे चक्र की आत्माओं से श्रेष्ठ है। चाहे धर्म आत्मायें, महान आत्मायें भी पार्ट बजाती हैं लेकिन वो आत्मा और शरीर दोनों से पवित्र नहीं हैं और आप देव आत्मायें शरीर और आत्मा दोनों से पवित्र हैं, जो सारे कल्प में और कोई आत्मा ऐसी नहीं। तो पवित्रता का फाउण्डेशन सिवाए आपके और कोई भी आत्मा का श्रेष्ठ नहीं है। आपको देव आत्मा का पार्ट याद है? पाण्डवों को याद है? देव आत्मा की पवित्रता नेचुरल रूप में रही है। महान आत्मायें, आत्माओं को पवित्र बनाती हैं लेकिन बहुत पुरुषार्थ से, नेचुरल नहीं। न नेचुरल है न नेचर रूप में है। और आपकी आधा कल्प पवित्रता की जीवन नेचुरल भी है और नेचर भी है। कोई पुरुषार्थ वहाँ नहीं है। यहाँ का पुरुषार्थ वहाँ नेचुरल हो जाता है। क्योंकि वहाँ अपवित्रता का नाम-निशान नहीं, मालूम ही नहीं कि अपवित्रता भी होती है। इसलिए आपके पवित्रता का प्रैक्टिकल स्वरूप देवता अर्थात् दिव्यता का है। इस समय दुनिया वाले कितना भी अपने को सत्यवान समझें लेकिन स्व स्वरूप की सत्यता ही नहीं जानते। बाप के सत्य परिचय को ही नहीं जानते। तो सम्पूर्ण सत्य स्वरूप नहीं कहेंगे। आपमें भी सत्यता की शक्ति सदा तब रहेगी जब अपने और बाप के सत्य स्वरूप की स्मृति रहेगी, तो स्वतः ही हर संकल्प भी आपका सत्य होगा। अभी कभी भूल भी जाते हो, बॉडी कानसेस में आ जाते हो तो संकल्प सदा सत्यता के शक्तिशाली हो, पवित्रता के शक्तिशाली हो, वह सदा नहीं रहता। सदा रहता है कि व्यर्थ भी होता है? तो व्यर्थ को सत्य कहेंगे? झूठ तो बोला ही नहीं तो क्यों नहीं सत्य है? अगर कोई यह समझकर बैठे कि मैं कभी भी झूठ नहीं बोलती, सदा सच बोलती लेकिन सत्यता की परख है कि संकल्प, बोल, कर्म, सम्बन्ध-सम्पर्क सबमें दिव्यता अनुभव हो। बोल सच रहे हैं लेकिन दिव्यता नहीं है, देखते हो ना–कई बार-बार कहेंगे मैं सच बोलती, मैं सच बोलती। मैं सदा सच्ची हूँ लेकिन बोल में, कर्म में अगर दिव्यता नहीं है तो दूसरे को आपका सच, सच नहीं लगेगा। यही समझेंगे कि यह अपने को सिद्ध कर रही है लेकिन समझ में नहीं आता कि यह सत्य है। सत्य को सिद्ध करने के लिए सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं है। अगर अपने सत्य को जिद्द से सिद्ध करते हैं तो वह दिव्यता दिखाई नहीं देती है। ये साधारणता है, जो दुनिया में भी करते हैं। और बापदादा सत्य की निशानी एक स्लोगन में कहते हैं, साकार द्वारा भी सुना जो सच्चा होगा वह कैसे दिखाई देगा! **सच तो नच।** सदा खुशी में नाचता रहेगा। जब जिद्द करके सिद्ध करते तो आप अपना या दूसरे का चेहरा नोट करेंगे तो वह खुशी का नहीं होगा। थोड़ा सोचने का और थोड़ा उदासी का होगा।

नाचने का नहीं होगा। सच तो बिठो नच, सच्चा खुशी में नाचता है। तो खुशी में जीवन के दिन या रात बहुत अच्छी लगती है। और थोड़ा भी सत्य में असत्य मिक्स है तो उस समय की जीवन इतनी अच्छी नहीं लगेगी। तो सत्यता का अर्थ ही है सत्य स्वरूप में स्थित होकर चाहे संकल्प, चाहे बोल, चाहे कर्म करना। आजकल दुनिया वाले तो स्पष्ट कहते हैं कि आजकल सच्चे लोगों का चलना ही मुश्किल है, झूठ बोलना ही पड़ेगा। लेकिन कई समय पर, कई परिस्थितियों में ब्राह्मण आत्मायें भी मुख से नहीं बोलती लेकिन अन्दर समझती हैं कि कहाँ-कहाँ चतुराई से तो चलना ही पड़ता है। उसको झूठ नहीं कहते लेकिन चतुराई कहते हैं। तो चतुराई क्या है? यह तो करना ही पड़ता है! तो वह स्पष्ट बोलते हैं और ब्राह्मण रॉयल भाषा में बोलते हैं। फिर कहते हैं मेरा भाव नहीं था, न भावना थी न भाव था लेकिन करना ही पड़ता है, चलना ही पड़ता है। लेकिन ब्रह्मा बाप को देखा, साकार है ना, निराकार के लिए तो आप भी सोचते हो कि शिव बाप तो निराकार है, ऊपर मजे में बैठा है, नीचे आवे तो पता पड़े क्या है! लेकिन ब्रह्मा बाप तो साकार स्वरूप में आप सबके साथ ही रहे, स्टूडेन्ट भी रहे और सत्यता व पवित्रता के लिए कितनी आपोज़ीशन हुई तो चालाकी से चला? लोगों ने कितना राय दी कि आप सीधा ऐसे नहीं कहो कि पवित्र रहना ही है, यह कहो कि थोड़ा-थोड़ा रहो। लेकिन ब्रह्मा बाप घबराया? सत्यता की शक्ति धारण करने में सहनशक्ति की भी आवश्यकता है। सहन करना पड़ता है, झुकना पड़ता है, हार माननी पड़ती है लेकिन वह हार नहीं है, उस समय के लिए हार लगती है लेकिन है सदा की विजय। सत्यता की शक्ति से आज डायमण्ड जुबली मना रहे हैं। अगर पवित्रता और सत्यता नहीं होती तो आज आपके चेहरों से, चलन से आने वालों को जो दिव्यता अनुभव होती है वह नहीं होती। चाहे प्यादा भी है, नम्बरवार तो है ही ना। महारथी भी हैं, नाम के महारथी नहीं, लेकिन जो सच्चे महारथी हैं अर्थात् सत्यता की शक्ति से चलने वाले महारथी हैं। जो परिस्थिति को देखकर सत्यता से ज़रा भी किनारा कर लेते, कहते हैं और कुछ नहीं किया एक दो शब्द ऐसे बोल दिये, दिल से नहीं बोले ऐसे बाहर से थोड़ा बोल दिये तो यह सम्पूर्ण सत्यता नहीं है। सत्यता के पीछे अगर सहन भी करना पड़ता तो वह सहन नहीं है भल बाहर से लगता है कि हम सहन कर रहे हैं लेकिन आपके खाते में वह सहन शक्ति के रूप में जमा होता है। नहीं तो क्या होता कि अगर कोई थोड़ा सा भी सहन करने में कमजोर हो जाता है तो उसे असत्य का सहारा जरूर लेना पड़ता है। तो उस समय ऐसे लगता है जैसे सहारा मिल गया, ठीक हो गया लेकिन उसके खाते में सहनशक्ति जमा नहीं होती है। तो बाहर से ऐसे समझेंगे कि हम बहुत अच्छे चलते हैं, हमको चलने की चतुराई आ गई है, लेकिन अगर अपना खाता देखेंगे तो जमा का खाता बहुत कम होगा। इसलिए चतुराई से नहीं चलो, एक दो को देखकर भी कापी करते हैं, यह ऐसे चलती है ना तो इसका नाम बहुत अच्छा हो गया है, यह बहुत आगे हो गई है और हम सच्चे चलते हैं ना तो हम पीछे के पीछे ही रह गये। लेकिन वह पीछे रहना नहीं है, वह आगे

बढ़ना है। बाप के आगे, आगे बढ़ते हो और दूसरों के आगे चाहे पीछे दिखाई भी दो लेकिन काम किससे है! बाप से या आत्माओं से? (बाप से) तो बाप के दिल में आगे बढ़ना अर्थात् सारे कल्प के प्रालब्ध में आगे बढ़ना। और अगर यहाँ आगे बढ़ने में आत्माओं को कॉपी करते हो, तो उस समय के लिए आपका नाम होता है, शान मिलता है, भाषण करने वाली लिस्ट में आते हो, सेन्टर सम्भालने की लिस्ट में आते हो लेकिन सारे कल्प की प्रालब्ध नहीं बनती। जिसको बापदादा कहते हैं मेहनत की, बीज डाला, वृक्ष बड़ा किया, फल भी निकला लेकिन कच्चा फल खा गये, हमेशा के लिए प्रालब्ध का फल खत्म हो जाता है। तो अल्पकाल के शान, मान, नाम के लिए कॉपी नहीं करो। यहाँ नाम नहीं है लेकिन बाप के दिल में नम्बर आगे नाम है। इसलिए डायमण्ड बनना है तो यह सब चेकिंग करो। ज़रा भी रॉयल रूप का दाग डायमण्ड में छिपा हुआ तो नहीं है? तो सत्यता की शक्ति से दिव्यता को धारण करो। कुछ भी सहन करना पड़े, घबराओ नहीं। सत्य समय प्रमाण स्वयं सिद्ध होगा। कहते भी हो ना कि सत्य की नाव डोलती है लेकिन डूबती नहीं, तो किनारा तो ले लेंगे ना। निर्भय बनो। अगर कहाँ भी सामना करना पड़ता है तो ब्रह्मा बाप के जीवन को आगे रखो। ब्रह्मा बाप के आगे दुनिया की परिस्थितियां तो थी लेकिन वेराइटी बच्चों की भी परिस्थितियां रहीं लेकिन संगठन में होते, जिम्मेवारी होते सत्यता की शक्ति से विजयी हो गये। बच्चों की खिटखिट ब्रह्मा बाप ने नहीं देखी क्या? ब्रह्मा बाप के आगे भी वेराइटी समय और संकल्प के खजाने की बचत कर जमा का खाता बढ़ाओ। वेराइटी संस्कार वाली आत्मायें रही, लेकिन इतनी सब परिस्थितियां होते हुए सत्यता की स्व-स्थिति ने सम्पूर्ण बना दिया।

4.11.2001.. .. बापदादा को राज़ी करना बहुत सहज है। बापदादा को राज़ी करने का सहज साधन है ''सच्ची दिल''। सच्ची दिल पर साहेब राज़ी है। हर कर्म में सत्यवादी। सत्यता महानता है। जो सच्ची दिल वाला है, वह सदा संकल्प, वाणी और कर्म में, सम्बन्ध-सम्पर्क में राज़युक्त होगा अर्थात् राज़ को समझ करने वाले, चलने वाले; और हम कहाँ तक राज़युक्त हैं - उसको परखने की निशानी है - अगर राज़ जानता है तो वह कभी भी अपने स्व-स्थिति से नाराज़ नहीं होगा अर्थात् दिलशिकस्त नहीं होगा और संकल्प में भी, वृत्ति से भी, स्मृति से भी, दृष्टि से भी किसी को नाराज़ नहीं करेगा; क्योंकि वो सबके वा अपने संस्कार-स्वभाव को जानने वाला राज़युक्त है। तो बाप को राज़ी करने की विधि है - राज़युक्त चलना और राज़युक्त अर्थात् न अपने अन्दर नाराज़गी आये, न औरों को नाराज़ करे।

27.5.74.. .. जैसेकि कल्प पहले का गायन है रॉयल पुरुषार्थियों का–कितना भी स्वयं को बनाने का पुरुषार्थ करें, लेकिन सत्यता रूपी दर्पण के आगे रॉयल भी रीयल दिखाई देगा। तो आगे चलकर ऐसे सत्य बोल, सत्य वृत्ति, सत्य दृष्टि, सत्य वायुमण्डल, सत्य वातावरण और

सत्य का संगठन प्रसिद्ध दिखाई देगा। अर्थात् ब्राह्मण परिवार एक शीश महल बन जायेगा। ऐसी फाइनल रिज़ल्ट ऑटोमेटिकली आऊट होगी। अभी तो बड़े-बड़े दाग भी छुपाने से छुप जाते हैं, क्योंकि अभी शीश-महल नहीं बना है, जो कि चारों ओर के दाग स्पष्ट दिखाई दे जावें। जब किनारा कर लेते, तो दाग छिप जाता अर्थात् पाप दर्पण के आगे स्वयं को लाने से किनारा कर छिप जाते हैं। छिपता नहीं है, लेकिन किनारा कर और छिपा हुआ समझ स्वयं को खुश कर लेते हैं। बाप भी बच्चों का कल्याणकारी बन अनजान बन जाते हैं जैसे कि जानते ही नहीं। अगर बाप कह दे कि मैं जानता हूँ कि यह दाग इतने समय से व इस रूप से है तो सुनाने वाले का क्या स्वरूप होगा? सुनाना चाहते भी मुख बन्द हो जायेगा, क्योंकि सुनाने की विधि रखी हुई है। बाप जब कि जानते भी हैं, तो भी सुनते क्यों हैं? क्योंकि स्वयं द्वारा किये गये कर्म व संकल्प स्वयं वर्णन करेंगे, तो ही महसूसता की सीढ़ी पर पाँव रख सकेंगे। महसूस करना या अफसोस करना या माफी लेना बात एक हो जाती है। इसलिए सुनाने की अर्थात् स्वयं को हल्का बनाने की या परिवर्तन करने की विधि बनाई गई है। इस विधि से पापों की वृद्धि कम हो जाती है। इसलिये अगर शीश महल बनने के बाद, स्वयं को स्पष्ट देख कर के स्पष्ट किया तो रिज़ल्ट क्या होगी, यह जानते हो? बाप-दादा भी ड्रामा प्रमाण उन आत्माओं को स्पष्ट चैलेन्ज देंगे, तो फिर क्या कर सकेंगे? इसलिए जब महसूसता के आधार पर स्पष्ट हो अर्थात् बोझ से स्वयं को हल्का करो, तब ही डबल लाइट स्वरूप अर्थात् फरिश्ता व आत्मिक स्थिति स्वरूप बन सकेंगे। अच्छा! रहमदिल बाप के रहमदिल बच्चे, श्रेष्ठ और सदा स्पष्ट, दर्पण रूप, महावाक्य सदा सार-रूप में ही कहे जाते है।

13-1-86.. .. .. सत्यता की खुशबू कभी मिट नहीं सकती। छिप नहीं सकती। इसलिए धोखा कभी नहीं खाना। यही पाठ पक्का करना। पहले अपनी बेहद की अविनाशी खुशी फिर दूसरी बातें। बेहद की खुशी सेवा की वा सर्व के स्नेह की, सर्व द्वारा अविनाशी सम्मान प्राप्त होने की खुशनसीबी अर्थात् श्रेष्ठ भाग्य स्वतः ही अनुभूति करायेगी। जो सदा खुश है वह खुशनसीब है। बिना मेहनत, बिना इच्छा अथवा बिना कहने के सर्व प्राप्ति सहज होंगी।

20.3.87.. .. सबसे बड़े-ते-बड़ी शक्ति वा अथॉर्टी सत्यता की ही है। सत् दो अर्थ से कहा जाता है। एक – सत् अर्थात् सत्य। दूसरा – सत् अर्थात् अविनाशी। दोनों अर्थ से सत्यता की शक्ति सबसे बड़ी है। बाप को सत् बाप कहते हैं। बाप तो अनेक हैं लेकिन सत् बाप एक है। सत् शिक्षक, सत्गुरु एक ही है। सत्य को ही परमात्मा कहते हैं अर्थात् परम आत्मा की विशेषता सत्य अर्थात् सत् है। आपका गीत भी है। सत्य ही शिव है...। दुनिया में भी कहते हैं – सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम्। साथ-साथ बाप परमात्मा के लिए सत्-चित-आनन्द स्वरूप कहते हैं। आप आत्माओं को सत्-चित-आनन्द कहते हैं। तो 'सत्' शब्द की महिमा बहुत गाई हुई है। और कभी भी कोई भी कार्य में अथॉर्टी से बोलते तो यही कहेंगे – मैं सच्चा हूँ, इसलिए अथॉर्टी से बोलता हूँ। सत्य के लिए गायन है – सत्य की नाँव डोलेगी लेकिन डूबेगी नहीं।

आप लोग भी कहते हो – सच तो बिठो नच। सच्चा अर्थात् सत्यता की शक्ति वाला सदा नाचता रहेगा, कभी मुरझायेगा नहीं, उलझेगा नहीं, घबरायेगा नहीं, कमज़ोर नहीं होगा। सत्यता की शक्ति वाला सदा खुशी में नाचता रहेगा। शक्तिशाली होगा, सामना करने की शक्ति होगी, इसलिए घबरायेगा नहीं। सत्यता को सोने के समान कहते हैं, असत्य को मिट्टी के समान कहते हैं। भक्ति में भी जो परम- आत्मा की तरफ़ लगन लगाते हैं, उन्हों को सत्संगी कहते हैं, सत् का संग करने वाले हैं। और लास्ट में जब आत्मा शरीर छोड़ती है तो भी क्या कहते हैं – सत् नाम संग है। तो सत् अविनाशी, सत् सत्य है। सत्यता की शक्ति महान शक्ति है। वर्तमान समय मेजारिटी लोग आप सबको देखकर क्या कहते हैं – इन्हों में सबसे बड़े-ते-बड़ी शक्ति वा अथॉर्टी सत्यता की ही है। सत् दो अर्थ से कहा जाता है। एक – सत् अर्थात् सत्य। दूसरा – सत् अर्थात् अविनाशी। दोनों अर्थ से सत्यता की शक्ति सबसे बड़ी है। बाप को सत् बाप कहते हैं। बाप तो अनेक हैं लेकिन सत् बाप एक है। सत् शिक्षक, सत्गुरु एक ही है। सत्य को ही परमात्मा कहते हैं अर्थात् परम आत्मा की विशेषता सत्य अर्थात् सत् है। आपका गीत भी है। सत्य ही शिव है...। दुनिया में भी कहते हैं – सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम्। साथ-साथ बाप परमात्मा के लिए सत्-चित-आनन्द स्वरूप कहते हैं। आप आत्माओं को सत्-चित-आनन्द कहते हैं। तो 'सत्' शब्द की महिमा बहुत गाई हुई है। और कभी भी कोई भी कार्य में अथॉर्टी से बोलते तो यही कहेंगे – मैं सच्चा हूँ, इसलिए अथॉर्टी से बोलता हूँ। सत्य के लिए गायन है – सत्य की नाँव डोलेगी लेकिन डूबेगी नहीं। आप लोग भी कहते हो – सच तो बिठो नच। सच्चा अर्थात् सत्यता की शक्ति वाला सदा नाचता रहेगा, कभी मुरझायेगा नहीं, उलझेगा नहीं, घबरायेगा नहीं, कमज़ोर नहीं होगा। सत्यता की शक्ति वाला सदा खुशी में नाचता रहेगा। शक्तिशाली होगा, सामना करने की शक्ति होगी, इसलिए घबरायेगा नहीं। सत्यता को सोने के समान कहते हैं, असत्य को मिट्टी के समान कहते हैं। भक्ति में भी जो परम- आत्मा की तरफ़ लगन लगाते हैं, उन्हों को सत्संगी कहते हैं, सत् का संग करने वाले हैं। और लास्ट में जब आत्मा शरीर छोड़ती है तो भी क्या कहते हैं – सत् नाम संग है। तो सत् अविनाशी, सत् सत्य है। सत्यता की शक्ति महान शक्ति है। वर्तमान समय मेजारिटी लोग आप सबको देखकर क्या कहते हैं – सत्यता है, तब इतना समय वृद्धि करते हुए चल रहे हैं। सत्यता कब हिलती नहीं है, अचल होती है। सत्यता वृद्धि को प्राप्त करने की विधि है। सत्यता की शक्ति से सतयुग बनाते हो, स्वयं भी सत्य-नारायण, सत्य-लक्ष्मी बनते हो। यह सत्य ज्ञान है, सत् बाप का ज्ञान है। इसलिए दुनिया से न्यारा और प्यारा है। तो आज बापदादा सभी बच्चों को देख रहे हैं कि सत्य ज्ञान की सत्यता की अथॉर्टी कितनी धारण की है? सत्यता हर आत्मा को आकर्षित करती है। चाहे आज की दुनिया झूठ खण्ड है, सब झूठ है अर्थात् सबमें झूठ मिला हुआ है, फिर भी सत्यता की शक्ति वाले विजयी बनते हैं। सत्यता की प्राप्ति ख़ुशी और निर्भयता है। सत्य बोलने वाला सदा निर्भय

होगा। उनको कब भय नहीं होगा। जो सत्य नहीं होगा तो उनको भय ज़रूर होगा। तो आप सभी सत्यता के शक्तिशाली श्रेष्ठ आत्मायें हो। सत्य ज्ञान, सत्य बाप, सत्य प्राप्ति, सत्य याद, सत्य गुण, सत्य शक्तियाँ सर्व प्राप्ति हैं। तो इतनी अथॉर्टी का नशा रहता है? अथॉर्टी का अर्थ अभिमान नहीं है। जितना बड़े-ते-बड़ी अथॉर्टी, उतना उनकी वृत्ति में रूहानी अथॉर्टी रहती है। वाणी में स्नेह और नम्रता होगी – यही अथॉर्टी की निशानी है। जैसे आप लोग वृक्ष का दृष्टान्त देते हो। वृक्ष में जब सम्पूर्ण फल की अथॉर्टी आ जाती है तो वृक्ष झुकता है अर्थात् निर्मान बनने की सेवा करता है। ऐसे रूहानी अथॉर्टी वाले बच्चे जितनी बड़ी अथॉर्टी, उतने निर्मान और सर्व स्नेही होंगे। लेकिन सत्यता की अथॉर्टी वाले निर-अहंकारी होते हैं। तो अथॉर्टी भी हो, नशा भी हो और निर-अहंकारी भी हो – इसको कहते हैं सत्य ज्ञान का प्रत्यक्ष स्वरूप। जैसे इस झूठ खण्ड के अन्दर ब्रह्मा बाप सत्यता की अथॉर्टी का प्रत्यक्ष साकार स्वरूप देखा ना। उनके अथॉर्टी के बोल कभी भी अहंकार की भासना नहीं देंगे। मुरली सुनते हो तो कितनी अथॉर्टी के बोल हैं! लेकिन अभिमान के नहीं। अथॉर्टी के बोल में स्नेह समाया हुआ है, निर्मानता है, निर-अहंकार है। इसलिए अथॉर्टी के बोल प्यारे लगते हैं। सिर्फ प्यारे नहीं लेकिन प्रभावशाली होते हैं। फ़ालो फ़ादर है ना। में साकार 'एक्ज़ाम्पल' है, सैम्पल है। तो जैसे ब्रह्मा बाप को कर्म में, सेवा में, सूरत से, हर चलन से चलता-फ़िरता अथॉर्टी स्वरूप देखा, ऐसे फ़ालो फ़ादर करने वाले में भी स्नेह और अथॉर्टी, निर्मानता और महानता – दोनों साथ-साथ दिखाई दें। ऐसे नहीं सिर्फ स्नेह दिखाई दे और अथॉर्टी गुम हो जाए या अथॉर्टी दिखाई दे और स्नेह गुम हो जाए। जैसे ब्रह्मा बाप को देखा वा अभी भी मुरली सुनते हो। प्रत्यक्ष प्रमाण है। तो बच्चे-बच्चे भी कहेगा लेकिन अथॉर्टी भी दिखायेगा। स्नेह से बच्चे भी कहेगा और अथॉर्टी से शिक्षा भी देगा। सत्य ज्ञान को प्रत्यक्ष भी करेंगे लेकिन बच्चे-बच्चे कहते नया ज्ञान सारा स्पष्ट कर देंगे। इसको कहते हैं स्नेह और सत्यता की अथॉर्टी का बैलेन्स (सन्तुलन) तो वर्तमान समय सेवा में इस बैलेन्स को अण्डरलाइन करो। सबसे बड़े-ते-बड़ी शक्ति वा अथॉर्टी सत्यता की ही है। सत् दो अर्थ से कहा जाता है। एक – सत् अर्थात् सत्य। दूसरा – सत् अर्थात् अविनाशी। दोनों अर्थ से सत्यता की शक्ति सबसे बड़ी है। बाप को सत् बाप कहते हैं। बाप तो अनेक हैं लेकिन सत् बाप एक है। सत् शिक्षक, सत्गुरु एक ही है। सत्य को ही परमात्मा कहते हैं अर्थात् परम आत्मा की विशेषता सत्य अर्थात् सत् है। आपका गीत भी है। सत्य ही शिव है...। दुनिया में भी कहते हैं – सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम्। साथ-साथ बाप परमात्मा के लिए सत्-चित-आनन्द स्वरूप कहते हैं। आप आत्माओं को सत्-चित-आनन्द कहते हैं। तो 'सत्' शब्द की महिमा बहुत गाई हुई है। और कभी भी कोई भी कार्य में अथॉर्टी से बोलते तो यही कहेंगे – मैं सच्चा हूँ, इसलिए अथॉर्टी से बोलता हूँ। सत्य के लिए गायन है – सत्य की नाँव डोलेगी लेकिन डूबेगी नहीं। आप लोग भी कहते हो – सच तो बिठो नच। सच्चा अर्थात् सत्यता की शक्ति वाला सदा नाचता रहेगा, कभी

मुरझायेगा नहीं, उलझेगा नहीं, घबरायेगा नहीं, कमज़ोर नहीं होगा। सत्यता की शक्ति वाला सदा खुशी में नाचता रहेगा। शक्तिशाली होगा, सामना करने की शक्ति होगी,

11.12.91.. .. रूहानी रॉयल्टी की सबसे श्रेष्ठ निशानी है – रॉयल्टी अर्थात् रीयल्टी अर्थात् सत्यता। जैसे आत्मा का अनादि स्वरूप सत है। सत अर्थात् अविनाशी और सत्य है। जैसे बाप की महिमा विशेष यही गाते रहते हैं – सत्यम् शिवम् सुन्दरम्। सत्य ही शिव है वा गॉड इज ट्रुथ (God is truth)कहा जाता है। तो बाप की महिमा सत्य अर्थात् सत्यता की है। ऐसे रॉयल्टी अर्थात् रीयल्टी – सत्यता जरा भी बनावटी या मिलावटी न हो। रॉयल आत्मा का चेहरा और चलन दोनों ही सत्यता की सभ्यता अनुभव करायेंगे। वैसे भी रॉयल आत्माओं को सभ्यता की देवी कहा जाता है। उनका बोलना, देखना, चलना, खान-पीना, उठना-बैठना, हर कर्म में सभ्यता सत्यता स्वत: ही दिखाई देगी। ऐसे नहीं कि मैं तो सत्य को सिद्ध कर रहा हूँ और सभ्यता हो ही नहीं। कई बच्चे कहते हैं वैसे क्रोध नहीं आता है, लेकिन कोई झूठ बोलता है तो क्रोध आ जाता है। उसने झूठ बोला, आपने क्रोध से बोला तो दोनों में राइट कौन? सत्यता को सिद्ध करने वाला सदा सभ्यतावाला होगा। कई चतुराई करते हैं, कहेंगे हम क्रोध नहीं करते हैं, हमारा आवाज ही बड़ा है, आवाज ही ऐसा तेज है। साइन्स के साधनों से आवाज को कम और ज्यादा कर सकते हैं ना तो क्या साइलेन्स के पॉवर से अपने आवाज की गति को धीमी या तेज नहीं कर सकते हो? इससे तो ये टेप रिकार्ड और ये माइक अच्छा है जो आवाज कम ज्यादा तो कर सकते हो। तो ये चेक करो कि सत्यता के साथ सभ्यता भी है? अगर सभ्यता नहीं तो सत्यता नहीं। तो प्योरिटी की रॉयल्टी सदा प्रत्यक्ष रूप में दिखाई दे। ऐसे नहीं, अन्दर में तो रॉयल्टी है, बाहर देखने में नहीं आती। अगर अन्दर है तो बाहर में जरूर दिखाई देगी। सत्यता की रॉयल्टी को कोई छिपा नहीं सकता। इसमें गुप्त नहीं रहना है। कई कहते हैं गुप्त पुरुषार्थी हैं इसीलिए गुप्त रहते हैं। लेकिन जैसे सूर्य को कोई छिपा नहीं सकता, सत्यता के सूर्य को कोई छिपा नहीं सकता। न कोई कारण छिपा सकता है, न कोई व्यक्ति। सत्य सदा ही सत्य है। सत्यता की शक्ति सबसे महान है। सत्यता सिद्ध करने से सिद्ध नहीं होती। सत्यता की शक्ति को स्वत:ही सिद्ध होने की सिद्धि प्राप्त होती है। सत्यता को अगर कोई सिद्ध करने चाहता है तो वह सिद्ध जिद्द हो जाता है। इसलिए सत्यता स्वयं ही सिद्ध होती ही है। उसको सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं है।

18-12-91.. .. जैसे कहावत है सत्य की नांव डूबती नहीं है लेकिन डगमग होती है। तो विश्वास की नांव सत्यता है, ऑनेस्टी है तो डगमग होगी लेकिन अविश्वासपात्र बनना अर्थात् डूबेगी नहीं। इसलिए सत्यता की हिम्मत से विश्वासपात्र बन सकते हो। पहले सुनाया था ना कि सत्य को सिद्ध नहीं किया जाता है। सत्य स्वयं में ही सिद्ध है। सिद्ध नहीं करो लेकिन सिद्धि स्वरूप बन जाओ। तो समय के गति के प्रमाण अभी तपस्या के कदम को सहज और तीव्र

गति से आगे बढ़ाओ। समझा- तपस्या वर्ष में क्या करना है? अभी भी कुछ समय तो पड़ा है। इन सब विधियों को स्वयं में धारण कर सिद्धि स्वरूप बनो।

15-4-92 .. .. यह सदैव याद रखो कि सत्यता की निशानी क्या है! जो स्वयं सत्यता पर है और असत्य को खत्म करना चाहता है, लक्ष्य तो बहुत अच्छा है लेकिन असत्यता को खत्म करने के लिए अपने में भी सत्यता की शक्ति चाहिए। आवेशता या जोश यह सत्यता की निशानी है? सत्यता में जोश आयेगा? तो अगर झूठ को देख करके मुझे गुस्सा आता है, तो राईट है? कोई आग लगायेगा तो सेक नहीं आयेगा कि सेक प्रुफ हो सकते हैं? अगर हमें नॉलेज है कि यह असत्यता की आग है और आग का सेक होता है तो पहले अपने को सेफ करेंगे ना कि सेक में थोड़ा सा जल भी जाए तो चलेगा, हर्जा नहीं। तो सदैव यह याद रखो कि सत्यता की निशानी है सभ्यता। अगर आप सच्चे हो, सत्यता की शक्ति आपमें है तो सभ्यता को कभी नहीं छोड़ेंगे, सत्यता को सिद्ध करो लेकिन सभ्यतापूर्ण। अगर सभ्यता को छोड़- कर असभ्यता में आकरके सत्य को सिद्ध करना चाहते हो तो वह सत्य सिद्ध नहीं होगा। आप सत्य को सिद्ध करना चाहते हो लेकिन सभ्यता को छोड़ करके अगर सत्यता को सिद्ध करेंगे तो जिद्द हो जायेगा। सिद्ध नहीं। असभ्यता की निशानी है जिद और सभ्यता की निशानी है निर्माण। सत्यता को सिद्ध करने वाला सदैव स्वयं निर्माण होकर सभ्यतापूर्वक व्यवहार करेगा। समझा - दूसरी होशियारी! ऐसे होशियार नहीं बनना। तो यह भी होमवर्क है कि ऐसे होशियारी को छोड़कर निर्माण बनो। बिल्कूल निर्माण। मैं राईट हूँ, यह रांग है यह निर्माणता नहीं है। दुनिया वाले भी कहते हैं कि सत्य को अगर कोई सिद्ध करता है तो कुछ न कुछ समाया हुआ है। कई बच्चों की भाषा हो गई है मैं बिल्कुल सच बोलता हूँ, 100% सत्य बोलता हूँ। लेकिन सत्य को सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं है। सत्य ऐसा सूर्य है जो छिप नहीं सकता। चाहे कितनी भी दीवारें कोई आगे लाये लेकिन सत्यता का प्रकाश कभी छिप नहीं सकता।

24.9.92 .. .. सत्यता की हार अल्पकाल की और जीत सदाकाल की है। असत्य के अल्पकाल के विजयी उस समय खुश होते हैं।जितना थोड़ा समय खुशी मनाते वा अपने को राइट सिद्ध करते, तो समय आने पर असत्य के अल्पकाल का समय समाप्त होने पर जितनी असत्यता के वश मौज मनाई, उतना ही सौ गुणा सत्यता की विजय प्रत्यक्ष होने पर पश्चाताप करना ही पड़ता है। क्योंकि बाप से किनारा, स्थूल में किनारा नहीं होता, स्थूल में तो स्वयं को ज्ञानी समझते हैं लेकिन मन और बुद्धि से किनारा होता। और बाप से किनारा होना अर्थात् सदाकाल की सर्व प्राप्तियों के अधिकार से सम्पन्न के बजाए अधूरा अधिकार प्राप्त होना। कई बच्चे समझते हैं कि असत्य के बल से असत्य के राज्य में विजय की खुशी वा मौज इस समय तो मना लें, भविष्य किसने देखा। कौन देखेगा–हम भी भूल जायेंगे, सब भूल जायेंगे। लेकिन यह असत्य की जजमेंट है। भविष्य वर्तमान की परछाई है। बिना वर्तमान के भविष्य

नहीं बनता। असत्य के वशीभूत आत्मा वर्तमान समय भी अल्पकाल के सुख के–नाम, मान, शान के सुखों के झूले में झूल सकती है और झूलती भी है, लेकिन अतीन्द्रिय अविनाशी सुख के झूले में नहीं झूल सकती। अल्पकाल के शान, मान और नाम की मौज मना सकते हैं लेकिन सर्व आत्माओं के दिल के स्नेह का, दिल की दुआओं का मान नहीं प्राप्त कर सकते। दिखावा-मात्र मान पा सकते हैं लेकिन दिल से मान नहीं पा सकते। अल्पकाल का शान मिलता है लेकिन बाप से सदा दिलतख्त-नशीन का शान अनुभव नहीं कर सकते। असत्य के साथियों द्वारा नाम प्राप्त कर सकते हैं लेकिन बापदादा के दिल पर नाम नहीं प्राप्त कर सकते। क्योंकि बापदादा से किनारा है। भविष्य की बात तो छोड़ो, वह तो अन्डरस्टुड है। लेकिन वर्तमान सत्यता और असत्यता की प्राप्ति में कितना अन्तर है? एक दूसरा मेरा बनाया अर्थात् असत्य का सहारा लिया। कितना झमेला हुआ! कहने में तो कहेंगे–और कुछ नहीं, सिर्फ कभी-कभी थोड़ा सहारा चाहिए। लेकिन वायदा तोड़ना अर्थात् झमेले में पड़ना। क्या ऐसा वायदा किया है–एक मेरा बाबा और कभी-कभी दूसरा? दूसरा भी एलाउ है? यह लिखा था क्या? चाहे अल्पकाल के नाम-मान-शान का सहारा लो, चाहे व्यक्ति का लो, चाहे वैभव का लो, जब दूसरा न कोई तो फिर दूसरा कहाँ से आया? यह असत्य के राज्य के झमेले में फंसाने की चतुराइयां हैं। जैसे बाप कहते हैं ना–मैं जो हूँ, जैसा हूँ, वैसा मुझे नम्बरवार जानते हैं। ऐसे असत्य के राज्य-अधिकारी 'रावण' को भी जो है, जैसा है, वैसे सदा नहीं जानते हो। कभी भूल जाते हो, कभी जानते हो। राज्य-अधिकारी है तो यह ताकत कम होगी! चाहे झूठा हो, चाहे सच्चा हो लेकिन राज्य तो है ना। इसलिए अपने को चेक करो, दूसरे को नहीं। आजकल दूसरों को चेक करने में सब होशियार हो गये हैं। बापदादा कहते हैं–अपना चेकर बनो और दूसरे का मेकर बनो। लेकिन करते क्या हो? दूसरे का चेकर बन जाते हो और बातें बनाने में मेकर बन जाते हो। बापदादा रोज़ की हर एक बच्चे की कौनसी कहानियाँ सुनते हैं? बहुत बड़ा किताब है कहानियों का। तो अपने को चेक करो। दूसरे को चेक करने लगते हो तो लम्बी कथायें बन जाती हैं और अपने को चेक करेंगे तो सब कथायें समाप्त हो एक सत्य जीवन की कथा प्रैक्टिकल में चलेगी। सभी कहते हैं–बाबा, आप से बहुत प्यार है! सिर्फ कहते हो वा करते भी हो, क्या कहेंगे? कभी कहते हो, कभी करते हो। बाप के प्यार का प्रत्यक्ष सबूत बाप ने दे दिया। जो हो, जैसे हो–मेरे हो। लेकिन अभी बच्चों को सबूत देना है। क्या सबूत देना है? बाप कहते हैं–जो हो, जैसे हो–मेरे हो। और आप क्या कहेंगे? जो है वह सब आप हो। ऐसे नहीं–थोड़ा-थोड़ा और भी है। बाप से प्यार है लेकिन कभी-कभी असत्य के राज्य के प्रभाव में आ जाते हैं।

27.02.96 .. .. सत्यता का फाउण्डेशन पवित्रता है। और सत्यता का प्रैक्टिकल प्रमाण चेहरे पर और चलन में दिव्यता होगी। दुनिया में भी अनेक आत्मायें अपने को सत्यवादी कहते हैं वा समझते हैं लेकिन सम्पूर्ण सत्यता पवित्रता के आधार पर होती है। पवित्रता नहीं तो सदा

सत्यता रह नहीं सकती है। तो आप सबका फाउण्डेशन क्या है? पवित्रता। तो पवित्रता के आधार पर सत्यता का स्वरूप स्वत: और सहज सदा होता है। सत्यता सिर्फ सच बोलना, सच करना इसको नहीं कहा जाता लेकिन सबसे पहला सत्य जिससे आपको पवित्रता की वा सत्यता की शक्ति आई, तो पहली बात है अपने सत्य स्वरूप को जाना, मैं आत्मा हूँ–ये सत्य स्वरूप पहले नहीं जानते थे। लेकिन पहला सत्य अपने स्वरूप को जाना। मैं फलानी हूँ या फलाना हूँ, बॉडी के हिसाब से वह सत्य स्वरूप था? सत्य स्वरूप है पहले स्व स्वरूप और फिर बाप के सत्य परिचय को जाना। अच्छी तरह से अपना सत्य स्वरूप और बाप का सत्य परिचय जान लिया है? तीसरी बात–इस सृष्टि चक्र को भी सत्य स्वरूप से जाना। यह चक्र क्या है और इसमें मेरा पार्ट क्या है! तो अपना पार्ट अच्छी तरह से स्पष्ट रूप से जान लिया? आपका पार्ट अच्छा है ना? सबसे अच्छा पार्ट संगमयुग का कहेंगे। लेकिन आपका देव आत्मा का पार्ट भी विश्व में सारे चक्र की आत्माओं से श्रेष्ठ है। चाहे धर्म आत्मायें, महान आत्मायें भी पार्ट बजाती हैं लेकिन वो आत्मा और शरीर दोनों से पवित्र नहीं हैं और आप देव आत्मायें शरीर और आत्मा दोनों से पवित्र हैं, जो सारे कल्प में और कोई आत्मा ऐसी नहीं। तो पवित्रता का फाउण्डेशन सिवाए आपके और कोई भी आत्मा का श्रेष्ठ नहीं है। आपको देव आत्मा का पार्ट याद है? पाण्डवों को याद है? देव आत्मा की पवित्रता नेचुरल रूप में रही है। महान आत्मायें, आत्माओं को पवित्र बनाती हैं लेकिन बहुत पुरुषार्थ से, नेचुरल नहीं। न नेचुरल है न नेचर रूप में है। और आपकी आधा कल्प पवित्रता की जीवन नेचुरल भी है और नेचर भी है। कोई पुरुषार्थ वहाँ नहीं है। यहाँ का पुरुषार्थ वहाँ नेचुरल हो जाता है। क्योंकि वहाँ अपवित्रता का नाम-निशान नहीं, मालूम ही नहीं कि अपवित्रता भी होती है। इसलिए आपके पवित्रता का प्रैक्टिकल स्वरूप देवता अर्थात् दिव्यता का है। इस समय दुनिया वाले कितना भी अपने को सत्यवान समझें लेकिन स्व स्वरूप की सत्यता ही नहीं जानते। बाप के सत्य परिचय को ही नहीं जानते। तो सम्पूर्ण सत्य स्वरूप नहीं कहेंगे। आपमें भी सत्यता की शक्ति सदा तब रहेगी जब अपने और बाप के सत्य स्वरूप की स्मृति रहेगी, तो स्वत: ही हर संकल्प भी आपका सत्य होगा। अभी कभी भूल भी जाते हो, बॉडी कानसेस में आ जाते हो तो संकल्प सदा सत्यता के शक्तिशाली हो, पवित्रता के शक्तिशाली हो, वह सदा नहीं रहता। सदा रहता है कि व्यर्थ भी होता है? तो व्यर्थ को सत्य कहेंगे? झूठ तो बोला ही नहीं तो क्यों नहीं सत्य है? अगर कोई यह समझकर बैठे कि मैं कभी भी झूठ नहीं बोलती, सदा सच बोलती लेकिन सत्यता की परख है कि संकल्प, बोल, कर्म, सम्बन्ध-सम्पर्क सबमें दिव्यता अनुभव हो। बोल सच रहे हैं लेकिन दिव्यता नहीं है, देखते हो ना–कई बार-बार कहेंगे मैं सच बोलती, मैं सच बोलती। मैं सदा सच्ची हूँ लेकिन बोल में, कर्म में अगर दिव्यता नहीं है तो दूसरे को आपका सच, सच नहीं लगेगा। यही समझेंगे कि यह अपने को सिद्ध कर रही है लेकिन समझ में नहीं आता कि यह सत्य है। सत्य को सिद्ध करने के लिए सिद्ध करने की

आवश्यकता नहीं है। अगर अपने सत्य को जिद्द से सिद्ध करते हैं तो वह दिव्यता दिखाई नहीं देती है। ये साधारणता है, जो दुनिया में भी करते हैं। और बापदादा सत्य की निशानी एक स्लोगन में कहते हैं, साकार द्वारा भी सुना जो सच्चा होगा वह कैसे दिखाई देगा! **सच तो नच।** सदा खुशी में नाचता रहेगा। जब जिद्द करके सिद्ध करते तो आप अपना या दूसरे का चेहरा नोट करेंगे तो वह खुशी का नहीं होगा। थोड़ा सोचने का और थोड़ा उदासी का होगा। नाचने का नहीं होगा। सच तो बिठो नच, सच्चा खुशी में नाचता है। तो खुशी में जीवन के दिन या रात बहुत अच्छी लगती है। और थोड़ा भी सत्य में असत्य मिक्स है तो उस समय की जीवन इतनी अच्छी नहीं लगेगी। तो सत्यता का अर्थ ही है सत्य स्वरूप में स्थित होकर चाहे संकल्प, चाहे बोल, चाहे कर्म करना। आजकल दुनिया वाले तो स्पष्ट कहते हैं कि आजकल सच्चे लोगों का चलना ही मुश्किल है, झूठ बोलना ही पड़ेगा। लेकिन कई समय पर, कई परिस्थितियों में ब्राह्मण आत्मायें भी मुख से नहीं बोलती लेकिन अन्दर समझती हैं कि कहाँ-कहाँ चतुराई से तो चलना ही पड़ता है। उसको झूठ नहीं कहते लेकिन चतुराई कहते हैं। तो चतुराई क्या है? यह तो करना ही पड़ता है! तो वह स्पष्ट बोलते हैं और ब्राह्मण रॉयल भाषा में बोलते हैं। फिर कहते हैं मेरा भाव नहीं था, न भावना थी न भाव था लेकिन करना ही पड़ता है, चलना ही पड़ता है। लेकिन ब्रह्मा बाप को देखा, साकार है ना, निराकार के लिए तो आप भी सोचते हो कि शिव बाप तो निराकार है, ऊपर मजे में बैठा है, नीचे आवे तो पता पड़े क्या है! लेकिन ब्रह्मा बाप तो साकार स्वरूप में आप सबके साथ ही रहे, स्टूडेन्ट भी रहे और सत्यता व पवित्रता के लिए कितनी आपोज़ीशन हुई तो चालाकी से चला? लोगों ने कितना राय दी कि आप सीधा ऐसे नहीं कहो कि पवित्र रहना ही है, यह कहो कि थोड़ा-थोड़ा रहो। लेकिन ब्रह्मा बाप घबराया? सत्यता की शक्ति धारण करने में सहनशक्ति की भी आवश्यकता है। सहन करना पड़ता है, झुकना पड़ता है, हार माननी पड़ती है लेकिन वह हार नहीं है, उस समय के लिए हार लगती है लेकिन है सदा की विजय। सत्यता की शक्ति से आज डायमण्ड जुबली मना रहे हैं। अगर पवित्रता और सत्यता नहीं होती तो आज आपके चेहरों से, चलन से आने वालों को जो दिव्यता अनुभव होती है वह नहीं होती। चाहे प्यादा भी है, नम्बरवार तो है ही ना। महारथी भी हैं, नाम के महारथी नहीं, लेकिन जो सच्चे महारथी हैं अर्थात् सत्यता की शक्ति से चलने वाले महारथी हैं। जो परिस्थिति को देखकर सत्यता से ज़रा भी किनारा कर लेते, कहते हैं और कुछ नहीं किया एक दो शब्द ऐसे बोल दिये, दिल से नहीं बोले ऐसे बाहर से थोड़ा बोल दिये तो यह सम्पूर्ण सत्यता नहीं है। सत्यता के पीछे अगर सहन भी करना पड़ता तो वह सहन नहीं है भल बाहर से लगता है कि हम सहन कर रहे हैं लेकिन आपके खाते में वह करने के बाद सोचना ही पश्चाताप का रूप है। सहन शक्ति के रूप में जमा होता है। नहीं तो क्या होता कि अगर कोई थोड़ा सा भी सहन करने में कमजोर हो जाता है तो उसे असत्य का सहारा जरूर लेना पड़ता है। तो उस समय ऐसे लगता

है जैसे सहारा मिल गया, ठीक हो गया लेकिन उसके खाते में सहनशक्ति जमा नहीं होती है। तो बाहर से ऐसे समझेंगे कि हम बहुत अच्छे चलते हैं, हमको चलने की चतुराई आ गई है, लेकिन अगर अपना खाता देखेंगे तो जमा का खाता बहुत कम होगा। इसलिए चतुराई से नहीं चलो, एक दो को देखकर भी कापी करते हैं, यह ऐसे चलती है ना तो इसका नाम बहुत अच्छा हो गया है, यह बहुत आगे हो गई है और हम सच्चे चलते हैं ना तो हम पीछे के पीछे ही रह गये। लेकिन वह पीछे रहना नहीं है, वह आगे बढ़ना है। बाप के आगे, आगे बढ़ते हो और दूसरों के आगे चाहे पीछे दिखाई भी दो लेकिन काम किससे है! बाप से या आत्माओं से? (बाप से) तो बाप के दिल में आगे बढ़ना अर्थात् सारे कल्प के प्रालब्ध में आगे बढ़ना। और अगर यहाँ आगे बढ़ने में आत्माओं को कॉपी करते हो, तो उस समय के लिए आपका नाम होता है, शान मिलता है, भाषण करने वाली लिस्ट में आते हो, सेन्टर सम्भालने की लिस्ट में आते हो लेकिन सारे कल्प की प्रालब्ध नहीं बनती। जिसको बापदादा कहते हैं मेहनत की, बीज डाला, वृक्ष बड़ा किया, फल भी निकला लेकिन कच्चा फल खा गये, हमेशा के लिए प्रालब्ध का फल खत्म हो जाता है। तो अल्पकाल के शान, मान, नाम के लिए कॉपी नहीं करो। यहाँ नाम नहीं है लेकिन बाप के दिल में नम्बर आगे नाम है। इसलिए डायमण्ड बनना है तो यह सब चेकिंग करो। ज़रा भी रॉयल रूप का दाग डायमण्ड में छिपा हुआ तो नहीं है? तो सत्यता की शक्ति से दिव्यता को धारण करो। कुछ भी सहन करना पड़े, घबराओ नहीं। सत्य समय प्रमाण स्वयं सिद्ध होगा। कहते भी हो ना कि सत्य की नाव डोलती है लेकिन डूबती नहीं, तो किनारा तो ले लेंगे ना। निर्भय बनो। अगर कहाँ भी सामना करना पड़ता है तो ब्रह्मा बाप के जीवन को आगे रखो। ब्रह्मा बाप के आगे दुनिया की परिस्थितियां तो थी लेकिन वेराइटी बच्चों की भी परिस्थितियां रहीं लेकिन संगठन में होते, जिम्मेवारी होते सत्यता की शक्ति से विजयी हो गये।

4.11.2001.. .. बापदादा को राज़ी करना बहुत सहज है। बापदादा को राज़ी करने का सहज साधन है ''सच्ची दिल''। सच्ची दिल पर साहेब राज़ी है। हर कर्म में सत्यवादी। सत्यता महानता है। जो सच्ची दिल वाला है, वह सदा संकल्प, वाणी और कर्म में, सम्बन्ध-सम्पर्क में राज़युक्त होगा अर्थात् राज़ को समझ करने वाले, चलने वाले; और हम कहाँ तक राज़युक्त हैं - उसको परखने की निशानी है - अगर राज़ जानता है तो वह कभी भी अपने स्व-स्थिति से नाराज़ नहीं होगा अर्थात् दिलशिकस्त नहीं होगा और संकल्प में भी, वृत्ति से भी, स्मृति से भी, दृष्टि से भी किसी को नाराज़ नहीं करेगा; क्योंकि वो सबके वा अपने संस्कार-स्वभाव को जानने वाला राज़युक्त है। तो बाप को राज़ी करने की विधि है - राज़युक्त चलना और राज़युक्त अर्थात् न अपने अन्दर नाराज़गी आये, न औरों को नाराज़ करे।

सच्चाई-सफाई

28.9.69 .. .. .. सबसे खौफनाक मनुष्य कौनसा होता है जिनसे सब डर जाते हैं? दुनिया की बात तो दुनिया में रही। लेकिन इस दैवी परिवार के अन्दर सबसे खौफनाक, नुकसान कारक वो है जो अन्दर एक और बाहर से दूसरा रूप रखता है। वो पर-निन्दक से भी जास्ती खौफनाक है। क्योंकि वो कोई के नजदीक नहीं आ सकता। स्नेही नहीं बन सकता। उनसे सब दूर रहने की कोशिश करेंगे। इस-लिए इस भट्टी में आप लोगों को यह शिक्षा मिली। इसको सच्चाई और सफाई कहा जाता है। सफाई किस बात में? सच्चाई किस बात में? इनका भी बड़ा गुह्य रहस्य है। सच्चाई जो करें वो ही वर्णन करें। जो सोचें वहीं वर्णन करें। बनावटी रूप नहीं। मन्सा-वाचा-कर्मणा तीनों रूप में चाहिए। अगर मन में कोई संकल्प उत्पन्न होता है तो उसमें भी सच्चाई चाहिए और सफाई। अन्दर में कोई भी विकर्म का किचरा नहीं हो। कोई भी भाव-स्वभाव पुराने संस्कारों का भी किचरा नहीं हो। जो ऐसी सफाई वाला होगा वो ही सच्चा होगा और जो सच्चा होता है उनकी परख क्या होती है? जो सच्चा होगा वह सबका प्रिय होगा। उसमें भी सबसे पहले तो वह प्रभु-प्रिय होगा। सच्चे पर साहब राजी होता है। तो पहले प्रभुप्रिय होगा। फिर दैवी परिवार का प्रिय होगा उसको कोई भी ऐसी नज़र से नहीं देखेगा। उनकी नज़र, वाणी में, उनके कर्म में ऐसी परि-पक्वता होगी जो कभी भी ना खुद ही डगमग होगा ना ही दूसरों को करेगा। जो सच्चा होगा वह प्रिय होगा। कई समझते हैं कि हम तो सच्चे हैं लेकिन मुझे समझा नहीं जाता है। सच्चा हीरा कभी छिप थोड़ेही सकता है। इसलिए ही यह समझना मैं ऐसा हूँ परन्तु मुझे ऐसा समझा नहीं जाता है – यह भी सच्चाई नहीं है। सच्चाई कभी छिप नहीं सकती है और सच्चे सबके प्रिय बन जाते हैं। कई यह भी समझते हैं कि हम नज़दीक नहीं हैं इसलिए ही प्रख्यात नहीं हैं। लेकिन जो सच्चे और पक्के होते हैं वो दूर होते हुए भी अपनी परख छिपा नहीं सकते। कोई कितना भी दूर हो लेकिन बापदादा के नज़दीक होगा। जो बाप के नज़दीक हैं वो सबके नज़दीक हैं। तो सच्चा बनना। सफाई का सबूत चलन में दिखता है।

2.4.70 .. .. ..स्पष्ट अर्थात् सन्तुष्ट। जितना सन्तुष्ट होंगे उतना ही स्पष्ट होंगे। स्पष्ट बच्चों को साकार रूप में कौन से शब्द कहते थे? साफ़ और सच्चा।

जिसमें सच्चाई और सफ़ाई है वह सदैव स्पष्ट होता है। जब सफ़ाई होती है तो भी सभी वस्तु स्पष्ट देखने में आती है। —यह लेसन भट्ठी की पढ़ाई का लास्ट लेसन है।—यही एग्ज़ाम्पल बनना है।

19.4.71… सच्चाई और सफाई से सृष्टि से विकारों का सफाया करेंगे। जब सृष्टि से करेंगे तो स्वयं से तो पहले से ही हो जायेगा, तब तो सृष्टि से करेंगे ना। तो यह स्लोगन याद रखने से तपस्वीमूर्त बनने से सफलतामूर्त बनेंगे।

22.6.71… एक बाप दूसरा न कोई – दूसरी कोई बात स्वप्न में, स्मृति में दिखाई न दे। उसको कहते हैं सम्पूर्ण वफादार। ऐसे फरमानबरदार की प्रैक्टिकल चलन में परख क्या होगी? सच्चाई और सफाई।

18.7.71…सच्चाई और सफाई वाले प्रभु-प्रिय भी हैं और लोक-प्रिय भी और अपने आपको भी प्रिय लगते हैं। सच्चाई-सफाई को सभी पसन्द करते हैं। रजिस्टर साफ रखना–यह भी सफाई हुई ना। और सच्ची दिल पर साहेब राजी हो जाता है अर्थात् हिम्मत और याद से मदद मिल जाती है।

09.10.71… सभी धारणाओं की बातों में से मुख्य धारणा की कौनसी बात सभी को देते हो? अव्यक्त बनने के लिए भी प्वाइंट कौनसी देते हो? बाप को याद करने अथवा रूह-रूहान करने का भी उमंग कैसे उठेगा? उसके लिए मुख्य बात है सच्चाई और सफाई। आपस में एक-दो के भाव को सफाई से जानना आवश्यक है। विशेष आत्माओं के लिए सच्चाई-सफाई शब्द का अर्थ भी गुह्य है। एक-दो के प्रति दिल में बिल्कुल सफाई हो। जैसे कोई बिल्कुल साफ चीज़ होती है तो उनमें सब-कुछ स्पष्ट दिखाई देता है ना। वैसे ही एक-दो की भावना, भाव-स्वभाव स्पष्ट दिखाई दें। जहाँ सच्चाई-सफाई है वहाँ समीपता होती है।
सर्वश्रेष्ठ आत्माओं के मन की भावना और स्वभाव एक ही सांचे से निकले हुए हों, ऐसा दिखाई दे। सच्चाई-सफाई का कोई साधारण अर्थ नहीं उठाना। जितनी सफाई होगी उतना हल्कापन भी होगा। जितना हल्के होंगे उतना एक-दो के समीप आोंगे और दूसरों को भी हल्का बना सकेंगे।

24.6.74 .. .. .. जैसा समय, वैसी बात और वैसा अपना स्वरूप बना लें। इसके लिए मुख्य शक्ति कौन-सी चाहिये? इसमें चाहिये–निर्णय की शक्ति। जब पहले यह जानो कि यथार्थ निर्णय करने का कौन-सा समय है, तो उस प्रमाण कौन-सा स्वरूप चाहिये, तब ही तो विजयी बन सकेंगे ना? निर्णय शक्ति अपने में लाने के लिए मुख्य पुरुषार्थ कौन-सा चाहिए? इसके लिए मुख्य बात, अपनी बुद्धि की वा लगन की सच्चाई और सफाई चाहिए। कोई भी चीज़ जितनी साफ होती है, तो उतना ही उसमें सब स्पष्ट दिखाई देता है। अर्थात् निर्णय सहज हो सकता है, लेकिन यहाँ सिर्फ सफाई ही नहीं, लेकिन सफाई भी कौन-सी?–सच्चाई की। जितनी-जितनी बुद्धि की लगन में स्वच्छता अर्थात् सच्चाई और सफाई धारण की हुई है तो उतनी ही निर्णय-शक्ति सहज आ जायेगी।

2.9.75.. .. .. इन सब तख्तों का आधार बाप-दादा के दिल-तख्तनशीन बनना है। उसके लिये मुख्य साधन कौनसा है उसको जानते हो? सहज साधन है ना। कौनसा साधन है? – दिल तख्त, जो स्वयं तख्तनशीन हैं वह अच्छी तरह जानते हैं कि बाप-दादा को सबसे प्रिय कौनसा बच्चा लगता है। बाप को दुनिया वाले क्या समझते हैं, कि बाप भगवान क्या है? गॉड इज ट्रुथ। सत्य को ही भगवान कहते हैं। बाप-दादा सुनाते भी सत्यनारायण की कथा है और स्थापना भी सतयुग की करते हैं। तो बाप को जो सत बाप, सत टीचर, सत गुरु का प्रैक्टिकल पार्ट बजाते हैं, तो सत बाप को क्या प्रिय लगता है? – सच्चाई- जहाँ सच्चाई है अर्थात् सत्यता है, वहाँ स्वच्छता व सफाई अवश्य ही होती है। गायन भी है सच्चे दिल पर साहब राजी। दिल तख्तनशीन सर्विसएबल अवश्य है – लेकिन क्या सर्विसएबल की निशानी सम्बन्ध और सम्पर्क में सच्चाई और सफाई, हर संकल्प और हर बोल में दिखाई देगी। अर्थात् ऐसी दिल तख्तनशीन श्रेष्ठ आत्मा का हर संकल्प सत होगा, हर वचन सत होगा। सत अर्थात् सत्य भी और सत अर्थात् सफल भी। अर्थात् कोई भी संकल्प व बोल व्यर्थ व साधारण नहीं होगा। ऐसे सर्विसएबल जिनके हर कदम में, हर समय की निगाह में अर्थात् दृष्टि में सर्व आत्माओं के प्रति नि:स्वार्थ सेवा ही सेवा दिखाई देगी। सोते भी सेवा, जागते भी सेवा और चलते हुए भी सेवा। सिवाय सेवा के स्वप्न में भी कोई बात नहीं होगी।

6.2.76 .. .. ..स्वयं को करावनहार नहीं समझते, इसीलिये उनके हर कर्म में न्यारेपन, निरहंकारीपन और नम्रतापन के नव-निर्माण की श्रेष्ठता भरी हुई होगी। हरसेकेण्ड, हर संकल्प सम्पूर्ण पवित्र अर्थात् स्वच्छ होगा, जिसको सच्चाई और सफाई कहते हैं।

25-6-77 .. .. .. जितना ऑनेस्ट होगा उतना ही होलीएस्ट होगा। होलीएस्ट बनने की मुख्य बात है – 'बाप से सच्चा बनना।' सिर्फ ब्रह्मचर्य धारण करना यह प्यूरिटी की हाइएस्ट स्टेज (Highest stage;सर्वोच्च स्थिति) नहीं है; लेकिन प्यूरिटी अर्थात् रीयल्टी अर्थात् सच्चाई। ऐसे सच्ची दिल वाले दिलवाला बाप के दिलतख्त नशीन हैं और दिलतख्त नशीन बच्चे ही राज्य राज्यतख्त नशीन होते हैं। ऑनेस्ट अर्थात् ईमानदार उसको कहा जाता

28-12-78 .. .. .. परमात्म प्रत्यक्षता का आधार सत्यता है। सत्यता ही प्रत्यक्षता है - एक स्वयं के स्थिति की सत्यता दूसरी सेवा की सत्यता। सत्यता का आधार है स्वच्छता और निर्भयता। इन दोनों धारणाओं के आधार से सत्यता द्वारा ही प्रत्यक्षता होगी। किसी भी प्रकार की अस्वच्छता अर्थात् ज़रा भी सच्चाई सफाई की कमी है तो कर्त्तव्य की सिद्धि, प्रत्यक्षता हो नहीं सकती। सच्चाई और सफाई- सच्चाई अर्थात् जो मैं हूँ जैसा हूँ सदा उस ओरीज़नल सत्य स्वरूप में स्थित होना। अर्थात् आत्मा के औरीज़नल सतोप्रधान स्वरूप में स्थित रहना है रजो और तमो स्टेज सच्चाई की ओरीज़नल स्टेज नहीं। यह संगदोष की स्टेज है। किसका संग? माया अथवा रावण का। आत्मा की सत्यता सतोप्रधानता है। तो पहली यह सच्चाई है। दूसरी

बात- बोल और कर्म में भी सच्चाई अर्थात् सत्यता की स्टेज सतोप्रधानता है वा अभी रजो और तमो मिक्स हैं! सत्यता नेचरल संस्कार रूप में हैं वा पुरुषार्थ से सत्यता की स्टेज को लाना पड़ता है! जैसे बाप को ट्रुथ अर्थात् सत्य कहते हैं वैसे ही आत्मिक स्वरूप की वास्तविकता भी सत्य अर्थात् ट्रुथ है। तो सत्यता सतोप्रधानता को कहा जाता है, ऐसी सच्चाई है! सफाई अर्थात् स्वच्छता। ज़रा भी संकल्प द्वारा भी अशुद्धि अर्थात् बुराई को वा अवगुण को टच नहीं करें – अगर बुद्धि वा संकल्प द्वारा भी स्वीकार किया अर्थात् धारण किया तो सम्पूर्ण सफाई नहीं कहेंगे। जैसे स्थूल में भी कोई प्रकार की गन्दगी को देखना भी अच्छा नहीं लगता, देखने से किनारा कर देंगे, ऐसे बुराई को सोचना भी बुराई को टच करना हुआ। सुनना और बोलना वा करना यह तो स्वयं ही बुराई को धारण करते हैं। सफाई अर्थात् स्वच्छता, संकल्प मात्र भी अशुद्धि न हो। इसको कहा जाता है सच्चाई और सफाई अर्थात् स्वच्छता।

10.12.79 .. ष्ठ टीचर्स अपने आपके पुरुषार्थ में सन्तुष्ट है? चढ़ती कला की महसूसता होती है? सबसे सन्तुष्ट हो सभी? अपने पुरुषार्थ से, सेवा से फिर साथियों में, सबसे सन्तुष्ट? सबके सर्टीफिकेट होने चाहिए ना? तो सभी सर्टीफिकेट हैं। क्या समझती हो? अगर आप सच्चाई से और सफाई से सनतुष्ट हैं तो बाप भी सन्तुष्ट है। एक होता है वैसे ही कहना कि सन्तुष्ट हैं, एक होता है सच्चाई-सफाई से कहना कि सन्तुष्ट हैं। सदा सन्तुष्ट!

27.3.81 .. .. .. पाण्डव, एक एक शक्ति एक से एक आगे है। तो बाप पसन्द बनने के लिए –''सच्ची दिल पर साहेब राजी।''जो भी हो सच्चाई, सत्यता बाप को जीत लेती है।

30-4-83.. .. .. गायन का आधार है – भाग्य विधाता बाप का बनना। और पूजन का आधार है – चारों सबजेक्ट में पवित्रता, स्वच्छता, सच्चाई, सफाई। ऐसे पर बापदादा भी सदा स्नेह के फूलों से पूजन अर्थात श्रेष्ठ मानते हैं। परिवार भी श्रेष्ठ मानते हैं और पूजन अर्थात् श्रेष्ठ मानते हैं। परिवार भी श्रेष्ठ मानते हैं और विश्व भी वाह-वाह के नगाड़े बजाए उन्हों की मन से पूजा करेगा। और भक्त तो अपना ईष्ट समझ दिल में समायेंगे।

28-2-84.... ''आज भोलनाथ बाप अपने भोले बच्चों से बच्चो का सो बाप का सो बच्चों का अवतरण दिवस अर्थात् अलौकिक रूहानी जयन्ती मनाने आये हैं। भोलनाथ बाप को सबसे प्रिय भोले बच्चे हैं। भोले अर्थात् जो सदा सरल स्वभाव, शुभ भाव और स्वच्छता सम्पन्न मन और कर्म दोनों में सच्चाई और सफाई, ऐसे भोले बच्चे भोलानाथ बाप को भी अपने ऊपर आकर्षित करते हैं। भोलानाथ बाप ऐसे सरल स्वभाव भोले बच्चों के गुणों की माला सदा ही सिमरण करते रहते हैं। आप सभी ने अनेक जन्मों में बाप के नाम की माला सिमरण की और बाप अभी संगमयुग पर बच्चों को रिटर्न दे रहे हैं। बच्चों की गुण माला सिमरण करते हैं। कितने भोले बच्चे भोलानाथ को प्यारे हैं। जितना ज्ञानस्वरूप, नालेज़फुल,

पावरफुल उतना ही भोलापन। भगवान को भोलापन प्यारा है। ऐसे अपने श्रेष्ठ भाग्य को जानते हो ना। जो भगवान को मोह लिया। अपना बना दिया।

बापदादा का टाइटल दिलवाला है – दिलाराम है। दिमाग दिल से स्थूल है, दिल सूक्ष्म है। बोलचाल में भी सदैव यह कहते हो कि सच्ची दिल से कहते हैं – सच्ची दिल से बाप को याद करो। यह नहीं कहते कि सच्चे दिमाग से याद करो। कहा भी जाता है-सच्चे दिल पर साहेब राज़ी। विशाल दिमाग पर राज़ी नहीं कहा जाता है। विशाल दिमाग – यह विशेषता ज़रूर है, इस विशेषता से ज्ञान की प्वाइंटस को अच्छी तरह धारण कर सकते हैं। लेकिन दिल से याद करने वाले प्वाइंट अर्थात् बिन्दु रूप बन सकते हैं। वह प्वाइंट रिपीट कर सकते हैं लेकिन प्वाइंट (बिन्दु) रूप बनने में सेकण्ड नम्बर होंगे, कभी सहज कभी मेहनत से बिन्दु रूप में स्थित हो सकेंगे। लेकिन सच्ची दिल वाले सेकण्ड में बिन्दु बन बिन्दु स्वरूप बाप को याद कर सकते हैं। सच्ची दिल वाले सच्चे साहेब को राज़ी करने के कारण, बाप की विशेष दुआओं की प्राप्ति के कारण स्थूल रूप में चाहे दिमाग कइयों के अन्तर में इतना विशाल न भी हो लेकिन सच्चाई की शक्ति से समय प्रमाण उनका दिमाग युक्तियुग, यथार्थ कार्य स्वतः ही करेगा। जो यथार्थ कर्म, बोल वा संकल्प हैं वह दुआओं के कारण ड्रामा अनुसार समय प्रमाण वही टचिंग उनके दिमाग में आयेगी। क्योंकि बुद्धिवानों की बुद्धि (बाप) को राज़ी किया हुआ है। जिसने भगवान को राज़ी किया वह स्वतः ही राजयुक्त, युक्तियुक्त होता है।

11.12.91 .. .. .. रूहानी रॉयल्टी की सबसे श्रेष्ठ निशानी है – रॉयल्टी अर्थात् रीयल्टी अर्थात् सत्यता। जैसे आत्मा का अनादि स्वरूप सत है। सत अर्थात् अविनाशी और सत्य है। जैसे बाप की महिमा विशेष यही गाते रहते हैं – सत्यम् शिवम् सुन्दरम्। सत्य ही शिव है वा गॉड इज ट्रुथ (God i s truth) कहा जाता है। तो बाप की महिमा सत्य अर्थात् सत्यता की है। ऐसे रॉयल्टी अर्थात् रीयल्टी – सत्यता जरा भी बनावटी या मिला- वटी न हो। चाहे बोल में, चाहे कर्म में, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क में मिलावट या बनावट नहीं हो। जिसको साधारण भाषा में बापदादा कहते हैं – सच्चाई। रॉयल आत्माओं की वृत्ति, दृष्टि बोल और चलन सब एक सत्य होगी। ऐसे नहीं कि वृत्ति में एक बात हो और बोल में दूसरा बनावटी भाव हो। इसको रॉयल्टी वा रीयल्टी नहीं कहा जाता है।

9.4.71... सच किसको कहा जाता है – यह मालूम है? जो बात अगर संकल्प में भी आती हो, संकल्प को भी छिपाना नहीं है – इसको कहा जाता है सच। अगर पुरुषार्थ कर सफलता भी लेती हो तो भी अपनी सफलता वा हार खाने का दोनों का समाचार स्पष्ट सुनाना। यह है सच। सच वाले अपने वायदे पूरा कर सकेंगे।

6.12.69 ……जितनी सरलता होगी उतनी स्वच्छता भी होगी। स्वच्छता सभी को अपने तरफ आकर्षित करती है। स्वच्छता अर्थात् सच्चाई और सफाई। सच्चाई और सफाई तब होगी जब अपने स्वभाव को सरल बनायेंगे।

16.10.69… बुद्धि की सफाई- जितना बुद्धि की सफाई होगी उतना ही योग युक्त अवस्था में रह सकेंगे। यह व्यर्थ संकल्प और विकल्प जो चलते हैं वह अव्यक्त स्थिति होने में विघ्न हैं। बार-बार इस शरीर के आकर्षण में आ जाते हैं उसका मूल कारण है कि बुद्धि की सफाई नहीं है। बुद्धि की सफाई अर्थात बुद्धि को जो महामन्त्र मिला हुआ है उसमें बुद्धि मगन रहे। एक की याद को छोड़ अनेक तरफ बुद्धि जाने के कारण शक्तिशाली नहीं रहते। वैसे भी जब बुद्धि बहुत कार्य तरफ लगी हुई होती है। तो अनुभव किया होगा बुद्धि में वीकनेस, थकावट महसूस होती है। और जो भी है यथार्थ रूप से निर्णय नहीं कर सकेंगे। इसी रीति व्यर्थ संकल्प, विकल्प जो चलते हैं, यह भी बुद्धि को थकावट में लाते हैं। थकी हुई कोई भी आत्मा न परख सकेगी न निर्णय कर सकेगी। कितना भी होशियार होगा तो थकावट में उनके परखने, निर्णय करने में फर्क पड़ जाता है। सारा दिन इन संकल्पों से बुद्धि थकी हुई होने कारण निर्णय करने की शक्ति में कमी आ जाती है। इसलिए विजयी नहीं बन सकते। हार खाने का मुख्य कारण यह है। बुद्धि की सफाई नहीं है। जैसे उन्हों की हाथ की सफाई होती है ना। आप फिर बुद्धि की सफाई से क्या से क्या कर सकते हो। वह हाथ की सफाई से झट से बदल देते हैं। देरी नहीं लगती। इसलिए कहते हैं जादूगर। आप में भी बदलने का जादू आ जायेगा। अभी बदलने सीखे हो, लेकिन जादू के समान नहीं बदल सकते हो अर्थात् जल्दी नहीं बदल सकते हो। समय लगता है। जादू चलाने के लिये जितना समय जिसको मंत्र याद रहता है, उतना उसका जादू सफल होता है। आपको भी अगर महामंत्र याद होगा तो जादू के समान कार्य होगा।

सच्चाई

28.9.69 .. .. .. सच्चा हीरा कभी छिप थोड़ेही सकता है। इसलिए ही यह समझना मैं ऐसा हूँ परन्तु मुझे ऐसा समझा नहीं जाता है – यह भी सच्चाई नहीं है। सच्चाई कभी छिप नहीं सकती है और सच्चे सबके प्रिय बन जाते हैं। कई यह भी समझते हैं कि हम नज़दीक नहीं हैं इसलिए ही प्रख्यात नहीं हैं। लेकिन जो सच्चे और पक्के होते हैं वो दूर होते हुए भी अपनी परख छिपा नहीं सकते।

2.9.75.. .. .. तो बाप को जो सत बाप, सत टीचर, सत गुरु का प्रैक्टिकल पार्ट बजाते हैं, तो सत बाप को क्या प्रिय लगता है? – सच्चाई- जहाँ सच्चाई है अर्थात् सत्यता है, वहाँ स्वच्छता व सफाई अवश्य ही होती है। गायन भी है सच्चे दिल पर साहब राजी।

25-6-77 .. .. .. जितना ऑनेस्ट होगा उतना ही होलीएस्ट होगा। होलीएस्ट बनने की मुख्य बात है – 'बाप से सच्चा बनना।' सिर्फ ब्रह्मचर्य धारण करना यह प्यूरिटी की हाइएस्ट स्टेज (Highest stage;सर्वोच्च स्थिति) नहीं है; लेकिन प्यूरिटी अर्थात् रीयल्टी अर्थात् सच्चाई। ऐसे सच्ची दिल वाले दिलवाला बाप के दिलतख्त नशीन हैं और दिलतख्त नशीन बच्चे ही राज्य राज्यतख्त नशीन होते हैं।

28-12-78.. .. .. सच्चाई अर्थात् जो मैं हूँ जैसा हूँ सदा उस ओरीज़नल सत्य स्वरूप में स्थित होना। अर्थात् आत्मा के औरीज़नल सतोप्रधान स्वरूप में स्थित रहना है रजो और तमो स्टेज सच्चाई की ओरीज़नल स्टेज नहीं। यह संगदोष की स्टेज है। किसका संग? माया अथवा रावण का। आत्मा की सत्यता सतोप्रधानता है। तो पहली यह सच्चाई है। दूसरी बात- बोल और कर्म में भी सच्चाई अर्थात् सत्यता की स्टेज सतोप्रधानता है वा अभी रजो और तमो मिक्स हैं! सत्यता नेचरल संस्कार रूप में हैं वा पुरुषार्थ से सत्यता की स्टेज को लाना पड़ता है! जैसे बाप को ट्रुथ अर्थात् सत्य कहते हैं वैसे ही आत्मिक स्वरूप की वास्तविकता भी सत्य अर्थात् ट्रुथ है। तो सत्यता सतोप्रधानता को कहा जाता है, ऐसी सच्चाई है!

15-11-89.. .. ..सच्ची दिल वाले सच्चे साहेब को राज़ी करने के कारण, बाप की विशेष दुआओं की प्राप्ति के कारण स्थूल रूप में चाहे दिमाग कइयों के अन्तर में इतना विशाल न

भी हो लेकिन सच्चाई की शक्ति से समय प्रमाण उनका दिमाग युक्तियुग, यथार्थ कार्य स्वतः ही करेगा।

11.12.91.. .. .. सत्य ही शिव है वा गॉड इज ट्रुथ (God is truth) कहा जाता है। तो बाप की महिमा सत्य अर्थात् सत्यता की है। ऐसे रॉयल्टी अर्थात् रीयल्टी – सत्यता जरा भी बनावटी या मिलावटी न हो। चाहे बोल में, चाहे कर्म में, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क में मिलावट या बनावट नहीं हो। जिसको साधारण भाषा में बापदादा कहते हैं – सच्चाई। रॉयल आत्माओं की वृत्ति, दृष्टि बोल और चलन सब एक सत्य होगी। ऐसे नहीं कि वृत्ति में एक बात हो और बोल में दूसरा बनावटी भाव हो। इसको रॉयल्टी वा रीयल्टी नहीं कहा जाता है।

07.11.95 .. .. .. दूसरी बात अपने पुरुषार्थ में सच्चाई से अपनी चेकिंग अच्छी करते हैं, वो सच्चाई बापदादा के पास पहुँचती है। और सच्चाई बापदादा को प्रिय है। इसलिए सच्चाई के फलस्वरूप बापदादा द्वारा विशेष मदद भी मिलती है।

14-12-97 .. .. .. बापदादा पत्रों से खुशबू लेते हैं और सच्ची दिल वाले हैं। गिरने की भी सच्चाई लिखते हैं तो उड़ने की भी सच्चाई लिखते हैं। साफ दिल हैं। तो जहाँ साफ दिल है, तो बापदादा सदा कहते हैं साफ दिल मुराद हांसिल। जो उमंगें, आशायें रखते हैं वह प्राप्त हो जाती हैं अर्थात् मुराद हांसिल हो जाती है। बापदादा की मदद को कैच करने में अच्छे हैं इसलिए पत्र भेजने वाले वा अपने अपने स्थान पर सुनने वाले वा चारों ओर के डबल फारेनर्स को बापदादा दिल से पदमगुणा यादप्यार, मुबारक दे रहे हैं।

13-2-99.. .. .. तो आज के दिन संकल्प नहीं लेकिन दृढ़ संकल्प क्या लिया? एकानामी का अवतार बनना ही है। चाहे संकल्प में, चाहे बोल में, चाहे साधारण कर्म की एकानामी। और दूसरी बात – सदा बुद्धि को क्लीयर रखना। जिसको दूसरे शब्दों में बापदादा कहते हैं – सच्ची दिल पर साहेब राज़ी। सच्ची दिल, साफ़ दिल। वर्तमान समय में सच्चाई और सफ़ाई की आवश्यकता है। दिल में भी सच्चाई, परिवार में भी सच्चाई और बाप से भी सच्चाई।

05-03-2004 .. .. .. भारतवासियों ने तो बाप को भारत में बुला लिया। लेकिन डबल फारेनर्स के ऊपर फखुर इसलिए है कि डबल फारेनर्स ने बापदादा को अपने सच्चाई के प्यार के बंधन में बांधा है। मैजारिटी सच्चाई वाले हैं। कोई-कोई छिपाते भी हैं लेकिन मैजारिटी अपनी कमजोरी सच्चाई से बाप के आगे रखते हैं। तो बाप को सबसे बढ़िया चीज़ लगती है - सच्चाई। इसलिए भक्ति में भी कहते हैं गाड इज ट्रुथ। सबसे प्यारी चीज़ सच्चाई है क्योंकि

जिसमें सच्चाई होती है उसमें सफाई रहती है। क्लीन और क्लीयर रहता है। इसलिए बापदादा को डबल फारेनर्स के सच्चाई की प्रेम की रस्सी खींचती है। थोड़ा बहुत मिक्स तो होता है, कोई-कोई। लेकिन डबल फारेनर्स अपनी यह सच्चाई की विशेषता कभी नहीं छोड़ना। सत्यता की शक्ति एक लिफ्ट का काम करती है। सबको सच्चाई अच्छी लगती है ना! मधुबन वालों को सच्चाई अच्छी लगती है? जिसमें सच्चाई होगी ना, उसको बाप को याद करना बहुत सहज होगा। क्यों? बाप भी सत्य है ना! तो सत्य बाप की याद जो सत्य है उसको जल्दी आती है। मेहनत नहीं करनी पड़ती है। अगर अभी भी याद में मेहनत लगती है तो समझो कोई न कोई सूक्ष्म संकल्प मात्र, स्वप्न मात्र कोई सच्चाई कम है। जहाँ सच्चाई है वहाँ संकल्प किया बाबा, हज़ूर हाज़िर है। इसलिए बापदादा को सच्चाई बहुत प्रिय है।

सफाई

23.7.69 .. .. .. दिल की सफाई से भी इस बात में बुद्धि की सफाई जास्ती चाहिए। संकल्प की जो शक्ति है उनको ब्रेक लगाने की पॉवर हो। मन का संकल्प वा बुद्धि की जजमेंट जो भी होती है। तो मन और बुद्धि दोनों को एक तो पावरफुल ब्रेक चाहिए और मोड़ने की भी शक्ति चाहिए। यह दोनों ही शक्तियों की बहुत जरूरत है. ।

28.9.69 .. .. .. जो ऐसी सफाई वाला होगा वो ही सच्चा होगा और जो सच्चा होता है उनकी परख क्या होती है? जो सच्चा होगा वह सबका प्रिय होगा।

16.10.69 .. .. .. जिनकी बुद्धि में ज्यादा संकल्प उत्पन्न होंगे तो उनकी बुद्धि दूसरों को परखने के लिए भी अपने व्यर्थ संकल्प की मिक्सचरिटी होगी। इसलिए जो जैसा है वैसा परख नहीं सकेंगे। तो मूल रहस्य निकला बुद्धि की सफाई। जितना बुद्धि की सफाई होगी उतना ही योग युक्त अवस्था में रह सकेंगे। यह व्यर्थ संकल्प और विकल्प जो चलते हैं वह अव्यक्त स्थिति होने में विघ्न हैं। बार-बार इस शरीर के आकर्षण में आ जाते हैं उसका मूल कारण है कि बुद्धि की सफाई नहीं है। बुद्धि की सफाई अर्थात बुद्धि को जो महामन्त्र मिला हुआ है उसमें बुद्धि मगन रहे।

16.10.69 .. .. .. सारा दिन इन संकल्पों से बुद्धि थकी हुई होने कारण निर्णय करने की शक्ति में कमी आ जाती है। इसलिए विजयी नहीं बन सकते। हार खाने का मुख्य कारण यह है। बुद्धि की सफाई नहीं है। जैसे उन्हों की हाथ की सफाई होती है ना। आप फिर बुद्धि की सफाई से क्या से क्या कर सकते हो। वह हाथ की सफाई से झट से बदल देते हैं। देरी नहीं लगती। इसलिए कहते हैं जादूगर।

29.10.70 .. .. .. दीपमाला पर किन बातों का धान रखते हैं? (सफाई रखते हैं, नाा चोपड़ा बनाते हैं) परन्तु लक्ष क्ाा रखते हैं? कमाई का। उस लक्ष को लेकर सफाई भी करते हैं। तो सफाई भी सभी प्रकार से करना है और कमाई का लक्ष भी बुद्धि में रखना है। ाह सफाई और कमाई का दोनों कार्ा आप सभी ने किाा है? अपने आप से सन्तुष्ट हो? जब कमाई है तो सफाई तो जरूर होगी ना। इन दोनों बातों में सन्तुष्टता होना आवशक है।

9.10.71 .. .. जितनी सफाई होगी उतना हल्कापन भी होगा। जितना हल्के होंगे उतना एक-दो के समीप आोंगे और दूसरों को भी हल्का बना सकेंगे। हल्कापन होने के कारण चेहरे से लाइट दिखाई देगी।

21.10.87....दीपमाला में कोने-कोने में सफ़ाई करते हैं। चारों कोनों में सफ़ाई करते हैं, दो वा तीन कोने में नहीं करते। क्योंकि स्वच्छता महानता है। देव-पद का आह्वान करने के लिए चार कोने की स्वच्छता क्या है? वो स्थूल चार कोनों की सफाई करते, आपकी स्वच्छता

कौनसी है? – 'पवित्रता'। चारों प्रकार की स्वच्छता (पवित्रता) हो। उस दिन सुनाया था ना। इसी विधि से दैवी-पद की प्राप्ति करते हो। अगर एक भी प्रकार की स्वच्छता नहीं है तो श्रेष्ठ दैवी-पद की प्राप्ति भी नहीं होती अर्थात् जो ऊँच ते ऊँच बनने की इच्छा रखते हो, वह पूर्ण नहीं हो सकती। तो चारों ही प्रकार की स्वच्छता - यह है दूसरी विधि। इस विधि को अपनाया है? सुनाया ना - मनाना अर्थात् बाप समान बनना। ब्रह्मा बाप को देखा, पुराना खाता खत्म किया ना, चारों प्रकार की स्वच्छता हर कर्म में देखी ना। ब्रह्मा ने सबूत बन करके दिखाया, इसलिए नम्बरवन सपूत बने और नम्बरवन पद की प्राप्ति की। तो फ़ालो फ़ादर है ना। ब्रह्मा बाप ने सेकण्ड में संकल्प किया, पुराना खाता खत्म। उसके लिए दीपमाला पर यह विधि अपनाई जाती है।

18.1.98.... मधुबन निवासियों को दुआयें बहुत मिलती हैं। चाहे सफाई करने वाला भी हो, झाड़ू लगाने वाला हो लेकिन सफाई भी अच्छी देखकर सबकी दुआयें मिलती हैं। सबसे सहज पुरुषार्थ है दुआयें लो, दुआयें दो। इसमें कोई मेहनत नहीं है। बहुत जल्दी मायाजीत बन जायेंगे।

23.10.99.. ..सबमें अच्छे ते अच्छा विशेष गुण है - दिल की सफाई अच्छी है। अन्दर नहीं रखते, बाहर निकाल लेंगे। जो बात होगी सच्ची बोल देंगे। ऐसा नहीं, वैसा। ऐसा वैसा नहीं करते, जो बात है वह बोल देते, यह विशेषता अच्छी है। इसीलिए बाप कहते हैं सच्ची और साफ़ दिल पर बाप राज़ी होता है। हाँ तो हाँ, ना तो ना। ऐसे नहीं - देखेंगे...! मज़बूरी से नहीं चलते। चलते हैं तो पूरा, ना तो ना।

13.11.99.. .. आप सभी जानते हो कि इन्हों का त्याग, इन्हों की हिम्मत और दिल की सफाई पर बापदादा सदा खुश होता है। आप लोग क्या कहते हो? सच्ची दिल तो मुराद हांसिल... तो यह साफ़ और सच्ची दिल वाले हैं। अगर गिरेंगे तो भी सच बतायेंगे, छिपायेंगे नहीं और सच सुनाने से आधा माफ हो जाता है। इसलिए बापदादा डबल विदेशियों को सदा याद करते हैं और सदा यादप्यार देते हैं।

18.3.2001.. .. सेवाकेन्द्र का हर एक छोटाबड़ ा चाहे सफाई करने वाला हो, चाहे भोजन बनाने वाला हो, चाहे किसी भी ड्युटी वाला हो लेकिन उसका चेहरा, उसके मन की स्थिति ''सन्तुष्टता और प्रसन्नता'' सम्पन्न हो। हर एक के चलन और चेहरे से सन्तुष्टता और प्रसन्नता ही दिखाई दे। तो बाबा ने कहा कि बाबा की यह 'शुभ आशा' इस ग्रुप के लिये है।

निर्भयता

20.3.69.. ..सभी जो पुरुषार्थ कर रहे हैं उसमें मुख्य सात बातें धारण करनी है और सात बातें छोड़नी हैं। वह कौन सी? (हरेक कुमारी ने अपना-अपना सुनाया) छोड़ने का तो सभी को सुनाते हो। 5 विकार और उनके साथ छठा है आलस्य और सातवां है भय। यह भय का भी बड़ा विकार है। शक्तियों का मुख्य गुण ही है निर्भय। इसलिए भय को भी छोड़ना है।

26.5.69.. .. मुख्य है निर्भयता का गुण। जो पेपर में नही दिया था। क्योंकि उसकी बहुत कमी है। एक मास के अन्दर इस निर्भयता के गुण को भी अपने में पूरा भरने की कोशिश करनी है। निर्भयता कैसे आयेगी? उसके लिए मुख्य क्या पुरुषार्थ हैं? निराकारी बनना। जितना निराकारी अवस्था में होंगे उतना निर्भय होंगे। भय तो शरीर के भान में आने से होता है।

13.6.73.. .. योद्धे कभी भी आलस्य और अलबेलेपन की स्थिति में नहीं रहते, योद्धे कभी भी शस्त्रों के बिना नहीं रहते, सदैव शस्त्रधारी होते हैं, योद्धे कभी भी भय के वशीभूत नहीं होते, निर्भय होते हैं, योद्धे कभी भी सिवाय युद्ध के और कोई बातें बुद्धि में नहीं रखते। सदैव योद्धेपन की वृत्ति और विजयी बनने की स्मृति में रहते हैं। क्या हम सभी भी एक-दूसरे के साथ विजयी रहते हैं? इस दृष्टि से एक-दूसरे को देखते हैं। ऐसे ही रूहानी योद्धों की सदैव दृष्टि में यह रहता है कि हम सभी एक-दूसरे के साथ महावीर हैं, विजयी हैं। हम हर सेकेण्ड हर कदम में युद्ध के मैदान पर उपस्थित हैं। सिर्फ़ एक ही लगन विजयी बनने की रहती है।

23.5.74.. .. अभी-अभी बहुत ऊंची स्टेज, अभी-अभी सबसे नीची स्टेज। चढ़ती कला में भी हीरो पार्टधारी और गिरती कला में ज़ीरो में हीरो। ऐसे पुरुषार्थी का कर्त्तव्य क्या होता है? स्वयं प्रकृति के व विकारों के वश, अल्पकाल के मायावी निर्भय रूप में रहना और अपने द्वारा दूसरों को भयभीत करने की बातें करना। उन्हों का स्लोगन क्या है–'यह कर लूँगा या वह कर लूँगी'–आपघात महापाप की भयभीत चलन व वैसा बोल उन लोगों का कर्त्तव्य है। ऐसे रॉयल पुरुषार्थी कभी नहीं बनना। कभी भी ऐसे रॉयल पुरुषार्थी के संग में नहीं आना। क्योंकि माया के वश होने वाली आत्माओं को और पुरुषार्थी बनने वाली आत्माओं को स्वयं के संग में लाकर प्रभावित करने की विशेषता माया द्वारा वरदान में प्राप्त होती है। ऐसे संग को बड़ीतेबड़ी दलदल समझना। जो कि बाहर से तो बहुत सुन्दर लेकिन अन्दर नाश करने वाली होती है। इसलिए बापदादा सभी बच्चों को वर्तमान समय की, माया के रॉयल स्वरूप की सावधानी, पहले से ही दे रहे हैं। ऐसे संग से, सदा सावधान रहना और होशियार रहना।

15.9.74.. .. जैसे शुरू-शुरू में देह-अभिमान को मिटाने का पुरुषार्थ रखा कि ''मैं चतुर्भुज हूँ।' इससे स्त्री-भान, कमजोरी, कायरता आदि सब निकल गई और आप निर्भय और शक्तिशाली बन गये। तो जैसे आदि में देह-अभिमान मिटाने के लिये, कि 'मैं चतुर्भुज हूँ', यह प्रैक्टिकल पुरुषार्थ चला ना? चलते-फिरते व बात करते यह नशा रहता था कि 'मैं नारी नहीं हूँ, मैं चतुर्भुज हूँ' तो ये दोनों संस्कार और वह दोनों शक्तियाँ मिल गई जैसे कि ये दोनों कार्य हम कर सकते हैं,

1.10.75.. .. जैसे शुरू-शुरू में देह-अभिमान को मिटाने का पुरुषार्थ रखा कि ''मैं चतुर्भुज हूँ।' इससे स्त्री-भान, कमजोरी, कायरता आदि सब निकल गई और आप निर्भय और शक्तिशाली बन गये। तो जैसे आदि में देह-अभिमान मिटाने के लिये, कि 'मैं चतुर्भुज हूँ', यह प्रैक्टिकल पुरुषार्थ चला ना? चलते-फिरते व बात करते यह नशा रहता था कि 'मैं नारी नहीं हूँ, मैं चतुर्भुज हूँ' तो ये दोनों संस्कार और वह दोनों शक्तियाँ मिल गई जैसे कि ये दोनों कार्य हम कर सकते हैं,

19.10.75.. .. जुआ में हार तो उन्हों की है ही – कल्प पहले ही यादगार में भी जुआ दिखाया है लेकिन यथार्थ रूप नहीं दिखाया है। कौरव अपनी जुआ में लगे हुए हैं और धर्म सत्ता वाले अपनी जुआ में लगे हुए हैं, जुआ में हो उन्हों की हार होनी है और पाण्डवों का झण्डा बुलन्द होना है – ऐसी ललकार करने वाले निर्भय, माया के तूफानों से भी नहीं डरने वाले, निरन्तर विजय का चैलेन्ज करने वाली इस सेना की इन्चार्ज बने तब और भी फॉलो करेंगे। अच्छा!

24.10.75.. .. शक्तियों का विशेष गुण निर्भयता का गाया हुआ है। वह अपने में अनुभव करती हो? निर्भय सिर्फ कोई मनुष्यात्मा से नहीं लेकिन माया के वार से भी निर्भय। जो माया से घबराने वाली नहीं, उसको शक्ति कहा जाता है। माया से डरती तो नहीं हो? जो डरता है वह हार खाता है। जो निर्भय होता है उससे माया खुद भयभीत होती है, क्योंकि भय के कारण शक्ति खो जाती है और समझ भी खो जाती है। वैसे भी जब किसी से भय होता है तो होश-हवास गुम हो जाते हैं, जो समझ होती है वह भी गुम हो जाती है। तो यहाँ भी जो माया से घबराते हैं उनकी माया से समझ खो जाती, इसलिए वे माया को जीत नहीं सकते। तो जैसा नाम है – शक्ति सेना। तो जब शक्तिपन की विशेषता – निर्भयता प्रैक्टिकल में दिखाई दे, तब कहेगे शक्तियाँ। किसी भी प्रकार का भय है तो उसे शक्ति नहीं कहेगे। अबला जो होती

है वह सदैव अधीन होती है, वह अधिकारी नहीं होती। आप तो अधिकारी हो ना? भय के कारण अधीन तो नहीं हो जायेंगी? तो पंजाब की शक्ति-सेना ऐसी निर्भय है?

जब से ब्राह्मण बने हो तो माया को चैलेन्ज दी है कि – ''आओ माया! जितना वार करना हो, उतना करो, मैं शिव-शक्ति हूँ।'' माया के परवश होना अपनी किसी कमज़ोरी के कारण होता है। जहाँ कमजोरी है वहाँ माया है। जैसे जहाँ गन्दगी है वहाँ मच्छर ज़रूर पैदा होते हैं। वैसे ही माया भी, जहाँ कमज़ोरी होती है वह वहीं प्रवेश होती है। तो कमजोर होना अर्थात् माया का आह्वान करना। खुद ही आह्वान करते और खुद ही डरते, तो फिर आह्वान करते ही क्यों हो? यह नशा रखो कि – ''हम हैं ही 'शिव-शक्ति सेना'। कल्प पहले भी माया पर विजयी बनी थीं। अब भी वही पार्ट फिर रिपीट कर रही हूँ।'' कितनी ही बार के विजयी हो? जो अनेक बार का विजयी है वह कितना निर्भय होगा? क्या वह डरेंगे? शक्तियों ने बाप को प्रत्यक्ष करने का नगाड़ा कौन-सा बजाया है? कुम्भकरण को जगाने के लिये बड़ा नगाड़ा बजाओ।

सिर्फ मनुष्यात्मा से ही नहीं बल्कि माया के वार से भी निर्भय आत्मा 'शक्ति' है।

मैं कल्प-कल्प की अनेक बार की विजयी आत्मा हूँ – यह याद रहने से माया से निर्भय रहेगे।1

18.1.77.. .. विनाश के कारण स्वयं हलचल में न आओ। आपकी हलचल अज्ञानियों को भी हलचल में लायेगी। आप अचल रहो। फलक से, निर्भयता से बोलो। फिर वो लोग आपे ही चुप हो जायेंगे, कुछ बोल नहीं सकेंगे। आप निश्चय बुद्धि से संकल्प रूप में भी संशय-बुद्धि न बनो। रॉयल रूप का संशय है कि 'ऐसा होना तो चाहिए था', पता नहीं बाबा ने क्यों ऐसा कहा था। पहले से ही बाप-दादा बता देते थे। अब सामने कैसे जायेंगे? यह रॉयल रूप का संशय, दुनिया वालों को भी संशय-बुद्धि बनाने के निमित्त बनेगा। ''हाँ! कहा है, अभी भी कहेंगे'' – इसी निश्चय और नशे में रहो तो वो नमस्कार करने आयेंगे कि धन्य है आपका निश्चय। समझा?

23.4.77.. .. आपकी हर शक्ति का भी पूजन होता है – जैसे निर्भयता की शक्ति का स्वरूप 'काली देवी' है। सामना करने की शक्ति का स्वरूप 'दुर्गा' है। यह भिन्न-भिन्न नाम से आपके हर शक्ति का गायन और पूजन हो रहा है। संतष्ट रहना और करने की शक्ति है

तो 'संतोषी' माता के रूप में गायन हो रहा है। सन्तुष्ट रहना अर्थात् सहन शक्ति। इतनी महिमा है आपकी। आपकी हर शक्ति का भी पूजन होता है – जैसे निर्भयता की शक्ति का स्वरूप 'काली देवी' है। सामना करने की शक्ति का स्वरूप 'दुर्गा' है। यह भिन्न-भिन्न नाम से आपके हर शक्ति का गायन और पूजन हो रहा है। संतष्ट रहना और करने की शक्ति है तो 'संतोषी' माता के रूप में गायन हो रहा है। सन्तुष्ट रहना अर्थात् सहन शक्ति। इतनी महिमा है आपकी।

11.5.77.. .. सदा शस्त्रधारी बन माया का सामना करते चल रहे हो? जो शस्त्रधारी होते हैं वह सदा निर्भय होते हैं। किससे? दुश्मन से। जैसे पहरे वाला चौकीदार अगर शस्त्रधारी होता है और उसको निश्चय है कि – मेरा शस्त्र दुश्मन को भगाने वाला है, हार खिलाने वाला है तो वह कितना निर्भय हो करके चलता रहता है। तो यहाँ भी माया कितना भी सामना करे लेकिन शस्त्रधारी हैं तो माया से कभी घबड़ायेंगे नहीं, डरेंगे नहीं, हार नहीं खायेंगे, अर्थात् सदा विजयी होंगे। तो सर्व शस्त्र सदा कायम रहते हैं? एक भी कम हुआ तो हार हो सकती है। शस्त्र है शक्तियाँ, तो सर्व शक्तियाँ रूपी शस्त्र सदा कायम रहते हैं? संभालने आते हैं? पाण्डवों की बहादुरी को बहुत लम्बे चौड़े रूप में दिखा दिया है – शक्तियों की बहादुरी शस्त्र दिखाये हैं। पाण्डव सदा प्रभु के साथी थे और साथ के कारण विजयी हुए। आपको भी सदा बाप के साथ का अनुभव होता है? जब साथ का अनुभव होगा तो जो बाप के गुण, बाप की शक्तियाँ वह आपकी हैं। जैसे बाप रूहानी है वैसे साथ में रहने वाले भी रूहानियत में रहेंगे। शरीर को देखते भी रूह को देखेंगे।

1.12.78.. .. महाकाल के बच्चे भी डरें तो और कौन निर्भय होंगे। हर बात में निर्भय बनो। अलबेले और आलस्यपन में निर्भय नहीं बनना - मायाजीत बनने में निर्भय बनो। तो सुना जादू की चाबी। सौगात को सम्भालना सीखो और सदा कार्य में लगाओ।

19.12.78.. .. शेर की विशेषता क्या होती है? शेर की विशेषता है अकेले होते हुए भी अपने को बादशाह समझते हैं अर्थात् निर्भय होते हैं। तो पंजाब के निवासी ऐसे निर्भय हैं ना। किसी भी प्रकार के माया के रूप से डरने वाले नहीं। ऐसा है ना पंजाब!

28.12.78.. .. सत्यता का आधार है स्वच्छता और निर्भयता। इन दोनों धारणाओं के आधार से सत्यता द्वारा ही प्रत्यक्षता होगी। किसी भी प्रकार की अस्वच्छता अर्थात् ज़रा भी सच्चाई सफाई की कमी है तो कर्त्तव्य की सिद्धि, प्रत्यक्षता हो नहीं सकती।

निर्भयता की परिभाषा भी बड़ी गुह्य है! पहली बात- अपने पुराने तमोगुणी संस्कार पर विजयी बनने की निर्भयता। क्या करुँ, होता नहीं, बहुत प्रबल है, यह भी निर्भयता नहीं। अन्य आत्माओं के सम्पर्क और सम्बन्ध में स्वयं के संस्कार मिलाना और अन्य के संस्कार परिवर्तन करना इसमें भी निर्भयता हो। पता नहीं चल सकेंगे, निभा सकेंगे मेरा मानेंगे वा नहीं मानेंगे इसमें भी अगर भयता है तो इसको सम्पूर्ण निर्भयता नहीं कहेंगे। तीसरी बात- विश्व की सेवा में अर्थात् सेवा के क्षेत्र में वायुमण्डल वा अन्य आत्माओं के सिद्धान्तों की परिपक्वता को देखते हुए संकल्प में भी उन्हीं की परिपक्वता वा वातावरण वायुमण्डल का प्रभाव पड़ना यह भी भयता है। यह बिगड़ जायेंगे, हंगामा हो जायेगा - हलचल हो जायेगी इससे भी निर्भयता हो। जब आत्मिक ज्ञानी आप तना द्वारा निकली हुई शाखाएँ वह भी अपने अल्पज्ञ मान्यता में निर्भयता का प्रभाव डालती हैं, अपनी अल्प मत को प्रत्यक्ष करने में निर्भय होती हैं, झूठ को सच करके सिद्ध करने में अटल ओर अचल रहती हैं, तो सर्वज्ञ बाप के श्रेष्ठ मत वा–अनादि आदि सत्य को प्रत्यक्ष करने में संकोच करना भी भय है। शाखाएँ हिलने वाली होती हैं, तना अचल होता है तो शाखाएँ निर्भय हो और तना में संकोच के भय की हलचल हो इसको क्या कहेंगे! इसलिए जो प्रत्यक्षता का आधार स्वच्छता और निर्भयता है उसको चेक करो। इसी को ही सत्यता कहा जाता है। इस सत्यता के आधार पर ही प्रत्यक्षता है।

12.1.79.. .. जैसे रात को हल्की ड्रेस से सोते हैं ना – ऐसे बुद्धि को हल्का करना अर्थात् हल्की ड्रेस पहनना है – ऐसे तैयार हो साथ में सो जाओ – अकेले नहीं सोओ – अकेले होंगे तो माया चान्स लेगी, इसलिए सदा साथ रहो। अकेले रहने से डर भी लगता है, निर्भय भी हो जावेंगे। आप निर्भय रहेंगे ओर माया डराएगी। तो ऐसे सदा साथ के खुशी के खजाने को सारी रात के लिए यूज करो। अब बताओ सारे दिन में श्रेष्ठ खुशी के खजाने प्राप्त होते हुए भी श्रेष्ठ आत्मा कभी उदास हो सकती है!

31.1.79.. .. सत्यता प्रत्यक्षता का आधार है। प्रत्यक्षता करने के लिए पहले स्वयं को प्रत्यक्ष करो, निर्भय बनो।

30.1.79.. .. सदा यह याद रखो कि हम सर्वशक्तिवान के साथ हैं। अगर कोई बहादुर का साथ होता है तो कितना निर्भय रहते हैं, यह तो सर्वशक्तिवान का साथ है तो कितना निर्भय रहना चाहिए। सदा अपने भाग्य का सितारा चमकता हुआ देखो। दुनिया वाले आज भी आपके भाग्य का वर्णन कर रहे हैं, तो अपने भाग्य का सितारा देखते रहो।

3.2.79.. .. कैसी भी परिस्थिति हो लेकिन सदा बाप का साथ स्मृति में रहे तो मायाजीत, बाप को साथी बनाने से विजयी रतन हो जायेंगे। बाप का साथ याद रहे तो सदा खुश और सदा निर्विघ्न रहेंगे। एक से डबल बन गये – तो सदा महावीर रहेंगे, निर्भय रहेंगे। बाप का साथ होने से मायाजीत बन जायेंगे।

5.2.79.. .. सिर्फ भाषण नहीं लगे – लगन में मगन मूर्त अनुभव हो – यह नवीनता है – लोग कहते हैं लेकिन स्वरूप नहीं बनते – आपका बोल और स्वरूप दोनों साथसाथ हों – स्पष्ट भी हों, स्नेह भी हो, नम्रता भी, मधुरता भी और महानता भी हो, सत्यता भी हो लेकिन स्वरूप की नम्रता भी हो, इसी रूप से बाप को प्रत्यक्ष करना है। निर्भय हो लेकिन बोल मर्यादा के अन्दर हों – दोनों बातों का बैलेन्स हो – जहाँ बैलेन्स होता है वहाँ कमाल दिखाई देती है और वह शब्द कड़े नहीं, मीठे लगते हैं तो अथार्टी और नम्रता दोनों के बैलेन्स की कमाल दिखाओ। इसको कहा जाता है बाप की प्रत्यक्षता का साधन।

30.11.79.. .. शक्तियों का मुख्य गुण है निर्भय। माया से भी डरने वाली नहीं। ऐसी निर्भय हो? माया चाहे शेर के रूप में आये अर्थात् विकराल रूप में आये लेकिन शक्तियाँ उस शेर पर भी सवारी करने वाली, इतनी निर्भय। जो निर्भय स्टेज पर रहते उनका साक्षात्कार शक्ति रूप का होता। सदा शस्त्रधारी। दुनिया आपको इसी रूप में नमस्कार करने आयेगी।

13.1.83.. .. हिम्मत रखकर, निर्भय होकर आगे बढ़ते रहे हो इसलिए मदद मिलती रही है। हिम्मत की विशेषता से सर्व का सहयोग मिल जाता है। इसी एक विशेषता से अनेक विशेषताएॅ स्वत: आती जाती हैं। एक कदम आगे रखा और अनेक कदम सहयोग के अधिकारी बने इसलिए इसी विशेषता का औरों को भी दान और वरदान देते आगे बढ़ाते रहो। जैसे वृक्ष को पानी मिलने से फलदायक हो जाता है, वैसे विशेषताओं को सेवा में लगाने से फलदायक बन जाते हैं। तो ऐसे विशेषताओं को सेवा में लगाए फल पाते रहना।

3.12.84.. .. शक्तियाँ भी निर्भय हैं ना! शक्तियाँ सदा विजयी सदा निर्भय। जब बाप की छत्रछाया के नीचे रहने वाले हैं तो निर्भय ही होंगे। जब अपने को अकेला समझते हो तो भय होता। छत्रछाया के अन्दर भय नहीं होता। सदा निर्भय। शक्तियों की विजय सदा गाई हुई है।

10.12.84.. .. वर्तमान समय की हलचल की दुनिया अर्थात् दु:ख के वातावरण वाली दुनिया में बापदादा अपने अचल अडोल बच्चों को देख रहे हैं। हलचल में रहते न्यारे और बाप के प्यारे कमल पुष्पों को देख रहे हैं। भय के वातावरण में रहते निर्भय, शक्ति स्वरूप बच्चों को देख रहे हैं। इस विश्व के परिवर्तक बेफ़िकर बादशाहों को देख रहे हैं। ऐसे बेफ़िकर बादशाह हो जो चारों ओर के फ़िकरात के वायुमण्डल का प्रभाव अंश मात्र भी नहीं पड़ सकता है। वर्तमान समय विश्व में मैजारिटी आत्माओं में भय और चिन्ता यह दोनों ही विशेष सभी में प्रवेश हैं। लेकिन जितने ही वह फ़िकर में हैं, चिंता में हैं उतने ही आप शुभ चिन्तक हो। चिन्ता बदल शुभ चिन्तक के भावना स्वरूप बन गये हो। भयभीत के बजाए सुख के गीत गा रहे हो। इतना परिवर्तन अनुभव करते हो ना!

12.12.84.. .. दुनिया में भी आजकल सीट के पीछे भाग-दौड़ कर रहे हैं। आपको कितनी बढ़िया सीट मिली हुई है। जिस सीट से कोई उतार नहीं सकता। उन्हों को कितना डर रहता है, आज सीट है कल नहीं। आपको अविनाशी है, निर्भय होकर बैठ सकते हो। तो साक्षी-पन की सीट पर सदा रहते हो? अपसेट वाला सेट नहीं हो सकता। सदा इस सीट पर सेट रहो। यह ऐसी आराम की सीट है जिस पर बैठकर जो देखने चाहो जो अनुभव करने चाहो वह कर सकते हो।

17.12.84.. .. आप सब बच्चे 'निर्भय' हो ना। क्यों? क्योंकि आप सदा 'निर्वैर' हो। आपका किसी से भी वैर नहीं है। सभी आत्माओं के प्रति भाई-भाई की शुभ भावना, शुभ कामना है। ऐसी शुभ भावना, कामना वाली आत्मायें सदा निर्भय रहती हैं। भयभीत होने वाले नहीं। स्वयं योगयुक्त स्थिति में स्थित हैं तो कैसी भी परिस्थिति में सेफ जरूर हैं। तो सदा सेफ़ रहने वाले हो ना? बाप की छत्रछाया में रहने वाले सदा सेफ है। छत्रछाया से बाहर निकले तो फिर भय है। छत्रछाया के अन्दर निर्भय हैं। कितना भी कोई कुछ भी करे लेकिन बाप की याद एक किला है। जैसे किले के अन्दर कोई नहीं आ सकता, ऐसे याद के किले के अन्दर सेफ़। हलचल में भी अचल। घबराने वाले नहीं। यह तो कुछ भी नहीं देखा। यह रिहर्सल है। रीयल तो और है। रिहर्सल पक्का कराने के लिए की जाती है। तो पक्के हो गये, बहादुर हो

गये? बाप से लगन है तो कैसी भी समस्याओं में पहुँच गये। समस्या जीत बन गये। लगन निर्विघ्न बनने की शक्ति देती है। बस सिर्फ 'मेरा बाबा' यह महामंत्र याद रहे। यह भूला तो गये। यही याद रहा तो सदा सेफ़ हैं।

26.12.84.. .. सत्यता के शक्ति की निशानी है – वह सदा निर्भय होगा। जैसे मुरली में सुना है – ''सच तो बिठो नच'' अर्थात् सत्यता की शक्ति वाला सदा बेफिकर निश्चिन्त होने के कारण, निर्भय होने के कारण खुशी में नाचता रहेगा।

30.1.85.. .. नालेज जीवन में धारण करना अर्थात नालेज़ को शस्त्र बना देना। तो शस्त्रधारी शक्तिशाली होंगे ना। आज मिलिट्री वाले शक्तिशाली किस आधार से होते हैं? शस्त्र हैं, बन्दूक हैं तो निर्भय हो जाते हैं। तो नालेज़फुल जो होगा वह पावरफुल ज़रूर होगा। तो माया की भी पूरी नालेज़ है। क्या होगा कैसे होगा पता नहीं पड़ा, माया कैसे आ गई, यह नालेज़फुल नहीं हुए। नालेज़फुल आत्मा पहले से ही जानती है। जैसे समझदार जो होते हैं वह बीमारी को पहले से ही जान लेते हैं। बुखार आने वाला होता तो पहले से ही समझेंगे कि कुछ हो रहा है, पहले से ही दवा लेकर अपने को ठीक कर देंगे और स्वस्थ हो जायेंगे।

21.2.85.. .. विनाश ज्वाला की आग्नि से बचने का साधन – निर्भयता की शक्ति है। निर्भयता, विनाश ज्वाला के प्रभाव से डगमग नहीं करेगी। हलचल में नहीं लाएगी। निर्भयता के आधार से विनाश ज्वाला में भयभीत आत्माओं को शीतलता की शक्ति देंगे। आत्मा भय की अग्नि से बच शीतलता के कारण खुशी में नाचेगी। विनाश देखते भी स्थापना के नजारे देखेंगे। उनके नयनों में एक आँख में मुक्ति-स्वीट होम दूसरी आँख में जीवन मुक्ति अर्थात् स्वर्ग समाया हुआ होगा। उसको अपना घर, अपना राज्य ही दिखाई देगा। लोग चिल्लायेंगे हाय गया, हाय मरा और आप कहेंगे अपने मीठे घर में, अपने मीठे राज्य में गया। नथिंग न्यू। यह घुँघरू पहनेंगे। हमारा घर, हमारा राज्य – इस खुशी में नाचते-गाते साथ चलेंगे। वह चिल्लायेंगे और आप साथ चलेंगे। सुनने में ही सबको खुशी हो रही है तो उस समय कितनी खुशी में होंगे! तो चारों ही आग से शीतल हो गये हो ना? सुनाया ना – विनाश ज्वाला से बचने का साधन है – 'निर्भयता'। ऐसे ही विकारों की आग के अंश मात्र से बचने का साधन है – अपने आदि-अनादि वंश को याद करो। अनादि बाप के वंश सम्पूर्ण सतोप्रधान आत्मा हूँ। आदि वंश-देव आत्मा हूँ। देव आत्मा 16 कला सम्पन्न, सम्पूर्ण निर्विकारी है। तो अनादि-आदि वंश को याद करो तो विकारों का अंश भी समाप्त हो जायेगा।

15.1.86.. .. आज की दुनिया में धन भी है और भय भी हैं। जितना धन उतना भय में ही खाते, भय में ही सोते। और आप बेफिकर बादशाह बन जाते। निर्भय बन जाते हो। भय को भी भूत कहा जाता है। आप उस भूत से भी छूट जाते हो। छूट गये हो ना। कोई भय है? जहाँ मेरापन होगा वहाँ भय ज़रूर होगा। मेरा बाबा। सिर्फ एक ही शिवबाबा है जो निर्भय बनाता है। उनके सिवाए कोई भी सोना-हिरण भी अगर मेरा है तो भी भय है। तो चेक करो मेरा-मेरा का संस्कार ब्राह्मण जीवन में भी किसी भी सूक्ष्म रूप में रह तो नहीं गया है?

18.1.86.. .. अपनी सेफ्टी के लिए भी मन्सा शक्ति साधन बनेगी। मन्सा शक्ति द्वारा ही स्वयं की अन्त सुहानी बनाने के निमित्त बन सकेंगे। नहीं तो साकार सहयोग समय पर सरकमस्टांस प्रमाण न भी प्राप्त हो सकता है। उस समय मन्सा शक्ति अर्थात् श्रेष्ठ संकल्प शक्ति, एक के साथ लाइन क्लीयर नहीं होगी तो अपनी कमजोरियाँ पश्चाताप के रूप में भूतों के मिसल अनुभव होंगी। क्योंकि स्मृति में कमज़ोरी आने से भय – भूत की तरह अनुभव होगा। अभी भले कैसे भी चला लेते हो लेकिन अन्त में भय अनुभव होगा। इसलिए अभी से बेहद की सेवा के लिए, स्वयं की सेफ्टी के लिए मन्सा शक्ति और निर्भयता की शक्ति जमा करो, तब ही अन्त सुहाना और बेहद के कार्य में सहयोगी बन बेहद के विश्व के राज्य अधिकारी बनेंगे। अभी आपके साथी, आपके सहयोग का इन्तजार कर रहे हैं। कार्य चाहे अलग-अलग है लेकिन परिवर्तन के निमित्त दोनों ही हैं। वह अपनी रिजल्ट सुना रहे थे।

27.2.86.. .. हर स्थान पर कोई न कोई बाप के बिछुड़े हुए रत्न हैं ही। जहाँ भी पाँव रखते हैं तो कोई न कोई निकल ही आते। बेपरवाह निर्भय हो करके सेवा में लगन से आगे बढ़ते हैं तो पद्म गुणा मदद भी मिलती है।

13.3.86.. .. दुनिया भय के वश है और आप निर्भय बन सदा खुशी में नाचते गाते रहते हो।

9.4.86.. .. नालेजफुल आत्मायें, पावरफुल आत्मायें सदा स्वत: ही अचल रहती हैं। तो कभी वायुमण्डल से घबराते तो नहीं हो! निर्भय हो? शक्तियाँ निर्भय हो? या थोड़ा-थोड़ा डर लगता है? क्योंकि यह तो पहले से ही – स्थापना के समय से ही जानते हो कि भारत में 'सिविल वार' होनी ही है। यह शुरू के चित्रों में ही आपका दिखाया हुआ है। तो जो दिखाया है वह होना तो है ना! भारत का पार्ट ही सिविल वार से है इसलिए नथिंग न्यू।

20.3.87.. .. सत्यता की प्राप्ति ख़ुशी और निर्भयता है। सत्य बोलने वाला सदा निर्भय होगा। उनको कब भय नहीं होगा। जो सत्य नहीं होगा तो उनको भय ज़रूर होगा। तो आप सभी सत्यता के शक्तिशाली श्रेष्ठ आत्मायें हो। सत्य ज्ञान, सत्य बाप, सत्य प्राप्ति, सत्य याद, सत्य गुण, सत्य शक्तियाँ सर्व प्राप्ति हैं। तो इतनी अथॉर्टी का नशा रहता है? अथॉर्टी का अर्थ अभिमान नहीं है। जितना बड़े-ते-बड़ी अथॉर्टी, उतना उनकी वृत्ति में रूहानी अथॉर्टी रहती है।

20.3.87.. .. डबल विदेशी सब कहते हैं – हम लास्ट सो फ़ास्ट सो फ़र्स्ट हैं। तो समय में भी फ़ास्ट सो फ़र्स्ट होंगे ना। निर्भयता की अथॉर्टी ज़रूर रखो। एक ही बाप का नया ज्ञान सत्य ज्ञान है और नये ज्ञान से नई दुनिया स्थापन होती है – यह अथॉर्टी और नशा स्वरूप में इमर्ज (प्रत्यक्ष) हो।

20.3.87.. .. धरनी, नब्ज, समय यह सब देख करके ज्ञान देना – यही नॉलेजफुल की निशानी है। आत्मा की इच्छा देखो, नब्ज देखो, धरनी बनाओ लेकिन अन्दर सत्यता के निर्भयता की शक्ति ज़रूर हो। लोग क्या कहेंगे – यह भय न हो। निर्भय बन धरनी भल बनाओ। कई बच्चे समझते हैं – यह ज्ञान तो नया है, कई लोग समझ ही नहीं सकेंगे। लेकिन बेसमझ को ही तो समझाना है। यह ज़रूर है – जैसा व्यक्ति वैसी रूपरेखा बनानी पड़ती है, लेकिन व्यक्ति के प्रभाव में नहीं आ जाओ। अपने सत्य ज्ञान की अथॉर्टी से व्यक्ति को परिवर्तन करना ही है – यह लक्ष्य नहीं भूलो।

20.3.87.. .. कितनी भी कलराठी धरनी हो, किस भी धर्म वाला हो, किस भी पोज़ीशन वाला हो लेकिन इस धरनी पर वह भी नर्म हो जाते हैं और नर्म धरनी बनने के कारण उसमें जो भी बीज डालेंगे, उसका फल सहज निकलेगा। सिर्फ डरो नहीं, निर्भय ज़रूर बनो। युक्ति से दो, ऐसा न हो कि वह आप लोगों को यह उल्हना दें कि ऐसी धरनी पर भी मैं पहुँचा लेकिन यह मालूम नहीं पड़ा कि परमात्म-ज्ञान क्या है? परमात्म-भूमि पर आकर परम-आत्मा की प्रत्यक्षता का सन्देश ज़रूर ले जाएँ। लक्ष्य अथॉर्टी का होना चाहिए।

13.12.89.. .. जो सदा दिलतख्तनशीन हैं वह निश्चित ही निश्चिन्त हैं। जैसे कहते हैं - भावी टाली नहीं जाती, अटल होती है। ऐसे दिलतख्तनशीन आत्मा निर्भय है, निश्चिन्त हैं - यह निश्चित है, अटल है। दिलतख्त पर माया आ नहीं सकती। थोड़ा आकर्षण करके बाहर

निकालने की कोशिश ज़रूर करेगी। जैसे सीता के लिए दिखाते हैं - लकीर से बाहर पाँव निकाला तब रावण आया, नहीं तो आ नहीं सकता। तो संकल्प भी बाहर निकलने का आया तो माया आ जायेगी। अगर दिलतख्त पर हो तो आ नहीं सकती। तो सिर्फ दिलतख्त पर बैठ जाओ।

21.12.89.. .. पंजाब वाले निर्भय तो बन गये। डरने वाले तो नहीं हो न? ज्वालामुखी हो, डरना क्यों? मरे तो पड़े ही हो, फिर डरना किससे? सभी निर्भय ज्वालामुखी बन प्रकृति और आत्माओं के अंदर जो तमोगुण है उसे भस्म करने वाले बनो। यह बहुत बड़ा काम है, स्पीड से करेंगे तब पूरा होगा।

13.2.91.. .. अभी प्रकृति ने फुल फोर्स की हलचल शुरु नहीं की है। करती है लेकिन फिर आप लोगों को देखकर थोड़ा ठन्डी हो जाती है। वह भी डर जाती है कि मेरे मालिक तैयार नहीं हैं। किसकी दासी बनें? निर्भय हो ना? डरने वाले तो नहीं हो ना? लोग डरते हैं मरने से और आप तो है ही मरे हुए। पुरानी दुनिया से मरे हुए हो ना? नई दुनिया में जीते हो, पुरानी दुनिया से मरे हुए हो, तो मरे हुए को मरने से क्या डर लगेगा? और ट्रस्टी हो ना? अगर कोई भी मेरापन होगा तो माया बिल्ली म्याऊं म्याऊं करेगी। मैं आऊं, मैं आऊं...। आप तो हो ही ट्रस्टी। शरीर भी मेरा नहीं। लोगों को मरने का फिकर होता है या चीजों का या परिवार का फिक्र होता है। आप तो हो ही ट्रस्टी। न्यारे हो ना, कि थोड़ा-थोड़ा लगाव है? बॉडी कान्सेसनेस है तो थोड़ा-थोड़ा लगाव है। इसलिए तपस्या अर्थात् ज्वाला स्वरूप, निर्भय।

3.11.92.. .. दुनिया घबराये और आप खुशी में, मौज में घबराने वालों को भी शक्ति दो। सदा सामने मौत को देखते हुए बाप ही याद आता है ना। तो और ही याद में रहने का वातावरण मिला हुआ है। वैसे भी कहा जाता है कि मृत्यु के समय कौन याद आता है? तो आपको भी अकाले मृत्यु का समाचार मिलता है। मृत्युलोक को देख अपना स्वर्ग अर्थात् अमर लोक याद आता है। आज मृत्युलोक है, कल हमारा राज्य होगा! यह खुशी है ना। आज को देख कल की याद और ही ज्यादा आती है। तो सभी निर्भय रहने वाले हो ना।

20.12.92.. .. दुनिया में है धमाल और आपके पास समाचारों में कमाल है। जितनी धमाल होगी उतनी आपकी कमाल होगी और प्रत्यक्ष होते जायेंगे। दुनिया वाले डरते हैं और आप और ही निर्भय होते हैं। निर्भय हो या धमाल से डरते हो? जितनी धमाल देखते हो उतना यही सोचते हैं कि आज धमाल है और कल हमारी कमाल हुई ही पड़ी है! बैलेन्स चल रहा है ना। देखो, डिग्री भी मिल रही है, (दादी जी को उदयपुर युनिवर्सिटी से डॉक्टरेट की डिग्री मिलने

वाली है) मकान भी मिल रहे हैं। जो असम्भव बातें हैं वो सम्भव हो रही हैं। तो यह कमाल है ना।

18.1.93.. ..जब भी कोई ऐसी बात होती है तो क्या कहते हैं? योग लगाओ, अखण्ड योग करो। तो दुनिया की अशान्ति और ब्राह्मणों का गोल्डन चान्स। तो यह भी बीच-बीच में चान्स मिलता है बुद्धि को और एकाग्र करने का। (कर्फ्यू के समय क्लास में नहीं आ सकते हैं) लेकिन स्टूडेन्ट माना स्टडी जरूर करेंगे। घर में तो कर सकते हैं ना। टीचर का काम ही है–अपनी योग-शक्ति से अपने एरिया में कर्फ्यू खत्म कराना। यह सीन भी देखने से निर्भयता का अनुभव बढ़ता जाता है।

दुनिया में हर समय क्वेश्चन-मार्क है कि क्या होगा? और आपके पास क्या है? फुलस्टॉप। जो हुआ सो अच्छा और जो होना है वो हमारे लिए अच्छा है। दुनिया के लिए अकाले मृत्यु है और आपके लिए मौज है। डर लगता है? थोड़ा-थोड़ा खून देखकर के डर लगेगा? आपके सामने 7-8 को गोली लग जाये तो डरेंगे? नींद में दिखाई तो नहीं देंगे ना! शक्ति सेना अर्थात् निर्भय। न माया से भय है, न प्रकृति की हलचल से भय है। ऐसे निर्भय हो या थोड़ा-थोड़ा कमजोरी है?

27.2.96.. .. सत्यता की शक्ति से दिव्यता को धारण करो। कुछ भी सहन करना पड़े, घबराओ नहीं। सत्य समय प्रमाण स्वयं सिद्ध होगा। कहते भी हो ना कि सत्य की नाव डोलती है लेकिन डूबती नहीं, तो किनारा तो ले लेंगे ना। निर्भय बनो। अगर कहाँ भी सामना करना पड़ता है तो ब्रह्मा बाप के जीवन को आगे रखो। ब्रह्मा बाप के आगे दुनिया की परिस्थितियां तो थी लेकिन वेराइटी बच्चों की भी परिस्थितियां रहीं लेकिन संगठन में होते, जिम्मेवारी होते सत्यता की शक्ति से विजयी हो गये। बच्चों की खिटखिट ब्रह्मा बाप ने नहीं देखी क्या? ब्रह्मा बाप के आगे भी वेराइटी समय और संकल्प के खजाने की बचतकर जमा का खाता बढ़ाओ। संस्कार वाली आत्मायें रही, लेकिन इतनी सब परिस्थितियां होते हुए सत्यता की स्व-स्थिति ने सम्पूर्ण बना दिया। तो आप सबको क्या बनना है? चतुराई तो नहीं है ना! बहुत अच्छा बोलते हैं – मैंने कुछ नहीं किया थोड़ा चतुराई से तो चलना ही पड़ता है। लेकिन कब तक? तो सहनशक्ति धारण कर असत्य का सामना करो। प्रभाव में नहीं आ जाओ।

23.2.97.. .. जैसे बाप की नालेज विस्तार से जानते हो ना, ऐसे माया के भी बहुरूपी रूप की पहचान, नालेज अच्छी तरह से धारण कर लो। वह सिर्फ डराती है, जैसे छोटे बच्चे होते हैं ना तो उनको माँ बाप निर्भय बनाने के लिए डराते हैं। कुछ करेंगे नहीं, जानबूझकर डराने के लिए करते हैं। ऐसे माया भी अपना बनाने के लिए बहुरूप धारण करती है। जब बहुरूप धारण करती है तो आप भी बहुरूपी बन उसको परख लो।

14.12.97.. को समाधान रूपी पॉजिटिव बनाओ। यह कारण, यह कारण, यह कारण... कारण वा समस्या को पॉजिटिव समाधान बनाओ.. बापदादा पहले से ही सुना देता है कि

घबराने वाली बातें आयेंगी लेकिन आप घबराना नहीं। अपने शस्त्र छोड़ नहीं दो। जो घबराता है ना तो जो भी हाथ में चीज़ होती है वह गिर जाती है। तो जब यह मन में भी घबराते हैं ना तो शस्त्र व शक्तियां जो हैं वह गिर जाती हैं, मर्ज हो जाती हैं। इसीलिए घबराओ नहीं, पहले से ही पता है। त्रिकालदर्शी बनो, निर्भय बनो। ब्राह्मण आपस में सम्बन्ध में निर्भय नहीं बनना, माया से निर्भय बनो। संबंध में तो स्नेह और निर्माण। कोई कैसा भी हो आप दिल से स्नेह दो, शुभ भावना दो, रहम करो। निर्माण बन उसको आगे रख आगे बढ़ाओ।

31.12.97.. .. कभी शेर आ जाता है, शेर क्या करता है? निर्भय वालों को भय पैदा कर देता है। सर्वशक्तिवान बच्चों को दिलशिकस्त बना देता है। ऐसे नहीं करना, आने नहीं देना, डबल लॉक लगाकर ही रखना। इस वर्ष किसी को भी आने नहीं देना।

13.2.99.. .. पहले सोच रहे थे, 99 में क्या होगा? कुछ हुआ क्या? फरवरी तो आ गई। अगर होगा भी तो आपको क्या है? आपको कोई नुकसान है? भय है? क्या होगा, उसका भय होता है? आपके लिए अच्छा ही होगा। दुनिया के लिए कुछ भी हो जाए आपको निर्भय और हर्षितमुख हो खेल देखना है। खेल में खून भी दिखाते हैं तो प्यार भी दिखाते हैं। लड़ाई भी दिखाते हैं तो अच्छी बातें भी दिखाते हैं। फ़िर खेल में भय होता है क्या? क्या होगा, क्या हुआ, क्या हुआ? यह सोचते हैं क्या? मजे से बैठकर देखते हैं। तो यह भी बेहद का खेल है। अगर जरा भी भय वा घबराहट होगी – क्या हो गया, क्या हो गया... ऐसा तो होना नहीं चाहिए, क्यों हो गया तो ऐसी स्थिति वाले को इफ़ेक्ट आयेगा।तो होना नहीं चाहिए, क्यों हो गया तो ऐसी स्थिति वाले को इफ़ेक्ट आयेगा। अच्छे में अच्छी स्थिति और गड़बड़ की स्थिति में खुद भी गड़बड़ में आ जायेंगे, हलचल में आ जायेंगे। इसलिए 99 हो या 2 हज़ार हो, आपको क्या है? होने दो खेल। मजे से देखो। घबराना नहीं। हाय यह क्या हो गया! संकल्प में भी नहीं आये। सब पूछते हैं 99 में क्या होगा? कुछ होगा, नहीं होगा। बापदादा कहते हैं आप लोगों ने ही प्रकृति को सेवा दी है कि खूब सफ़ाई करो, उसको लम्बा-लम्बा झाड़ू दिया है, सफ़ा करो। तो घबराते क्यों हो? आपके आर्डर से वह सफ़ाई करायेगी तो आप क्यों हलचल में आते हो? आपने ही तो आर्डर दिया है। तो अचल-अडोल बन मन और बुद्धि को बिल्कुल शक्तिशाली बनाए अचल-अडोल स्थिति में स्थित हो जाओ। प्रकृति का खेल देखते चलो। घबराना नहीं। आप अलौकिक हो, साधारण नहीं हो। साधारण लोग हलचल में आयेंगे, घबरायेंगे। अलौकिक, मास्टर सर्वशक्तिवान आत्मायें खेल देखते अपने विश्व-कल्याण के कार्य में बिज़ी रहेंगे। अगर मन और बुद्धि को फ्री रखा तो घबरायेंगे। मन और बुद्धि से लाइट हाउस हो, लाइट फैलायेंगे, इस कार्य में बिज़ी रहेंगे तो बिज़ी आत्मा को भय नहीं होगा, साक्षीपन होगा; और कोई भी हलचल हो अपने बुद्धि को सदा ही क्लीयर रखना, क्यों-क्या में बुद्धि को बिज़ी वा भरा हुआ नहीं रखना, खाली रखना। एक बाप और मैं.. तब समय अनुसार चाहे पत्र, टेलीफोन, टी.वी. वा आपके जो भी साधन निकले हैं, वह नहीं भी पहुँचे

तो बापदादा का डायरेक्शन क्लीयर कैच होगा। यह साइंस के साधन कभी भी आधार नहीं बनाना। यूज़ करो लेकिन साधनों के आधार पर अपनी जीवन को नहीं बनाओ। कभी-कभी साइंस के साधन होते हुए भी यूज़ नहीं कर सकेंगे। इसलिए साइलेन्स का साधन – जहाँ भी होंगे, जैसी भी परिस्थिति होगी बहुत स्पष्ट और बहुत जल्दी काम में आयेगा। लेकिन अपने बुद्धि की लाइन क्लीयर रखना। समझा। आप ही तो आह्वान कर रहे हैं कि जल्दी-जल्दी गोल्डन एज़ आ जावे। तो गोल्डन एज़ में यह सफ़ाई चाहिए ना। तो प्रकृति अच्छी सफ़ाई करेगी।तो आज के दिन संकल्प नहीं लेकिन दृढ़ संकल्प क्या लिया? एकानामी का अवतार बनना ही है। चाहे संकल्प में, चाहे बोल में, चाहे साधारण कर्म की एकानामी। और दूसरी बात – सदा बुद्धि को क्लीयर रखना। जिसको दूसरे शब्दों में बापदादा कहते हैं – सच्ची दिल पर साहेब राज़ी। सच्ची दिल, साफ़ दिल। वर्तमान समय में सच्चाई और सफ़ाई की आवश्यकता है। दिल में भी सच्चाई, परिवार में भी सच्चाई और बाप से भी सच्चाई। समझा। आज के दिन कहना नहीं था लेकिन कह दिया। बापदादा का प्यार है ना तो ज़रा भी कमज़ोरी बापदादा देख नहीं सकते। बापदादा सदा हर बच्चे को अपने जैसा सम्पूर्ण देखने चाहते हैं। चारों ओर हलचल है, प्रकृति के सभी तत्त्व खूब हलचल मचा रहे हैं, एक तरफ भी हलचल से मुक्त नहीं हैं, व्यक्तियों की भी हलचल है, प्रकृति की भी हलचल है, ऐसे समय पर जब इस सृष्टि पर चारों ओर हलचल है तो आप क्या करेंगे? सेफ़्टी का साधन कौन-सा है? सेकण्ड में अपने को विदेही, अशरीरी वा आत्म-अभिमानी बना लो तो हलचल में अचल रह सकते हो। इसमें टाइम तो नहीं लगेगा? क्या होगा? अभी ट्रायल करो – एक सेकण्ड में मन-बुद्धि को जहाँ चाहो वहाँ स्थित कर सकते हो? (ड्रिल) इसको कहा जाता है – ''साधना''। अच्छा।

15.11.99.. .. आखरिन रीयल जब पार्ट बजेगा, उसमें साक्षी और निर्भय होकर देखें भी और पार्ट भी बजावें। कौन-सा पार्ट? दाता के बच्चे, दाता बन जो आत्माओं को चाहिए वह देते रहें। तो मास्टर दाता हैं ना? स्टॉक जमा करो, जितना स्टॉक अपने पास होगा उतना ही दाता बन सकेंगे। अन्त तक अपने लिए ही जमा करते रहेंगे तो दाता नहीं बन सकेंगे। अनेक जन्म जो श्रेष्ठ पद पाना है, वह प्राप्त नहीं कर सकते हैं, इसीलिए एक तो अपने पास स्टॉक जमा करो। शुभ भावना, श्रेष्ठ कामना का भण्डार सदा भरपूर हो। दूसरा – जो विशेष शक्तियाँ हैं, वह शक्तियाँ जिस समय, जिसको जो चाहिए वह दे सको। अभी समय अनुसार सिर्फ अपने पुरुषार्थ में संकल्प और समय दो, साथ-साथ दाता बन विश्व को भी सहयोग दो। अपना पुरुषार्थ तो सुनाया - अमृतवेले ही यह सोचो कि – 'मैं आज्ञाकारी बच्चा हूँ!' हर कर्म के लिए आज्ञा मिली हुई है। उठने की, सोने की, खाने की, कर्मयोगी बनने की। हर कर्म की आज्ञा मिली हुई है। आज्ञाकारी बनना यही बाप समान बनना है। बस, श्रीमत पर चलना, न मनमत, न परमत। एडीशन नहीं हो। कभी मनमत पर, कभी परमत पर चलेंगे तो मेहनत

करनी पड़ेगी। सहज नहीं होगा क्योंकि मनमत, परमत उड़ने नहीं देगी। मनमत, परमत बोझ वाली है और बोझ उड़ने नहीं देगा। श्रीमत डबल लाइट बनाती है। श्रीमत पर चलना अर्थात् सहज बाप समान बनना। श्रीमत पर चलने वाले को कोई भी परिस्थिति नीचे नहीं ले आ सकती। तो श्रीमत पर चलना आता है?

4.2.2001.. ..हिम्मत बहुत आवश्यक है। कोई भी कार्य में हिम्मत है तो समझो सफलता है। हिम्मत कम सफलता कम। इसलिए हिम्मत और निर्भय, भय में नहीं आना, यह क्या हो रहा है। मर रहा है कोइ तो वह मर रहा है, भय आपको आ रहा है। निर्भय। ठीक है उसको शान्ति का सहयोग दो, उस आत्मा को रहमदिल की भावना से सहयोग दो, भय में नहीं आओ।भय सबसे बड़े में बड़ा भूत है। और भूत निकल सकते हैं, भय का भूत बहुत मुश्किल निकलता है। किसी भी बात का भय, सिर्फ मरने वालों का भय नहीं, कई बातों का भय होता है। जो अनेक प्रकार के भय हैं, अपनी कमज़ोरी के कारण भी भय होता है। उन सबमें निर्भय बनने का जो सहज साधन है, वह है – 'सदा साफ़ दिल, सच्ची दिल'। तो भय कभी नहीं आयेगा। जरूर कोई दिल में बात समाई हुई होती है जिससे भय होता है। साफ दिल, सच्ची दिल तो साहेब राज़ी और सर्व भी राज़ी।

24.7.2001.. .. निर्भय बन, बेफिकर बादशाह की स्थिति में स्थित रहो। सदा यह याद रहे कि होना ही था, वह हो रहा है।

3.3.2002..... .. कुछ समय के बाद बाबा बोले, हालतें तो हर दिन बदलती रहती हैं। इसलिए जिन भी बच्चों को आना है उन दिनों का ताज़ा वातावरण देख योगयुक्त बुद्धि से निर्भय, शुभ, निरसंकल्प हो निर्णय कर आ सकते हैं।

21.3.2003.......सब बच्चे भी बहुत पॉवरफुल स्थिति से शक्ति रूप में खड़े थे। फिर बाबा बोले, बापदादा ने तो पहले ही इशारा दिया है कि अब बीच-बीच में यह एक तरफ हलचल दूसरे तरफ आपकी अचल स्थिति का खेल चलना ही है। आप के निर्भय, निर-व्यर्थ, निश्चय बुद्धि के पेपर होने ही हैं। इसलिए आप सब अनेक बार के निश्चय बुद्धि विजयी रत्न हो ना!

30.3.2014........बापदादा आप बच्चों को देखकर एक बात में बहुत खुश होते, वह कौन सी बात? चाहे बातें कितनी भी आयें लेकिन निर्भय बन मैजारिटी आगे बढ़ रहे हैं।

30.3.2014........जैसे बाप की नॉलेज विस्तार से जानते हो ना, ऐसे माया के भी बहुरूपी रूप की पहचान, नॉलेज अच्छी तरह से धारण कर लो। वह सिर्फ डराती है, जैसे छोटे बच्चे होते हैं ना तो उनको माँ बाप निर्भय बनाने के लिए डराते हैं।

8. उमंग-उत्साह

3.10.1969 जब तक यह वायदा नहीं किया कि जो सोचेंगे, बालेंगे, जो सुनेंगे, जो करेंगे सो श्रीमत के बिना कुछ नहीं करेंगे। तब तक इस भट्ठी से लाभ नहीं ले सकते हैं। ऐसा ही उमंग-उत्साह लेकर आये हो ना। कुछ बनकर ही निकलेंगे, बदलकर ही निक-लेंगे। यह सोचकर आये हो ना? घबराहट तो नहीं होती है? जितना-जितना गहराई में जायेंगे उतना ही घबराहट गायब हो जायेगी।

16.10.1969 ... पाण्डव सेना है ज्ञानी तू आत्मा और शक्ति सेना है स्नेही तू आत्मा। जो स्नेही हैं वह योगी हैं। अभी तो एक-एक पाण्डव के मस्तक में उमंग-उत्साह झलक रहा है। यह उमंग और उत्साह एकरस सदा रहे। मेहनत जो ली है उसका फल दिखाना है। अगर मेहनत ली हुई यहाँ चुक्तू नहीं करेंगे तो फिर सतयुग में वह मेहनत का फल देना पड़ेगा इसलिए जो मेहनत ली है उसे भरकर देना।

30.5.1971.. 'एक कदम आप उठाओ तो हजार कदम बापदादा आगे आयेंगे', न कि 10 कदम। इन महावाक्यों में आज्ञा भी है कि एक कदम आगे बढ़ाओ और फिर प्रतिज्ञा भी है कि हजार कदम बापदादा भी आगे बढ़ेंगे। ऐसे उमंग- उत्साह दिलाने वाले महावाक्य सदैव स्मृति में रहने चाहिएं।

सर्यूवंशी राज्य करने वाले क्या थे कैसे राज्य किया और किस शक्ति के आधार पर से ऐसा राज्य किया? वह स्मृति और साथ-साथ अब संगमयुग के ईश्वरीय कुल की स्मृति अगर यह दोनों ही स्मृति बुद्धि में आ जाती हैं तो फिर समर्थी आ जाती है। जिस समर्थी से फिर माया का सामना करना सरल हो जाता है। स्मृति से अपने में पहले समर्थी को लाओ। फिर कार्य करो। तो भले कैसा भी कमज़ोर होगा लेकिन स्मृति के आधार से उस समय के लिए समर्थी आ जायेगी। भले पहले वह अपने को उस कार्य के योग न समझते होंगे लेकिन स्मृति से वह अपने को योग देखकर आगे के लिए उमंग-उत्साह में आयेंगे।

10.6.1971 .. अपना उमंग-उत्साह और एकरस अवस्था सदैव रहे। कितना भी कोई किन बातों द्वारा आप लोगों को हराने की कोशिश करे, लेकिन जब प्रैक्टिकल अनुभवीमूर्त होकर के उनको आत्मिक दृष्टि और पावरफुल स्थिति में स्थित होकर दो शब्द भी पावरफुल बोलेंगे तो वह अपने को कागज़ का शेर समझेंगे

1.8.1971 .... हिम्मत के साथ उल्लास भी चाहिएं, जिससे दूर से ही मालूम हो कि इन्हों के पास कोई विशेष प्राप्ति है। जो प्राप्ति वाले होते हैं उनके हर चलन, नैन-चैन से वह उमंग-उत्साह दिखाई देता है।

13.1.1978 ... कुछ भी हो लेकिन स्वयं का उमंग-उत्साह हर सेकेण्ड नया होना चाहिए। स्वयं के उमंग-उत्साह का आधार स्वयं है, उसमें कोई दूसरा रोक नहीं सकता, उसमें सदा चढ़ती कला होनी चाहिए। रुकना काम है कमज़ोरों का। अच्छा।

21.1.1972 ... नालेज का भले मनन चलता भी है लेकिन अपने में एक-एक प्वाइंट द्वारा जो शक्ति भरनी है वह कम भरते हो, इसलिए मेहनत जादा और रिजल्ट कम हो जाती है। मन में, प्लैनिंग में उमंग- उत्साह बहुत अच्छा रहता है लेकिन प्रैक्टिकल रिजल्ट देखते तो मन में अविनाशी उमंग-उत्साह, उल्लास नहीं रहता।

4.3.1972 ... नालेज वा धारणायें मिली हैं वह बुद्धि में धारण तो की हैं ना। लेकिन प्रैक्टिकल में आने में जो विघ्न रूप बनता वह है स्वयं का आलस्य। अच्छा, कल से लेकर करेंगे, फलाना करे तो हम भी करेंगे, आज सोचते हैं कल से करेंगे, यह कार्य पूरा करके फिर यह करेंगे – ऐसे-ऐसे संकल्प ही आलस्य का रूप हैं। जो करना है वह अभी करना है। जितना करना है वह अभी करना है। बाकी करेंगे, सोचेंगे – इन सूक्ष्म सजाओं से बचने के लिए कर्मों की गुह्य गति को जानकर सावधान रहो। अक्षरों में पिछाड़ी में 'ग-ग' आता है ना, तो यह शब्द है बचपन की निशानी। छोटा बच्चा ग-ग करता रहता है ना, यह अलबेलेपन की निशानी है। इसलिए कब भी आलस्य का रूप अपने पास आने न देना और सदा अपने को उल्लास में रखना। क्योंकि निमित्त बनते हो ना। निमित्त बने हुए सदैव पुरुषार्थ के उल्लास में रहते हैं तो उन्हें देख और भी उल्लास में रहते हैं। चलते-चलते पुरुषार्थ में थकावट आना वा चलते-चलते पुरुषार्थ साधारण रफ्तार में हो जावे, यह किसकी निशानी है? विघ्न न हो लेकिन लगन भी श्रेष्ठ न हो तो उसको भी आलस्य कहेंगे

12.3.1972 अभी असफलता पाने का समा नहीं। अगर 10 बार सफलता हुई, एक बार भी असफल हुये तो उसको असफलता कहेंगे। तो कर्त्तव्य और स्वरूप दोनों साथ-साथ स्मृति में रहें तो फिर कमाल हो। नहीं तो होता क्या है -- मेहनत जास्ती हो जाती है, प्राप्ति बहुत कम होती है। और प्राप्ति कम कारण ही कमजोरी आती है, उत्साह कम होता है, हिम्मत-उल्लास

कम हो जाता है। कारण अपना ही है। अपने पाँव पर स्वयं कटारी चलाते हैं। इसलिए जबकि अपने आप ज़िम्मेवार हैं, तो सदैव अटेन्शन रहना चाहिए।

14.7.1972 ... ब्रह्मा- कुमार-कुमारियां तो सभी हैं। कन्याओं द्वारा बाण मरवाये हैं। बाप खुद सम्मुख नहीं आये, सम्मुख शक्तियों को रखा। तो जब प्रैक्टिकल में शक्ति सेना निमित है तो शक्तियों का जो विशेष कर्त्तव्य गाया हुआ है वह उन्हों से ही गाया हुआ है। वह उमंग-उत्साह है?

असत्य को असत्य सिद्ध करो तब तो सत्य की जय हो। जय-जयकार होगी ही तब। फिर इतनी मेहनत करने की ज़रूरत नहीं। इसके लिए प्लैन्स चाहिए, तरीका चाहिए और अन्दर में वह नशा चाहिए कि हम गुप्त अनुचर हैं, इन्हों के पोल सिद्ध करना हमारा काम है, हम ही इसके लिए निमित्त हैं। यह अन्दर से उमंग-उत्साह आवे, तब यह काम हो सकता है।

16.6.1972.. ..अभी बेहद के घर में बेहद का नशा है, फिर हद के घर में जाने से हद का नशा हो जायेगा। अभी उमंग-उल्लास जो है वह हद में तो नहीं आ जायेगा? जैसे अभी बेहद का उमंग वा उल्लास है, उसमें कुछ अन्तर तो नहीं आ जायेगा ना।

19.7.1972 ...उमंग-उत्साह बढ़ाने के लिये। जिस समय जो जिस स्टेज पर है उसको उस स्टेज का मिलने से खुशी होती है। उमंग-उत्साह बढ़ाने के लिए और एक दो की देख-रेख कराने के लिये यह साधन बनाते थे। इसका भाव यह नहीं था कि वह कोई फाइनल स्टेज का मैडल है। यह है समय की, पुरुषार्थ की बलिहारी का। इससे उमंग- उल्लास आता है, रिजल्ट का मालूम पड़ता है – कौन किस पुरुषार्थ में है वा किसका पुरुषार्थ में अटेन्शन है वा पास होकर विजय के अधिकारी बने हैं।

जो पुरुषार्थ किाा उस विजयी की वैल्यू होती है, ना कि चीज की। आप किसी को थोड़ी सेवा का इनाम देते हो वा क्लास में नाम आउट करते हो तो आगे के लिए उसको छाप लग जाती है, उमंग- उत्साह का तिलक लग जाता है।

18.1.1975 ... विशेष उमंग, उत्साह और लगन से यहाँ तक पहुँचते हो तो यहाँ मधुबन में अपनी लगन को ऐसी अग्नि का रूप बनाओ कि जिस अग्नि में सर्व व्यर्थ संकल्प, सर्व कमजोरियाँ व सब रहे हुए पुराने संस्कार भस्म हो जाएँ।

29.1.1975 ... किस समय कैसा वातावरण व वायुमण्डल है और क्या होना चाहिए – इसको परखने के कारण समय-प्रमाण ही स्वयं को भी और अन्य आत्माओं को भी तीव्र-गति में ला सकेंगे और जैसा समय, वैसा स्वरूप धारण करने का उमंग और उत्साह भी भर सकेंगे तथा समय-प्रमाण नॉलेजफुल और लॉफुल (Lawful) या लवफुल (Loveful) भी बन तथा बना सकेंगे और इस प्रकार सदा सफल बन सकेंगे, क्योंकि कभी लॉफुल बनना है और कभी लवफुल बनना है, इसलिये यह परख होने के कारण सदा सहज ही सफल रहेगे।

27.10.1975... मैजारिटी इस ब्राह्मण जीवन के आदि में अर्थात् पहले-पहले जब बाप द्वारा बाप का परिचय, ज्ञान का खजाना प्राप्त होता है, अपने जन्म-सिद्ध अधिकार का मालूम पड़ता है, याद द्वारा अनुभव प्राप्त होता है, दु:ख, 'सुख' में बदल जाता है, अशान्ति, 'शान्ति' में बदल जाती है और भटकना बन्द हो, ठिकाना मिल जाता – उस शुरू की स्थिति में बहुत अच्छे, तीव्र उमंग-उल्लास वाले, खुशी में झूमने वाले, सेवा में रात-दिन एक करने वाले, सम्बन्ध और शरीर की सुध-बुध भूले हुए, ऐसे फर्स्ट क्लास सर्विस-एबल, नॉलेजफुल और पॉवरफुल स्वयं को भी अनुभव करते हैं और अन्य ब्राह्मण भी उनको ऐसे ही अनुभव करते हैं।

18.1.1976 ... बाप-दादा गिफ्ट (Gift) में दे रहे हैं। उनके अनेक उलाहनों को सेवा और सदा साथ के अनुभव द्वारा उलाहने उमंग-उत्साह के रूप में परिवर्तन कर रहे हैं।

10.1.1977.. मास्टर रचयिता के लिए यह बचपन की बातें शोभती नहीं इस लिए कहा है कि सदैव उमंग, उल्लास की रास में नाचते रहो। सदा वाह मेरा भाग्य! और वाह भाग्य विधाता!! इस सूक्ष्म मन की आवाज़ को सुनते रहो।

2.2.1977... बाप-दादा टीचर्स को देख खुश होते हैं। हिम्मत, उमंग, उल्लास तो बहुत अच्छा है। कदम आगे बढ़ा रही हो लेकिन अपने कार्यों की कहानी का शास्त्र नहीं बनाना। कर्म की रेखा से श्रेष्ठ तकदीर बनानी है। ऐसी कहानी नहीं बनाना जिसका जन्म भी उल्टा तो कहानी भी उल्टी।

6.2.1977... जिसमें परिस्थितियों को सामना करने की शक्ति है, वे सदा उमंग उत्साह में रहेंगे, कनफ्यूज नहीं होंगे। टीचर्स की विशेषता क्या है? टीचर्स इन्वेंटर (Inventor;आविष्कारक), क्रियेटर (Creator;रचयिता), प्लानिंग बुद्धि है; अनेक

आत्माओं को उमंग उल्लास दिलाने वाली है, इन सब विशेषताओं को अब इमर्ज करो। तो हद की बातें मर्ज हो जायेंगी।

14.5.1977... सम्मान देना अर्थात् उस आत्म को उमंग उल्लास में लाकर आगे करना है। यह सदा काल का उमंग उत्साह अर्थात् खुशी का खज़ाना वा स्वयं के सहयोग का, आत्मा को सदा के लिए पुण्यात्मा बना देता है।

16.5.1977.. ..'अलबेलापन और आलस्य।' अनेक प्रकार के माया के आकर्षण के पीछे आकर्षित होना। इसीलिए जो पहला उमंग और उत्साह अनुभव करते हैं, वह चलते-चलते, मायाजीत बनने की सम्पूर्ण शक्ति न होने के कारण कोई पुरुषार्थ हीन हो जाते हैं। फॉलो फादर (Follow Father) करो तो सदा सहज उमंग उल्लास जीवन में अनुभव करेंगे।

13.1.1978 ... कुछ भी हो लेकिन स्वयं का उमंग-उत्साह हर सेकेण्ड नया होना चाहिए। स्वयं के उमंग-उत्साह का आधार स्वयं है, उसमें कोई दूसरा रोक नहीं सकता, उसमें सदा चढ़ती कला होनी चाहिए। रुकना काम है कमज़ोरों का। अच्छा।

1.4.1978... संगठन करना अच्छा है, संगठन से भी उमंग-उल्लास बढ़ता है।

5.2.1979 ... अभी सभी स्थानों पर मध्यम क्वालिटी है, लेकिन आखरीन तो सब तक पहुँचना है, ऐसी विशेष आत्मा निकले जो एक द्वारा अनेकों को सन्देश प्राप्त हो जाए। उमंग-उत्साह पैदा हो जाए, तब तो क्यू लगेगी।

25.1.1979.... दिलशिकस्त को शक्तिवान बनाना – संग के रंग में नहीं आना – सदा उमंग उल्लास में लाना इसको कहा जाता है रिगार्ड।

10.12.1979.. ... आलस्य वाले जल्दी थकते हैं, उमंग वाले अथक होते हैं।

23.3.1981 ... उमंग-उत्साह और इन्वेंशन की खुशबू चारों ओर अच्छी फैलाई। बापदादा के वतन तक पहुँचा।

11.4.1981.. ... बापदादा ऐसे उमंग उत्साह रखने वाले बच्चों के सदा सहयोगी हैं। आपका योग बाप का सहयोग। दोनों से जितना चाहो उतना आगे बढ़ सकते हो। अभी चांस है फिर यह भी समय समाप्त हो जायेगा।

8.11.1981.. ...सोचते बहुत अच्छा हैं लेकिन करते कुछ समय के बाद हैं। उसी समय नहीं करते हैं। इसलिए संकल्प मे जो उस समय की तीव्रता, उमंग-उल्लास-उत्साह होता है वह समय पड़ने से परसेन्टेज कम हो जाती है। जैसे गर्म वा ताजी चीज़ का अनुभव और ठण्डी वा रखी हुई चीज़ का अनुभव में अन्तर आ जाता है ना!

18.11.1981 ...''संशय का रायल रूप''। शक ज़रा-सा लहर के माफिक भी आया तो गया। लेकिन निश्चय बुद्धि विजयन्ति। उसमें यह स्वप्न मात्र संकल्प, लहर मात्र संकल्प भी फाइनल नम्बर में उसे दूर कर देता है। उसका विशेष संस्कार वा स्वभाव अभी अभी बहुत उमंग-उत्साह में उड़ने वाले और अभी अभी स्वयं से दिलशिकस्त। बार-बार जीवन में यह सीढ़ी उतरते और चढ़ते रहेंगे।

पहले तो अपने सम्पूर्ण स्टेज को, स्वयं को वरना है अर्थात् सदा उमंगउत्साह की वरमाला पहननी है तब फिर लक्ष्मी को वरेंगे। वा नारायण को वरेंगे।

23.11.1981... जीना ही सेवा है, चलना ही सेवा है, बोलना, सोचना अब सेवा के लिए। हर नस-नस में सेवा का उमंग और उत्साह भरा हुआ हो। जैसे नसों में खून चलता है तो जीवन है। ऐसे सेवाधारी अर्थात् हर नस यानी हर संकल्प, हर सैकण्ड में सेवा के उमंग-उत्साह का खून भरा हुआ हो

3.4.1982 .. .बेहद की सेवा, बेहद का उमंग-उत्साह है। इससे सफलता भी बेहद की होती है। बहुत अच्छा उमंग रख सेवा की है और सदा ऐसे उमंग उत्साह में रहते आगे बढ़ते रहना। बापदादा जानते हैं, बहुत अच्छे पुराने पालना लिए हुए बच्चे निमित्त बने हैं।

13.6.1982.. सेवा समझ करके निमित्त बन उमंग-उत्साह बढ़ाने का सहारा देना, इस विधि पूर्वक सहारा दे तो कभी भी रिपोर्ट नहीं निकले।

18.2.1983.... सबकी दिल का एक ही उमंग उत्साह है कि मैं बाप समान समीप रतन बन सदा सपूत बच्चे का सबूत दूँ । यह उमंग उत्साह सर्व के उड़ती कला का आधार है। यह उमंग कई प्रकार के आने वाले विघ्नों को समाप्त कर सम्पन्न बनने में बहुत सहयोग देता है। यह उमंग का शुद्ध और दृढ़ संकल्प विजयी बनाने में विशेष शक्तिशाली शस्त्र बन जाता है। इसलिए सदा दिल में उमंग उत्साह को वा इस उड़ती कला के साधन को कायम रखना।

कभी भी उमंग- उत्साह को कम नहीं करना। उमंग है – मुझे बाप समान सर्व शक्तियों, सर्व गुणों, सर्व ज्ञान के खज़ानों से सम्पन्न होना ही है – क्योंकि कल्प पहले भी मैं श्रेष्ठ आत्मा बना था। एक कल्प की तकदीर नहीं लेकिन अनेक बार के तकदीर की लकीर भाग्य विधाता द्वारा खींची हुई है। इसी उमंग के आधार पर उत्साह स्वतः ही उत्पन्न होता है। उत्साह क्या होता? ''वाह मेरा भाग्य''। जो भी बाप दादा ने भिन्न-भिन्न टाइटिल दिये हैं। उसी स्मृति स्वरूप में रहने से उत्साह अर्थात् खुशी स्वतः ही और सदा ही रहती है। सबसे बड़े ते बड़े उत्साह की बात है कि अनेक जन्म आपने बाप को ढूँढा लेकिन इस समय बापदादा ने आप लोगों को ढूँढा।

सदा उमंग और उत्साह में रहने वाली आत्माओं को, एक बल एक भरोसे में रहने वाले बच्चों को, हिम्मते बच्चे मददे बाप का सदा ही अनुभव होता रहता है।

सदा उमंग उत्साह में रहने वाली हिम्मतवान आत्मा बनो। विधाता और वरदाता बाप के सम्बन्ध से बालक सो मालिक बन गए। सर्व खज़ानों के मालिक, जिस खज़ाने में अप्राप्त कोई वस्तु नहीं। ऐसे मालिक उमंग उत्साह में न रहेंगे तो कौन रहेगा! यह सलोगन सदा मस्तक में स्मृति रूप में रहे – ''हम ही थे, हम ही हैं और हम ही रहेंगे।'' याद है ना! इसी स्मृति ने यहाँ तक लाया है। सदा इसी स्मृति भव।

सदा उमंग उत्साह में रहने वाले, सदा बाप दादा की मदद के पात्र

27.3.1983... सदा उमंग उत्साह में उड़ने वाली, कुछ भी हो लेकिन अपनी हिम्मत नहीं छोड़ना। दूसरे की कमज़ोरी देखकर स्वयं दिलशिकस्त नहीं होना। पता नहीं हमारा तो ऐसा नहीं होगा! अगर एक कोई खड्डे में गिरता है तो दूसरा क्या करेगा? खुद गिरेगा या उसको बचाने की कोशिश करेगा? इसलिए कभी भी दिलशिकस्त नहीं होना। सदा उमंग उत्साह के पंखों से उड़ते रहना। किसी भी आकर्षण में नीचे नहीं आना।

30.3.1983.... सबसे ज्यादा चेहरे पर उमंग उल्लास की रौनक वा चमक आने का साधन है, हर गुण, हर शक्ति, हर ज्ञान की पाइंट के अनुभवों से सम्पन्नता।

4.5.1983.. .सदा उमंग और उल्लास में रहने वाले हर बात में नम्बरवन होंगे। याद में भी नम्बरवन, ज्ञान, धारणा सेवा सबमें नम्बरवन। ऐसे हो? नम्बरवन उमंग उल्लास वाले घरों में कैसे रहेंगे! निर्बन्धन होंगे ना!

11.5.1983..बापदादा युवा-वर्ग को देख रहे थे। चाहे कुमार हैं, चाहे कुमारी हैं लेकिन हरेक के मन में उमंग उत्साह है कि हम सभी अपने विश्व को वा देश को वा सुख शान्ति के लिए भटकती हुई आत्माओं अर्थात् अपने भाई बहनों को सुख और शान्ति का अधिकार अवश्य दिलायेंगे। अपने विश्व को फिर से सुख शान्तिमय संसार बनायेंगे। यही दृढ़ संकल्प है ना!

1.6.1983... बाप ब्रह्मा को कहते हैं – 'धैर्य धरो'। लेकिन ब्रह्मा को उमंग बहुत होता है ना। इसलिए वह बाप से यही रूह- रूहान करते कि बच्चे हाथ में हाथ दे मेरे समान बन जाएं। ब्रह्मा बाप के साकार जीवन की आदि से लेकर क्या विशेषता देखी! बच्चे भी किसी भी बात में स्व-परिवर्तन में वा विश्व परिवर्तन में 'कब' शब्द को बदलकर 'अब' के प्रैक्टिकल जीवन में आ जाएँ, यही ब्रह्मा बाप का उमंग सदा रहता है।

5.12.1983.. कभी भी किसी परिस्थिति में वायुमण्डल में उमंग-उत्साह कम होने वाला नहीं। सदा आगे बढ़ने वाले। क्योंकि संगमयुग है ही उमंग-उत्साह प्राप्त कराने वाला। यदि संगम पर उमंग-उत्साह नहीं होता तो सारे कल्प में नहीं हो सकता। अब नहीं तो कब नहीं। ब्राह्मण जीवन ही उमंग-उत्साह की जीवन है। जो मिला है वह सबको बाँटे यह उमंग रहे। और उत्साह सदा खुशी की निशानी है। उत्साह वाला सदा खुश रहेगा। उत्साह रहता – बस, पाना था वो पा लिया।

22.1.1984 ... सभी मिलकर जब कोई एक उमंग उत्साह से कार्य करते हैं तो उसमें सफलता सहज होती है। सभी के उमंग से कार्य हो रहा है ना तो सफलता अवश्य होगी।

13.2.1984... जैसे बाप की महिमा अपरम- अपार है ऐसे बाप के सेवाधारी बच्चों की महिमा भी अपरम-अपार है, एक लगन, एक उमंग एक दृढ़ संकल्प कि हमें विश्व की सर्व आत्माओं को शान्ति का सन्देश ज़रूर देना ही है।

24.2.1984 ... वारिस क्वालिटी जो आप जैसे ही सेवा के उमंग-उत्साह में तन-मन-धन सहित रहते हुए भी सरेन्डर बुद्धि हो, इसको कहते हैं – वारिस क्वालिटी।

7.3.1984 ... स्व की समस्याओं में उमंग होना अब वह समय गया।

10.4.1984..... जिससे प्यार होता है उसे प्रत्यक्ष करने का उमंग होता है।

7.5.1984... ... 108 की माला के मणके बनेंगे। यही उमंग सभी को रहता है।

19.11.1984... उमंग और उत्साह के आधार से आलस्य की नींद को कईयों ने त्याग भी किया।

26.11.1984... एक बल एक भरो – इसी छत्रछाया के नीचे मिलन के उमंग उत्साह से ज़रा भी हलचल, लगन को हिला न सकी।

17.12.1984 ... व्यर्थ संकल्प सदा उत्साह उमंग को समाप्त करता है।

12.1.1985 .... गुणदान द्वारा आत्मा में उमंग-उत्साह ही झलक अनुभव करा सकते हो। तो ऐसे सर्व महादानी मूर्त्त अर्थात् अनुभवी मूर्त्त बने हो!

16.1.1985... ऐसा बिज़नेस मैन जो एक कदम से पदमों की कमाई जमा करनेवाले। सदा बेहद के बाप के हैं, तो बेहद की सेवा में, बेहद के उमंग-उत्साह से आगे बढ़ते रहो।

30.1.1985... श्रीमत के साथ-साथ अपने मन के उमंग से जो आगे बढ़ते हैं वह सदा सहज आगे बढ़ते हैं। अगर कोई के कहने से या थोड़ा-सा शर्म के कारण दूसरे क्या कहेंगे, नहीं बनूँगी तो सब मुझे ऐसे देखेंगे कि यह कमज़ोर है। ऐसे अगर कोई के फोर्स से बनते भी हैं तो परीक्षाओं को पास करने में मेहनत लगती है। और स्व के उमंग वालों को कितनी भी बड़ी परिस्थिति हो वह सहज अनुभव होती है क्योंकि मन का उमंग है ना। अपना उमंग उत्साह पंख बन जाते हैं।

18.1.1985... प्रत्यक्षता के उमंग-उत्साह वाले बच्चों को बापदादा अपने राइट हैण्ड रूप से स्नेह की हैंडशेक कर रहे हैं। सदा मुरब्बी बच्चे सो बाप समान बन उमंग की हिम्मत से पदमगुणा बाप दादा की मदद के पात्र हैं ही हैं। सुपात्र अर्थात् पात्र हैं।

21.8.1985... 'मंसा सेवा' – रूहानी वायरलेस सेट है। जिस द्वारा दूर का संबंध समीप बना सकते हो। दूर बैठे किसी भी आत्मा को बाप के बनने का, उमंग उत्साह पैदा करने का सन्देश दे सकते हो। जो वह आत्मा अनुभव करेगी कि मुझे कोई महान शक्ति बुला रही है।

कुछ अनमोल प्रेरणायें मुझे प्रेर रही हैं। जैसे कोई को सम्मुख सन्देश दे उमंग उत्साह में लाते हो, ऐसे मंसा शक्ति द्वारा भी वह आत्मा ऐसे ही अनुभव करेगी जैसे कोई सम्मुख बोल रहा है।

23.1.1987...तो नये बच्चों का नया उमंग-उत्साह मिलन मनाने का ड्रामा की नूँध प्रमाण पूरा हुआ। बहुत उमंग रहा ना। जायें-जायें...इतना उमंग रहा जो डायरेक्शन भी नहीं सुना। मिलन की मस्ती में मस्त थे ना!

1.10.1987 ...सेवा का उमंग- उत्साह स्वयं को भी निर्विघ्न बनाता, दूसरों का भी कल्याण करता है।

9.10.1987.. चल रहे हैं, कर रहे हैं, हो ही जायेंगे, पहुँच जायेंगे - अभी तक ऐसा लक्ष्य नहीं रखो। अब नहीं तो कब नहीं। बनना है तो अब, पाना है तो अब - ऐसा उमंग-उत्साह वाले ही समय पर अपनी सम्पूर्ण मंजिल को पा सकेंगे।

2.11.1987... स्वयं के संस्कार वा माया और प्रकृति द्वारा आने वाली परिस्थितियाँ वा ब्राह्मण परिवार द्वारा चुक्तु होने वाले हिसाब-किताब श्रेष्ठ परिवर्तन के उमंग को कमजोर कर देते हैं और कई बच्चे परिवर्तन करने की हिम्मत में कमजोर हैं। जहाँ हिम्मत नहीं, वहाँ उमंग-उत्साह नहीं। और स्व-परिवर्तन के बिना विश्व-परिवर्तन के कार्य में दिल-पसन्द सफलता नहीं होती।

14.11.1987 ... हर एक रूहानी परवाना अपने उमंग-उत्साह के पंखों से उड़ते-उड़ते इस रूहानी महफिल में पहुँच गये हैं।

23.12.1987... दुनिया के लोग विशेष उत्साह के दिन उत्साह अनुभव करते हैं लेकिन ब्राह्मण आत्माओं के लिए संगमयुग ही उत्साह का युग है। हर दिन नया उत्साह, उमंग-उल्लास, उत्साह स्वतः ही अनुभव होता रहता है। इसलिए संगमयुग के हर दिन खुशी की खुराक खाते, बाप द्वारा अनेक प्राप्तियों के गुण गाते डबल लाइट बन सदा उत्साह में नाचते रहते हैं।

26.1.1988 आत्माओं द्वारा सदा कोई-न-कोई प्राप्ति का कीर्तन करते रहते हैं, सदा उन आत्माओं के प्रति शुभ भावना की धूप वा दीपक जगाते रहते हैं। सदा ऐसी आत्माओं को

देख स्वयं भी जैसे वह आत्मायें बाप के ऊपर बलिहार गई है, वैसे अन्य आत्माओं में भी बाप के ऊपर बलिहार जाने का उमंग आता है।

20.2.1988... जो अपने मन के उमंग से, ख़ुशी से कार्य किया जाता है, उसमें थकावट नहीं होती, बोझ अनुभव नहीं होता। कहाँ-कहाँ बच्चों के ऊपर सेवा के हिसाब से ज़्यादा कार्य भी आ जाता है, इसलिए भी कभी-कभी थकावट फील (अनुभव) होती है। बापदादा देखते हैं कि कई बच्चे अथक बन सेवा करते उमंग-उत्साह में भी रहते हैं। फ़िर भी हिम्मत रख आगे बढ़ रहे हैं - यह देख बापदादा हर्षित भी होते हैं। फ़िर भी सदा बुद्धि को हल्का ज़रूर रखो।

28.2.1988.. . जन्म लेते, वर्सा प्राप्त करते सेवा का उमंग-उत्साह स्वत: ही रहता है। सेवा में लग जाने से एक तो सेवा का प्रत्यक्ष फल 'ख़ुशी' भी मिलती है और सेवा से विशेष बल भी मिलता है और सेवा में बिजी रहने के कारण निर्विघ्न बनने में भी सहयोग मिलता है। तो सेवा का उमंग-उत्साह स्वत: ही आना, समय निकालना वा अपना तन-मन-धन सफ़ल करना - यह भी ड्रामा अनुसार विशेषता की लिफ़्ट मिली हुई है।

3.3.1988.. ,. जहाँ उमंग-उत्साह होता है, वहाँ हर घड़ी उत्सव है ही है। तो खुशी से खूब मनाओ, खेले-खाओ, मौज करो लेकिन सदा होली बन मिलन मनाते रहो।

19.3.1990... तो उमंग-उत्साह के पंख सदा उड़ाते रहते हैं। रोज अमृतवेले अपने सामने सारा दिन किस स्मृति से उमंग-उत्साह में रहें – वह वैराइटी उमंग-उत्साह भी प्वाइंट्स इमर्ज करो। सिर्फ एक ही प्वाइंट कि मैं ज्योतिर्बिन्दु हूँ, बाप भी ज्योतिर्बिन्दु है, घर जाना है फिर राज्य में आना है – यह एक ही बात कभी-कभी बच्चों को बोर कर देती है। फिर सोचते हैं कुछ नया चाहिए। लेकिन हर दिन की मुरली में उमंग-उत्साह की भिन्न-भिन्न प्वाइंट्स होती है। वह उमंग-उत्साह की विशेष प्वाइंट अपने पास नोट करो। बहुत बड़ी लिस्ट बना सकते हैं। डायरी में भी नोट करो तो बुद्धि में भी नोट करो। जब बुद्धि में इमर्ज न हो तो डायरी से इमर्ज करो और वैराइटी प्वाइंट्स हर रोज नया उमंग-उत्साह बढ़ायेंगी।

3.4.1991.. गुणों को, शक्तियों को कार्य में लगाओ तो बढ़ते जायेंगे। तो बचत की विधि, जमा करने की विधि को अपनाओ। फिर व्यर्थ का खाता स्वत: ही परिवर्तन हो सफल हो जायेगा। जैसे भक्ति मार्ग में यह नियम है कि जितना भी आपके पास स्थूल धन है तो उसके

लिये कहते हैं – दान करो, सफल करो तो बढ़ता जायेगा। सफल करने के लिए कितना उमंग-उत्साह बढ़ाते हैं, भक्ति में भी।

31.12.1991.. .हर समय की याद और प्यार यही दुआएं बच्चों के दिल की उमंग-उत्साह को बढ़ाती रहती हैं।

2.3.1992.....अच्छा - आज सूक्ष्म वतन बनाया है। अच्छा है - वायुमण्डल अच्छा बना है। उस ज्योति देश के आगे तो यह सजा हुआ सूक्ष्म वतन मॉडल ही लगता है ना। फिर भी बच्चें का उमंग और उत्साह वायुमण्डल वृत्ति को खींचता जरुर है।

13.12.1992...सदा हर समय नवीनता की मुबारक लेते रहना और औरों को भी नये उमंग-उत्साह से आगे बढ़ाते रहना।

सदा उमंग-उत्साह से हर दिन उत्सव मनाते रहना।

18.2.1993....ब्राह्मण जीवन में हर सेकेण्ड उमंग-उत्साह नहीं तो ब्राह्मण जीवन नहीं। श्वाँस की गति भी नार्मल (सामान्य) होनी

चाहिए। अगर श्वाँस की गति बहुत तेज हो जाए–तो भी जीवन यथार्थ नहीं और स्लो हो जाए–तो भी यथार्थ जीवन नहीं कही जायेगी। हाई प्रेशर या लो प्रेशर हो जाता है ना। तो इसको नार्मल जीवन नहीं कहा जाता। तो यहाँ भी चेक करो कि–''मुझ ब्राह्मण जीवन के उमंग-उत्साह की गति नार्मल है? या कभी बहुत फास्ट, कभी बहुत स्लो हो जाती? एकरस रहती है?'' एकरस होना चाहिए ना। कभी बहुत, कभी कम–यह तो अच्छा नहीं है ना। इसलिए संगमयुग की हर घड़ी उत्सव है। यह तो विशेष मनोरंजन के लिए मनाते हैं। क्योंकि ब्राह्मण जीवन में और कहाँ जाकर मनोरंजन मनायेंगे! यहाँ ही तो मनायेंगे ना! कहाँ विशेष सागर के किनारे पर या बगीचे में या क्लब में तो नहीं जायेंगे ना। यहाँ ही सागर का किनारा भी है, बगीचा भी है तो क्लब भी है। यह ब्राह्मण क्लब अच्छी है ना! तो ब्राह्मण जीवन का श्वांस है–उमंग-उत्साह।

7.3.1993 ..सेवा का उमंग आता है ना–जल्दी-जल्दी तैयार हो जाएं तो सेवा करें। तो वह उमंगजो आता है ना, वह उमंग सूली से कांटा कर देता है।

23.12.1993..हर कार्य में सफलता प्राप्त करने का आधार है-उमंग-उत्साह।

31.12.1993...नये वर्ष को धूमधाम से मनाते हैं। मनाने का अर्थ है उमंग-उत्साह में आना। उत्साह होता है, इसीलिये मनाने के दिन को उत्सव कहा जाता है। उत्साह से ही एक-दो को बधाइयां वा मुबारक देते हैं वा ग्रीटिंग्स देते हैं। आप ब्राह्मण आत्माओं के लिो हर दिन उत्सव है। सदा उत्सव अर्थात् उमंग-उत्साह में रहते हो। यह उमंग-उत्साह ही ब्राह्मण जीवन है।

दुनिया की रीति प्रमाण विशेष दिन को मनाते हो, आज मनाने के लिो इकट्ठे हुए हो ना। लेकिन आपका नवयुग नई जीवन का उमंग-उत्साह सदा ही है।
उमंग-उत्साह आप ब्राह्मणों के लिो बड़े से बड़ी शक्ति है। उमंग-उत्साह मुश्किल को सहज कर देता है। उत्साह तूफ़ान को भी तोहफ़ा बना देता है, पहाड़ को भी राई नहीं लेकिन रुई बना देता है। उत्साह किसी भी परीक्षा वा समसा को मनोरंजन अनुभव कराता है। इसलिो उमंग-उत्साह में रहने वाले नव ुग के आधारमूर्त नव जीवन वाले ब्राह्मण आत्माों हो।
25.3.1990 ...वाचा का तरफ भारी हो जाए और मन्सा तथा कर्मणा हल्का हो जाए तो क्या होगा? बैलेन्स नहीं रहेगा ना। बैलेन्स न रहने के कारण उमंग-उत्साह भी नीचे-ऊपर होता है।

18.12.1994... जब स्व के प्रति प्रयोग में सफ़ल हो जायेंगे तो दूसरी आत्माओं के प्रति प्रयोग करना सहज हो जायेगा और जब स्व के प्रति सफ़लता अनुभव करेंगे तो आपके दिल में औरों के प्रति प्रयोग करने का उमंग-उत्साह स्वतः ही बढ़ता जायेगा। अन्य आत्माओं के सम्बन्ध-सम्पर्क में स्व के प्रयोग द्वारा उन आत्माओं को भी आपके प्रयोग का प्रभाव स्वतः ही पड़ता रहेगा।

26.2.1995 ..... तो उत्साह में रहने वाले अर्थात् सदा उत्सव मनाने वाली श्रेष्ठ आत्माों हो। कभी भी उत्साह कम नहीं होना चाहिये। पहले भी सुनाया था–ब्राह्मण जीवन का सांस है उमंगउत्साह। अगर सांस चला जाये तो जीवन सेकेण्ड में खत्म हो जायेगी ना! तो ब्राह्मण जीवन में यदि उमंगउत्साह का सांस नहीं तो ब्राह्मण जीवन नहीं। जो सदा उमंगउत्साह में होगा, वो फ़लक से कहेगा कि ब्राह्मण हैं ही उत्साहउमंग के लिये। और जिसका उमंगउत्साह कम हो जाता है उसके बोल ही बदल जाते हैं। वो कहेगा–हैं तो सही...., होना तो चाहिये...., हो जायेगा.... तो ये भाषा और उस भाषा में कितना अन्तर है! उसके हर बोल में साधन सेवाओं के लिए हैं, आरामपसन्द बनने के लिए नहीं। 'तो' जरूर होगा–होना तो चाहिये.... तो ये जो 'तोतो' होता है ना, ये उमंगउत्साह का प्रेशर कम होने से ही ऐसे बोल, कमजोरी के बोल निकलते हैं। तो उमंगउत्साह कभी कम नहीं होना चाहिये। उमंगउत्साह कम क्यों होता है? बापदादा कहते हैं सदा वाहवाह कहो और कहते हैं व्हाईव्हाई (Why, Why)। अगर कोई भी परिस्थिति में व्हाई शब्द आ जाता है तो उमंगउत्साह का प्रेशर कम हो जाता है।

16.2.1996... आप उमंग-उत्साह से बढ़ाते जायेंगे तो सेवा बढ़ जायेगी। आप निमित्त बनी हुई आत्मायें लक्ष्य रखो तो आपके लक्ष्य की किरणें सभी को मिलेगी। होना ही है, करना ही है, आप लोगों को तो है लेकिन औरों को भी हिम्मत और उमंग दिलाने में लक्ष्य और दृढ़ रखो।

31.12.1996... चारों ओर के सर्व उमंग-उत्साह से आगे बढ़ने वाले, सदा इकॉनामी के अवतार बन समय, संकल्प, वाणी और कर्म को बचत के खाते में जमा करने वाले, साकार वा आकार रूप में नया वर्ष मनाने वाले सिकीलधे बच्चे, बापदादा देख रहे हैं कि चारों ओर के बच्चे, साकार में नहीं तो आकार रूप में मधुबन में ही हैं और आकार रूप में मना रहे हैं।

24.5.2002...पहले तो स्वयं सदा बापदादा समान स्वमान में स्थित होना है, साथ में सदा उमंग-उत्साह में अचल-अड़ोल अथक बन चाहे मन्सा सेवा, चाहे वाणी की सेवा, चाहे चेहरे और चलन द्वारा, सम्बन्ध-सम्पर्क द्वारा सेवा में आगे बढ़ना ही है। यही समय प्रमाण बापदादा का इशारा है।

15.11.2003... कर्म करते भी, बातचीत करते भी, डायरेक्शन देते भी, उमंग-उत्साह बढ़ाते भी देह से न्यारा, सूक्ष्म प्रकाश रूप की अनुभूति की।

21.10.2005... स्टूडेन्ट रेग्युलर सेवा के उमंग-उत्साह में नहीं रहेंगे, क्लास करेंगे, जो कहेंगे वह करेंगे लेकिन अपने उमंग-उत्साह में नहीं आयेंगे।

25.2.2006.... आज उत्सव के दिन मन के उमंग-उत्साह द्वारा माया से मुक्त रहने का व्रत लो, मर्सीफुल बन मास्टर मुक्तिदाता बनो, साथ चलना है तो समान बनो।

तो क्या आज के उत्सव के दिन मन के उमंग उत्साह से, मन का उमंग-उत्साह, मुख का नहीं मन का, मन के उमंग उत्साह से जो थोड़ा बहुत रह गया हो, चाहे मन्सा में, चाहे वाणी में, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क में, क्या आज बाप के बर्थ डे पर बाप को यह गिफ्ट दे सकते हो? दे सकते हो मन के उमंग-उत्साह से? फायदा तो आपका है, बाप को तो देखना है।

3.3.2007... उमंग-उत्साह का, सर्व ब्राह्मण चाहे कोई भी सेवाधारी का वायुमण्डल ऐसा शक्तिशाली हो, आप सबके दिल के प्यार का वायब्रेशन बापदादा के पास भी पहुंचता है।

31.3.2007... बापदादा के पास निर्माण के, सेवा के प्लैन बहुत अच्छे-अच्छे आये हैं। लेकिन बापदादा ने देखा कि निर्माण के कार्य तो बहुत अच्छे लेकिन जितना सेवा के कार्य में उमंग-उत्साह है उतना अगर निर्मान स्टेज का बैलेन्स हो तो निर्माण अर्थात् सेवा के कार्य में और सफलता और ज्यादा प्रत्यक्ष रूप में हो सकती है।

31.12.2007... बापदादा भी सभी बच्चों का उमंग-उत्साह देख चमकते हुए आत्म दीप को देख हर्षित हो रहे हैं।

2.3.2011... इस बर्थ डे पर सभी एक दो को उमंग-उत्साह दिलाते, सहयोगी बनते व्यर्थ संकल्प के अक का फूल अर्पण करो, मास्टर सर्वशक्तिवान के स्वमान की सीट पर रह इसमें नम्बरवन का इनाम लो।

3.3.2014... किसी भी वायुमण्डल को देखते बाप के स्नेह और सहयोग से आगे बढ़ते चलो, हर एक की विशेषता देखो, स्वयं भी तीव्र पुरुषार्थ के उमंग-उत्साह में रहो और साथियों को भी उमंग-उल्हास दिलाओ''

उत्साह

16.7.1969 ... उत्साह भी है, हिम्मत भी है। आज की भट्ठी के चार्ट से ये देखने में आ रहा है। इन गोपों के परिवर्तन के उत्साह से आपको (कुमारका दादी को) क्या-क्या देखने में आता है? जैसे आंधी को देखकर मालूम पड़ता है कि वर्षा आने वाली है। इस परिवर्तन के उमंग से आप क्या समझती हो? परि-वर्तन क्या पहचान देता है? इस परिवर्तन का उमंग खास इस बात की पहचान देता है कि अभी प्रत्यक्षता का समय नजदीक है।

1.8.1971... भक्ति-मार्ग में सिर्फ उत्साह दिलाने के लिए उत्सव मनाने का साधन बनाया है। खुशी में नाचते हैं ना। कोई की भी उदासी या उलझन आदि होती है, वह किनारे हो जाती है ना। तो हिम्मत के साथ उल्लास भी जरूर चाहिए। और अविनाशी स्टैम्प लगाई है?

27.2.1972.. लोग अपने को उत्साह में लाने के लिए हर उत्सव का इन्तजार करते हैं; क्योंकि उत्सव उनमें अल्पकाल का उत्साह लाता है। लेकिन आप श्रेष्ठ आत्माओं के लिए हर दिन तो क्या हर सेकेण्ड उत्सव अर्थात् उत्साह दिलाने वाला है। अविनाशी अर्थात् निरन्तर उत्सव ही उत्सव है, कोंकि आप के उत्साह में अन्तर नहीं आता है, तो निरन्तर हो गया ना।

31.10.1975... जैसे प्रसाद सबको देते हैं। तो यह सेवा का प्रसाद भी सबको बाँटो। सबके उत्साह का वायुमण्डल रहेगा तो वायुमण्डल के प्रभाव से कोई भी बाहर नहीं निकलेगा।

18.1.1977.... स्वयं कमज़ोर बन उसको उत्साह नहीं दिलाओ। मन में भी यह संकल्प न करो कि अब तो करना ही पड़ेगा।

11.1.1977..... 'दृढ़ संकल्प से करके दिखाना'। जैसे शुरू में पुरुषार्थ के उत्साह को बढ़ाने के लिए ग्रुप्स (Groups) बनाते थे और पुरुषार्थ की रेस (Race) करते थे, एक दूसरे को सहयोग देते हुए उत्साह बढ़ाते थे, वैसे अब ऐसा तीव्र पुरुषार्थियों का ग्रुप बने, जो यह पान का बीड़ा उठाये कि 'जो कहेंगे वही करेंगे, करके दिखायेंगे।'

3.5.1977... उत्साह कभी भी कम न हो, इसको कहा जाता है 'महावीर।' रुकने वाले घोड़े सवार, थकने वाले प्यादे, सदा चलते रहने वाले महावीर।

3.2.1979...पहले धरनी पर हिम्मत और उत्साह का हल चलाओ फिर बीज डालो तो सहज ही बीज का फल निकलेगा।

4.2.1980 ....'पाण्डव सेना', आज तक भी इस पाण्डव नाम से दिलशिकस्त आत्मा स्वयं को उत्साह दिलाती है कि पाँच पाण्डवों के समान बाप का साथ लेने से विजयी बन जायेंगे। श्रेष्ठ आत्माओं ने अनेक प्रकार के साधनों द्वारा आत्माओं के जीवन में उत्साह दिलाया है। इसलिए कर्त्तव्य के भाग्य की निशानी उत्सव मनाते हैं। आगे चल

27.10.1981..लोगों के लिए नया वर्ष है और आप लोंगो के लिए नवयुग है और नवयुग में हर घड़ी उत्साह होन के कारण उत्सव है। हर घड़ी दीवाली है। हर घड़ी उत्सव है। क्योंकि उत्सव का अर्थ ही है उत्साह दिलाने वाला। तो हर घड़ी, हर सेकेण्ड उत्साह दिलाने वाला हो। इसलिए वह तो वर्ष-वर्ष उत्सव मनाते हैं और आप हर घड़ी उत्सव मनाते हो। यह ब्राह्मण जीवन ही आपका उत्सव है। जिसमें सदा हर घड़ी खुशी में झूलते रहो।

29.10.1981...आप सभी ने भी यह चार ही बातें की। मेले में तो आये लेकिन मनाना अर्थात् सदा अविनाशी उत्साह भरी, उमंग भरी जीवन में सदा रहने का दृढ़ संकल्प करना। यह रूहानी मेला मनाना, अविनाशी उत्सव मनाना, एक दो दिन के लिए नहीं, संगमयुग है ही सदा का उत्सव अर्थात् उत्साह बढ़ाने वाला। ऐसे सदा उत्साह में रहना और औरों को भी उत्साह दिलाना। सदा मुख में मीठा बोल, यह है मुख मीठा होना और औरों को भी मीठे बोल द्वारा, मीठे बाप की स्मृति दिलाना, सम्बन्ध में लाना यह है – मीठा मुख कराना।

18.11.81... ''सदा हर दिन स्व-उत्साह और सर्व को भी उत्साह दिलाने का उत्सव मनाओ।'' यह है सेवाधारियों के लिए स्नेह की सौगात। इसी सौगात को फिर मुरली में स्पष्ट करेंगे लेकिन सौगात तो छोटी अच्छी होती है। तो आज मुरली नहीं चलायेंगे लेकिन सार रूप में सुना रहे हैं कि उत्साह में रहने और उत्साह दिलाने का उत्सव मनाओ। इससे क्या होगा? जो मेहनत करनी पड़ती है वह खत्म हो जायेगी। संस्कार मिलाने की, संस्कार मिटाने की मेहनत से छूट जायेंगे।

यही संकल्प करो कि ''न कभी उत्साह कम करेंगे और न दूसरों का उत्साह कम होने देंगे।'' यही देना है। कुछ भी हो जाय, जैसे स्थूल व्रत रखते हैं, तो उसमें भी भूख और प्यास लगती है लेकिन लगते हुए भी व्रत नहीं छोड़ते, चाहे बेहोश भी क्यों न हो जायें। तो आप भी व्रत

लो– कोई भी समस्या आ जाए, कोई उत्साह को मिटाने वाला आ जाए लेकिन न उत्साह छोड़ेंगे, न औरों में कम करायेंगे। बढ़ेंगे और बढ़ायेंगे।

30.4.1982... सेवा के उत्सवों के साथ उड़ती कला का उत्साह बढ़ता रहे। तो सेवा के उत्सव के साथ-साथ उत्साह अविनाशी रहे, ऐसे उत्सव भी मनाओ। समझा। सदा उड़ती कला के उत्साह में रहना है और सर्व का उत्साह बढ़ाना है।

5.12.1983..... उत्साह वाला सदा खुश रहेगा। उत्साह रहता – बस, पाना था वो पा लिया।

25.12.1983.. बुरे दिन खत्म हो ख़ुशी के उत्साह में रहने के उत्सव का दिन 'संगमयुग' है।

15.3.1984... यह होली का उत्सव होली अर्थात् पवित्र बनाने का, बनने का उत्साह दिलाने वाला है। जब इस समान स्वरूप में स्थित हो जाते हैं तब ही अविनाशी खुशी की झलक अनुभव होती है और सदा के लिए उत्साह रहता है कि सर्व आत्माओं को ऐसा अविनाशी रंग लगावें।

9.1.1985...तो मधुबन वाले कोई भी श्रेष्ठ संकल्प करते हैं, प्लैन बनाते हैं, कर्म करते हैं वह सभी को सीखने का उत्साह होता है। तो सभी के उत्साह बढ़ाने वाली आत्मा को कितना फ़ायदा होगा!

6.3.1985 ... अज्ञानी आत्मायें स्वयं को उत्साह में लाने के लिए उत्सव मनाते हैं। लेकिन आप श्रेष्ठ आत्माओं के लिए यह ब्राह्मण जीवन उत्साह की जीवन है। आपकी प्रैक्टिकल उत्साह भरी जीवन का भिन्न भिन्न रूप में यादगार मनाकर अल्पकाल के लिए खुश हो जाते।

25.3.1986.. ..यह प्यार का मिलन शुभ भावना का मिलन उन आत्माओं को भी पुरानी बातें भूला देती हैं। वह भी उत्साह में आ जाते। इसलिए उत्सव के रूप में यादगार बना लिया है। तो बाप से होली मनाना अर्थात् अविनाशी रूहानी रंग में बाप समान बनना।

23.12.1987.. हर एक के मन में यह उत्साह है कि हमें बापदादा की प्रत्यक्षता का झंडा लहराना है। हर दिन उत्साह के कारण संगमयुग का उत्सव के प्रमाण अनुभव कर उड़ते जाता रहे हैं। क्योंकि जहाँ हर समय उत्साह है, चाहे बापदादा से याद द्वारा मिलन मनाने का,

चाहे सेवा द्वारा प्रत्यक्षफल प्राप्त होने के अनुभव के उत्साह में - दोनों उत्साह हर घड़ी, हर दिन उत्सव का अनुभव कराते हैं। दुनिया के लोग विशेष उत्साह के दिन उत्साह अनुभव करते हैं लेकिन ब्राह्मण आत्माओं के लिए संगमयुग ही उत्साह का युग है। हर दिन नया उत्साह, उमंग-उल्लास, उत्साह स्वत: ही अनुभव होता रहता है। इसलिए संगमयुग के हर दिन खुशी की खुराक खाते, बाप द्वारा अनेक प्राप्तियों के गुण गाते डबल लाइट बन सदा उत्साह में नाचते रहते हैं। उत्सव में क्या करते हैं? खाते हैं, गाते हैं और नाचते हैं।

16.2.1988. .. अपने बच्चों को हर घड़ी उत्साह में रहने की विधि समझाते हुए बापदादा बोले – ''आज विश्वेश्वर बाप अपनी विश्व की श्रेष्ठ रचना वा श्रेष्ठ आदि रतनों से, अति स्नेही और समीप बच्चों से मिलन मनाने आये हैं। विश्वेश्वर बाप के बच्चे तो विश्व की सर्व आत्मायें हैं। लेकिन ब्राह्मण आत्मायें अति स्नेही समीप की आत्मायें हैं क्योंकि ब्राह्मण आत्मायें आदि रचना हैं। बाप के साथ-साथ ब्राह्मण आत्मायें भी ब्राह्मण जीवन में अवतरित हो बाप के कार्य में सहयोगी आत्मायें बनती हैं। इसलिए बापदादा आज के दिन बच्चों का ब्राह्मण जीवन के अवतरण का जन्म-दिन मनाने आये हैं। बच्चे बाप का जन्मदिन मनाने के लिए उमंग-उत्साह से खुशी में नाच रहे हैं। लेकिन बापदादा बच्चों के इस ब्राह्मण जीवन को देख, स्नेह और सहयोग में, बाप के साथ-साथ हर कार्य में हिम्मत से आगे बढ़ते हुए देख हर्षित हो रहे हैं। तो आप बापदादा का बर्थ-डे मनाते हो और बाप बच्चों का बर्थ- डे मनाते। आप ब्राह्मणों का भी बर्थ-डे है ना। तो सभी को बापदादा, जगत-अम्बा और सर्व आपके साथी एडवांस पार्टी की विशेष श्रेष्ठ आत्मायें सहित आपके अलौकिक ब्राह्मण जन्म के स्नेह से सुनहरी पुष्पों की वर्षा सहित मुबारक हो, मुबारक हो! यह दिल की मुबारक है, सिर्फ मुख की मुबारक नहीं।

ब्राह्मण जीवन अर्थात् सदा उत्सव मनाना, सदा उत्साह में रहना और सदा हर कर्म में आत्मा को उत्साह दिलाना। तो उत्सव मनाना है, उत्साह में रहना है और उत्साह दिलाना है। जहाँ उत्साह होता है, वहाँ कभी भी, किसी भी प्रकार का विघ्न उत्साह वाली आत्मा को उत्साह से हटा नहीं सकता। जैसे अल्पकाल के उत्साह में सब बातें भूल जाती हैं ना। कोई उत्सव मनाते हो तो उस समय के लिए ख़ुशी के सिवाए और कुछ याद नहीं रहता। तो ब्राह्मण जीवन के लिए हर घड़ी उत्सव है अर्थात् हर घड़ी उत्साह में हैं।

31.12.1991 चाहे ब्राह्मण आत्मा हो, चाहे साधारण आत्मा हो लेकिन जिसके भी सम्पर्क-सम्बन्ध में आओ,उन आत्माओं को मास्टर दाता द्वारा प्राप्ति का अनुभव हो। चाहे हिम्मत

मिले, चाहे उल्लास-उत्साह मिले, चाहे शान्ति वा शक्ति मिले, सहज विधि मिले, खुशी मिले – अनुभव की वृद्धि की अनुभूति हो।

14.3.2006.. सदा उत्साह है वा कभी-कभी है? जो समझते हैं कि सदा उत्साह में रहते हैं, खुशी में रहते हैं, खुशी हमारे जीवन का विशेष परमात्म गिफ्ट है, ऐसे अनुभव होता है? कुछ भी हो जाए लेकिन ब्राह्मण जीवन की खुशी, उत्साह, उमंग जा नहीं सकता।

5.3.2008... .. बापदादा को भी खुशी है कि मेरे बच्चे, फखुर है बाप को कि मेरे बच्चे सदा उत्साह में रहते उत्सव मनाते रहते हैं।

15.2.2017....बापदादा सभी बच्चों का उत्साह देख बच्चों को भी अपने दिव्य जन्म की पदम-पदम-पदमगुणा बधाईयां दे रहे हैं। वास्तव में उत्सव का अर्थ ही है उमंग-उत्साह में रहना। तो आप सभी उत्साह से यह उत्सव मना रहे हैं। नाम भी भक्तों ने शिवरात्रि रखा है।

13.3.2011... आप भी कराने वाल` नहीं , करने वाले बनना। साथी हो ना। जो भी शुभ कार्य होता है उसमें साथी बनना बड़ा पुण्य होता है । तो सिर्फ चलाने वाले नहीं , आप भी साथी बन के सभी को उत्साह में लाना। आपका काम है उत्साह दिलाना। आप सिर्फ निमित्त हो। आप शुभ भावना रखो बस। शुभ भावना रखना तो आता है ना।

9. वफादार, फरमानवरदार

16.06.69 ... ... बाप एक शिक्षा देते हैं कि सदैव बापदादा और जो निमित्त बनी हुई बहनें हैं और जो भी दैवी परिवार है उन सबसे आज्ञाकारी वफादार बनकर के चलना है, यह है बाप के रूप में शिक्षा की सौगात।

28.11.69...... मददगार और वफादार। जब दोनों बातें होंगी तब बापदादा और परिवार के स्नेही और सहयोगी बन सकेंगे। जो सहयोगी होंगे उनकी परख क्या होगी? वह परिवार और बापदादा के विचारों और जो कर्म होते हैं उनमें एक दो के समीप होंगे । एक दो के मत के समीप आते जायेंगे तो फिर मतभेद खत्म हो जायेगा। एक तो मददगार और वफादार उसका तरीका भी बताया ।

25.12.69.. ....रूहानियत न रहने का कारण क्या है? वफादार, फरमानवरदार क्यों नहीं बन पाते हैं? इसकी बात है (सम्बन्ध की कमी) सम्बन्ध में कमी भी क्यों पड़ती है? निश्चयबुद्धि का तिलक तो सभी को लगा हुआ है। यह प्रश्न है कि रूहानियत सदा कायम क्यों नहीं रहती है? रूहानियत कायम न रहने का कारण यह है कि अपने को और दूसरों को जिनके सर्विस के लिये हम निमित्त हूँ, उन्हों को बापदादा की अमानत समझ कर चलना। जितना अपने को और दूसरों को अमानत समझेंगे तो रूहानियत आयेगी।

22.6.1971 ... सम्पूर्ण वफ़ादार वे कहलायेंगे जिसको संकल्प में भी वा स्वप्न में भी सिवाय बाप के और बाप के कर्त्तव्य वा बाप की महिमा, बाप के ज्ञान के और कुछ भी दिखाई न दे। ऐसे को सम्पूर्ण वफादार कहते हैं। एक बाप दूसरा न कोई – दूसरी कोई बात स्वप्न में, स्मृति में दिखाई न दे। उसको कहते हैं सम्पूर्ण वफादार। और संग तोड़, एक संग जोड़ – पहला-पहला वायदा है। उस वायदे को निभाना, इनको ही सम्पूर्ण वफादार कहा जाता है।

11.9.1971... वफादार का मुख्य गुण क्या होता है? उनका मुख्य गुण होता है जो अपनी भले जान चली जाये लेकिन हर वस्तु की सम्भाल करेंगे। तो कोई भी चीज़ व्यर्थ नुकसान नहीं करेंगे। अगर संकल्प, समय, शब्द और कर्म – इन चारों में से कोई को भी व्यर्थ गंवाते हो वा नुकसान के खाते में जाता है तो उसको क्या सम्पूर्ण वफादार कहेंगे?

सदा फरमानबरदार उसको कहते हैं, जो एक संकल्प भी बिगर फरमान के न करे। सदैव अपने को फरमानबरदार के स्वरूप में स्थित रहकर फिर कोई संकल्प करो। ऐसे जो सम्पूर्ण फरमानबरदार हैं –– वही सम्पूर्ण वफादार भी होते हैं।

फरमानबरदार

2.2.70... फरमानबरदार का अर्थ ही है फ़रमान पर चलना। मुख फरमान है निरन्तर याद में रहो। अगर इस फ़रमान पर नहीं चलते तो क्या कहेंगे? जितनाजितना इस फ़रमान को प्रैक्टिकल में लायेंगे उतना ही प्रत्यक्ष फल मिलेगा।

19.5.70.. .. तीव्र पुरुषार्थी के क्या लक्षण होते हैं? समझाया था ना कि फरमान बरदार किसको कहा जाता है? जिसका संकल्प भी बिगर फरमान के नहीं चलता। ऐसे फरमानबरदार को ही तीव्र पुरुषार्थी कहा जाता है। सर्वशक्तिमान बाप के बच्चे जो शक्तिवान हैं, उन्हों के आगे माया भी दूर से ही सलाम कर विदाई ले लेती है। वल्लभाचारी लोग अपने शिष्यों को छूने भी नहीं देते हैं। अछूत अगर छू लेता है तो स्नान किया जाता है। यहाँ भी ज्ञान स्नान कर ऐसी शक्ति धारण करो जो अछूत नज़दीक न आयें। माया भी क्या है? अछूत।

22.6.71.. .. सपूत बच्चे को वफादार और फ़रमानबरदार कहा जाता है। सभी अपने को फ़रमानबरदान समझते हैं? जब विजय का वरदान है, तो विजय किससे होती है? जब फरमान पर चलते हैं। तो फरमानबरदार नहीं हो? स्थूल में फरमान पालन करने की शक्ति भी सूक्ष्म के आधार पर होती है। निरन्तर फरमान पालन होता है? तो मुख्य फरमान कौनसा है? निरन्तर याद में रहो और मन, वाणी, कर्म में प्योरिटी हो। औरों को भी सुनाते हो कि पवित्र बनो, योगी बनो। तो जो औरों को सुनाते हो वही मुख्य फरमान हुआ ना। संकल्प में भी अपवित्रता वा अशुद्धता न हो – इसको कहते हैं सम्पूर्ण पवित्र। ऐसे फरमानबरदान बने हो ना। सारी शक्ति-सेना पवित्र और योगी है कि अभी बनना है? निरन्तर योगी भी हैं। निरन्तर अर्थात् संकल्प में भी अशुद्धता नहीं है।

22.6.71.. ..इतना वफादार और फरमानबरदार बनना है जो एक सेकेण्ड भी, एक संकल्प भी फरमान के सिवाय न चले। इसको कहते हैं फरमानबरदार। और वफादार किसको कहते हैं? सम्पूर्ण वफ़ादार वे कहलायेंगे जिसको संकल्प में भी वा स्वप्न में भी सिवाय बाप के और बाप के कर्त्तव्य वा बाप की महिमा, बाप के ज्ञान के और कुछ भी दिखाई न दे। ऐसे को सम्पूर्ण वफादार कहते हैं। एक बाप दूसरा न कोई – दूसरी कोई बात स्वप्न में, स्मृति में दिखाई न दे। उसको कहते हैं सम्पूर्ण वफादार। ऐसे फरमानबरदार की प्रैक्टिकल चलन में परख क्या होगी? सच्चाई और सफाई। संकल्प तक सच्चाई और सफाई चाहिए, न सिर्फ वाणी तक। अपने आप को देखना है कि कहाँ तक वफादार और फरमानबरदार बने हैं? अगर एक संग सदा बुद्धि की लगन है तो अनेक संग का रंग लग नहीं सकता। बुद्धि की लगन कम होने का कारण अनेक प्रकार के संग के आकर्षण अपने तरफ खींच लेते हैं। तो और

संग तोड़, एक संग जोड़ – यह पहला-पहला वायदा है। उस वायदे को निभाना, इनको ही सम्पूर्ण वफादार कहा जाता है। समझा?

जब सिद्धि देखेंगे तब तो संस्कार भरेंगे ना। तो ऐसा अपना स्मृति की सिद्धि का स्वरूप सामने आता है? जैसे सन शोज़ फादर है, वैसे ही रिटर्न में फादर का शो करते हैं? बापदादा प्रत्यक्ष रूप में यह पार्ट नहीं देखते, लेकिन शक्तियों और पाण्डवों का यह पार्ट है। तो इतना वफादार और फरमानबरदार बनना है जो एक सेकेण्ड भी, एक संकल्प भी फरमान के सिवाय न चले। इसको कहते हैं फरमानबरदार।

ऐसे फरमानबरदार की प्रैक्टिकल चलन में परख क्या होगी? सच्चाई और सफाई। संकल्प तक सच्चाई और सफाई चाहिए, न सिर्फ वाणी तक। अपने आप को देखना है कि कहाँ तक वफादार और फरमानबरदार बने हैं?

जो प्वाइन्ट को स्वरूप में लाोंगे तो वर्णन करने के बजाय साक्षात्कारमूर्त बन जायेंगे। तो यही पुरुषार्थ करते चलो। वर्णन करना तो बहुत सहज है। मनन करना भी सहज है। जो मनन करते हो, जो वर्णन करते हो वह स्वरूप बन अन्य आत्माओं को भी स्वरूपों का अनुभव कराओ। ऐसे को कहते हैं सपूत और सबूत दिखाने वाले। सपूत बच्चे को वफादार और फ़रमानबरदार कहा जाता है। सभी अपने को फ़रमानबरदान समझते हैं? जब विजय का वरदान है, तो विजय किससे होती है? जब फरमान पर चलते हैं। तो फरमानबरदार नहीं हो? स्थूल में फरमान पालन करने की शक्ति भी सूक्ष्म के आधार पर होती है। निरन्तर फरमान पालन होता है? तो मुख्य फरमान कौनसा है? निरन्तर याद में रहो और मन, वाणी, कर्म में प्योरिटी हो। औरों को भी सुनाते हो कि पवित्र बनो, योगी बनो। तो जो औरों को सुनाते हो वही मुख्य फरमान हुआ ना। संकल्प में भी अपवित्रता वा अशुद्धता न हो – इसको कहते हैं सम्पूर्ण पवित्र। ऐसे फरमानबरदान बने हो ना। सारी शक्ति-सेना पवित्र और योगी है कि अभी बनना है? निरन्तर योगी भी हैं।

11.9.71.. .. .. सदा फरमानबरदार उसको कहते हैं, जो एक संकल्प भी बिगर फरमान के न करे। सदैव अपने को फरमानबरदार के स्वरूप में स्थित रहकर फिर कोई संकल्प करो। ऐसे जो सम्पूर्ण फरमानबरदार हैं –– वही सम्पूर्ण वफादार भी होते हैं। ऐसे जो सम्पूर्ण फरमानबरदार हैं वही सम्पूर्ण वफादार भी होते हैं। यह ग्रुप तो सम्पूर्णता के समीप है ना। सम्पूर्ण वफादारी किसको कहते हैं? वफादार का मुख्य गुण क्या होता है? उनका मुख्य गुण होता है जो अपनी भले जान चली जाये लेकिन हर वस्तु की सम्भाल करेंगे। तो कोई भी चीज़ व्यर्थ नुकसान नहीं करेंगे। अगर संकल्प, समय, शब्द और कर्म – इन चारों में से कोई को भी व्यर्थ गंवाते हो वा नुकसान के खाते में जाता है तो उसको क्या सम्पूर्ण वफादार कहेंगे? क्योंकि जब से जन्म लिया अर्थात् फरमानबरदार, आज्ञाकारी बने, ईमानदार बने हैं? एक

छोटे से पैसे में भी ईमानदार होता है। तो जब से जन्म लिया है तब से मन अर्थात् संकल्प, समय और कर्म जो भी करेंगे वह बाप के ईश्वरीय सेवा अर्थ करेंगे। यह प्रतिज्ञा की? सर्व समर्पण हुए हो? तो यह सभी बाप के ईश्वरीय सेवा अर्थ हो गई। अगर ईश्वरीय सेवा की बजाय कहाँ संकल्प वा समय वा तन द्वारा व्यर्थ कार्य होता है तो उनको क्या कहेंगे? उनको सम्पूर्ण वफादार कहेंगे? यह नहीं समझना कि एक वा एक सेकेण्ड क्या बड़ी बात है। अगर एक नो पैसे की भी वफादारी नहीं तो उसको सम्पूर्ण वफादार नहीं कहेंगे। यह ग्रुप तो सम्पूर्ण फरमानबरदार, सम्पूर्ण वफादार है ना। ऐसे सम्पूर्ण वफादार, फरमानबरदार, ईमानदार, आज्ञाकारी ग्रुप को क्या कहेंगे?

11.7.72.. .. ..मुक्ति-धाम के मुक्ति का अनुभव जो अभी कर सकते हो वह वहाँ नहीं कर सकेंगे। तो यह नहीं समझना कि मुक्ति-जीवनमुक्ति का जन्मसिद्ध अधिकार भविष्य में पाना है। नहीं। जब से बच्चे बने तो वर्सा भी पा लिया है। बाकी रहा आज्ञाकारी, वफादार, फ़रमाँवरदार कहाँ तक बनते हो वह नम्बर। वर्से के अधिकारी तो बन जाते हो। उस वर्से को जीवन में धारण कर के उससे लाभ उठाना, वह हरेक की अवस्था पर है। वर्सा देने में बाप कोई अन्तर नहीं करता है। लायक और नालायक बनने पर अन्तर हो जाता है। इसलिो कहा कि जन्मसिद्ध अधिकार अपने आप में सदा प्राप्ति करते हो।

21.6.74.. .. .ऐसी आत्माओं में मुख्य तीन बातें दिखाई देंगी। कौन-सी? तीनों सम्बन्ध निभाने वाले त्रिमूर्ति स्नेही आत्मायें तीन बातों से सम्पन्न होंगी। बाप के सम्बन्ध से उनमें क्या विशेषता होगी?—फरमानबरदार। शिक्षक के रूप से क्या होगी? शिक्षा में वफादार और ईमानदार चाहिये। सतगुरु के सम्बन्ध में आज्ञाकारी। तो यह तीनों विशेषतायें ऐसी त्रिमूर्ति स्नेही आत्माओं में स्पष्ट दिखाई देंगी।

6.9.75 .. ....जैसे बाप ओबीडियेन्ट सर्वेन्ट (Obedient-servant) बन सेवा पर उपस्थित है, ऐसे ही हरेक बाप के साथी व सहयोगी बच्चों को भी बाप के समान ओबीडियेन्ट सर्वेन्ट बनना है। ओबीडियेन्ट सर्वेन्ट अलमस्त नहीं होते। दिन-रात सेवा में तत्पर रहते हैं। जैसे बाप बच्चों के आगे वफादार स्वरूप से साथ निभा रहे हैं, ऐसे ही बच्चों को भी फरमान-वरदार अर्थात् हर फरमान पर चलने वाले बन साथ निभाना है। ऐसे सदा के साथी बनना है।

30-4-77.. .. .ब्राह्मणों की कंपनी चढ़ती कला होती है। क्षत्रियों की कंपनी में ठहरती कला हो जाती है। जो जितना श्रेष्ठ होता है उसको कंपनी भी श्रेष्ठ होती है। तो ब्राह्मण श्रेष्ठ, क्षत्रियों को कम कर देते हैं। जो कम्पनी साथी को मंजूर नहीं। वफादार साथी कभी ऐसी कम्पनी नहीं करेंगे।

25-1-79 .. .. ..पहली बात – बाप का रिगार्ड – अर्थात् सदा जो है जैसा है वैसे स्वरूप से, यथार्थ पहचान से बाप के साथ सर्व सम्बन्धों की मर्यादाओं को निभाना। बाप के सम्बन्ध का रिगार्ड है फालो फादर करना। शिक्षक के सम्बन्ध का रिगार्ड है सदा पढ़ाई में रेगुलर (Regular) और पंक्चुअल (Punctual) रहना। पढ़ाई की सर्व सबजेक्ट में फुल अटैन्शन देना – सतगुरू के सम्बन्ध में रिगार्ड रखना – अर्थात् सतगुरु की आज्ञा देह सहित देह के सर्व सम्बन्ध भूलकर देही स्वरूप अर्थात् सतगुरू के समान निराकारी स्थिति में स्थिति रहना। सदा वापस घर जाने के लिए एवररेडी रहना। ऐसे ही साजन के सम्बन्ध का रिगार्ड – हर संकल्प और सेकेण्ड में उसी एक की लगन में आशिक रहना। तुम्ही से खाऊं, तुम्हीं से हर कार्य में सदा संग रहूँ...इस वफादारी को निभाना।

18.2-84.. .. ..बच्चों के ऐसे स्नेह की कमाल देख बापदादा हर्षित होते हैं। बच्चों के गुणों के गीत गाते हैं कि कैसे सदा बाप के संग के रंग में बाप समान बनते जा रहे हैं। बापदादा ऐसे फालो फादर करने वाले बच्चों को आज्ञाकारी, वफादार, फरमानवरदार सच्चे-सच्चे अमूल्य रत्न कहते हैं। आप बच्चों के आगे यह स्थूल हीरे जवाहरात भी मिट्टी के समान हैं। इतने अमूल्य हो। ऐसे अपने को अनुभव करते हो कि मैं बापदादा के गले की माला के विजयी अमूल्य रत्न हूँ। ऐसा स्वमान रहता है?

25.2.91 .. ...हर एक राज्य अधिकारी का राज्य अच्छी तरह से चल रहा है? आपके राज्य चलाने वाले साथी सहयोगी साथी, सदा समय पर यथार्थ रीति से सहयोग दे रहे हैं कि बीच-बीच में कभी धोखा भी दे देते हैं? जितने भी सहयोगी कर्मचारी कर्मेन्द्रियाँ, चाहे स्थूल हैं, चाहे सूक्ष्म हैं, सभी आपके आर्डर में है? जिसको जिस समय जो आर्डर करो उसी समय उसी विधि से आपके मददगार बनते हैं? रोज अपनी राज्य दरबार लगाते हो? राज्य कारोबारी सभी आज्ञाकारी, वफादार, एवररेडी हैं? क्या हालचाल है?

18-12-91 ... ..तपस्वी आत्मा की विशेषतायें पहले भी सुनाई है। आज और विशेषता सुना रहे हैं। तपस्वी आत्मा अर्थात् सदा ऑनेस्ट आत्मा। ऑनेस्टी ही तपस्वी की विशेषता है। ऑनेस्ट आत्मा अर्थात् हर कर्म में, श्रीमत में चलने में आनेस्ट होगी। ऑनेस्ट अर्थात् वफादार और इमानदार। श्रीमत पर चलने के ऑनेस्ट अर्थात् वफादार। ऑनेस्ट आत्मा स्वत: ही हर कदम श्रीमत के इशारे प्रमाण उठाती है। उनका हर कदम आटोमेटिक श्रीमत के इशारे पर ही चलता है।

10. वैराग्य (बेहद की वैरागवृत्ति)

27.7.70.. ..मधुबन में रहते मधुरता और बेहद की वैराग्यवृत्ति को धारण करना है। ाह है मधुबन का मुख लक्षण। इसको ही मधुबन कहा जाता है।

2.8.73.. .. इस पुरानी दुनिया से बेहद का वैराग्य दिलाना चाहते हो तो भाषण में जो प्वायन्ट्स देते हो, वह देते हुए वैराग्य वृत्ति के अनुभव में ले आओ। वह फील करे सचमुच यह सृष्टि जाने वाली है, इससे तो दिल लगाना व्यर्थ है। तो जरूर प्रैक्टिकल करेंगे।

3.2.74.. .. अब जितना ही, बेहद के विशाल स्वरूप की सर्विस तीव्र रूप से करते जा रहे हो इतना ही बेहद की उपराम वृत्ति तीव्र चाहिए। आपकी बेहद की उपरामवृत्ति अथवा वैराग्य वृत्ति विश्व की आत्माओं में अल्पकाल के लिए होगी। तो अपने सुख से परखने की शक्ति ही सफ़लता का मुख्य आधार है। वैराग्य उत्पन्न करेगी। तब ही वैराग्य के बाद समाप्ति होगी। अपने आप से पूछो कि क्या हमारे अन्दर बेहद की वैराग्य वृत्ति रहती है? जो गायन है कि करते हुए अकर्ता। सम्पर्क-सम्बन्ध में रहते हुए कर्मातीत, क्या ऐसी स्टेज रहती है? कोई भी लगाव न हो और सर्विस भी लगाव से न हो लेकिन निमित्तभाव से हो; इससे ही कर्मातीत बन जायेंगे।

27.9.75.. .. बेहद के त्यागी, बेहद के सेवाधारी और बेहद के वैरागी। इन तीनों स्टेजिस से पार करने वाले ही विश्व-महाराजन् बन सकते हैं। साथ ही अन्त में लाइट हाउस और माइट हाउस बन सकते हैं। अपने आपको चेक करो कि तीनों स्टेजिस में से कौन-सी स्टेज तक पहुँचे हैं? स्वयं ही स्वयं का जज बनो। धर्मराजपुरी में जाने से पहले जो स्वयं, स्वयं का जज बनता है वही धर्मराजपुरी की सजा से बच जाता है।

7.10.75.. .. आज की दुनिया में भी हद के वैरागी जंगल में या श्मशान में जाते हैं। इसलिए ही गायन है श्मशानी वैराग्य। तो जब तक यह दुनिया श्मशान है, ऐसा अनुभव नहीं होगा तो सदाकाल का बेहद का वैराग्य – यह अनुभव कैसे होगा?

अपने आप से पूछो कि ऋषि बना हूँ? ऐसे निश्चय बुद्धि वैराग्य के साथ-साथ अधिकार की खुशी में भी रहेगे तो राज-ऋषि बनने के लिए जितना ही राज्य का नशा उतना ही बेहद के

वैराग्य के नजारे, दोनों ही साथ-साथ अनुभव होंगे। जितना कब्रिस्तान अनुभव होगा, उतना ही परिस्तान सामने दिखाई देगा।

एक तरफ सर्व अधिकार, दूसरी तरफ बेहद का वैराग्य-दोनों का बैलेन्स रखने वाला ही 'राज-ऋषि' कहला सकता है।

16.10.75.. .. एक तरफ सर्व अधिकार, दूसरी तरफ बेहद का वैराग्य-दोनों का बैलेन्स रखने वाला ही 'राज-ऋषि' कहला सकता है।

19.10.75.. .. राग-द्वेष के बदले वैराग्य की भावना रखो।

21.10.75.. .. विश्व-परिवर्तन होने के पहले विश्व की सर्व-आत्माओं में वैराग्य वृत्ति होगी। और वैराग्य वृत्ति से ही बाप के परिचय को धारण कर सकेंगे कि हाँ हम आत्माओं का बाप आ चुका है। तो जैसे विश्व की आत्माओं में वैराग्य-वृत्ति ही परिवर्तन का आधार होगा वैसे ही जो निमित्त बनी हुई आत्मायें हैं उन्हों में भी सम्पूर्ण परिवर्तन का आधार बेहद का वैराग्य बनेगा। तो संगठन में भी बेहद के वैराग्य-वृत्ति को लाने का पुरुषार्थ करो। एक-दो के साथी व सहयोगी बनो। जब वैराग्य-वृत्ति इमर्ज रूप में होगी तो पुराने संस्कार व स्वभाव बहुत जल्दी और सहज ही वैराग्य-वृत्ति के अन्दर मर्ज हो जायेंगे। सब सोचते हैं ना कि क्या होगा जो पुराना पन सब भूल जायेगा। मनुष्य को जब हद का वैराग्य होता है तो पुराने आकर्षण के संस्कार और स्वभाव आदि को समाप्त करने में वैराग्य-वृत्ति ही आधार बनेगी। इस से ही चेन्ज आयेगी। अब ऐसी धरनी बनाओ और ऐसे बेहद के वैरागियों का संगठन बनाओ, जिन्हों के वाइब्रेशन्स और वायुमण्डल द्वारा अन्य आत्माओं में भी वह संस्कार इमर्ज हो जायें। जैसे सेवाधारियों का संगठन होता है वैसे बेहद के वैरागियों का संगठन मजबूत होना चाहिए जिसको देखते ही अन्य आत्माओं को भी ऐसा वायब्रेशन आये। एक तरफ बेहद का वैराग्य होगा दूसरी तरफ बाप के समान बाप के लव में लवलीन होंगे, तब ही बेहद का वैराग्य आयेगा। एक सेकेण्ड भी और एक संकल्प भी इस लवलीन अवस्था से नीचे नहीं आयेंगे। ऐसे लवली बाप के लवली बच्चों का संगठन हो। उनको कहेगे लवली संगठन। एक तरफ अति लव दूसरी तरफ बेहद का वैराग्य दोनों का संगठन साथ-साथ समान दिखाई देगा, ऐसा संगठन बनाओ तो वह तारीख स्पष्ट दिखाई देगी। यह संगठन ही तारीख को प्रसिद्ध करेगा।

जैसे विश्व की आत्माओं में वैराग्य वृत्ति ही परिवर्तन का आधार होगी वैसे ही जो निमित्त बनी हुई आत्मायें हैं उन्हीं में भी सम्पूर्ण परिवर्तन का आधार 'बेहद का वैराग्य' बनेंगा।

वैराग्य वृत्ति का आधार – पुराने आकर्षण के स्वभाव-संस्कारों को समाप्त करना।

बेहद की वैराग्य वृत्ति को टीचर्स अपने में अनुभव करती हैं? बेहद की वैराग्य वृत्ति है कि अपने सेन्टर्स व जिज्ञासुओं से लगाव नहीं। जब इस लगाव से बेहद का वैराग्य होगा तब जयजयकार होगी। सब स्थूल, सूक्ष्म साधनों से बेहद का वैराग्य।

25.10.75.. .. जब सबसे उपराम हों तब बेहद की वैराग्य वृत्ति कहेगे। अपने शरीर से भी उपराम। जैसे कि निमित्त सेवा-अर्थ चलाते हैं।

जो अपने में विशेषता है, कोई में हैन्डलिंग पॉवर अच्छी है वा कोई में वाणी की पॉवर है तो कहेंगी मैं ऐसी हूँ। परन्तु यह तो बाप-दादा की देन है। अपने ज्ञान की विशेषता, विशेषता कोई भी हो, उससे भी लगाव नहीं। इसमें भी अभिमान आ जाता है इससे तो यह बुद्धि में रखो कि – ''यह बाप से मिला हुआ वर्सा है। जो सर्व-आत्माओं के प्रति हमें मिला है, जो दे रहे हैं, हम तो निमित्त हैं।'' ऐसे बेहद के वैराग्य वृत्ति का संगठन टीचर्स का होना चाहिए। जो चलने से, देखने से और बोलने से सबको महसूस हो कि ये बेहद के वैरागी हैं। ज्ञान से सेवा करने में होशियार हैं, यह तो सब महसूस करते हैं। अब बेहद के वैराग्य का अनुभव करो, जो दूसरे भी अनुभव करें।

28.10.75.. .. सम्पूर्ण पवित्रता और परिवर्तन- शक्ति – इन दोनों विशेषताओं से सेवा, स्नेह और सहयोग में विशेष आत्मा बन सकेंगी। नहीं तो ट्रॉयल की लिस्ट में रहेगी। सरेण्डर की लिस्ट में नहीं आ सकेंगी। इन दोनों विशेषताओं को कायम रखने वाली कुमारी ही गायन-पूजन योग्य होंगी। अल्पकाल का वैराग्य नहीं, लेकिन सदाकाल का वैराग्य। अर्थात् 'त्याग और तपस्या' – तब कहेगे विशेष कुमारी। इसके लिए कौन-सा साधन अपनाना पड़े। इसके लिए जो नामीग्रामी हैं और उनमें से भी जो स्नेह वाली आत्माए हैं, एक हैं स्वार्थ वाली और एक हैं स्नेह वाली। स्नेह वाली आत्माओं को समीप लाते रहो। बार-बार स्नेह मिलन के सम्पर्क से उनको नज़दीक लायेंगे तो उन द्वारा अनेकों का कल्याण होगा।

9.1.85.. .. मधुबन निवासी अर्थात् सदा अपने मधुरता से सर्व को मधुर बनाने वाले और सदा अपने बेहद के वैराग वृत्ति द्वारा बेहद का वैराग दिलाने वाले। यही मधुबन निवासियों की विशेषता है। मधुरता भी अति और वैरागवृत्ति भी अति। ऐसे बैलेन्स रखने वाले सदा ही सहज और स्वत: आगे बढ़ने का अनुभव करते हैं।

25.11.85.. .. विजयी रत्न सदा हार में भी जीत, जीत में भी जीत अनुभव करेंगे। हद के वैराग को कहते हैं – किनारा करना। नाम वैराग कहते लेकिन होता किनारा है। तो विजयी रत्न किसी कार्य से, समस्या से, व्यक्ति से किनारा नहीं करेंगे। लेकिन सब कर्म करते हए, सामना करते हुए, सहयोगी बनते हुए बेहद के वैरागवृत्ति में होंगे। जो सदाकाल का है।

बहानेबाजी को मर्ज करो और बेहद की वैरागवृत्ति को इमर्ज करो।

1.1.86.. अर्जुन की विशेषता सदा बिन्दी में स्मृति स्वरूप बन विजयी बनना है। ऐसे नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप बनने वाला अर्जुन। सदा गीता ज्ञान सुनने और मनन करने वाला अर्जुन। ऐसा विदेही, जीते जी सब मरे पड़े हैं – ऐसे बेहद की वैराग वृत्ति वाले अर्जुन कौन बनेंगे? बनना है कि सिर्फ बोलना है? नया वर्ष कहते हो, सदा हर सेकण्ड में नवीनता। मन्सा में, वाणी में, कर्म में, सम्बन्ध में नवीनता लाना।

23.1.87.. .. अपने को राजऋषि, श्रेष्ठ आत्मायें अनुभव करते हो? राजऋषि अर्थात् राज्य होते हुए भी ऋषि अर्थात् सदा बेहद के वैरागी। स्थूल देश का राज्य नहीं है लेकिन स्व का राज्य है। स्व-राज्य करते हुए बेहद के वैरागी भी हो, तपस्वी भी हो क्योंकि जानते हो पुरानी दुनिया में है ही क्या। इस दुनिया को कहते ही हो असार संसार, कोई सार नहीं। जितना ही बनाने की कोशिश करते हैं, उतना ही बिगड़ता है। तो असार हुआ ना। तो असार संसार से स्वत: ही वैराग आ जाता है क्योंकि असार संसार से ब्राह्मणों का श्रेष्ठ संसार मिल गया। श्रेष्ठ संसार मिल गया तो असार से वैराग स्वत: हो जायेगा। वैराग अर्थात् लगाव न हो। अगर लगाव होता है तो बुद्धि का झुकाव होता है। जिस तरफ़ लगाव होगा, बुद्धि उसी तरफ़ जायेगी। इसलिए राजऋषि हो, राजे भी हो और साथ-साथ बेहद के वैरागी भी हो। ऋषि तपस्वी होते हैं। किसी भी आकर्षण में आकर्षित नहीं होने वाले। स्व-राज्य के आगे यह हद की आकर्षण क्या है? कुछ भी नहीं। तो अपने को क्या समझते हो? राजऋषि।

22.1.87.. .. समझते हैं अब तो बहुत योग लगा लिया, ज्ञानी तू आत्मा भी बन गये, योगी तू आत्मा भी बन गये, सेवाधारी भी बहुत नामीग्रामी बन गये, सेन्टर्स इन्चार्ज भी बन गये, सेवा की राजधानी भी बन गई, प्रकृति भी सेवा योग्य बन गई, आराम से जीवन बिता रहे हैं। यह है अटेन्शन रखने में अलबेलापन। इसलिए जहाँ जीना है वहाँ तक पढ़ाई और सम्पूर्ण बनने का अटेन्शन, बेहद के वैराग वृत्ति का अटेन्शन देना है - इसे भूल जाते हैं। ब्रह्मा बाप को देखा, अन्तिम सम्पूर्ण कर्मातीत स्थिति तक स्वयं पर, सेवा पर, बेहद की वैराग वृत्ति पर, स्टूडेन्ट लाइफ की रीति से अटेन्शन देकर निमित्त बन कर दिखाया। इसलिए आदि से अन्त तक हिम्मत में रहे, हिम्मत दिलाने के निमित्त बने। तो बाप के नम्बरवन मदद के पात्र बन नम्बरवन प्राप्ति को प्राप्त हुए। भविष्य निश्चित होते भी अलबेले नहीं रहे। सदा अपने तीव्र पुरुषार्थ के अनुभव बच्चों के आगे अन्त तक सुनाते रहे। मदद के सागर में ऐसे समा गये जो अब भी बाप समान हर बच्चे को अव्यक्त रूप से भी मददगार हैं। इसको कहते हैं – एक कदम की हिम्मत और पद्मगुणा मदद के पात्र बनना

27.11.87.. .. सारे कल्प में राजाओं की दरबार अनेक बार लगती है लेकिन यह राजऋषियों की दरबार इस संगमयुग पर ही लगती है। राजा भी हो और ऋषि भी हो। यह विशेषता इस समय की इस दरबार की गाई हुई है। एक तरफ़ राजाई अर्थात् सर्व प्राप्तियों के अधिकारी और दूसरे तरफ ऋषि अर्थात् बेहद के वैराग वृत्ति वाले। एक तरफ़ सर्व प्राप्ति के अधिकार का नशा और दूसरे तरफ बेहद के वैराग का अलौकिक नशा। जितना ही श्रेष्ठ भाग्य उतना ही श्रेष्ठ त्याग। दोनों का बैलेन्स। इसको कहते हैं राजऋषि। ऐसे राजऋषि बच्चों का बैलेन्स देख रहे थे। अभी-अभी अधिकारीपन का नशा और अभी-अभी वैराग वृत्ति का नशा - इस प्रैक्टिस में कहाँ तक स्थित हो सकते हैं अर्थात् दोनो स्थितियों का समान अभ्यास कहाँ तक कर रहे हैं - यह चेक कर रहे थे। नम्बरवार अभ्यासी तो सब बच्चे हैं ही। लेकिन समय प्रमाण इन दोनों अभ्यास को और भी ज्यादा से ज्यादा बढ़ाते चलो। बेहद के वैराग वृत्ति का अर्थ ही है – वैराग अर्थात् किनारा करना नहीं, लेकिन सर्व प्राप्ति होते हुए भी हद की आकर्षण मन को वा बुद्धि को आकर्षण में नहीं लावे। बेहद अर्थात् मैं सम्पूर्ण सम्पन्न आत्मा बाप समान सदा सर्व कर्मेन्द्रियों की राज्य अधिकारी। इन सूक्ष्म शक्तियों, मन-बुद्धि-संस्कार के भी अधिकारी। संकल्प मात्र भी अधीनता न हो। इसको कहते हैं राजऋषि अर्थात् बेहद

की वैराग वृत्ति। यह पुरानी देह वा देह की पुरानी दुनिया वा व्यक्त भाव, वैभवों का भाव - इस सब आकर्षण से सदा और सहज दूर रहने वाले।

तो राजऋषि अर्थात् सर्व के राज्य अधिकारी। राज्य अधिकारी सदा और सहज तब होगा जब ऋषि अर्थात् बेहद के वैराग वृत्ति के अभ्यासी होंगे। वैराग अर्थात् लगाव नहीं। सदा बाप के प्यारे। यह प्यारापन ही न्यारा बनाता है। बाप का प्यारा बन, न्यारा बन कार्य में आना – इसको कहते हैं बेहद का वैरागी। बाप का प्यारा नहीं तो न्यारा भी नहीं बन सकते, लगाव में आ जायेंगे। बाप का प्यारा और किसी व्यक्ति वा वैभव का प्यारा हो नहीं सकता। वह सदा आकर्षण से परे अर्थात् न्यारे होंगे। इसको कहते हैं निर्लेप स्थिति। कोई भी हद की आकर्षण की लेप में आने वाले नहीं। रचना वा साधनों को निर्लेप होकर कार्य में लावें। ऐसे बेहद के वैरागी, सच्चे राजऋषि बने हो? ऐसे नहीं सोचना कि सिर्फ एक वा दो कमज़ोरी रह गई है, सिर्फ एक सूक्ष्म शक्ति वा कर्मेन्द्रिय कण्ट्रोल में कम है, बाकी सब ठीक है। लेकिन जहाँ एक भी कमज़ोरी है तो वह माया का गेट है। चाहे छोटा, चाहे बड़ा गेट हो लेकिन गेट तो है ना। अगर गेट खुला रह गया तो मायाजीत जगतजीत कैसे बन सकेंगे?

ब्रह्मा बाप की लास्ट स्टेज राजऋषि की देखी। इतना बच्चों का प्यारा होते भी, सामने देखते हुए भी न्यारापन ही देखा ना। बेहद का वैराग - यही स्थिति प्रैक्टिकल में देखी। कर्मभोग होते भी कर्मेन्द्रियों पर अधिकारी बन अर्थात् राजऋषि बन सम्पूर्ण स्थिति का अनुभव कराया। इसलिए कहते हैं – 'फ़ालो फ़ादर'। तो अपने राज्य अधिकारियों, राज्य कारोबारियों को सदा देखना है। कोई भी राज्य कारोबारी कहाँ धोखा न दें। समझा?

सदा अपने को 'राजऋषि' समझते हो? एक तरफ़ है राज्य, दूसरे तरफ़ है वैराग - दोनों का बैलेन्स हो। बेहद का वैराग, वैराग नहीं लेकिन प्राप्तिस्वरूप बना देता है क्योंकि पुरानी दुनिया से वैराग लाते हो और नई दुनिया के मालिक बन जाते हो। तो नाम वैराग है लेकिन मिलती प्राप्ति है। छोड़ने में ही लेना है। एक देते हो और पद्म लेते हो! तो बेहद का वैराग राज्य भाग्य दिलाने वाला है। एक जन्म के लिए वैराग अनेक जन्मों के लिए सदा श्रेष्ठ भाग्य। ऐसे राजऋषि हो? राजऋषि कुमार और कुमारियों का ही गायन है। ऐसी राजऋषि आत्माओं को विश्व की आत्मायें दिल से प्यार करती है। चैतन्य से भी ज़्यादा आपके जड़ चित्रों को प्यार से याद करते हैं। क्योंकि त्याग का भाग्य प्राप्त हुआ है। तो ऐसे राजऋषि आत्मायें हैं – इस नशे में सदा रहो।

23.12.87.. .. मग्न अवस्था वाले अपने अनुभव के आधार से औरों को निर्विघ्न बनाने के एग्ज़ाम्पल बनते हैं क्योंकि कमज़ोर आत्मायें उन्हों के अनुभव को देख स्वयं भी हिम्मत रखती हैं, उत्साह में आती हैं - हम भी ऐसे बन सकते हैं। मग्न रहने वाली आत्मायें बाप समान होने के कारण स्वत: ही बेहद के वैराग वृत्ति वाली, बेहद के सेवाधारी और बेहद के प्राप्ति के नशे में रहने वाले सहज बन जाते हैं। मग्न रहने वाली आत्मायें सदा कर्मातीत अर्थात् कर्मबन्धन से न्यारी और सदा बाप की प्यारी हैं।

7.3.88.. .. अभी थोड़ा समय को आगे बढ़ने दो। थोड़े समय में जब अति और अन्त - दोनों ही अनुभव होगा तो चारों ओर अन्जान आत्मायें हद के वैराग वृत्ति में आयेंगी और आप भाग्यवान आत्मायें बेहद के वैराग वृत्ति के अनुभव में होगी। अभी तो दुनिया वालों में भी वैराग नहीं है। अगर थोड़ी-बहुत रिहर्सल होती भी है तो और ही अलबेलेपन की नींद में सो जाते हैं कि यह तो होता ही रहता है। लेकिन जब 'अति' और 'अन्त' के नजारे सामने आयेंगे तो स्वत: ही हद की वैराग वृत्ति उत्पन्न होगी और अति टेन्शन (तनाव) होने के कारण सभी का अटेन्शन (ध्यान) एक बाप तरफ जायेगा। उस समय सर्व आत्माओं की दिल से आवाज निकलेगी कि सब का रचयिता, सभी का बाप एक है और बुद्धि अनेक तरफ़ से निकल एक तरफ़ स्वत: ही जायेगी। ऐसे समय पर आप भाग्यवान आत्माओं के बेहद के वैराग वृत्ति की स्थिति स्वत: और निरन्तर हो जायेगी और हर एक के मस्तक से भाग्य की रेखायें स्पष्ट दिखाई देंगी। अभी भी श्रेष्ठ भाग्यवान बच्चों की बुद्धि में सदा क्या रहता? 'भगवान' और 'भाग्य'। अभी थोड़ा समय को आगे बढ़ने दो। थोड़े समय में जब अति और अन्त - दोनों ही अनुभव होगा तो चारों ओर अन्जान आत्मायें हद के वैराग वृत्ति में आयेंगी और आप भाग्यवान आत्मायें बेहद के वैराग वृत्ति के अनुभव में होगी। अभी तो दुनिया वालों में भी वैराग नहीं है। अगर थोड़ी-बहुत रिहर्सल होती भी है तो और ही अलबेलेपन की नींद में सो जाते हैं कि यह तो होता ही रहता है। लेकिन जब 'अति' और 'अन्त' के नजारे सामने आयेंगे तो स्वत: ही हद की वैराग वृत्ति उत्पन्न होगी और अति टेन्शन (तनाव) होने के कारण सभी का अटेन्शन (ध्यान) एक बाप तरफ जायेगा। उस समय सर्व आत्माओं की दिल से आवाज निकलेगी कि सब का रचयिता, सभी का बाप एक है और बुद्धि अनेक तरफ़ से निकल एक तरफ़ स्वत: ही जायेगी। ऐसे समय पर आप भाग्यवान आत्माओं के बेहद के वैराग वृत्ति की स्थिति स्वत: और निरन्तर हो जायेगी और हर एक के मस्तक से भाग्य की

रेखायें स्पष्ट दिखाई देंगी। अभी भी श्रेष्ठ भाग्यवान बच्चों की बुद्धि में सदा क्या रहता? 'भगवान' और 'भाग्य'।

13.12.90.. .. तपस्या का सदा और सहज फाउन्डेशन है – बेहद का वैराग्य।
बेहद का वैराग्य अर्थात् चारों ओर के किनारे छोड़ देना। क्योंकि किनारे को सहारा बना दिया है। समय प्रमाण प्यारे बने और समय प्रमाण श्रीमत पर निमित्त बनी हुई आत्माओं के इशारे प्रमाण सेकेण्ड में बुद्धि प्यारे से फिर न्यारी बन जाये, वह नहीं होती। जितना जल्दी प्यारे बनते हो, उतने न्यारे नहीं बनते हो। प्यारे बनने में होशियार है, न्यारे बनने में सोचते हैं, हिम्मत चाहिए। न्यारा बनना ही किनारा छोड़ना है और किनारा छोड़ना ही बेहद की वैराग्य वृत्ति है। किनारों को सहारा बनाए पकड़ना आता है लेकिन छोड़ने में क्या करते हो? लम्बा क्वेश्चन मार्क लगा देते हो। सेवा का इन्चार्ज बनना बहुत अच्छा आता है लेकिन इन्चार्ज के साथ-साथ स्वयं की और औरों की बैटरी चार्ज करने में मुश्किल लगता है। इसलिए वर्तमान समय तपस्या द्वारा वैराग्य वृत्ति की अति आवश्यकता है। बहुत-बहुत भाग्यवान हो। अनेक प्रकार की मेहनत से छूट गये। दुनिया वालों को समय करायेगा और समय पर मजबूरी से
करेंगे। बच्चों को बाप समय के पहले तैयार करते हैं और बाप की मोहब्बत से करते हो। अगर मोहब्बत से नहीं किया वा थोड़ा किया तो क्या होगा? मजबूरी से करना ही पड़ेगा। बेहद का वैराग्य धारण करना ही होगा लेकिन मजबूरी से करने का फल नहीं मिलता। मोहब्बत का प्रत्यक्षफल भविष्य फल बनता है और मजबूरी वालों को कहाँ से क्रॉस करना पड़ेगा! क्रॉस करना भी क्रॉस में चढ़ने के समान है। तो क्या पसन्द है? मोहब्बत से करेंगे।
31.3.90.. .. रहमदिल आत्मा को सदा बेहद की वैराग्यवृत्ति स्वतः ही आती है। स्व के प्रति भी रहम हो कि मैं कितनी ऊंच-ते-ऊंच बाप की वही आत्मा हूँ और वही बाप समाम बनने के लक्ष्यधारी हूँ। उस प्रमाण ओरिज्नल श्रेष्ठ स्वभाव वा संस्कार में अगर कोई कमी है तो अपने ऊपर दिल का रहम कमियों से वैराग्य दिला देगा।
1.4.92.. .. अभी समय प्रमाण ज्ञानी योगी तू आत्माओं की आवश्यकता और ज्यादा है। क्योंकि आगे के समय में वैराग्य वृत्ति के वायुमण्डल के कारण भावना स्वरुप आत्मायें और भी सहज आनी ही हैं। इसलिए सेवा के लक्ष्य में ज्ञानी-योगी तू आत्माओं के तरफ अटेन्शन ज्यादा चाहिए।
26.1.95.. .. बेहद की वैरागवृत्ति द्वारा साधना के बीज को प्रतक्ष करो।

31.12.95.. .. बापदादा को बहुत रहम आता है कि पश्चाताप् की घड़ियाँ कितनी कठिन होगी। इसलिए अलबेलेपन की लहर को, दूसरों को देखने की लहर को इस पुराने वर्ष में मन से विदाई दो। जब थोड़ा उमंग-उत्साह आता है ना तो थोड़े समय के लिए वैराग्य आता है

लेकिन वो अल्पकाल का वैराग्य होता है। इसलिए जो बापदादा ने मुक्त होने की बातें सुनाई हैं, उसके ऊपर बहुत अटेन्शन देना।

अलबेलेपन की लहर को समाप्त करने का साधन है बेहद का वैराग्य।

3.4.96.. .. समय समीप है तो समय की समीपता के अनुसार अब कौन सी लहर होनी चाहिए? (वैराग्य की) कौन सा वैराग्य – हद का या बेहद का? जितना सेवा का उमंग-उत्साह है, उतना समय की आवश्यकता प्रमाण स्व-स्थिति में बेहद का वैराग्य कहाँ तक है? क्योंकि आपके सेवा की सफ़लता है जल्दी से जल्दी प्रजा तैयार हो जाए। इसलिए सेवा करते हो ना? तो जब तक आप निमित्त आत्माओं में बेहद की वैराग्य वृत्ति नहीं है, तो अन्य आत्माओं में भी वैराग्य वृत्ति नहीं आ सकती और जब तक वैराग्य वृत्ति नहीं होगी तो जो चाहते हो कि बाप का परिचय सबको मिले, वह नहीं मिल सकता। बेहद का वैराग्य सदाकाल का वैराग्य है। अगर समय प्रमाण वा सरकमस्टांश प्रमाण वैराग्य आता है तो समय नम्बरवन हो गया और आप नम्बर दो हो गये। परिस्थिति या समय ने वैराग्य दिलाया। परिस्थिति खत्म, समय पास हो गया तो वैराग्य पास हो गया। तो उसको क्या कहेंगे – बेहद का वैराग्य या हद का? तो अभी बेहद का वैराग्य चाहिए। अगर वैराग्य खण्डित हो जाता है तो उसका मुख्य कारण है – देह-भान। जब तक देह-भान का वैराग्य नहीं है तब तक कोई भी बात का वैराग्य सदाकाल नहीं होता है, अल्पकाल का होता है। सम्बन्ध से वैराग्य – यह बड़ी बात नहीं है, वह तो दुनिया में भी कईयों को दिल से वैराग्य आ जाता है लेकिन यहाँ देह-भान के जो भिन्न-भिन्न रूप हैं, उन भिन्न-भिन्न रूपों को तो जानते हो ना? कितने देह-भान के रूप हैं, उसका विस्तार तो जानते हो लेकिन इस अनेक देह-भान के रूपों को जानकर, बेहद के वैराग्य में रहना। देह-भान, देही-अभिमान में बदल जाए। जैसे देह-भान एक नेचुरल हो गया, ऐसे देही-अभिमान नेचुरल हो जाए क्योंकि हर बात में पहला शब्द देह ही आता है। चाहे सम्बन्ध है तो भी देह का ही सम्बन्ध है, पदार्थ हैं तो देह के सर्व की ब्लैसिंग लेनी है तो बैलेन्स ठीक रखो। । तो मूल आधार देह-भान है। जब तक किसी भी रूप में देह-भान है तो वैराग्य वृत्ति नहीं हो सकती। और बापदादा ने देखा कि वर्तमान समय जो देह-भान का विघ्न है उसका कारण है कि देह के जो पुराने संस्कार हैं, उससे वैराग्य नहीं है। पहले देह के पुराने संस्कारों से वैराग्य चाहिए। संस्कार स्थिति से नीचे ले आते हैं। संस्कार के कारण सेवा में वा सम्बन्ध-सम्पर्क में विघ्न पड़ते हैं। तो रिजल्ट में देखा कि देह के पुराने संस्कार से जब तक वैराग्य नहीं आया है,

तब तक बेहद का वैराग्य सदा नहीं रहता। संस्कार भिन्न-भिन्न रूप से अपने तरफ आकर्षित कर लेते हैं। तो जहाँ किसी भी तरफ आकर्षण है, वहाँ वैराग्य नहीं हो सकता। तो चेक करो कि मैं अपने पुराने वा व्यर्थ संस्कार से मुक्त हूँ? कितनी भी कोशिश करेंगे, करते भी हैं कि वैराग्य वृत्ति में रहें लेकिन संस्कार कोई-कोई के पास या मैजारिटी के पास किस न किस रूप में ऐसे प्रबल हैं जो अपनी तरफ खींचते हैं। तो पहले पुराने संस्कार से वैराग्य। संस्कार न चाहते भी इमर्ज हो जाते हैं क्यों? चाहते नहीं हो लेकिन सूक्ष्म में संस्कारों को भस्म नहीं किया है। कहाँ न कहाँ अंश मात्र रहे हुए हैं, छिपे हुए हैं वह समय पर न चाहते हुए भी इमर्ज हो जाते हैं। फिर कहते हैं – चाहते तो नहीं थे लेकिन क्या करें, हो गया, हो जाता है ...... यह कौन बोलता है – देह-भान या देही-अभिमान? तो बापदादा ने देखा कि संस्कारों से वैराग्य वृत्ति में कमजोरी है। खत्म किया है लेकिन अंश भी नहीं हो, ऐसा खत्म नहीं किया है और जहाँ अंश है तो वंश तो होगा ही। आज अंश है, समय प्रमाण वंश का रूप ले लेता है। परवश कर देता है। कहने में तो सभी क्या कहते हैं कि जैसे बाप नॉलेजफुल है वैसे हम भी नॉलेजफुल हैं, लेकिन जब संस्कार का वार होता है तो नॉलेजफुल हैं या नॉलेज पुल हैं? क्या हैं? नॉलेजफुल के बजाए नॉलेज पुल बन जाते हो। उस समय किसी से भी पूछो तो कहेंगे – हाँ, समझती तो मैं भी हूँ, समझता तो मैं भी हूँ, होना नहीं चाहिए, करना नहीं चाहिए लेकिन हो जाता है। तो नॉलेजफुल हुए या नॉलेज पुल हुए? (नॉलेजपुल अर्थात् नॉलेज को खींचने वाले) जो नॉलेजफुल है उसे कोई भी संस्कार, सम्बन्ध, पदार्थ वार नहीं कर सकता।

तो डायमण्ड जुबली वाले क्या करेंगे? लहर फैलायेंगे ना? आप लोग तो अनुभवी हैं। शुरू का अनुभव है ना! सब कुछ था, देशी घी खाओ जितना खा सकते, फिर भी बेहद की वैराग्य वृत्ति। दुनिया वाले तो देशी घी खाते हैं लेकिन आप तो पीते थे। घी की नदियाँ देखी। तो डायमण्ड जुबली वालों को विशेष काम करना है – आपस में इकट्ठे हुए हो तो रूहरिहान करना। जैसे सेवा की मीटिंग करते हो वैसे इसकी मीटिंग करो। जो बापदादा कहते हैं, चाहते हैं सेकण्ड में अशरीरी हो जायें – उसका फाउण्डेशन यह बेहद की वैराग्य वृत्ति है, नहीं तो कितनी भी कोशिश करेंगे लेकिन सेकण्ड में नहीं हो सकेंगे। युद्ध में ही चले जायेंगे और जहाँ वैराग्य है तो ये वैराग्य है योग्य धरनी, उसमें जो भी डालो उसका फल फौरन निकलता। तो क्या करना है? सभी को फील हो कि बस हमको भी अभी वैराग्य वृत्ति में जाना है। अच्छा। समझा क्या करना है? सहज है या मुश्किल है? थोड़ा-थोड़ा आकर्षण तो होगी या नहीं?

साधन अपने तरफ नहीं खींचेंगे? अभी अभ्यास चाहिए–जब चाहे, जहाँ चाहे, जैसा चाहिए – वहाँ स्थिति को सेकण्ड में सेट कर सके। सेवा में आना है तो सेवा में आये। सेवा से न्यारे हो जाना है तो न्यारे हो जाएं। ऐसे नहीं, सेवा हमको खींचे। सेवा के बिना रह नहीं सकें। जब चाहें, जैसे चाहें, विल पावर चाहिए। विल पावर है? स्टॉप तो स्टॉप हो जाए। ऐसे नहीं लगाओ स्टॉप और हो जाए क्वेश्चनमार्क। फुलस्टॉप। स्टॉप भी नहीं फुलस्टॉप। जो चाहें वह प्रैक्टिकल में कर सकें। चाहते हैं लेकिन होना मुश्किल है तो इसको क्या कहेंगे? विल पावर है कि पावर है? संकल्प किया – व्यर्थ समाप्त, तो सेकण्ड में समाप्त हो जाए। सेवा के उमंग-उत्साह के साथ, बेहद की वैराग्य वृत्ति ही सफलता का आधार है। वैराग्य खण्डित होने का मुख्य कारण है देह-भान। समय वा परिस्थिति प्रमाण वैराग्य आया तो यह भी अल्पकाल का वैराग्य है। अपने पुराने संस्कारों से वैराग्य आना ही सच्चा वैराग्य है।

वैराग्य ऐसी योग्य धरनी है जिसमें जो भी फल डालेंगे वह फलीभूत अवश्य होगा।

बेहद के वैराग्य वृत्ति का फाउण्डेशन मजबूत हो तो सेकण्ड में अशरीरी बनना सहज है।

10.5.97(दिव्य सन्देश).. .. बाबा ने तो पहले से ही बता दिया है कि आश्चर्यवत बातें होंगी लेकिन बच्चों को आश्चर्य व क्वेश्चन मार्क न लगाए, सेकण्ड में फुलस्टॉप लगाने का अभ्यास पक्का करना है। ये तो विश्व-परिवर्तन का सूचक है। हांगकांग वालों को और स्पीड में आगे बढ़ाने का साईन है। बच्चे आदि से लाड-प्यार से चले हैं और बापदादा भी गोल्डन-डॉल कहते हैं। अभी डॉल को परिस्थिति नचाती है या बाप के श्रीमत की अंगुली पर नाच रहे हैं। बापदादा कहते हैं ड्रामा की हर सीन को साक्षी हो कल्याण की भावना से देखो। देश में क्या भी हो हमारे लिए बेहद के वैराग्य की सूचना है।.. बाबा ने तो पहले से ही बता दिया है कि आश्चर्यवत बातें होंगी लेकिन बच्चों को आश्चर्य व क्वेश्चन मार्क न लगाए, सेकण्ड में फुलस्टॉप लगाने का अभ्यास पक्का करना है। ये तो विश्व-परिवर्तन का सूचक है। हांगकांग वालों को और स्पीड में आगे बढ़ाने का साईन है। बच्चे आदि से लाड-प्यार से चले हैं और बापदादा भी गोल्डन-डॉल कहते हैं। अभी डॉल को परिस्थिति नचाती है या बाप के श्रीमत की अंगुली पर नाच रहे हैं। बापदादा कहते हैं ड्रामा की हर सीन को साक्षी हो कल्याण की भावना से देखो। देश में क्या भी हो हमारे लिए बेहद के वैराग्य की सूचना है।

6.6.97(दिव्य सन्देश).... ..बाबा हमेशा निमित्त बने हुए बच्चों को कहते हैं कि ऐसा कोई ग्रुप बनाओ जो यह एक पान का बीड़ा उठाये – जैसे सेवा के प्रोग्राम करने होते हैं तो बीड़ा

उठाते हैं ना। तो बाबा को अब ऐसा ग्रुप चाहिए जो बाबा कहता व चाहता है, उसी प्रमाण उनकी वृत्ति, दृष्टि, मन्सा, वाचा, सम्बन्ध-सम्पर्क हो। उसके लिए दो बातें जो बाबा ने कही, एक तो जो भी बुराईयां हैं – वह वंश सहित त्याग हो जाएँ और दूसरा – बेहद के वैरागी हो जाएँ।

तो बाबा अब ऐसा ग्रुप चाहते हैं जो अपने को हद में नहीं समझें। मैं यहाँ की हूँ, यहाँ का हूँ, नहीं। सब मेरे हैं और मैं सबकी हूँ। जैसे बड़ी दादियां हैं। तो यह अपने को एक स्थान की नहीं समझती, सारे वर्ल्ड की जिम्मेवारी समझती हैं। ऐसे नहीं मधुबन में रहते मधुबन के हैं नहीं, मधुबन में रहते भी सारे वर्ल्ड की हैं। तो जैसे दादियों से भासना आती है कि यह सबके हैं। तो ऐसा ग्रुप बाबा को चाहिए। बाबा ने कहा – यह जो बाबा की आशा है – बस, हम सबके हैं। बेहद के वैरागी भी हैं और बेहद के हैं, बेहद हमारा है। अब यही आश बच्चों को पूरी करनी है।

बाबा ने कहा कि बच्चों का जब संकल्प श्रेष्ठ है फिर स्वरूप और संकल्प में अन्तर क्यों? चाहना और करना, चाहना के रूप में तो बहुत अच्छा है और करना, उसमें अन्तर पड़ जाता है। तो बाबा ने कहा बच्ची, इसका कारण समझती हो कि इतना अन्तर क्यों है? बाबा ने बताया इसकी दो ही बातें हैं। एक बात – बच्चे त्यागी तो बने हैं लेकिन सर्वन्श त्यागी, यह बनना है और दूसरा – बेहद के वैरागी। यह दो बातें अगर बच्चों की समान हो जाएं, इन्हीं दो बातों पर अटेन्शन दें तो यह सहज हो सकता है।

तो बाबा ने कहा सभी बच्चों को कहना कि अब दृढ़ संकल्प करें। बातें तो कई आयेंगी लेकिन उन सब बातों को तय (पार) करके मुझे बाबा को रिटर्न देना है, अपने को टर्न करना है। सर्वंश त्यागी और बेहद के वैरागी स्थिति में रहना है। ऐसा दृढ़ संकल्प अगर बच्चे इस बारी हिम्मत से करें तो बाबा उन बच्चों को दिल से तो मुबारक देंगे ही लेकिन सभी के सामने बाबा उन्हों से विशेष मिलन मनायेंगे। जब इस बारी बाबा आयेंगे तो उस ग्रुप से विशेष मिलन मनायेंगे और बहुत दिल का प्यार वा रिटर्न देने वाले बच्चों को बाबा भी रिटर्न देंगे – जीते रहो बच्चे, सदा उड़ते रहो बच्चे।

28.11.97.. .. आदि रत्न अर्थात् फालो फादर। बेहद में सकाश दो। कई बच्चे अपने से भी पूछते हैं और आपस में भी पूछते हैं कि बेहद का वैराग्य कैसे आयेगा? दिखाई तो देता नहीं

है, लेकिन बेहद की सेवा में अपने को बिजी रखो तो बेहद का वैराग्य स्वत: ही आयेगा क्योंकि यह सकाश देने की सेवा निरन्तर कर सकते हो, इसमें तबियत की बात, समय की बात – यह सहज हो जाती है। दिन रात इस बेहद की सेवा में लग सकते हो। जैसे ब्रह्मा बाप को देखा रात को भी कैसे आंख खुली और बेहद की सकाश देने की सेवा होती रही। तो यह बेहद की सेवा इतना बिजी कर देगी जो बेहद का वैराग्य स्वत: ही दिल से आयेगा। प्रोग्राम से नहीं। यह करें, यह करें – यह प्लैन तो बनाते हो, लेकिन बिजी बेहद की सेवा में रहना – यह सबसे सहज साधन है क्योंकि जब बेहद को सकाश देंगे तो नजदीक वाले तो ऑटोमेटिक सकाश लेते रहेंगे। इस बेहद की सकाश देने से वायुमण्डल ऑटोमेटिक बनेगा। अभी यह नहीं सोचो कि इतने सेन्टर के जिम्मेवार हैं वा ज़ोन के जिम्मेवार हैं! आप सभी को स्टेट के राजा बनना है या विश्व का? क्या बनना है? विश्व का ना? आदि रत्न हो तो विश्व को सकाश देने वाले बनो। अगर 20 सेन्टर, 30 सेन्टर या दो अढ़ाई सौ सेन्टर या जोन, यह बुद्धि में रहेगा तो यह भी तना का काम नहीं है। यह तो टाल टालियां भी कर सकती हैं। आप तो तना हो। तना से सबको सकाश पहुंचती है। आप सभी भी यह सोचते हो कि बेहद का वैराग्य आना चाहिए, यह तो बहुत अच्छा। अभी विनाश हो जाए। लेकिन 9 लाख ही तैयार नहीं किये, तो सतयुग के आदि में आने वाली संख्या ही तैयार नहीं है और विनाश हो गया तो कौन आयेगा? क्या 2-3 हजार पर राज्य करेंगे? 4- 5 लाख पर राज्य करेंगे? इसलिए अब बेहद की सेवा का पार्ट आरम्भ करो। पाण्डव क्या समझते हैं? बेहद की सेवा करेंगे ना? पाण्डव तैयार हैं? अभी यह हद की बातें बेहद में जाने से आपेही छूट जायेंगी। छुड़ाने से नहीं छूटेंगी। बेहद की सकाश से परिवर्तन होना फास्ट सेवा का रिजल्ट है।

18.1.98.. .. अभी समय प्रमाण सबको बेहद के वैराग्य वृत्ति में जाना ही होगा। लेकिन बापदादा समझते हैं कि बच्चों का समय शिक्षक नहीं बनें, जब बाप शिक्षक है तो समय पर बनना - यह समय को शिक्षक बनाना है। उसमें मार्क्स कम हो जाती हैं। अभी भी कई बच्चे कहते हैं - समय सिखा देगा, समय बदला देगा। समय के अनुसार तो सारे विश्व की आत्मायें बदलेंगी लेकिन आप बच्चे समय का इन्तजार नहीं करो। समय को शिक्षक नहीं बनाओ। आप विश्व के शिक्षक के मास्टर विश्व शिक्षक हो, रचता हो, समय रचना है तो हे रचता आत्मायें रचना को शिक्षक नहीं बनाओ। ब्रह्मा बाप ने समय को शिक्षक नहीं बनाया, बेहद का वैराग्य आदि से अन्त तक रहा। आदि में देखा इतना तन लगाया, मन लगाया, धन लगाया,

लेकिन जरा भी लगाव नहीं रहा। तन के लिए सदा नेचुरल बोल यही रहा - बाबा का रथ है। मेरा शरीर है, नहीं। बाबा का रथ है। बाबा के रथ को खिलाता हूँ, मैं खाता हूँ, नहीं। तन से भी बेहद का वैराग्य। मन तो मनमनाभव था ही। धन भी लगाया, लेकिन कभी यह संकल्प भी नहीं आया कि माया से निर्भय बनो और आपसी सम्बन्ध में निर्माण बनो। मेरा धन लग रहा है। कभी वर्णन नहीं किया कि मेरा धन लग रहा है या मैंने धन लगाया है। बाबा का भण्डारा है, भोलेनाथ का भण्डारा है। धन को मेरा समझकर पर्सनल अपने प्रति एक रूपये की चीज़ भी यूज नहीं की। कन्याओं, माताओं की जिम्मेवारी है, कन्याओं-माताओं को विल किया, मेरापन नहीं। समय, श्वांस अपने प्रति नहीं, उससे भी बेहद के वैरागी रहे। इतना सब कुछ प्रकृति दासी होते हुए भी कोई एकस्ट्रा साधन यूज़ नहीं किया। सदा साधारण लाइफ में रहे। कोई स्पेशल चीज़ अपने कार्य में नहीं लगाई। वस्त्र तक, एक ही प्रकार के वस्त्र अन्त तक रहे। चेंज नहीं किया। बच्चों के लिए मकान बनाये लेकिन स्वयं यूज़ नहीं किया, बच्चों के कहने पर भी सुनते हुए उपराम रहे। सदा बच्चों का स्नेह देखते हुए भी यही शब्द रहे - सब बच्चों के लिए है। तो इसको कहा जाता है बेहद की वैराग्य वृत्ति प्रत्यक्ष जीवन में रही। अन्त में देखो बच्चे सामने हैं, हाथ पकड़ा हुआ है लेकिन लगाव रहा? बेहद की वैराग्य वृत्ति। स्नेही बच्चे, अनन्य बच्चे सामने होते हुए फिर भी बेहद का वैराग्य रहा। सेकण्ड में उपराम वृत्ति का, बेहद के वैराग्य का सबूत देखा। एक ही लगन सेवा, सेवा और सेवा..... और सभी बातों से उपराम। इसको कहा जाता है बेहद का वैराग्य। अभी समय प्रमाण बेहद के वैराग्य वृत्ति को इमर्ज करो। बिना बेहद के वैराग्य वृत्ति के सकाश की सेवा हो नहीं सकती। फालो फादर करो। साकार में ब्रह्मा बाप रहा, निराकार की तो बात छोड़ो। साकार में सर्व प्राप्ति का साधन होते हुए, सर्व बच्चों की जिम्मेवारी होते हुए, सरकमस्टांश, समस्यायें आते हुए पास हो गये ना! पास विद ऑनर का सर्टीफिकेट ले लिया। विशेष कारण बेहद की वैराग्य वृत्ति। अभी सूक्ष्म सोने की जंजीर के लगाव, बहुत महीन सूक्ष्म लगाव बहुत हैं। कई बच्चे तो लगाव को समझते भी नहीं हैं कि यह लगाव है। समझते हैं - यह तो होता ही है, यह तो चलता ही है। मुक्त होना है, नहीं। लेकिन ऐसे तो चलता ही है। अनेक प्रकार के लगाव बेहद के वैरागी बनने नहीं देते हैं। चाहना है बनें, संकल्प भी करते हैं - बनना ही है। लेकिन चाहना और करना दोनों का बैलेन्स नहीं है। चाहना ज्यादा है, करना कम है। करना ही है - यह वैराग्य वृत्ति अभी इमर्ज नहीं है। बीच-बीच में इमर्ज होती है, फिर मर्ज हो जाती है। समय तो करेगा ही लेकिन पास विद ऑनर नहीं बन सकते। पास होंगे लेकिन पास विद ऑनर नहीं। समय की

रफ्तार तेज है, पुरुषार्थ की रफ्तार कम है। मोटा-मोटा असम्भव को सम्भव बनाना ही परमात्म प्यार की निशानी है। पुरुषार्थ तो है लेकिन सूक्ष्म लगाव में बंध जाते हैं। बापदादा जब बच्चों के गीत सुनते हैं – उड़ आयें, उड़ आयें... तो सोचते हैं उड़ा तो लें लेकिन लगाव उड़ने देंगे या न इधर के रहेंगे न उधर के रहेंगे? अभी समय प्रमाण लगाव-मुक्त बेहद के वैरागी बनो। मन से वैराग्य हो। प्रोग्राम प्रमाण वैराग्य जो आता है वह अल्पकाल का होता है। चेक करो - अपने सूक्ष्म लगाव को। मोटी-मोटी बातें अभी खत्म हुई हैं, कुछ बच्चे मोटे-मोटे लगाव से मुक्त हैं भी लेकिन सूक्ष्म लगाव बहुत सूक्ष्म हैं, जो स्वयं को भी चेक नहीं होते हैं। (मालूम नहीं पड़ते हैं)। चेक करो, अच्छी तरह से चेक करो। सम्पूर्णता के दर्पण से लगाव को चेक करो। यही ब्रह्मा बाप के स्मृति दिवस की गिफ्ट ब्रह्मा बाप को दो। प्यार है ना, तो प्यार में क्या किया जाता है? गिफ्ट देते हैं ना? तो यह गिफ्ट दो। छोड़ो, सब किनारे छोड़ो। मुक्त हो जाओ। बापदादा खुश भी होते हैं कि बच्चों में उमंग-उत्साह उठता है, बहुत अच्छे-अच्छे स्व-उन्नति के संकल्प भी करते हैं। अभी उन संकल्पों को करके दिखाओ। अच्छा।

19.6.98(अव्यक्त सन्देश)...अब तो बाप बच्चों से यही चाहते हैं कि अब हर एक बच्चे को अपनी दिल से बेहद का वैराग्य उत्पन्न हो तब यह लहर तीव्रगति से प्रत्यक्ष दिखाई दे। सेवा से, संगठन से वैराग्य नहीं लेकिन पुरानी दुनिया, पुराने संस्कार और पुरानी दुनिया की वस्तुओं से वैराग्य हो। हर एक में ऐसा सर्व प्रकार का वैराग्य है? सर्व कमजोरियों से अंश मात्र तक मुक्ति है? क्योंकि आप विश्व मास्टर रचयिता आत्माओं के आधार से ही विश्व परिवर्तन होना है। आप ब्राह्मणों की वर्तमान की मुक्त स्थिति से ही विश्व की सर्व आत्माओं को दु:ख, अशान्ति से मुक्ति मिलनी है। इतनी बड़ी जिम्मेवारी सभी बच्चों पर है।

25.6.98(अव्यक्त सन्देश)...एवररेडी बनने के लिए तीव्रगति का पुरुषार्थ, बेहद की वैराग वृत्ति का दिल से वैराग्य – अभी तो यह पाठ पढ़ना पड़ेगा। बाबा ने कहा हाँ मम्मा अभी यह पाठ रह गया है। बेहद की वैराग्य वृत्ति, कर्म करते हुए, सेवा करते हुए कोई लगाव नहीं। किसी से भी लगाव नहीं। वैराग्य वृत्ति और कर्म वा सेवा में सफ़लता। ऐसे नहीं वैराग्य वृत्ति माना छोड़कर बैठ जाएँ। नहीं। लेकिन कर्म में भी बेहद की वैराग्य वृत्ति से सफ़लता और सेवा में भी सफ़लता और संगठित रूप से सम्बन्ध में आने में भी सफ़लता। बाबा ने कहा मम्मा अभी बच्चों को वर्तमान समय यही पाठ अटेन्शन में लाना है। जिससे ही कब होगा, यह क्वेश्चन मार्क खत्म हो जायेगा। ऐसे यह खेल पूरा हुआ।

24.6.98(अव्यक्त सन्देश). .... मम्मा ने कहा – अच्छा मेरी दो बातें हैं, इन दो बातों पर आप सब पुरुषार्थ करेंगे तो अन्तिम समय के लिए आप सब तैयार रहेंगे। मम्मा ने कहा कि वर्तमान समय को देखते हुए एक तो सभी बच्चों को बेहद की वैराग्य वृत्ति धारण करनी है और वह तब होगी जब हर एक यह लक्ष्य रखे कि मुझे विदेही बनना है। वैराग्य वृत्ति से ही विदेही अवस्था जल्दी आ सकती है। तो समय को देखते हुए इन दो बातों पर अटेन्शन देकर अपनी स्थिति को ऊँच बनाओ और बाबा की जो हम बच्चों के अन्दर आश है वह पूरी करो।

हे सेवाकेन्द्र पर है, चाहे कहाँ भी रहते हैं, स्थूल साधन हर एक को दिये हैं, ऐसा कोई बच्चा नहीं है जिसके पास खाना, पीना, रहना इसके साधन नहीं हो। जो बेहद के वैराग्य की वृत्ति में रहते हुए आवश्यक साधन चाहिए, वह सबके पास हैं। अगर कोई को कमी है तो वह उसके अपने अलबेले-पन या आलस्य के कारण है। बाकी ड्रामानुसार बापदादा जानते हैं कि आवश्यक साधन सबके पास हैं। जो आवश्यक साधन हैं वह तो चलने ही हैं। लेकिन कहाँ-कहाँ आवश्यकता से भी ज़्यादा साधन हैं। साधना कम है और साधन का प्रयोग करना या कराना ज़्यादा है। इसलिए बापदादा आज बाप समान बनने के दिवस पर विशेष अण्डरलाइन करा रहे हैं – **कि साधनों के प्रयोग का अनुभव बहुत किया, जो किया वह भी बहुत अच्छा किया, अब साधना को बढ़ाना अर्थात् बेहद की वैराग्य वृत्ति को लाना।** ब्रह्मा बाप को देखा लास्ट घड़ी तक बच्चों को साधन बहुत दिये लेकिन स्वयं साधनों के प्रयोग से दूर रहे। होते हुए दूर रहना – उसे कहेंगे वैराग्य। लेकिन कुछ है ही नहीं और कहे कि हमको तो वैराग्य है, हम तो हैं ही वैरागी, तो वह कैसे होगा। वह तो बात ही अलग है। सब कुछ होते हुए नॉलेज और विश्व-कल्याण की भावना से, बाप को, स्वयं को प्रत्यक्ष करने की भावना से अभी साधनों के बजाए बेहद की वैराग्य वृत्ति हो। जैसे स्थापना के आदि में साधन कम नहीं थे, लेकिन बेहद के वैराग्य वृत्ति की भट्ठी में पड़े हुए थे। यह 14 वर्ष जो तपस्या की, यह बेहद के वैराग्य वृत्ति का वायुमण्डल था। बापदादा ने अभी साधन बहुत दिये हैं, साधनों की अभी कोई कमी नहीं है लेकिन होते हुए बेहद का वैराग्य हो। विश्व की आत्माओं के कल्याण के प्रति भी इस समय इस विधि की आवश्यकता है क्योंकि चारों ओर इच्छायें बढ़ रही हैं, इच्छाओं के वश आत्मायें परेशान हैं, चाहे पद्मपति भी हैं लेकिन इच्छाओं से वह भी परेशान हैं। वायुमण्डल में आत्माओं की परेशानी का विशेष कारण यह हद की इच्छायें हैं। अब आप अपने बेहद की वैराग्य वृत्ति द्वारा उन आत्माओं में भी वैराग्य वृत्ति फैलाओ।

आपके वैराग्य वृत्ति के वायुमण्डल के बिना आत्मायें सुखी, शान्त बन नहीं सकती, परेशानी से छूट नहीं सकती। आप वृक्ष की जड़ हैं, ब्राह्मणों का स्थान वृक्ष में कहाँ दिखाया है? जड़ में दिखाया है ना! तो आप फाउण्डेशन हैं, आपकी लहर विश्व में फैलेगी इसलिए बापदादा विशेष साकार में ब्रह्मा बाप समान बनने की विधि, वैराग्य वृत्ति की तरफ विशेष अटेन्शन दिला रहा है। हर एक से अनुभव हो कि यह साधनों वश नहीं, साधना में रहने वाले हैं। होते हुए वैराग्य वृत्ति हो। आवश्यक साधन यूज़ करो लेकिन जितना हो सकता है उतना दिल के वैराग्य वृत्ति से, साधनों के वशीभूत होकर नहीं। **अभी साधना का वायुमण्डल चारों ओर बनाओ।** समय समीप के प्रमाण अभी सच्ची तपस्या वा साधना है ही बेहद का वैराग्य। सेवा का विस्तार इस वर्ष में बहुत किया। इस वर्ष चारों ओर बड़े-बड़े प्रोग्राम किये और सेवा से सहयोगी आत्मायें भी बहुत बने हैं, समीप आये हैं, सम्पर्क में आये हैं, लेकिन क्या सिर्फ सहयोगी बनाना है? यहाँ तक रखना है क्या? सहयोगी आत्मायें अच्छी-अच्छी हैं, अब उन सहयोगी क्वालिटी वाली आत्माओं को और सम्बन्ध में लाओ। अनुभव कराओ, जिससे सहयोगी से सहज योगी बन जाएँ। इसके लिए एक तो साधना का वायुमण्डल और दूसरा बेहद की वैराग्य वृत्ति का वायुमण्डल हो तो इससे सहज सहयोगी सहज योगी बन जायेंगे। उन्हों की सेवा भले करते रहो लेकिन साथ में साधना, तपस्या का वायुमण्डल आवश्यक है।

अभी चारों ओर पावरफुल तपस्या करनी है, जो तपस्या मन्सा सेवा के निमित्त बनें, ऐसी पावरफुल सेवा अभी तपस्या से करनी है। अभी मन्सा सेवा अर्थात् संकल्प द्वारा सेवा की टचिंग हो, उसकी आवश्यकता है। समय समीप आ रहा है, निरन्तर स्थितियाँ और निरन्तर पावरफुल वायुमण्डल की आवश्यकता है। बाप समान बनना है तो पहले बेहद की वैराग्य वृत्ति धारण करो। यही ब्रह्मा बाप की अन्त तक विशेषता देखी। न वैभव में लगाव रहा, न बच्चों में.. सबसे वैराग्य वृत्ति। तो आज के दिन का बाप समान बनने का पाठ पक्का करना। बस ब्रह्मा बाप समान बनना ही है। ऐसा दृढ़ निश्चय अवश्य आगे बढ़ायेगा।

अभी क्या याद रखा? कौन सी बात को अण्डरलाइन किया? बेहद का वैराग्य। अभी आत्माओं को इच्छाओं से बचाओ। बिचारे बहुत दु:खी हैं। बहुत परेशान हैं। तो अभी रहमदिल बनो। रहम की लहर बेहद के वैराग्य वृत्ति द्वारा फैलाओ। अभी सभी ऊँचे ते ऊँचे परमधाम में बाप के साथ बैठ सर्व आत्माओं को रहम की दृष्टि दो। वायब्रेशन फैलाओ। फैला

सकते हैं ना? तो बस अभी परमधाम में बाप के साथ बैठ जाओ। वहाँ से यह बेहद के रहम का वायुमण्डल फैलाओ। (बापदादा ने ड्रिल कराई) अच्छा।

19.6.98.. .. बाबा मुस्कराते बोले, क्या संगठित रूप में विश्व परिवर्तन के कार्य में सब एवररेडी हैं? क्योंकि स्थापना में तो सर्व आत्माओं का साथ चाहिए, राज्य तो तब ही स्थापन होगा। अब तो बाप बच्चों से यही चाहते हैं कि अब हर एक बच्चे को अपनी दिल से बेहद का वैराग्य उत्पन्न हो तब यह लहर तीव्रगति से प्रत्यक्ष दिखाई दे। सेवा से, संगठन से वैराग्य नहीं लेकिन पुरानी दुनिया, पुराने संस्कार और पुरानी दुनिया की वस्तुओं से वैराग्य हो। हर एक में ऐसा सर्व प्रकार का वैराग्य है? सर्व कमजोरियों से अंश मात्र तक मुक्ति है? क्योंकि आप विश्व मास्टर रचयिता आत्माओं के आधार से ही विश्व1सन्देशपरिवर्तन होना है। आप ब्राह्मणों की वर्तमान की मुक्त स्थिति से ही विश्व की सर्व आत्माओं को दुःख, अशान्ति से मुक्ति मिलनी है। इतनी बड़ी जिम्मेवारी सभी बच्चों पर है।

25.6.98(दिव्य सन्देश).. .. बेहद की वैराग्य वृत्ति, कर्म करते हुए, सेवा करते हुए कोई लगाव नहीं। किसी से भी लगाव नहीं। वैराग्य वृत्ति और कर्म वा सेवा में सफ़लता। ऐसे नहीं वैराग्य वृत्ति माना छोड़कर बैठ जाएँ। नहीं। लेकिन कर्म में भी बेहद की वैराग्य वृत्ति से सफ़लता और सेवा में भी सफ़लता और संगठित रूप से सम्बन्ध में आने में भी सफ़लता।

18.1.99.. ..बापदादा एक बात का फ़िर से अटेन्शन दिला रहे हैं कि वर्तमान वायुमण्डल के अनुसार मन में, दिल से अभी वैराग्य वृत्ति को इमर्ज करो। बापदादा ने हर बच्चे को चाहे प्रवृत्ति में है, चाहे सेवाकेन्द्र पर है, चाहे कहाँ भी रहते हैं, स्थूल साधन हर एक को दिये हैं, ऐसा कोई बच्चा नहीं है जिसके पास खाना, पीना, रहना इसके साधन नहीं हो। जो बेहद के वैराग्य की वृत्ति में रहते हुए आवश्यक साधन चाहिए, वह सबके पास हैं। अगर कोई को कमी है तो वह उसके अपने अलबेले-पन या आलस्य के कारण है। बाकी ड्रामानुसार बापदादा जानते हैं कि आवश्यक साधन सबके पास हैं। जो आवश्यक साधन हैं वह तो चलने ही हैं। लेकिन कहाँ-कहाँ आवश्यकता से भी ज़्यादा साधन हैं। साधना कम है और साधन का प्रयोग करना या कराना ज़्यादा है। इसलिए बापदादा आज बाप समान बनने के दिवस पर विशेष अण्डरलाइन करा रहे हैं – कि साधनों के प्रयोग का अनुभव बहुत किया, जो किया वह भी बहुत अच्छा किया, अब साधना को बढ़ाना अर्थात् बेहद की वैराग्य वृत्ति को लाना। ब्रह्मा बाप को देखा लास्ट घड़ी तक बच्चों को साधन बहुत दिये लेकिन स्वयं साधनों के प्रयोग

से दूर रहे। होते हुए दूर रहना – उसे कहेंगे वैराग्य। लेकिन कुछ है ही नहीं और कहे कि हमको तो वैराग्य है, हम तो हैं ही वैरागी, तो वह कैसे होगा। वह तो बात ही अलग है। सब कुछ होते हुए नॉलेज और विश्व-कल्याण की भावना से, बाप को, स्वयं को प्रत्यक्ष करने की भावना से अभी साधनों के बजाए बेहद की वैराग्य वृत्ति हो। जैसे स्थापना के आदि में साधन कम नहीं थे, लेकिन बेहद के वैराग्य वृत्ति की भट्ठी में पड़े हुए थे। यह 14 वर्ष जो तपस्या की, यह बेहद के वैराग्य वृत्ति का वायुमण्डल था। बापदादा ने अभी साधन बहुत दिये हैं, साधनों की अभी कोई कमी नहीं है लेकिन होते हुए बेहद का वैराग्य हो। विश्व की आत्माओं के कल्याण के प्रति भी इस समय इस विधि की आवश्यकता है क्योंकि चारों ओर इच्छायें बढ़ रही हैं, इच्छाओं के वश आत्मायें परेशान हैं, चाहे पद्मपति भी हैं लेकिन इच्छाओं से वह भी परेशान हैं। वायुमण्डल में आत्माओं की परेशानी का विशेष कारण यह हद की इच्छायें हैं। अब आप अपने बेहद की वैराग्य वृत्ति द्वारा उन आत्माओं में भी वैराग्य वृत्ति फैलाओ। आपके वैराग्य वृत्ति के वायुमण्डल के बिना आत्मायें सुखी, शान्त बन नहीं सकती, परेशानी से छूट नहीं सकती। आप वृक्ष की जड़ हैं, ब्राह्मणों का स्थान वृक्ष में कहाँ दिखाया है? जड़ में दिखाया है ना! तो आप फाउण्डेशन हैं, आपकी लहर विश्व में फैलेगी इसलिए बापदादा विशेष साकार में ब्रह्मा बाप समान बनने की विधि, वैराग्य वृत्ति की तरफ विशेष अटेन्शन दिला रहा है। हर एक से अनुभव हो कि यह साधनों वश नहीं, साधना में रहने वाले हैं। होते हुए वैराग्य वृत्ति हो। आवश्यक साधन यूज़ करो लेकिन जितना हो सकता है उतना दिल के वैराग्य वृत्ति से, साधनों के वशीभूत होकर नहीं। अभी साधना का वायुमण्डल चारों ओर बनाओ। समय समीप के प्रमाण अभी सच्ची तपस्या वा साधना है ही बेहद का वैराग्य। सेवा का विस्तार इस वर्ष में बहुत किया। इस वर्ष चारों ओर बड़े-बड़े प्रोग्राम किये और सेवा से सहयोगी आत्मायें भी बहुत बने हैं, समीप आये हैं, सम्पर्क में आये हैं, लेकिन क्या सिर्फ सहयोगी बनाना है? यहाँ तक रखना है क्या? सहयोगी आत्मायें अच्छी-अच्छी हैं, अब उन सहयोगी क्वालिटी वाली आत्माओं को और सम्बन्ध में लाओ। अनुभव कराओ, जिससे सहयोगी से सहज योगी बन जाएँ। इसके लिए एक तो साधना का वायुमण्डल और दूसरा बेहद की वैराग्य वृत्ति का वायुमण्डल हो तो इससे सहज सहयोगी सहज योगी बन जायेंगे। उन्हों की सेवा भले करते रहो लेकिन साथ में साधना, तपस्या का वायुमण्डल आवश्यक है। अभी चारों ओर पावरफुल तपस्या करनी है, जो तपस्या मन्सा सेवा के निमित्त बनें, ऐसी पावरफुल सेवा अभी तपस्या से करनी है। अभी मन्सा सेवा अर्थात् संकल्प द्वारा सेवा की टचिंग हो, उसकी आवश्यकता है।

समय समीप आ रहा है, निरन्तर स्थितियाँ और निरन्तर पावरफुल वायुमण्डल की आवश्यकता है। बाप समान बनना है तो पहले बेहद की वैराग्य वृत्ति धारण करो। यही ब्रह्मा बाप की अन्त तक विशेषता देखी। न वैभव में लगाव रहा, न बच्चों में.. सबसे वैराग्य वृत्ति। तो आज के दिन का बाप समान बनने का पाठ पक्का करना। बस ब्रह्मा बाप समान बनना ही है। ऐसा दृढ़ निश्चय अवश्य आगे बढ़ायेगा।

30.3.99.. .. विश्व में एक तरफ भ्रष्टाचार, अत्याचार की अग्नि होगी, दूसरे तरफ आप बच्चों का पावरफुल योग अर्थात् लगन की अग्नि ज्वाला रूप में आवश्यक है। यह ज्वाला रूप इस भ्रष्टाचार, अत्याचार के अग्नि को समाप्त करेगी और सर्व आत्माओं को सहयोग देगी। आपकी लगन ज्वाला रूप की हो अर्थात् पावरफुल योग हो, तो यह याद की अग्नि, उस अग्नि को समाप्त करेगी और दूसरे तरफ आत्माओं को परमात्म सन्देश की, शीतल स्वरूप की अनुभूति करायेगी। बेहद की वैराग्य वृत्ति प्रज्वलित करायेगी। एक तरफ भस्म करेगी दूसरे तरफ शीतल भी करेगी। बेहद के वैराग्य की लहर फैलायेगी। बच्चे कहते हैं - मेरा योग तो है, सिवाए बाबा के और कोई नहीं, यह बहुत अच्छा है। परन्तु समय अनुसार अभी ज्वाला रूप बनो।

अभी भी वैराग्य वृत्ति नहीं आई है, इसमें बापदादा भी देख रहे हैं, कब आरम्भ होता है। अभी तो साधन यूज़ करने के अनुभवी ज्यादा हैं। बापदादा जानते हैं कि जब तक ब्राह्मणों में बेहद की वैराग्य वृत्ति इमर्ज नहीं हुई है तो विश्व में भी वैराग्य वृत्ति नहीं आ सकती। सारे विश्व में वैराग्य वृत्ति ही कुछ पापों से मुक्त करेगी। अभी शक्ति सेना को रहम आना चाहिए। अभी रहम कम है, सेवा है। लेकिन रहमदिल, वह अभी ज्यादा इमर्ज चाहिए। पाप कर्म का बिचारे बोझ उठाते जाते हैं। बोझ से झुकते जा रहे हैं। तो रहम आना चाहिए, तरस आना चाहिए। अच्छा।

24.6.99(अव्यक्त सन्देश). ....मम्मा ने कहा कि वर्तमान समय को देखते हुए एक तो सभी बच्चों को बेहद की वैराग्य वृत्ति धारण करनी है और वह तब होगी जब हर एक यह लक्ष्य रखे कि मुझे विदेही बनना है। वैराग्य वृत्ति से ही विदेही अवस्था जल्दी आ सकती है। तो समय को देखते हुए इन दो बातों पर अटेन्शन देकर अपनी स्थिति को ऊँच बनाओ और बाबा की जो हम बच्चों के अन्दर आश है वह पूरी करो।

20.2.2001(अव्यक्त सन्देश). देखो प्रकृति को कोई मना नहीं कर सकता है, गुजरात में आओ, आबू में नहीं आओ, बाम्बे में नहीं आओ, नहीं। वह स्वतन्त्र है। लेकिन सभी को अपने स्व-स्थिति को अचल-अडोल और अपने बुद्धि को, मन के लाइन को क्लीयर रखना है। लाइन क्लीयर होगी तो टचिंग होगी। बापदादा ने पहले भी कहा था उन्हों की वायरलेस है, आपकी वाइसलेस बुद्धि है। क्या करना है, क्या होना है, यह निर्णय स्पष्ट और शीघ्र होगा। ऐसे नहीं सोचते रहो बाहर निकलें, अन्दर बैठें, दरवाजे पर बैठें, छत पर बैठें। नहीं। आपके पांव वहाँ ही चलेंगे जहाँ सेफ्टी होगी। और अगर बहुत घबरा जाओ, घबराना तो नहीं चाहिए, लेकिन बहुत घबरा जाओ, बहुत डर लगे तो मधुबन एशलम घर आपका है। डरना नहीं। अभी तो कुछ नहीं है, अभी तो सब कुछ होना है, डरना नहीं, खेल है। परिवर्तन होना है ना। विनाश नहीं, परिवर्तन होना है। सबमें वैराग्य वृत्ति उत्पन्न होनी है। रहमदिल बन सर्व शक्तियों द्वारा सकाश दे रहम करो। समझा!.

4.2.2003. (अव्यक्त सन्देश).. .. बाबा ने अपने में समा लिया और पूछा और क्या समाचार है? मैं बोली दादी जानकी कह रही थी कि आजकल विदेश में चारों ओर युद्ध का बहुत डर है और कहाँ कहाँ ब्राह्मण भी हलचल में आ जाते हैं। बाबा बोले बच्ची, यह भय तो अभी टैम्प्रेरी है लेकिन यह भय ही सबको वैराग्य वृत्ति में लायेगा कि यह सब साधन साथी कोई काम के नहीं हैं। कोई सहारा चाहिए। मन के टेन्शन के लिए कुछ और चाहिए, और आध्यात्मिकता की तरफ ध्यान जायेगा। आप सब बच्चे जो अब जोरशोर से चारों ओर सन्देश देने की सेवा कर रहे हो, यह सन्देश याद आयेगा कि क्या था, क्या कहा था। इसलिए सन्देश देना और स्व प्रति याद की शक्ति ज्वाला रूप घण्टे बढ़ा रहे हो, समय अनुसार यह सेवा और योग शक्ति का प्रभाव पड़ना ही है। आपकी साधना, साधनों से वैराग्य दिलायेगी और सबका अटेन्शन एक की तरफ जायेगा। इसलिए बच्चे अब सर्व तरफ वैराग्य वृत्ति उत्पन्न कराने के लिए यह ईशारे मिले हैं। अब और तीव्र योग साधना को बढ़ाओ। अपने प्रति विघ्न-विनाशक बनने के लिए भी अब सिर्फ वाणी द्वारा वा भाग-दौड़ की सेवा द्वारा सफलता नहीं लेकिन योग शक्ति साथ सेवा चाहिए। योग शक्ति और वाणी की शक्ति दोनों साथ में इमर्ज चाहिए क्योंकि सिर्फ वाणी की शक्ति अच्छा है, अच्छा है यहाँ तक लाती है लेकिन योग शक्ति, वाणी की शक्ति का बैलेन्स अच्छा बनने की प्रेरणा देगी। ..

18.1.2004.. .. कोई भी कर्मेन्द्रिय संकल्प, समय सहित अगर कन्ट्रोल में नहीं है तो इससे ही चेक करो जब स्वराज्य में कन्ट्रोलिंग पावर नहीं है तो विश्व के राज्य में कन्ट्रोल क्या करेंगे! तो राजा कैसे बनेंगे? वहाँ तो सब एक्यूरेट है। कन्ट्रोलिंग पावर, रूलिंग पावर सब स्वत: ही संगम युग के पुरुषार्थ की प्रालब्ध के रूप में है। तो संगमयुग अर्थात् वर्तमान समय अगर कन्ट्रोलिंग पावर, रूलिंग पावर कम है, तो पुरुषार्थ कम तो प्रालब्ध क्या होगी? हिसाब करने में तो होशियार हो ना! तो इस आइने में अपना फेस देखो, अपनी शक्ल देखो। राजा की आती है, रॉयल फैमिली की आती है, रॉयल प्रजा की आती है, साधारण प्रजा की आती है, कौन सी शक्ल आती है? तो मिला चित्र? इस चित्र से चेक करना। हर रोज़ चेक करना क्योंकि बहुतकाल के पुरुषार्थ से, बहुतकाल के राज्य भाग्य की प्राप्ति है। अगर आप सोचो कि अन्त के समय बेहद का वैराग्य तो आ ही जायेगा, लेकिन अन्त समय आयेगा तो बहुतकाल हुआ या थोड़ा काल हुआ? बहुतकाल तो नहीं कहेंगे ना! तो 21 जन्म पूरा ही राज्य अधिकारी बनें, तख्त पर भले नहीं बैठें, लेकिन राज्य अधिकारी हों। यह बहुतकाल (पुरुषार्थ का), बहुतकाल की प्रालब्ध का कनेक्शन है। इसीलिए अलबेले नहीं बनना, अभी तो विनाश की डेट फिक्स ही नहीं है, पता ही नहीं।8 वर्ष होगा, 10 वर्ष होगा, पता तो है ही नहीं। तो आने वाले समय में हो जायेंगे, नहीं। विश्व के

अन्तकाल सोचने के पहले अपने जन्म का अन्तकाल सोचो, आपके पास डेट फिक्स है, किसके पास पता है कि इस डेट पर मेरा मृत्यु होना है? है किसके पास? नहीं है ना! विश्व का अन्त तो होना ही है, समय पर होगा ही लेकिन पहले अपनी अन्तकाल सोचो और जगदम्बा का स्लोगन याद करो - क्या स्लोगन था? हर घड़ी अपनी अन्तिम घड़ी समझो। अचानक होना है। डेट नहीं बताई जायेगी। ना विश्व की, ना आपके अन्तिम घड़ी की। सब अचानक का खेल है। इसलिए दरबार लगाओ, हे राजे, स्वराज्य अधिकारी राजे अपनी दरबार लगाओ। आर्डर में चलाओ क्योंकि भविष्य का गायन है, लॉ एण्ड आर्डर होगा। स्वत: ही होगा। लव और लॉ दोनों का ही बैलेन्स होगा। नेचरल होगा। राजा कोई लॉ पास नहीं करेगा कि यह लॉ है। जैसे आजकल लॉ बनाते रहते हैं। आजकल तो पुलिस वाला भी लॉ उठा लेता है। लेकिन वहाँ नेचरल लव और लॉ का बैलेन्स होगा। तो अभी आलमाइटी अथॉरिटी की सीट पर सेट रहो। तो यह कर्मेन्द्रियां, शक्तियां, गुण सब आपके जी हज़ूर, जी हज़ूर करेंगे। धोखा नहीं देंगे। जी हाज़िर। तो अभी क्या करेंगे? दूसरे स्मृति दिवस पर कौन सा समारोह मनायेंगे? यह हर एक ज़ोन तो समारोह मनाते हैं ना। सम्मान समारोह भी बहुत मना लिये। अब सदा हर संकल्प और समय के सफलता की सेरीमनी मनाओ। यह समारोह मनाओ। वेस्ट खत्म क्योंकि आपके सफलतामूर्त बनने से आत्माओं को तृप्ति की सफलता प्राप्त होगी। निराशा से चारों ओर शुभ आशाओं के दीप जगेंगे। कोई भी सफलता होती है तो दीपक तो जगाते हैं ना! अब विश्व में आशाओं के दीप जगाओ। हर आत्मा के अन्दर कोई न कोई

निराशा है ही, निराशाओं के कारण परेशान हैं, टेन्शन में हैं। तो हे अविनाशी दीपकों अब आशाओं के दीपकों की दीवाली मनाओ। पहले स्व फिर सर्व। सुना!

18.1.2008.. .. टीचर्स को अभी बेहद के वैराग्य वृत्ति का वायुमण्डल फैलाना है। चाहे सेन्टर पर, चाहे विश्व में, विश्व में भी वैराग्य वृत्ति के वायुमण्डल की आवश्यकता है क्योंकि भ्रष्टाचार पापाचार बढ़ रहा है। बिना वैराग्य वृत्ति के इन आत्माओं का कल्याण नहीं होगा। जो सन्देश देने का कार्य कर रहे हो, अच्छा कर रहे हो। बापदादा को पसन्द है लेकिन उससे सहयोगी बनते हैं, माइक बनते हैं। आप जैसे बाप के वारिस बच्चे समर्पण बच्चे कम बनते हैं। चारों ओर के सेन्टर्स पर वैराग्य वृत्ति की आवश्यकता है। वैराग्य वृत्ति सिर्फ खाने पीने पहनने की नहीं, साधनों की नहीं, लेकिन टोटल मानसिक वृत्ति, दृष्टि और कृति, चारों ओर के ज़ोन में अभी वैराग्य वृत्ति से उपराम, देहभान से उपराम वह अभी लहर चाहिए। बेहद की वैराग्य वृत्ति पहले देह भान की वैराग्य वृत्ति, देह की बातों से वैराग्य वृत्ति, देह की भावना, भाव, इससे वैराग्य वृत्ति चाहिए। तो बापदादा चारों ओर के बच्चों को यह अटेन्शन खिंचवा रहे हैं कि तीव्रगति से चाहे ब्राह्मण, चाहे सहयोगी आत्माओं में श्रेष्ठ उन्नति तब होगी जब वैराग्य वृतति का वायुमण्डल स्वयं में और सर्व में फैलायेंगे तब आवाज फैलेगा। सभी वर्ग वाले भी यही सोचते हैं प्रत्यक्षता करने चाहते हैं, प्रोग्राम भी बनाते हैं लेकिन अभी तक हुई नहीं है क्यों? कारण है चारों ओर, चाहे पाप कर्म चाहे भ्रष्टाचार, चाहे बातों में, पोजीशन में वैराग्य वृत्ति नहीं है। तो प्रत्यक्षता सहज नहीं हो सकती है। तो अभी चारों ओर बेहद की वैराग्य वृत्ति, ब्रह्मा बाप को अन्त तक देखा कितनी बेहद की वैराग्य वृत्ति अव्यक्त बापदादा रही। अपनी देह से भी वैराग्य वृत्ति। बच्चों के सम्बन्ध में भी वैराग्य वृत्ति। तो क्या करेंगे? यही लक्ष्य लक्षण में लाना। अच्छा। गुजरात वाले तो सेवा में सदा हाज़िर होने वाले हैं। वृद्धि भी सेवा की अच्छी है, संख्या भी अच्छी है, अभी वारिस और माइक, ऐसे माइक निकालो जिसके आवाज का प्रभाव हो। सबके मुख से निकले, यह कहता है, यह कहता है... कुछ तो होगा। अच्छा, मुबारक हो सेवा की। निर्विघ्न सेवा की इसकी बहुत-बहुत मुबारक।

5.3.2008.. .. सबको उमंग-उत्साह है ना कि हमें समान बनना ही है। है? बनना ही है, या देखेंगे, बनेंगे, करेंगे, गें गें तो नहीं है? जो समझते हैं बनना ही है, वह हाथ उठाओ। बनना ही है, त्याग करना पड़ेगा, तपस्या करनी पड़ेगी। तैयार है कुछ भी त्याग करना पड़े। सबसे बड़ा त्याग क्या है? त्याग करने में सबसे बड़े ते बड़ा एक शब्द विघ्न डालता है। त्याग तपस्या वैराग्य, बेहद का वैराग्य, इसमें एक ही शब्द विघ्न डालता है, जानते तो हो। कौन सा एक शब्द है? 9मैं“, बॉडी कान्सेस की मैं। इसलिए बापदादा ने कहा जैसे अभी जब भी मेरा कहते हो तो पहले क्या याद आता? मेरा बाबा। आता मेरा बाबा आता है ना! भले मेरा और कुछ भी करो लेकिन मेरा कहने से आदत पड़ गई है पहले बाबा आता है। ऐसे ही जब मैं कहते हैं, जैसे मेरा बाबा भूलता नहीं है, कभी किसको मेरा कहो ना तो बाबा शब्द आता ही है, ऐसे ही

जब मैं कहो तो पहले आत्मा याद आवे। मैं कौन, आत्मा। मैं आत्मा यह कर रही हूँ। मैं और मेरा, हद का बदल बेहद का हो जाए। हो सकता है? हो सकता है? कांध तो हिलाओ। आदत डालो, मैं, फौरन आवे आत्मा। और जब मैं-पन आता है तो एक शब्द याद आवे - करावनहार कौन? बाप करावनहार करा रहा है। करावनहार शब्द करने के समय सदा याद रहे। मैं-पन नहीं आयेगा। मेरा विचार, मेरी ड्युटी, ड्युटी का भी बहुत नशा होता है। मेरी ड्युटी... लेकिन देने वाला दाता कौन! यह ड्युटीज़ प्रभु की देन हैं। प्रभु की देन को मैं मानना, सोचो अच्छा है? तो बापदादा अभी लास्टदो टर्न है, एक मास सीजन समझो, इस वर्ष की सीजन समाप्त होने में। तो समाप्ति में बापदादा क्या समाप्ति कराना चाहता है? एवररेडी हैं कि सोचना पड़ेगा? चाहे यहाँ आवे या नहीं आवे लेकिन हर एक स्थान से बापदादा रिजल्ट चाहते हैं। यह एक मास ऐसा नेचरल नेचर बनाओ क्योंकि नेचरल नेचर जल्दी में बदलती नहीं है। तो नेचरल नेचर बनाओ जो बताया ना - सदा आपके चेहरे से बाप के गुण दिखाई दें, चलन से बाप की श्रीमत दिखाई दे। सदा मुस्कराता हुआ चेहरा हो। सदा सन्तुष्ट रहने और सन्तुष्ट करने की चाल हो। हर कर्म में, कर्म और योग का बैलेन्स हो।

15.12.2008.. ..कई बच्चे बाप को भी बहुत मीठीमीठ ी बातें सुनाते हैं, कहते हैं समय थोड़ा और अति में जायेगा ना, तो वैराग्य तो होगा, तो वैराग्य के समय आपेही रफ्तार तेज हो जायेगी। लेकिन बापदादा ने कह दिया है कि बहुत समय का पुरुषार्थ चाहिए। अगर थोड़े समय का पु रुषार्थ होगा ता े प्रालब्ध भी थो ड़े समय की मिले गी, फुल 21 जन्म की प्रालब्ध नहीं बने गी। ती न शब्द बापदादा के सदा याद रखो - एक अचानक, दूसरा एवररे डी और तीसरा बहुतकाल। यह तीना ें शब्द सदा बु ि द्ध में रखो । कब औ र कहाँ भी किसकी भी अन्तिम काल हा े सकता है। अभी ी अभी दे खा े कितने ब्र ाह्मण जा रहे हैं, उन्हों का े पता था क या, इसी लिए बहुतकाल के पुरुषार्थ स े फुल 21 जन्म का वसा र् प्राप्त करना ही है , यह तीव्र पु रुषार्थ स्मृ ति में रखो।

7.4.2009..बनाते हैं, रिजल्ट भी यथा शक्ति मिलती है लेकिन एक बात अनुभव कराने के लिए अपने में अटेन्शन देना पड़ेगा। जैसे सेवा आपकी अभी प्रसिद्ध होती जाती है। खुश भी होते रहते हैं और आजकल इन्ट्रेस्ट भी बढ़ता जाता है। अभी बाकी ी अनु भव कराने की विधि क्या है? वह ह ै उमंग-उत्साह सहित, जितना उमंग उतना ही समय अनु सार अभी बे हद की वैराग्य वृत्ति भी चाहिए। पुरुषार्थ में कोई समस्या रूप बनता है तो उसका कारण है बेहद के वैराग्य वृत्ति में कमी। अब बेहद का वैराग्य चाहिए। बेहद का वैराग्य सदाकाल चलता है। अगर समय पर होता है तो समय नम्बरवन हो जाता है और आप नम्बर टू में हो जाते हो। समय ने आपको वैराग्य दिलाया। बेहद का वैराग्य सदाकाल होता है। एक तरफ उमंग-उत्साह, खुशी ी और दूसरे तरफ बे हद का वै राग्य। बे हद का वैराग्य सदा न रहने का कारण? बापदादा न े देखा ि क कारण ह ै दे ह अभिमान। देह शब्द सब तरफ आता ह ै - जै

से देह वे ̄ सम्बन्ध, देह वे ̄ पदार्थ, देह वे ̄ सं स्कार, देह शब्द सबमें आता है और विशेष देह अभिमान किस बात में आता है? देही अभिमान से देह अभिमान में ले ही आता है, वह अब तक बापदादा न े चे क ि किया कि मूल कारण पु रान े संस्कार नी च े ले आत े हैं। संस्कार ि मटाये ह ैं ले ि कन कोई न कोई संस्कार नेचर के रूप में अभी भी काम कर लेता है। जैसे देह अभिमान की नेचर नेचरल हो गई है ऐसे देही अभिमानी की नेचर नेचरल नहीं हुई है। कहते हैं हमने खत्म किया है लेकिन एकदम बीज को भस्म नहीं किया है। इसलिए समय आने पर फिर वह देहभान के संस्कार इमर्ज हो जाते हैं। तो अभी आवश्यकता है इस देह भान की नेचर को पावरफुल देही अभिमानी की शक्ति से वंश सहित नाश करने की क्योंकि बच्चे कहते हैं चाहते नहीं हैं लेकिन कभी कभी निकल आता है। क्यों निकलता? अंश है तो वंश होके निकल जाता। तो अभी आवश्यकता है शक्ति स्वरूप बनने का, आधार है अपने आपको चेक करो कि किसी भी स्वरूप में अंशमात्र भी पुराना देह भान का संस्कार रहा हुआ तो नहीं है? और वह खत्म होगा बेहद की वैराग्य वृत्ति से।सर्विस देख सुन बापदादा खुश है लेकिन अब बाप की यही चाहना है कि जैसे सर्विस की फलक, झलक अब लोगों को दिखाई देती है। अनुभव होता है सेवा का, ऐसे बेहद की वैराग्य वृत्ति का प्रभाव हो क्योंकि आजकल सेवा द्वारा आपकी प्रशन्सा बढ़ेगी, आपकी प्रकृ ि त दासी ि होगी । आपको अनुभव करें गे, साधन ब ढ़ें ग े ले ि कन बेहद की वै राग्य वृ ि त्त स े साधन औ र साधना का बै ले न्स रहेगा। जैसे आप लोगों को प्रवृत्ति में रहने वालों को दृष्टान्त देते हो कि सब कुछ करते कर्मयोगी कमल पुष्प के समान रहो। ऐसे आप सभी को भी सेवा करते, साधन मिलते, साधना और साधन का बैलेन्स रहेगा। तो आजकल एडीशन सेवा के साथ बेहद की वैराग्य वृत्ति भी आवश्यक है। चलते फिरते भी अनुभव करे कि यह विशेष आत्मायें हैं। सिर्फ योग में बैठने के टाइम नहीं, भाषण करने के टाइम नहीं लेकिन चलते फिरते भी आपके मस्तक से शान्ति, शक्ति, खुशी की अनुभूति हो क्योंकि समय प्रति समय अभी समय बदलता जायेगा। तो बापदादा ने समय प्रति समय इशारा तो दे दिया है लेकिन आज विशेष बापदादा एक तो बेहद के वैराग्य तरफ इशारा दे रहा है, इसके लिए अभी अपने को चेक करके देही अभिमानी का जो विघ्न है देह अभिमान, अनेक प्रकार वे ̄ देह अ ि भमान का अनुभव है, इसका परिवर्तन करो। और दूसरी बात बहुत समय का भी अपना सोचो। बहुत समय का अभ्यास चाहिए। बहुत समय पुरुषार्थ बहुत समय का प्रालब्ध। अगर अभी बहुतकाल का अटेन्शन कम देंगे तो अन्तिम काल में बहुतकाल जमा नहीं कर सकेंगे। टूलेट का बोर्ड लग जायेगा इसलिए बापदादा आज दूसरे वर्ष के लिए होमवर्क दे रहे हैं। यह देह अभिमान सब समस्याओं का कारण बनता है और फिर बच्चे रमणीक हैं ना, तो बाप को भी दिलासा दिलाते हैं कि समय पर हम ठीक हो जायेंगे। बापदादा कहते हैं कि क्या समय आपका टीचर है? समय पर ठीक हो जायेंगे तो आपका टीचर कौन हुआ? आपकी क्रियेशन समय आपका

टीचर हो ,यह अच्छा लगेगा? इसलिए समय को आपको नजदीक लाना है। आप समय को नजदीक लाने वाले हैं। समय पर रहने वाले नहीं। समय को टीचर नहीं बनाओ। तो बापदादा आज यही बार-बार इशारा दे रहे हैं कि स्वयं को चेक करो, बार-बार चेक करो और परिवर्तन करो। बहुतकाल का परिवर्तन बहु तकाल के प्रालब्ध का अधिकारी बनाता है ।तो बापदादा चाहे अब तक ढीला-ढाला पुरुषार्थी हो लेकिन लास्ट नम्बर वाले बच्चे से भी बाप का स्नेह है। स्नेह है तब तो बाप का बना है, बाप को पहचाना है, मेरा बाबा तो कहता है इसलिए समय पर नहीं छोड़ो। समय आयेगा नहीं, समय सम्पूर्णता का हमको लाना है। बापदादा के विश्व परिवर्तन के कार्य के आप सभी साथी हो। अकेला बाप कार्य नहीं कर सकता, बच्चों का साथ है। बाप तो कहते हैं पहले बच्चे, आगे बच्चे। तो अभी अगर दूसरे वर्ष में आना ही है तो यह होम वर्क करके रखेंगे! करेंगे? हाँ, हाथ उठाओ। अच्छा।

25.10.2009.. .. यह दुनिया आपकी नहीं है, गेस्ट हाउस है, अब तो घर जाना ही है। घर के नज़ारे मन में बुद्धि में दिखाई दें। तो आटोमेटिकली घर आया कि आया, आपका एक गीत है, अब घर चलना है। तो यह लहर हर एक चाहे भारत, चाहे विदेश, अब यह अनुभव प्रत्यक्ष करके दिखाओ। बेहद का वैराग्य, गेस्ट हाउस में दिल नहीं लगती। जाना है, जाना है, याद रहता है। तो बेहद का वैराग्य यह कोई भी प्रकार का, मन के संकल्पों का आपस में सं गठन के माया के विघ्नों का एकदम समाप्त कर देगा। यह माया के तूफान आपके लिए तोहफा बन जायेंगे। यह जो छोटे-मोटे पेपर आते हैं यह पेपर नहीं लगेंगे लेकिन एक अनुभव बढ़ाने की लिफ्ट लगेंगे। गिफ्ट और लिफ्ट। समझा। अभी लक्ष्य रखो बेहद के वैरागी और हिम्मत उमंग-उत्साह के पंखों से उड़ते रहो और उड़ाते रहो।

15.3.2010.. .. बापदादा के पास पुकार और दु:ख की आह बहुत सुनाई देती है। आपके पास पता नहीं क्यों नहीं सुनाई देती है। बापदादा जब ऐसे सुनते रहते हैं तो आप बच्चों को जो अपने को वारिस समझते हैं, वर्सा लेने वाले हैं, तो वर्सा लेने वाले को दूसरों को वर्सा दिलाने के ऊपर रहम आना चाहिए ना। रहम क्यों नहीं आता? वैराग्य, बेहद का वैराग्य और रहम आना चाहिए। छोटी छोटी बातों में क्यों, क्या के क्यू में टाइम नहीं देना है। अभी हे बापदादा के सिकीलधे पदम पदम वरदानों के वरदानी बच्चे! अभी संकल्प को दृढ़ करो। और दृढ़ता की चाबी लगाओ। कर्मयोगी बनो। कर्मयोगी लाइफ वाले हो। लाइफ सदाकाल होती है, कभी कभी नहीं। तो अभी अपना कृपालु, दयालु, दु:खहर्ता, सुख देता स्वरूप को इमर्ज करो। बापदादा ने अचानक का समय बहुतकाल से बताया है। तो अचानक के पहले भक्तों की

पुकार तो पूरी करो। दु:खियों के दु:ख के आवाज तो सुनो। अभी हर एक छोटा बड़ा विश्व परिवर्तक, विश्व के दु:ख परिवर्तन कर सुख की दुनिया लाने वाले जिम्मेवार समझो।

17.2.2011.. .. बापदादा तो रोज़ बच्चों का चार्ट देखते हैं। मैजारिटी तीव्र पुरुषार्थी भी हैं लेकिन कभी-कभी का शब्द भी साथ में लगा देते हैं। लेकिन बाप क्यों कह रहे हैं? अटेन्शन प्लीज़, सूक्ष्म संकल्प में भी हलचल नहीं हो। अचल, अडोल, शुद्ध संकल्पधारी बहुत समय से बनना ही है। कई बच्चे बहुत मीठी-मीठी रूहरिहान करते हैं, कहते हैं बाबा हम तैयार हो ही जायेंगे। क्योंकि समय जितना नजदीक आयेगा, हालतें हलचल में आयेंगी तो वैराग्य तो आटोमेटिकली आ जायेगा। लेकिन आपका टीचर कौन हुआ? समय या बाप? समय तो आपकी रचना है। तो बाप अव्यक्त बापदादा अभी इशारा दे रहा है कि बहुत समय का तीव्र पुरुषार्थ अन्त में पास विद ऑनर बनायेगा। पास तो सभी होंगे लेकिन पास विद ऑनर बनने वाला बहुत समय का लगातार तीव्र पुरुषार्थ करने वाला आवश्यक है।

9.2.2012.. .. बाप भी चाहते हैं कि अभी गेट को खोलने के लिए सभी बच्चोंको बेहद की वैराग्य वृत्ति चाहिए। यही चाबी है गेट खोलने की। बापदादा तो सदा कहते रहते हैं कि बेहद केवैरागी बन वेस्ट संकल्प और वेस्ट समय दोनों को मिलकर जल्दी से जल्दी त्याग करना अर्थात् बेहद के वैरागीबनना क्योंकि बापदादा ने देखा है कि सबसे बड़ा विघ्न देह अभिमान है। इस देह अभिमान को त्यागना चलते-फिरते देही अभिमानी बनना, यही बेहद का वैराग्य है।

अव्यक्त वाणी संकलित दिव्य गुणों की माला

भाग - 1

आकर्षणमूत

अचल / अखंड / अड़ोल

आज्ञाकारी

ऑलराउण्डर / एवररेडी

अलर्ट

अनासक्त

अन्तर्मुखता

एकांत एकांतप्रिय

एकाग्रता

एकरस / एकमत / एकता

एकनामी, इकॉनामी

भाग - 2

अनुभवीमूर्त

अटूट / अटल / अथक

अधिकारी

ब्लिसफूल

चियरफुल

केयर फुल

नालेजफुल

पॉवरफुल

सक्सेसफुल / सफलता

सेंन्सीबल / इसेन्सफुल

सर्विसएबल

दिव्यता

दृढ़ता

भाग - 3

इजी और अलर्ट

फेथफुल

फ्राकदिल

गम्भीरता , रमणीकता

गुह्यता

हर्षितमुख

हिम्मत / साहस

होलिएस्ट / ऑनेस्ट

जिम्मेवार

खुशी

क्षमा

भाग - 4

लॉ-फुल / ला मेकर

लकी और लवली

मधुरता

महीनता / महानता

नम्रता, निर्माणता

नष्टोमोहा / मोहजीत

निद्राजीत

निमित्त

निराकारी/निर्विकारी/
निरंहकारी

निश्चय

निश्चिंत

न्यारा और प्यारा

भाग - 5

परोपकारी

पवित्रता, रियल्टी, रॉयल्टी

रहमदिल, दयाभाव

रिगार्ड रिस्पेक्ट/सत्कारी

रुहानियत

सदा ब्रह्मचारी

सहनशीलता / सरल चित

संतुष्टता / स्पष्टता

संयम

संतुलन (बैलेन्स)

शीतलता

शुभचिंतक

भाग - 6

स्नेह सहयोग

स्वतंत्रता

समीपता

साक्षीपन / साथीपन / ट्रस्टी

उपराम

सर्वस्व त्यागी

सिम्पलिसिटी

सच्चाई, सत्यता, निर्भयता

उमंग उत्साह

वफादार / फरमानबरदार

वैराग्य